ओं नमः

ज्ञान सा

चंप बावनी

हकीम चंपालालकृत

लाला खूबचंद बेटे लाला रूप

चंद साहब ने शुद्ध छपवाया

ज्ञान प्रेस देहली में लाला शीरा

पालके प्रबंधसे छापीगई

ॐ नमः सिद्धं ॥

अथ ज्ञानसारबावणी लिख्यते ॥

ॐकार पदसार महामंत्र अभिकार अज अजर उदार पुनी अमर कर्मोंसे अमार है ॥ सब ग्रंथनको सार सर्व पंथनको सार तत्व सार मत सार सुख सारको दतार है ॥ कोड़ कुग [illegible] वार संसार से उधार भ्रम बि[illegible]न बिडार दुख भंजन अपार है ॥ जमजाल व्याल टार महा मंगलीक सार चंपा नमो बार बार

बीजमंत्र ॐकार है ॥ १ ॥ नमो
सासन के स्वामी [illegible] ईस
नामी सबहु के अंतरजामी मोष पा
मी महावीरजी ॥ तीन लोक के
महंत अरिहंत भगवंत भवतार
न अनंत गुन [illegible] गंभीरजी ॥
चोसट इंद्र देव के ते सुरन सेव
करत चरण सेव देव संप[illegible]
रजी ॥ चंपाला [illegible] भव इन तुम च
नरुन लीन मोहे जान [illegible] अधीन
दीन हूं गो मेरी पीर जी ॥ २ ॥ महा

संजमी सुधीर तोरी ममत सरी

मीठी बानी जिम खीर धीरवंत सं

त सार हैं ॥ मंडन [illegible] ज्ञान धर्म खं

डन [illegible] नान क्रम चंदन सुभाव सम

तम तपत निवा [illegible] हैं ॥ चिंत्यामन

रैन ऐन कलु ब्रक्ष काम धेन अमृत

अमृत बैन न मुख करत अपार

है [illegible] बजीव के दयार स्रबजीव

हितकार चंपा नमो सेवकार गुरु

देव जग तार हैं ॥ ३ ॥ श्री श्री

जिन बानी जिनराजजी बखानी

प्रम ज्ञानी प्रम ध्यानी परपीरज्यूं
पिछानी है ॥ महाकुरुनाज्यूं ग्यानी
जगतारन कीठानी ये ग्रनादि
रीत जानी ग्रथरूप फरमानी है ॥
गुनधर जिनसानी ऐसी रचना
रचानी तह मानो भव प्रानी जिन
इंन मोरव पानी है ॥ स्त्रवग्रंथ में
प्रमानी स्त्रवपंथ में प्रमानी चंपा
मोषकी निसानी गुन खानी जिन
बानी है ॥ ४ ॥ सिद्धि वृद्धि लाय
क ग्रंनत रिद्धी दायक ग्रनंत

रे बैनकी बरस्वती॥

सुरत । सारकोउजार ज्ञान

कोउतार श्वरीभार भ्रम

कोफ स्वती ॥ भ्रमभूतकी

पापपाति निवा भेदाभेद

षिनबार में द स्वती॥ मन

दायसदासंतपैं

चंपाला चितलायनित

॥२॥ धर ध्यान देख

आदि अंतको विचार ज्ञानी

नपारते अक रकारबीति

या ॥ परिभवन संसार गतागत
गत चार एक एक में अपार मर
मार रखार कीतिया ॥ खेल खेले
बिसियार रही आज प्रति हार च
बहुत
पा राम इन बार नर भव लार जी
तिया ॥ चिंत्या मन रैन सार अब
जीत के न हार फेर पाय न लगार
न बिगार रे अनीतिया ॥ ६ ॥ अ
भाव भार ८। १५ सुभाव सुभे गार
१। संसार प्रती तारणा कारणा ला
सायगो ॥ महा उदे भयो पुन

व हैं ॥ कोउ रोग सोग लीन बंद फं
दं कीन कोउ पर के अधीन को
दीन बिन पीव हैं ॥ चंपालाल
चाहे जाहिं सुखकी निसानी ना
हिं चाहे नाहिं ताहिं सुखिया स
दीव हैं ॥ ६ ॥ इन जग में सदा इये
ही रीत बनी आई ॥ कोउ आई
उ जाई थिर काइ न रहाइ है ॥
कराइ नाहिं मौत की
पल बधे न बधाइ खिन
न घटाइ है ॥ सब फूटी मित

राइ कोइ संगी न स ाइ ग्राइ जा
इ तन हाइ ग्राइ ग्राइ कार खाइ है
॥ चंपाराम ग्रंथ गाइ कौन रहे रं
क राइ चौदां भवन जो भाइ फिरे
काल की ुहाइ है ॥२०॥ उदे पु
न के सब्ब नरज्यून लह्यो नव भ
व ग्रानिके गरव दस मास गुज
रातु हैं ॥ महा दुरगंद गंद ग्रादि
बुनियाद बंद सो तो ग्रनुत्त ॰ ब
ध भइ सात धातु हैं ॥ ग्रव सो न
तब धंद कीयो मूढ मति मंद जिन

यगो॥ कमोकेपरैरे जीव कामी क
म के सदीव बिन दया धर्म जीव मे
व जीवत न पायगो॥१२॥ रीते २ रह
जाना रतनागर पै आना लाल पा
यके गुमाना हो न माना चले जाना
है॥ हिंसा विषे धर्म माना मान
भूत ने भुलाना पर पीर को न जा
ना तो ऊ पाना दुख नाना है॥
दया धर्म न पिछाना जिनराज जो
बखाना तांहि खुल्यो नरक जाना
निज घट जो समाना है॥ चंपा

राम मन माना दया धर्मकी सम ना
तकुं लोक में निदाना कोउ ओर न
निधाना है ॥२३॥ रीद्धी वृद्धि अधि
काइ निज घट में समाई भ्रम फा
टिक अडाइ तांहि देत न दिखाइ
है ॥ मृग मध मध मांहि मूढ देखे
का॥ ; काहिं लखे आप तन नाहिं
तांहिं जाहिं जान जाइ है ॥ तेरही
भंडार भरे रतन अमो॰. खरे देख
कित ; न परे बिन हरे भ्रम ताइ है
चंपा नैंन छाइ छाइ ज्ञान की सला

इ पाइ मिथ्या र होनस्याही त
ब शाही दरसा है ॥२४॥ सीना
काहे कूड जोग रह्यो भोगत जो भो
ग पे रिझाय मूढ लोग खूब खाय ह
प मटके ॥ केते होयके संन्यासी
नहिं आतमा स न सी जोपे पाय
पग फांसी तर वर तर लटके ॥
केते छार में होर खार काठ डारें
कान फार सब हार गुन सार फिरें
तीरथ कूं भटके ॥ चंपा बिन मोरे
मन निज बिषे निज धन ताहि के

गवेखे बिन थोथे कनफटके ॥१

लीन बिपरीत रीत तज के सुरीत
मीत ताहि ते अनीत चीत चाहे
नीत करवो ॥ ए कुमति प्रसंग ग
ति मति भई भंग तब लहे कौन
ढंग मोष मग पग धरवो ॥ तप
करी तन सारे जिनधर्म कौन धा
रे षान पान है सुखारे ते उचारे
पेट भरवो ॥ गुर की न मानी मानी
आपकी चलानी ठानी चंपाराम
ते अनानी अभमानी जानी खरवो

॥१६॥ एक नर चढ़े गज च[illegible] रंगी
संगी सज एक परी पग कज संग
भज भज जातु हैं ॥ एक रिद्ध बद्धि
पाई धन की न टोट काई एक देस
देस जाई पेट न भरातु हैं ॥ एक
माते रागरंग रहत अनंद [illegible]नंद
एक परे बंद फंद गंद मंद ज्यूं
गि[illegible] हैं ॥ सब जीव एक सम
कहुं भेद है न किम चंपा उ[illegible] भ
अधम सो तो कर्म [illegible] हैं
॥१७॥ ऐसा पत रवरे वरवन च[illegible]

तुरंग लख आद[illegible] सालमख
सोभा ड्योढी ग्राम की॥ भूपत
अनूप रूप खरे दर राजपूत देख
वा सरूप चुप चाहें [illegible] सला की
भरे दाम ठाम रेकेत अभिराम धाम
और आवत दाम लाम गाडी गा
म गाम की॥ पाई ऐसी प्रभुताई
बिन प्रभु दुखदाई चंपा पाई सो
न पाई जो पै पाई कौन काम की॥
१८॥ ओस बूंद की दमक चप [illegible]न
की चम [illegible]पलका की झमक जि

मजीव- [illegible]हद मैं॥ जो पै ऐते धंद
ढाय कछु हूं न संग जाय काहे पा
य फंद पाय जाय जान आन मैं॥
छिन राक को भरोसो चंपालाल
न खरो सो बेर लगे न जरो सो भ
वरो सो उड़ जान मैं॥ छोड़ दे गु
मान मान भज भगवान भान या
र मद मान जान बस नाम सान
मैं॥१९॥ ओ॥ ग- अपार भरे मन
माने पाप करे सब की जो चाहे
परे हरे प्रान पर बर के॥ पर की

उखा[illegible] जड आपने बनाये घर कहुं कोन माने डर भर पेट बध करके॥ ससिज्यूं अंधेरी तेरी मेरी सूंन देखे हेरी जान तन राख ढे री बैर करे बैरी फ[illegible] के॥ चंपा पा नी की [illegible] जान जि[illegible]गी ये बी र अरी [illegible]ज्यो है न तीर तां सरीर धीर लर के॥२०॥ अगभंग थित थाइ हन्स अंस रें चपा[illegible] [illegible]रंग ढं ग छेह पाई रही काइ तेड रावनी॥ कुरे माइ बाइ जाई आइ कुर

ताइभाईचंपारामगाइताइ
खा थजतावनी॥डोलीसीब
नाइठाइजंगलमल। जाइपा
छेफिरघरआइतेठराइपेटपा
वनी॥कूड़जगकीसग॥ दुख
बनेनसहाइतोडदीनीभित।
इजेकिराइतेठठा नौ॥२१॥आ
दिकुंसेयहीरीतसारेखा थ
केगीतबिनखा थनमीतप्रीत
कहुंसंसारमें॥देखोसबल
विष्या। मानाजा। अनजातनि

न स्वारथ सिजात न भुलात तहुं
कार में ॥ पुगे स्वारथ नजात बा
तो मारे तात मात महा भ्यानक
हो भ्रात ते सितात बार बार में॥
जही चोरी जैसे ग्रही हट्टी वाले दी
नी बही चंपा चोरवे की सी टही
रत्ती सार न प्यार में॥ २२॥ कोरे
ही करारे खरे जोड़ जोड़ कोड क
रे सेठजी कहाय बडे भरे ग्रभि
राम धामजूं ॥ उंचे भवन बनाये
बैठ तन कूं फुलाय के ती नारी

नायसुखपायआठों

।चंपापा ७म ।ई प्रभुनाम कू

अबदेत न दिखाईजो टु

हर आभ ।।देखी तेरी

बादर की छाई कार

आई उड़ जाई घन

।।२३।। खुमार खुदी टारके

धार के येजीवगत चारके

स्याम के ।।मेरो ते

रो चंपा कौन आयजाय संग जों

न करे राक पौन गौन तज भौन

बिसरा॰ के॥ कौन के भरोसे फू

ले काल के ॰॰ार भूले भूर के न

फांक हूले होके बस दाम चाम के

जे रहना न॰ दाम करो ऐसो मत

काम पड़्यो दाम में ॰॰॰॰ दुख

पाय जम धाम के॥ २४॥ ॰ं ॰ी

की खान तन संग है न मेव मन

अंत तंत छोर इन जीव जाना औ

र थोर है ॥ रहे कित जा दा ॰य

॰ष्यन क॰ड़ भाय बंस अंस॰

॰ दाय देव दीयो मान मोर है॥

केरगसे हारे तब रावन

दत्तजी सुधारे जम

छोर है॥ केते केते जो

धे जोर बांध कार दीये तोर चंपा

कोन सको मोर देख गोर थोर

थोर है॥२५॥ घर घर दीन डोलें

महा दीन बोल बोलें पञ्यो टूक

टूक रोलें बोलें भुख ढुंसता॥ है

॥ कहुं खाय रोड छोले कहुं

पाय फोले कहुं खाली आंद बोले

फोले खाय जाय गातु है॥ लोग

मारें सिर ठोले हुये अंग प्रंग पोले दोय पाय पड़े पोले मह्ा दोलकटे रातु है ॥ छोड़ गोल पन गोले तेरी रिद्ध तेरे कोले चंपा आप (फेराले तो तूं भोले जगनाथु है ॥ २६ ॥ नही षिन की खबर सोय घरके जंगार दमजाय तौ मगर फिर आयके न आय ॥ दम आय तौ आद ... दमजाय तौ आदम जम आय दम दम आय दम ही में आय रे ॥ दमने ... कमकम हु न आय दम

तू तो अभनासी ब्रह्म भ्रम जो मि
टाय रे ॥ कारे ‘ किषा ‘ कम चं
पा पांच इंदीदम राह सुउतम ध
र्म कम कम कूं मुकाय रे ॥ २७ ॥ चिं
त्या चित दे न यार लेखा लख्यो
सो ।त ‘ ार यहां न कद बि हा ‘
न उधार तकरार है ॥ कोड जत
न अकार बधे घटे न लगार चंपा
सोई होन हार दीन दियार जो
बिचार है ॥ मांगे काहे कूं गवार
बिन मांगे करतार देत लैल ज्यूं

[illegible] र स्त्रबजीव संसार है ॥
मन में संतोष धार फ़ि[illegible]र जिक
र टार तेरे कर्म [illegible] सार आपी
देत देन हार है ॥ २८ ॥ क्षार में हो
रखार खरे खर कौन खोय फिरे
जर में जो जाय मरे नहीं टरे कर्म
[illegible] ॥ राम नाम चुक परे आग
में पतंग जरे प्रान [illegible] क ध्यान धरे
पै न तरे इन [illegible] गती ॥ सांप हूं न
चर करे सहे तर ताप खरे मूंड
क्यूं [illegible] डावे बरे कित फरे यह भग

तौ बिन आत्मा दुराय निजगुरा
रूप चंपा राम से सुभायको
न पाय गत तुरा ॥ २६ ॥ जान
जो अजान होय जाग तौ मचल
सोय सुन तन सुने सोय तब हो
यके उपाव रे ॥ हाड हुं को खंभ
तोय मोड्यो कित मुडे मोय गारे
सूं न गरे कोय सोय को कर सुभा
व रे ॥ छार मत डार खोय उजरो
न सुर होय चंपा राम देख धोय
जोय आदर्श के सांव रे ॥ रेसो

भारी कर्मीजेह तांकूं मत मत दे
ह उषर के खत मेह पर्यो काम
केहबा - रे ॥ ३० ॥ फूटीजुगत ब
नाई करीज ग ॥ हसाई अब ता
र ललजाई न समा मधमांन
में ॥ सजी लोग सु गाई योर
योर पे नचाई काम का - ना ज
गाई जो जाई तार तान में ॥ बि
थिहाय सूं ब ना देवजान के पु
जाई ये अनी ॥ रीत भाइ दुख दाइ ह
र आन में ॥ चंपाराम ग्रंथ गाई

ऐसी पेटकी भराई मत ... रे अन्याई ये अन्या... है जहान में ॥३१॥ निस सुपन... कोई दम गुजरान आयकाल ते नि दान न ... षिन मात को॥ सब सेठ सुलतान आन सकल प्रमान सब ताबे फ... मान न गु मान कहुं बात को॥ येही हुक म हुक्काम कोउ रहे न सुदा... कू चे गाहे में तामाम कोउ दिन को उ रात को॥ ऐसे जान चंपा राम

भारी कर्मी जेह तांकूं मत मत दे
ह उषर के खेत मेह पर्यो काम
केह बावरे ॥३०॥ फूटी जुगत ब
नाई करी ज ग॰ हसाई अब ता
र लल जाई न समा [illegible] मध मांन
में ॥ सजी लोग सु [illegible] गाई थोर
थोर पे नचाई काम का [illegible] ना ज
गाई जो बजा [illegible] तार तान में ॥ बि
षिहाय सूं बना [illegible] देव जान के पु
जाई ये अनी [illegible] रीत भाइ दुख दाइ ह
र ध्यान में ॥ चंपाराम ग्रंथ गाई

ऐसी पेटकी भराई मत करे रे
अन्या (ये अन्या) है जहान में
॥३१॥ निस सुपना जहान कोई
दम गुजरान आयकालते नि
दान न० ‍[illegible] ान षिन मात को॥
सब सेठ सुलता‍[illegible] आन सकल
प्रमान सब ताबे फ[illegible]न गु
मान कहुं बात को॥ येही हुक
म हुक्काम को उरहे न मुदाम कू
चे गाहे में तामाम को ‍[illegible] दिन को
उ रात को॥ ऐसे जान चंपा राम

जग फ़न्ना को ः काम षिन राक न

आ रा ः यद्दां काम आत जात को

॥ ३२ ॥ टूटी फूटी ख़ुार बेरी परी सिं

धु मध तेरी मद्दा रैन ज्यूं अंधेरी

फेरी चेरी गेरी बार है ॥ संगी सं

ग में जो सारे वे तो बैरी बीर भारे

बैर भये सो ।कन। तो है डारे ज

मजार है ॥ दीखे आर ः न पार

आन सुने न ए का। अब भयो निर

धार कार दीनी ललका। है ॥

ऐसे रिव्या अपार भव बास कूं

बिचार चंपाराम अरणधार कुड
मम बिस है ॥३३॥ ठाम नि
ज भुत भौरे ठाम ठाम दोरे दोरे
घुमत फिरत बौरे भ्रमबस होय
के॥ जित जाय मेर करे तित आ
य जम फरे बैरी मार पीट परे प
रे जाय रोय धोय के॥ ऐसी ही अ
नंत कार गये मार खात यार चं
पाराम चेत बार निज सार गु
रा जोय के॥ कुमत कुभाव हर
सुमत सुभाव धर आपने ही वर

घर निरमार रूप होयके॥ १४॥
डीठे बेद भेद पाई ज्ञान मतम
ती आई कछु सखन रहाई बाध
लीनी सब साधना॥ रती पाई
पंडताई न घटाई कपटाई ये
ि साल वोही आई ज्यूं किताबें
खर लादना॥ चंपालाल ऐसी
काहे खपकरी खपता है तत सा
र मत यहे पायो खान पान पाद
ना॥ पंडत मशाल वान दोजम
हा बेई मान आप ज्यूं अंधेरे जान

श्रौरां करें चांदन ॥३५॥ फूटी
ऐसी पंडताई पंड पाप की भराई
पिंड पातिक लगाई कहां पाई
शुध ताई को॥ ज्ञान ध्यान की
भुलाई सूझ बूझ स्रूझ ताई सी
खपाई कपटाई निज स्वारथ सि
जाई को॥ श्राछी मिलट बनाई
निज श्रौगन छिपाई मूढ लोगां
भरमाई खान पान की जुगाई
को॥ यहां रज पोपा बाई चंपा चा
ही सो चलाई श्रागे राम जम राई

महां सजा है अन्याइ को॥ ३६॥
ढूंढत हैं सुख कित जो लूं न सं
तोष चित्त ॥ न भंजो चाहे मित
नित प्रत दुष लार है॥ तू तो अ
सल प्रम सुखी भ्रम बस भयो दुखी
तेरे कर्म तेरे दोषी और दोषी न
लगार है॥ पर कूं न दोष देह अ
पनो क ॥ यह चंपा बीज बोय
जह तेह लेह बर त्यार है॥ शि
व पुर पत भूप भूल॥ पनो सरूप
महा पस्या अंधकूप खूप खाय रह्यो

मार है ॥ ३७ ॥ नाकामके कामक
रे कामके न काम सरे ताही हो
न काम खोरे फिरे ठाम ठाम ख्वार
हैं ॥ कामना विगाखो काम दाम की
जंजाख्यो राम आय दाम कौन काम
दाम दाम गये हार हैं ॥ करी आत्मा
जू स्याम ताहिं पायो आयो धाम
चंपा दाम कोये काम न छदाम जा
य लार हैं ॥ जैसे नीर को मुदाम
मीन माने जिया राम नहिं जाने ला
कलाम जार डार हो फ़रार हैं ॥ ३८

तन पिंजरो असार जाकी न्यारं
तार तार पुनि खुले दस द्वार
महा खार खाम चाम को॥ मल
मूत रक्त भरो नाना क्रिम पड़ स
ड़ो पंछी पौन को सो बड़ो घर करो
बिस ।म को॥ आय जाय न सिया
ना बोले डोले ताहिं माना चंपा
काहे गरभाना बैठ्यो हो के एग्गा
नाम को॥ भ्रम कम जीव घेरो गत
गात फिरे फेरो दाने पानी को परेरो
लेव सेरो ठाम ठाम को॥ २९॥ प्यारी

रह्यो तकतानजोरी तीर संकमां
नदीनी बाजकूं उडानजरा य
नदुरान ज्यूं ॥ भयो दुखित बिचा
रोतरुतरे भागजारो चंपारान
स्तरण धारो प्रम रुनाजहाज ज्यूं
॥ तिनकार मेह परीसोउ बनी
सर्द करी कहूं जोग प्योरी सरीती
र हरी मांन बाजज्यूं ॥ बैरी होय
जो हजार बने राक न बिगार जि
न ईकेरित पार प्रिती पार जि
न राजज्यूं ॥ ४० ॥ द्रव भाव दोउ

तन पिंजरो असार जाकी न्यारी
तार तार पुनि खुले दस द्वार
महा रखवार खाम चाम को॥ मल
मूत रक्त भरो नाना क्रिम पड़ स
ड़ो पंछी पौन को सो बड़ो घरकरो
बिसराम को॥ आय जाय न सिया
ना बोले डोले ताहिं माना चंपा
का हे गर भाना बैठ्यो हो केरणा
गाम को॥ भ्रम कम जीव घेरो गत
गत फिरे फेरो दाने पानी को परेरो
लेव सेरो ठाम ठाम को॥ ३९॥ प्यारी

रह्यो तक तान जोरी तीर सूं कमा
न दीनी बाज कूं उड़ान उड़जाय
न दुराज ज्यूं ॥ भयो दुखित बिचा
रो तरु तरे आगजारी चंपा रास
स्तरण धारो प्रभ करुना जहाज ज्यूं
॥ तिन कार मेह परी सोउ बनी
सई करी कद्रू जोग प्योरी मरी ती
र हरी प्रांन बाज ज्यूं ॥ बैरी होय
जो हजार बने राक न बिगार जि
न हुं के रिछ पार श्रिनी पार जि
न राज ज्यूं ॥ ४० ॥ द्रव भाव दोउ

ख़ार स्त्रब सुख संसार जैसे ख़्वा
ब के ख़्यार सो असार गुलज़ार
सी ॥ मेरी मेरी न पुकार कोई घरी
की बहार रिक्ज़ा ख़ार ते उजार
तत कार लार त्यार सी ॥ चंपा
देखत ःपार बाग बाग फुलवा
र कार किये पाय मार बार उड़े
धूर धार सी ॥ चला चली को म
कान गला गली को समान येज
हान है प्रधान कहा कंग- कूं
आ सी ॥४२॥ धनधान फंद

फांसे कोउ रोय कोउ हांसे कोउ बासे कोउ नासे कोउ प्यासे कोउ घासे हैं ॥ कोउ करत बिलासे सब देत ज्यूं दिलासे कोउ मरत निरासे पर्भ होय के उदासे हैं ॥ कोउ भवन निवासे पैरें मल - लखासे कोउ जाय बन बासे कहुं हांसे कहुं फांसे हैं। चंपा जगत के रासे जैसे पानी में पतासे छिन तोला छिन मासे ज्ञानी जीवों के तमा - हैं ॥ ४२

निकट निहार यार दूर कित
होय ख्वार पाय त्यार जो बाजा
र ते उजा। में न जाइये॥ द्रव
घर में ... का है जाय तू द
खन चंपा राम है म वन फेर
दुध न मथाइये॥ भरे भा न
के यार काहे करे क सा खने
हाय सूं जो कार तो उ दांत न
लगाइये॥ निज ॱ। तमा गावे
ख तेरी प्रभ ता वस्त व भ्रम के
म होने रेख तो भले व देख पा

ईये ॥४३॥ पढ़े वेद और पुरान
बड़ी पोथी प्रधान चंपा घट्यो
न अज्ञान ज्ञान गायो ज्यूं रती
है ॥ ल व्यो आप में न आप को
है जप्यो पर जाप यही भूल पर
ताप भूल रहे निज गात है ॥ न्हा
य लाय के फलेल ला ही मन की
न मैल बद फैल के तुफैल मैली
राखी क मती है ॥ भ्रम क्रम टा
रे बिन आत्म उजारे बिन आ
त्मानिहा विन किन लह्यो न

मुगती है ॥ फेर फेर कहां करे
फेरजम आन फरे इन वेर ही कूं
फुरें जब परे अरीजार रे ॥ ताही
बेर बेर मरें कहुं अतहुं न करें
भव फेरे ऐसे फिरें भरें महादुरव
सारे ॥ वे कोन जान परे फेरहुं
की कौन बरे लरवीन लरव तप
रे वेर चंपा यूं विचार रे ॥ चहुं
ऊड़ रहे घेरजम जैसे बेरी बेर
आय आय रही नेर अव देर सो
ई हार रे ॥ ४५ ॥ बड़ो गापिल बि

चारा बनजारा मत मारा न विचारा धन सारा आउतारा ठग नगरी॥ आंख खोले न निकारा सोय खोय धन सारा कोई संग न पियारा जो संभारा करे हटरी॥ सदा करे जोरवारा बदकारा लाय लारा उनकीयो मुख तारा तोउ हारा रिध सगरी॥ दानसील आदि चारा चंपा राम सिंत यारा आन जान आरी सारा दुखी हारा चोर गठरी॥४६॥ भ्रम भूत

के परेरे मिथ्यारज के अंधेरे माने
मोख यूं भने परु हेरे पूत ज्या
ट के ॥ महा लोल पी ज्यूं विसे
दया धर्म तो न दीसे माया मम
त में फसे चंपा जैसे कीट पाट के
॥ गोले पेट के विच। मारे भोग
न के हारे दीन डोलें रवास्यूं
अंध। कीरे खाट के ॥ लीनो सर
ण ज्यूं कुंड दोउ जग सर चूड़ म
ये धोबी जैसे कूर रहे घर के न
घाट के ॥ ४७ ॥ मन भयो तू मर

द पन धोयो तो गरद भूल गयो ज्यूं फरद गतागत के निदान की ॥ कहुं इक इंद्री भयो कहुं पंच इंद्री थयो जमन मरन दख्यो स ख्यो त्राश नरकान की ॥ कहुं सुर सुर इंद कहुं नर नर इंद पन फस्यो विसे फंद रह्यो बंद में जहान की ॥ आजलूं जो नाच नाचा सो तो सब खल काचा चं पा राम सोई साचा होन आंचा कारबान की ॥४८॥ यह दोरवा

की नारी रोन पैन कुठयारी तामें भरे सार भारि गोरी कारी स्तम सारी है ॥ तन तोप ग्रो गुबारे वो र भर गोरे मारे हसे कसे तर वारे सो तो करे घाव कारी है ॥ भवां खेंच के कुमान मारे नैनन के बाण जुलफां की लट कान जा न नागन ज्यूं कारी है ॥ चंपा रा मडर टर जाकी सूरत है बिख चर मूल की केक है बरके के दुखकारी है ॥ ४८ ॥ रमरह्यो ते

रो पीवते रे घट में निकट जीव जो ये
हे व ज्ञान दीव विन पीवं जीव नाहिं
है ॥ जैसे पुफ में सुबास खीर मांहिं
घृत बास दिन मनी को उज समे
नि । सजन माहिं हैं ॥ काहे खो
जत हैं दूर हर वसे हैं हजूर कहा
मान ले जरूर नूर तेरो तुज माहिं
है ॥ दुई भाव दूर डार घर अपनो सं
भार चंपाराम मिले यार और दिया
र में न काहिं है ॥ ५० ॥ लंक पत कीन
चाली हर आन लंक जाली ब नी

एकनरख्याली वलवाली बातक
चीहै॥ कंसकथी सो बनी सोई
बनी मयी धनी करी तदबीर घनी
पन धनी को नजची है॥ लिखी स
क्यो न मिटाय चंपाराम जादो राय
आन रंक ओरु राय काय को नडं
की बची है॥ सिसपाल की सगा
ई कान आन परनाई विधना नल
खी जाई काई विधी चंद रची
है॥५१॥ बार बार में पुकार कर रही
पड्यार कार्दै सोय नर नार क

र आयो [illegible] र के ॥ निसदि
न तिय वार राय रंक कसार
नहिं जानें रह्वार क्षार करे
तन जार के ॥ धन धान पर वा
र उन कारमें अकार [illegible] राम
चेत बार ज्ञान सार कूं बिचा
के ॥ जम जैसे अरी सीस खरे
बीसों बीस फेर कै सै सोय नीस
जगदीस कूं बिस [illegible] के॥ ५२॥
सब जीव संस र खट कं याग
त चार सुखबंछ [illegible] ची [illegible] र को

उ दुख नि चार हैं ॥सब आप

ने ... दुख दोसे मत आन

... भेद द ध्यान सो तो कम

आप सारे हैं ॥ दुनिया चं ोर

फेर कहूं बर कहूं जोर रहूं न

थूक बर फेर मूत कोन डा

रे हैं ॥ तरो पुन बाला लाला पर

किन मार भाला तेरे न लगे

फ़ाला जग चाला सन सारे है ॥

५१॥ र लक सूं व्याल तोड़ खा

लिक संखप जोड़ ख़ुद की ख़ुदा

ई छोड़ मोड़ मनके तुरंग ज्यूं॥ भंवरो न चाहे फूल मारव..न मधमूल जिन चाहे अनुकूल भूल मरन पतंग ज्यूं॥ तृतौती न लोक पत अपनी जो पाय गत सुमत सुधार मत तज कुमत कुसंग ज्यूं॥ हर हर के कुरंग निज श्वेत रंग रंग चंपालाल इन ढंग है क.ठ तीमांहि गंग ज्यूं॥ भुद ताई कहां पाई नीच ताई न घटाई ब.क ताई हूं न आई

ममताई छाई तन में ॥ निजनार
कित तज्यो परनार जित तक्यो
घर छोर के न भज्यो जाय सज्यो
घर बन में ॥ तन हंस के न का म
मन काग रंग चाम कहा भज
न सु काम जो लगा मन ब न में
॥ चंपा रेसे जो फ़कीर महा की
र बिन पीर ध्रिग ध्रिग ताकूं बी
र धीर दे या जो न मन में ॥ ५५
हर की भगत नांहिं हर की
हनत काई हर हर में रमा

हर हर में समाई है ॥ हररूप
में है रूप अन रूप में सरूप ह
र रंग में अनूप रूप परे पर छा
ई है ॥ नहीं बरण बसेष सम
सकल अ ... ज्ञान दृष्ट चंपा
देख रेख भूप है न छांई है ॥
हरजानि के हजूर डंड भाव क
र हर हर तूही है जरूर नूर
हर हर मांहिं है ॥ ५६ ॥ छिजे
आयभव ... रैन ... अपार
सांसो सांस सो तो सार न बिना

रबार नारव है ॥ परीभवन करं
तकाल [illegible] नंत येन श्रो
सर। भे [illegible] भनी सा
रव है ॥ कर [illegible] तन। बेचा बा
जीजीत के न हार भ्रम कर्म श्र
रीजार जार डार कर राख है ॥
चंपाराम सत कही पाछे गई
सो तो गई श्रब थोरी श्राय रही
यही बही जात राख है ॥ ५७॥
त्रिप्ना श्रधिक श्रत करे सना
कीरत देव गुरु धर्म सत नित

प्रतमनभावनी॥ प्रंतुमेरीमत
हानजोपेबालख्यालकीन सिंधु
में सें बुदं कीनसकूं मेह मांगा
वनी॥ गुरुदेव कृपा कियो दीन
जान ज्ञान दीयो तांहिं निज
मती कियो मन तन हुलसा
नी॥ यही बीनती अपार उन
अधिक विच। दीज्यो सुचड़
सुधार ज्ञानसार चंपा बांव
नी॥ ५८॥ ज्ञान गुन कोन प्रंत
ज्ञानी कह्यो जो अनंत छंदमत

जो हरी रहने वाले शहर देहली

मोहल्ल: मालीवाड़: ने [illegible] कृत

शुद्ध करके वलायती कागज़

पर संसार के फ़ायदे के लिये

छपाई

छाप [illegible] : ज्ञान प्रेस देहली में

नई [illegible] पर लाला [illegible]गोपाल

के प्रबंध से तारीख़ दूसरी

अगस्त सन १८ ८१

ईसवी को छा

पी गई

अजमेर (राजपूताना) खाते

श्री श्वेताम्बर साधु मार्गी जैन भाइओनी उन्नति अर्थे मळेली

त्रीजी

श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्सनो

सम्पूर्ण हेवाल.

प्रसिद्ध कर्त्ता,

'जैन समाचार' ऑफिस—अमदावाद.

मूल्य ०—६—०

रतलाम (बीजी) कॉन्फरन्सनो अहेवाल ०—६—०

मोरवी (पेहेली) कॉन्फरन्सनो अहेवाल ०—१—०

हरकोइ बे बुकना ०-८-०; त्रणना ०—१२—०

'जैन समाचार' प्रेस—अमदावाद.

अर्पण पत्रीका

શ્રીયુત્ કાળીદાસ નારણદાસ પટેલ.

ઇટોલા (વડોદરા)

પિય સ્વધર્મી મહાશય !

આપણી કોન્ફરન્સના એક પ્રાંતિક સેક્રેટરી તરીકે આપ જે ધર્મસેવા બજાવો છો તેહેના સ્મરણ ખાતર, (નહિંકે વડોદરા રાજ્યની ધારા સભાના આપ મેમ્બર છો તે ખાતર,) હું આપનો સ્વધર્મી આપને વ્હાલી કોન્ફરન્સની અજમેર મુકામે થયેલી બેઠકનો હેવાલ તે સંસ્થાને લોકપ્રિય બનાવવા ખાતર પ્રગટ કરી આપને આનંદ સાથે અર્પણ કરૂં છું.

ભવદીય,
વા. મો. શાહ.
અધિપતિ અને માલેક 'જૈનસમાચાર.'

બે બોલ.

મોરબી અને રતલામ કોન્ફરન્સોના અહેવાલ પ્રગટ કરતી વખતે મ્હેં મ્હારા તરફના થોડાક પ્રાસ્
વિક શબ્દો લખ્યા હતા, એ રૂઢીને અનુસરીને આજે આ ત્રીજી કોન્ફરન્સના અહેવાલમાં પણ બે
બોલવા ઉચીત ધારૂં છું. બે કોન્ફરન્સના હેવાલો પાછળ ખર્ચવું પડેલું દ્રવ્ય અને આત્મબળ કે
સાર્થક થયું છે તે જોયા પછી આ હેવાલ બહાર પાડવાનો વિચાર જ મ્હેં માંડી વાળ્યો હતો. પ
અજમેર મુકામે ના. મોરબીનરેશને મ્હારો રતલામ રીપોર્ટ કટાકટીના વખતે કેટલો કામ લાગી ગયો હ
તથા ના. ગાયકવાડ સરકાર મ્હારા હેવાલો પરથી કેવી કીમતી સલાહો આપી શકયાહતા તે યાદ કરીને ત
હેવાલ પ્રગટ નહિ થવાથી કોન્ફરન્સને લોકપ્રિય બનવામાં કેટલી અડચણ નડશે તે યાદ કરીને ફ
એકવાર ફરીથી પસ્તાવો કરવાનો પ્રસંગ માગી લીધે છે. આ હેવાલ બહાર પડતાં પહેલાં નામ નોંધાવ
ગ્રાહકો પાંસેથી લગભગ અડધી કીમત લેવાની જાહેરખબર છપાવીને કાર્ડો મોકલવા છતાં-હે
ખોલો ક્હાડવા છતાં માત્ર ૧૩૦ ગ્રાહકો થયા છે ! ૩૦-૩૨ રૂપીઆની આમદાનીથી રૂ. ૧૫૦ નું ખ
(અને મહેનત તો ફોગટ જ;) શી રીતે ક્હાડવું એ વિચાર મનમાંજ સમજવા જેવો છે. (અ
બહુ તો મ્હારા વિરોધીઓને અર્પણ કરવા જેવા છે.)

આ અહેવાલને મ્હેં દર્પણ જેટલો સાચો બનાવ્યો છે. ખુદ મ્હારી વિરૂદ્ધ બોલવાના આશય
કોઈ વકતાએ ઉચ્ચારેલા શબ્દોને પણ મ્હેં આ રિપોર્ટમાં જગા આપી છે. તે ટીકા કીમતી છે પણ જે પાત્રત
કરવામાં આવી છે તે પાત્ર તે ટીકાને પોતાના સદ્વર્તનથી હસી ક્હાડે છે. મ્હારા વિરૂદ્ધ ગુપ્ત રી
રચેલી ખટપટોને ધવલ પત્ર પર મુકવા જેટલી મગજની નબળાઇ કે ફુરસદ હું ધરાવતો નથી. તેમ
૧/૧૦૦૦ ટકા જેટલા વિરોધ સામે [illegible]/૧૦૦ ટકાએ મ્હારાતરફ બતાવેલો અપ્રતિમ પ્રેમ
એવા વિરોધની દરકાર કરવા મના કરે છે.

વા. મો. શાહ.

अजमेर कॉन्फरेन्स के जलसेका सत्व.

[तीसरी] श्रीश्वेतांबर स्थानकवासी जैन कोनफरन्समें पसार कीये हुवे ठहरावों.

ठहराव पहला.

ब्रीटीश सरकारके शान्त अमलमें हमलोग हमारे स्वधर्मी भाइयोंकी धार्मिक व्यवहारीक स्थित सुधारनेके लीये कोन्फरन्स जैसी अति उपयोगी संस्था स्थापन करके हमारे विचार स्वतंत्रतापूर्वक जाहिर कर शके है, इसलीये नामदार शहेनशाह एडवर्ड सप्तमका यह कोन्फरन्स उपकार मानती हुइ अपनी राजभक्ति जाहेर करती है.

ठहराव दुसरा.

इस कोन्फरन्सके परमेनेन्ट पेट्रन धर्म धुरंधर नेकनामदार महाराजा साहेब सर वाघजी बहादुर G. C. I. E. मोरवी नरेशने तीसरी वख्त पधारनेकी तकलीफ उठाकर हमारा उत्साह बढाया है इसलीये यह कोन्फरन्स महाराजा साहिबका उपकार मानती है.

ठहराव तीसरा.

लींबडी नरेश नामदार ठाकोर साहेब श्री दौलतसींहजी बहादुरने हमारे आमंत्रणको मान देकर यहां पधारनेका परिश्रम उठाकर इस कोन्फरन्सको सुशोभीत की है, इस लीये महाराजा साहेबका यह कोन्फरन्स आभार मानती है और आयंदा भी इसी तरह कोन्फरन्समें पधारकर हमारा उत्साह बढावेंगे ऐसी यह कोन्फरन्स पूर्ण आशा रखती है.

ठहराव चौथा.

बडोदे महाराजा श्रीमंत सरकार सेना- [illegible] बहादुर [illegible] गायकवाड सरकारने इस कोन्फरन्सकी उन्नतिके [illegible] को सहानुभूती प्रदर्शित कि है, इस लिये यह कोन्फरन्स श्रीमंत सरकारका अंतःकरणपूर्वक उपकार मानती है.

ठहराव पांचवा.

डेलीगेट फिसिटरकी फी दो रुपयेके बदले चार रुपये आयन्दासे वास्ते कायम करनेका ठहराव किया जाता है.

ठहराव छट्टा. (धार्मिक शिक्षण).

अ—हिंदुस्थानमें बहोतसी जगहपर अपने संघकी तर्फसे जैनशाला खोली गई हैं यह देखकर कोन्फरन्सको संतोष होता है और जहां जहां ऐसी धार्मिक संस्था नहीं है वहां वहां ऐसी संस्था खोलनेके वास्ते यह कोन्फरन्स अग्रेसरोंको आमंत्रण करती है.

ब—जैन फिलसुफी (तत्वज्ञान) व साहित्यके प्रचारके लिये और प्राचिन इतिहास शंशोधनके लिये जैन ट्रेनिंग कॉलेज रतलाममें खोलनेका जो ठहराव गत मेनेजिंग कमिटीमें हुवा था उसके निभावके वास्ते मासिक रुपिया १०० की मंजुरी दि गई थी इतनेमें निर्वाह होना मुश्कील मालुम होनेसे उसके बदलेमें मासिक रु. २५० देनेकी मंजुरी धार्मिक फंडमें से देनेमें आती है.

फ—इस काम के सेक्रेटरी तरिके जनरल
री शेठ अमरचंदजी पितळीआ व लाला
ळचंदजी दिल्हीवाले व सुजानमलजी बांठीआ
ादवालेको मुकरर करनेमें आते हैं. उनको
योग्य लगे उन मेम्बरोंका सलाहकार
व काम करनेवाली कमिटी कायम कर-

राव सातवाँ (व्यवहारिक शिक्षण)

अ—अपनी समाजमें कोई भी भाई व
आशिक्षित न रहे इस वास्ते हरेक गामके
ी जुवाबदारी तर्फ उन ग्रामोंके-अग्रेसरों
यह कोन्फरन्स लक्ष खेंचती है और यह
ण देनेकी स्थानिक संघ अपने अपने ग्रा-
कोशीस करेंगे, ऐसी यह कोन्फरन्स चा-
है.

ब—उंच शिक्षण के प्रचारके लिये मुंबा-
एक बोर्डीन्ग हाउस खोलनेका ठराव करके
के निर्वाहके लिये मासिक रु. १०० की
ी गत मेनेजिंग कमिटीके तरफसे दि गई थी
ामें निर्वाह होना मुश्कील मालुम होनेसे
के बदलमें मासिक रु. २५० देनेकी मंजुरी
ाहारिक फंडमेंसे दि जाती है.

क—बोर्डिंग हाऊसमें पढनेवाले विद्या-
र्थीको धार्मिक शिक्षण फरज्यात लेना होगा
र शिक्षकका पगार चार आना फंड पैकी
वहारिक फंड पोणे आनमेंसे देनेका गत मे-
जिंग कमिटिमें ठहरानेमें आया था उसके
लेमें अब यह पगार उक्त ग्रांटमेंसें दिया
वे.

ड—इस बोर्डींगके सेक्रटरी तरीके रा. रा
गोकुलदास राजपाळ मोरवीवाले जनरल सेक्रट
व वकील पुरुषोत्तम मावजी राजकोटवाले
जेसींगभाइ उजमसी शाह अमदावादवाले औ
शेठ मेघजीभाइ थोभण मुंबइवालेको मुकरर क
नेमें आते हैं. उनको स्वतः योग्य लगे उन मेम्ब
रोंका सलाहकारक मंडळ तथा काम करनेवा
कमीटी कायम कर लेवे—

ठहराव आठवाँ. (संप)

रतलाम कोन्फरन्समें जैनोंके पृथक् पृथ
संप्रदायमें संपकी वृद्धी करनेका तथा एक दुस
रेकी निंदाके लेखों व व्याख्यानों रोकनेका
ठहराव कीया गयाथा उसका बराबर अम
नाहि हुवा देखकर यह कोन्फरन्स दीलगीरी ज
हेर करती है और आइन्दा संपकी वृद्धी करने
विशेष प्रयत्न करनेकी भलामण करती है.

ठहराव नववाँ.

मेनेजींग कमीटी जो गत सालमें मुकरर व
गइ है उसको नीचे मुजब और भी काम करने
सत्ता दी जाती है:—

अ—हर एक साल कोन्फरन्स कीसी तर
हसे और कहां भरना, उसके वास्ते बंदोबस
करनेका व प्रेसीडेन्ट मुकरर करनेका अधीकार

परन्तु कोन्फरन्स अपने तोरपर भरे उस
प्रेसीडेन्ट मुकरर करनेका अधिकार जहां कोन
रन्स हो वहांकी रीशेपशन कमीटीका है. लेकी
जनरल सेक्रटरीकी सम्मती उनको मीलन
जरुर है—

ब—चार आना फंडकी व्यवस्था चौथी
फरन्स भरे वहां तक करनेका अधिकार
ा जाता है.

क—कोन्फरन्सकी हेड ओफीस कहां रखना
र उसका खर्च कीस तरहसे रखना, उसका
धेकार.

ड—मेनेजींग कमीटीमें कुल जीतना इससे
धे मतका कोरम रख्खा जाता है. मेम्बर
पना मत खास प्रतिनीधी द्वाराभी दे शक्ते है.
इ वख्त कोरम पुरा न हो तो दुसरी तारीख
महीना बादकी रख्खी जावे और फीरसे सबको
ख्बा दी जावे. उस तारीख पर जो कोरम
ा नही हो तो बीन कोरम ही काम चलाया जाव.

ठहराव दशवाँ.

कोन्फरन्सके फंडको देनेके व ठहरावोंको अमलमें
नेके बाबदमें जो इसके विरुद्ध कोशिश करे
नके वास्ते कोन्फरन्स मुनासीब बीचार करेगी.

ठहराव ग्यारहवाँ.

जीन जीन मुनी महाराजाओंकी संप्रदायमें
ाचार्य मुकरर नहि है उन गच्छोंमें आचार्य
पूज्य) मुकरर करके गच्छकी मर्यादा दो
र्षके अंदर बांधलेना चाहीये, अैसी यह को-
फरन्स सर्व मुनीमहाराजाओंको अर्ज करती है.

ठहराव बारवाँ.

प्रत्येक ग्राम व शहेरके ज्ञाती अग्रेसरोंको
यह कोन्फरन्स सलाह देती है के अपने नैतिक
व्यवहारसे विरुद्ध बडे दोष करने वाले कोइ
वधर्मी मालुम होवे तो उनको योग्य शिक्षा की
वे, जीससे दुसरोंको नसीयत हो.

ठहराव तेरवाँ. (जीवदया)

व्होतसे प्रसंगोंमें जीते जनावरोंका भोग
देनेमें आता है. व उसी तराह प्राणी खोराक व
प्राणीयोंके अवयवोंसे बनती हुइ चीजोंके वापरके
व्होतसे फेलावसे ज्यादा हिंसा होती है. उनको
बंद करनेके वास्ते उन विषयोंपर उत्तेजन देकर
निबंधो लीखाकर, उपदेशकोंसे उपदेश दीलाकर
व साहित्यका व्होत फेलाव कराकर अैसी हिंसा
बंध करनेके वास्ते योग्य प्रचार करनेकी आव-
श्यक्ता यह कोन्फरन्स भार देकर स्वीकार
करती है. छोटे बडे जानवरोंके वास्ते पांजरा-
पोळ कायम करनेकी और जो कायम हो
उनकी हालकी अपूर्ण कारवाइ हो उसको पूर्ण
करनेकी भलामण करनेके साथ जीवहिंसा
बंध करनेवाले व जीव दयाके प्रसंगमें उत्तेजन
देनेवाले राजा महाराजा वीगेरे सब अहिंसा के
रीवाजोंका प्रचार करने वालोंको यह कोन्फरन्स
धन्यवाद देते हुवे उपकार मानती है.

ठराव चउदवाँ. (हानीकारक रीवाज)

अपनी जैन समाजमेंसे बालविवाह, वृद्धविवाह,
कन्याविक्रय, वरविक्रय, एक स्त्री होते हुवे दुसरी
स्त्री करना, दारुछोडना, वैश्यानृत कराना वगेरा
हानिकारक रीवाजो दुर करनेकी, व लग्न तथा
मृत्युके प्रसंगपर फजुल खर्च कम करके, सद्-
मार्गमें खर्च हो इस तरह करनेकी हरेक
स्थानकवासी संघ पूर्ण कोशीष करेंगे ऐसा यह
कोन्फरन्स चाहती है.

ठराव पंदरवाँ. (नीराश्रीतोंको आश्रय)

अपनी जैन कोमकी विधवा और निराश्रीत

व्हेनों तथा भाइओंको आश्रय देनेकी अगल यह कोन्फरन्स स्वीकार करती है.

ठहराव सोहलवाँ.

जनरल सेक्रेटरी गत वर्षमें जो नीमे गये हैं उनको चोथी (चतुर्थ) कोन्फरन्स तक कायम रखे जाकर श्रीयुत शेठ बालमुकुंदजी साहेब सतारावालोंकोभी शीवाय में जनरल सेक्रेटरी तरीके नियत किये जाते हैं.

ठराव सतरवाँ.

इस कोन्फरन्सके कार्यमें बी. बी. एन्ड. सी. आइ. रेल्वे, आर. एम. रेल्वे, नोर्थ वेस्टर्न रेल्वे, आउध और रोहीलखंड रेल्वे, बी. जी. जे. पी. रेल्वे मोरवी रेल्वे, जोधपुर-बिकानेर रेल्वे, उदयपुर चीतोड रेल्वे, सादरा सहारनपुर रेल्वे. वगैरा रेल्वेने कोन्फरन्समें पधारने वाले साहेबोंको कन्सेसन देनेकी मेहेरबानी की है उनका व मुंबाइ समाचार, सांजवर्तमान, जैनसमाचार के जीनोने अपना रिपोर्टर्स भेजकर और जो जो प्रकारसे कोन्फरन्सकी सेवा बजाइ है इस वास्ते इनका यह कोन्फरन्स उपकार मानती है.

ठराव अठारवाँ.

इस कोन्फरन्सके महान कार्यमें मदद करनेके लीए अपना पूर्ण कर्तव्य समजकर लायक बुद्धीमान दुर दुरसे आने वाले व खास अजमेरके वीर वोलंयरीओंने संघकी जो सेवा परमोत्साहके साथ बजाई है इस लिये कान्फरन्स उन वोलंटीयरोंका आभार जाहीर करती है. शीवाय में उनको प्रेसीडेन्ट साहेब शेठ बालमुकुंदजी सतारे वालेकी तरफसे चांद इनायत कीये जाते हैं.

ठराव उन्नीसवाँ.

अजमेर कोन्फरन्सको फतेहमंदीसे पसार करनेके वास्ते अजमेरके संघका और खासकर रायबहादुर शेठ उमेदमलजी व रायशेठ चांदमलजीका अंतःकरणसे यह कोन्फरन्स आभार मानती है और रायशेठ चांदमलजीने कोन्फरन्सके तमाम खर्चका बोजा व हेड ओफीसके कार्यका बोजा उठाकर जो महान सेवा बजाइहै इसवास्ते यह कोन्फरस उन साहेबको मानपत्र देनेका ठहराव करती है.

ठराव २० वाँ.

गइ सालमें रतलाममें कोन्फरन्सका कार्य फतेहमंदीसे पार उतारनेके लीये रतलाम संघ और शेठ अमरचंदजी पीतलीआ के जीन्होंने इस वख्त भी अच्छी तरेहसे मदद दी है इस लीये यह कोन्फरन्स उन साहीबका उपकार मानती है.

ठराव २१ वाँ.

इस कोन्फरन्सका प्रेसीडेन्ट पद शेठ बालमुकुंदजी सतारेवालेने स्वीकार फरमाकर जो सेवा बजाइहै इस लीये यह कोन्फरन्स उनका अंतःकरण पूर्वक आभार मानती है.

ठराव २२ वाँ.

हेड ओफीसका रीपोर्ट जो ओनररी सेक्रेटरी कुं. छगनमलजी तरफसे बहार पडाहै वो बहाल रखनेमें आता है. और कुं. छगनमलजीने ओनररी सेक्रेटरी तरीके काम उठायाहै इसलिये उनको अंतःकरणसे धन्यवाद दिया जाता है.

नोट.

कोन्फरन्सको प्रत्येक वर्ष भरना. जो कोई कोन्फरन्स की मांगणी करे तो उनको मंजूर करना. उसका खर्च व फी की आमदानी कुल जुमेवारी उनकी. न कोई कोन्फरन्सके खर्चसे भरनेकी मांगणी करे तो कुल जुमेवारी कोन्फरन्सकी. वन सके वहांतक ज्यादेमें ज्यादे फी की आमदानीसे ज्यादा खर्च नहीं होना चाहिये अगर इसमें किसी भी सबबसे ज्यादा खर्च पडे तो कोन्फरन्स दुसरी तजवीज सोचे. अगर जो कोई मांगणी कोन्फरन्सकी जुमेवारी की न करे तो कोन्फरन्सकी मेनेजिंग कमिटीके तरफसे मुकरर की [illegible] कोन्फरन्स [illegible] होना चाहिये और कार्यकी मदद के लिये जो जरूरत हो तो [illegible] [illegible] हो तो महाशयोंको भेजनेका बंदोबस्त करे.

कोन्फरन्सका काम सम्पूर्ण होनेके बाद ता. १३-३-१९०९ के रोज इकठ्ठी हुई मेनेजिंग कमिटीके ठहरावों.

ठराव १ला.

हेड ऑफिस अजमेरमेंही कायम रखकर ओनररी सेक्रेटरी तरिके कुंवर छगनमलजीको ही कायम रखनेमें आते है.

ठराव २ रा.

हेड ऑफिसके खर्चके लिये गत मेनेजिंग कमिटिमें जो मंजुरी दि गई है उसी माफक इस सालके वास्ते भी मंजुरी दि जाती है.

ठहराव ३ रा.

खर्चका आखरी हिसाब तपासनेके वास्ते कुंवर वरधभाणजी पितलीआ व वकील पुरुषोत्तम मावजीको ओडीटर तरीके नीमे जाते हैं.

ठहराव ४ था.

हरएक प्रांतके वास्ते गत मेनेजिंग कमिटीमें प्रांतिक सेक्रेटरी मुकरर किये गये हैं उनमेंसे केईने मंजूर नहि किया है उनेके बदले में दूसरा मुकरर करना व ज्यादे मुकरर करना अथवा किसीके नामको कारणसर बदलना हेड ऑफिसको अखत्यार है, जनरल सेक्रेटरी रायशेठ चांदमलजीसे मंजुरी ले लेवे. और चार आना फंडकी वसुली करानेके वास्ते अगर किसी जगह आदमी भेजकर वसुली करनेकी जरुरत हो तो प्रांतिक सेक्रेटरीकी मारफत आदमी भेजाकर वसुली कराई जावे उसके खर्चके लिये सबी प्रान्तोंके वास्ते कुल रुपये १५०० पंद्रासो की मंजुरी हेड ऑफिसको दि जाती है सो ऑफिस प्रांत जितनी बडी हो उस माफिक मुनासब समजे इतने रुपेकी मंजुरी रायशेठ चांदमलजीकी सलाहसे प्रांतिक सेक्रेटरीकों देवे. उपर मुजब खर्चके लिये जो रुपे प्रांतिक सेक्रेटरीकों देवे उसके खर्चका हिसाब आखीर साल में हेड ऑफिसमें भेज देवे. और चार आना

फंडके लिये दरेक शहर व ग्रामोंवालोंको ऑफिससें खबर देना चाहिये के चार आना फंड के रुपे प्रांतिक सेक्रेटरीकी मारफत हेड ऑफिसमें भेजें. उपरोक्त पंदरासो रुपे चार आना फंड खाते नामे लिखा जावे.

ठहराव ५ वाँ.

अजमेर ऑफिस मुकरर होनेके पहिले ऑफिस मोरवीका तथा उपदेशक तथा रिपोर्ट मोरवीकी छपानेका जो रुपया खरचेके हालमें जमाखर्च नहि पडे हैं वो रुपे मोरवीके व्याजके उत्पन्न खातेमें नामे मांडकर वो खाते बराबर कर दिये जावे.

ठहराव ६ ठा.

चार आना फंडकी उत्पन्न ता. २८ फरवरी १९०९ तक जो रकम वसुल हूइ है, उसमें उपदेशक खरचका रुपया नामे मांडकर बाकी जो रकम रहे, वो ठराव मुजब कुल खातेमें जमा करके चाराआनाफंड खाता इस तारीखतक बराबर कर लीया जावे. यह जमा खर्च ता. २८ फरवरी के पहिले जुने हिसाब मेंही कीया जावे. और ये कुल खाते जुदे जुदे रखा जावे. जनरल फंडके इन खातोंके सामल चार आने फंडके इन खातोंकी रकम नहीं की जावे.

ठहराव ७ वाँ.

कॉन्फरन्सके फंडके रुपे जो हालमें मोजुद है वो और फेर जो रुपया आवेगा वो कुल रुपे बंबइ बेंक, बेंगाल बेंक और इंडिया बेंक ए तीन बेंकोंमें रायशेठ चांदमलजी और शेठ केवळदास त्रिभुवनदासके नाम पर श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कोन्फरन्सके जनरल सेक्रेटरी के ओहदे पर रखना चाहिये.

(उपरका ठहराव अगली वक्त मेनेजींग कमीटीमें कीया गया है सो चांदमलजी शेठ और केवळदासजी शेठने करनेका है.)

ठहराव ८ वाँ.

जैन ट्रेनिंग कोलेजके लिये सूत्रों व लायब्रेरीके सामान व कालेजके सामानके खर्चके लिये रुपे ५०० जैन ट्रेनिंग कॉलेज फंडमेंसे कोलेजके सेक्रेटरीको देनेके लिये मंजुरी दी जाती है. और असेही बंबइ बोर्डींगमें सामान व पुस्तकों लाइब्रेरी वगैरे के लिये रु. ५०० बोर्डींगके फंडमेंसे बोर्डींगके सेक्रेटरीको देनेके लिये मंजुरी दी जाती है.

ठहराव ९ वाँ.

केइ राजस्थानामें कइ प्रकारकी जीव हिंसा बंद होनेके पुराने नियम रीयासतो तरफसे कायम कीये गये हैं, उनका बराबर प्रतिपालन हरजगह नहि होता है, वास्ते छे जनरल सेक्रेटरीकी एक जीवदया कमीटी नीयत की जाती है, की ये साहब हेड ओफीस मारफत ज्हां ज्हां पर नियमका पालन बराबर नहि होता हो वहांसे जो रियासतों तरफसे ठहराव (नियम) हो उनकों मंगाकर, देखकर, उन नियमोंका प्रतिपालन बराबर होनेके लिये जनरल सेक्रेटरीयोंके नामसे अरजीयें वगैरा के जरीयेसे कोशीश करावे.

ठहराव १० वाँ.

जैनसिरिझकी ५ पुस्तकें तैयार करानेके वास्ते हालमें असा ठहराव करनेमें आता है की सीरीझमें दरएकमें कोन कोनसी बाबतों ।

करना इस विषयका अच्छा निबंध जाहर खबरसे तीन महिनेके अंदर लिखनेवालेको जिसका निबंध पास होगा उसको रु. ५० इनाम देनेमें आवेगे और यह रुपे धार्मिक फंडमेंसे दिया जावे. इस कामके वास्ते नीचे लिखेमेम्बरोंको कमीटी नीयत करनेमें आती है.

(१) शेठ बालमुकुंदजी–सतारा. (२) शेठ अमरचंदजी पितल्या–रतलाम. (३) वकील पुरुषोत्तम मावजी–राजकोट. (४) डाक्टर जीवराज घेलाभाइ–अमदावाद– (५) केशरीचंदजी भंडारी –देवास

यह मेंबर निबंधोंको पास करके सीरीझ बनानेका निर्णय करके और अमरचंदजी ५ पुस्तकें सीरीझकी किताबें तैयार कराके लिखनेवाले पंडित वगेरे खर्चेके वास्ते धार्मिक फंडमेंसे रु. ३०० तीनसो तक देनेकी मंजुरी दी जाती है.

श्री श्वेताम्बर साधुमार्गि जैन भाईओनी अजमेर खाते मळेली त्रीजी कोन्फरन्सनो अहेवाल.

त्रीजी 'स्थानकवासी जैन कोन्फरन्स'नो उद्घोष नजीकमां ने नजी संभळातां जतां अजमेर मोटी धामधूममां पडी गयुं हतुं. वोलंटीयरोने कोन्फरन्स भरावा अगाउ सात दिवसे बोलाव्या हता, त्यारथी कोन्फरन्समां भाग लेवाने माटे परगामथी उतरनाराओनी संख्या प्रति दिवस वधती जती हती. कोइ अलौकिक धामधूममां अने असाधारण रीते मोटा कार्यमां आखुं शहर गुंथाइ गयुं होय तेवो भास थतो हतो. आ कारणथी

लोकमेळो

थतो जतो हतो अने नजीकना प्रांतोमांथी स्वधर्मी बंधूओनां मोटां टोळेटोळां उतरी पडतां हतां. काउन्सील कमीटीने लगता मेम्बरोए बे दिवस अगाउथी आववानो जरूर हती, परंतु एवी रीते बे दिवस अगाउ आवेला काउन्सील कमीटीना मेम्बरो मात्र ८–१० हता, ज्यारे ते सिवायना बीजाओ के जेओनुं आगमन कोन्फरन्स अगाउना एकज दिवसे थवानुं वधारे वाजबी मानी शकाय तेओ घणी मोटी संख्यामां आवेला हता. मारवाड, मेवाडमांथी वगर आमंत्रणे केटलीक स्त्रीओ पण उतरी पडी हती, जेथी आ लोकमेळो पचरंगी पाघडीओ साथे पचरंगी पहेरवेशवाळो पण जणाइ आवतो हतो.

वॉलंटीयरो.

वॉलंटीयरोनी संख्या ३०० उपरांतनी हती, जेमांना पांच वॉलंटीयरो साइक्लीस्ट हता. माळवा, पंजाब, गुजरात, कच्छ, काठियावाड, दक्षिण ए सघळा प्रांतोमांथी वॉलंटीयरो आव्या हता कच्छ प्रदेश के जे आज सुधी कोन्फरन्स भाग लेतो नहतो, ते तरफथी पण

आव्या हता, तथा थोडा प्रतिनिधिओए पण हाजरी आपी हती. वोलंटीअरोए एकंदरे घणी सारी सेवा बजावी हती, जो के केटलाक वॉलंटीअर तरीकेना कामथी तद्दन बीनवाकफ होइ बोजा रूप थइ पडेला पण जोवामां आव्या हता. तोपण म्होटो भाग घणो उत्साही अने महेनतु जोवामां आवतो हतो. डीसीप्लीनना ट्रेनींग वोलंटीयरोने अगत्य छे तेथी पण वधारे सारी आपवानी काळजी आवती साल अपाशे तो ते बहादुर वर्ग वधारे सारो देखाव करी शकशे.

उतारानी व्यवस्था.

उताराओनी व्यवस्था घणी उमदा रीते करवामां आवी हती. मकानो घणां सुंदर अने सगवडता भर्यां हतां, नोके तेमांना केटलाक उताराओ दूर दूर होवाथी केटलीक अगवड तो पडती हती. उतारा कमीटीना सेक्रेटरी मी. भंडारी, मी. पोपटलाल इत्यादि खंतपूर्वक काम करता हता, तो पण केटलाक उद्धत लोको कार्यवाहीओनी भलाइनो खोटो लाभ लेवा चूक्या नहोता. सेक्रेटरीए अमुक गामना प्रतिनिधिओने माटे खास राखेलो उतारा एक जोरावर युवाने पोता माटे बथावी पाडयो हतो अने ते पर चोडेलुं लेबल फाडी नांख्युं हतुं! ते प्रतिनिधिना आवा कामथी सेक्रेटरीओ घणा नाराज थया हता. पण कोन्फरन्सना कामकां खलेल न पडे एटला माटे सहनशीलता जाळवी रह्या हता.

जमवानी व्यवस्था.

जमवानी व्यवस्था एकंदर रीते सारी हती. मोतीकटलामां ज खास त्रण रसोडां राखवामां आव्यां हतां, जेमांनु एक मुंबइ इलाका माटे, एक पंजाब माटे अने एक दक्षिण, माळवा इत्यादिने माटे हतुं. खोराक सारा आपवामां आवतो हतो. प्रतिनिधिओ अने प्रेक्षको उपरांत घणा माणसो आ रसोडामां जमी जता हता. आथी शेठ चांदमलजीने घणी अगवडमां उतरवुं पडयुं हतुं. शेठ मजकुरनी जगाए कोई सामान्य माणस होत तो छेक छेल्ली घडीए बगरनोतरे आवी भरायला लोकामाटे भोजननी व्यवस्था थई शकवी अशक्य थई पडत.

काउन्सील कमीटी.

गई ता. ७-८-९ ने दिवसे रात्रे मोतीकटलामां राजशेठ [illegible] प्रमुखपणा नीचे सबजेक्ट कमिटीनी बेठक करवामां आवी हती, जेमां खरा काउन्सीलरोनी संख्या घणी नानी हती. केटलाक उपयोगी ठरावो तेमां करवामां आव्या हता, जेमांनो मुख्य ठराव कोन्फरन्सने पोतानो निभाव करवा जटलुं सामर्थ्य मळे तेवी एक योजना करवानो हतो. डेलीगेटो अने विझीटरोनी फी वधारवा अने जो कदापि कोन्फरन्सने आमंत्रण आपनार कोई न मळे तो नियवामां आवेली एक स्टेन्डींग कमिटी तरफथी अमुक प्रांतमां कोन्फरन्सनी बेठक भरवी. आ शिवाय जैन बोर्डिन्ग अने जैन ट्रेनिंग कोलेजने लगतो केटलोक विचार चलाववामां आव्यो हतो. ता. ९ मीए रात्रे बे वागतां सुधी आ कमीटी बेठी हती अने तेमां एवो विचार चलाववामां आव्यो हतो के-जैन ट्रेनिंग कोलेज अने जैन बोर्डींगने शा माटे कॉन्फरन्स फंडमांथी दरेकने माटे रु. २५० न आपवा, ते समये केटलाक मुंबइ निवासीओए जैन ट्रेनिंगने माटे लंबाण भाषण साथे हिमायत करी हती.

मंडप.

कोन्फरन्सने माटे उभा करवामां आवेलो खास मंडप शहेरथी साधारण रीते बहु दूर न हतो. ते पोलीस ग्राउन्ड उपर उभो करवामां आव्यो हतो. मंडपनी गोठवण सारी रीते करवामां आवी हती. तेमां लगभग १५०० बेठकोने माटे सगवड हती. प्रमुख माटे राखवामां आवेला प्लेटफोर्म उपर १५० बेठको हती तथा स्त्रीओने माटे पण थोडीएक सगवड राखवामां आवी हती. मंडपनी रचना वखत आवी पहोंच्या छतां पण अपूर्ण हती. छतां कुंवर घनश्यामदास, रा. सुगामी, तथा चोरा.एन्डीअ.एन् ना दृढ नी मेहनत लइने वखतसर सघळुं काम पूर्ण थइए पहोंचाड्युं हतुं.

मंडपने ध्वजा पताकाथी तथा सत्कार अने शिखामणना बोलोनां तोरणो तथा बोर्डोथी सुशोभीत करवामां आव्यो हतो. प्रांत वार बेठको गोठववामां आवी हती. अने वच्चे एक पुल्पीट (वक्ताओने माटे) उभुं करवामां आव्युं हतुं. आ पुल्पीट बराबर मध्यमां न होवाथी अने खास करीने प्रमुख तथा आगेवानोना प्लेटफोर्मथी तो वधारे दूर होवाथी वक्ताओने पोताना शब्दो उच्चारती वखते नकी बेहद खेंचवी पडती हती.

प्रमुखनुं आगमन.

कोन्फरन्सना प्रमुख शेठ बालमुकुन्दजी ता. ९ मीए सवारे ब्यावर खाते उतर्या हता. तेमनी साथे अनुमान २९ माणसोनो रसालो हतो. ब्यावर खातेथी बपोरना एक वागतां तेमने फर्स्ट क्लास रेलवे मोटर द्वारा अजमेर खाते लाववामां आव्या हता. शहेरमां तेमनो सत्कार करवाने माटे एक भव्य सरघस काढवामां आव्युं हतुं. शरुआतमां थोडे सुधी वोलंटीयरोए गाडी खेंचीने मान आप्युं हतुं. थोडे दूर सुधी गाडी खेंचवामां आव्या बाद गाडीने चार घोडाओ जोडवामां आव्या हता. प्रमुखनी साथे शेठ उमेदमलजी लोढा तथा शेठ चांदमलजीए बेठक लिधी हती. सरघसमां वोलंटीयरोए एक नानी फोजना रूपमां जयजयकारना ध्वनि साथे दर्शन आप्युं हतुं.

मोरबी नरेशनुं आगमन.

मोरबीना ठाकोर साहेब अने कॉन्फरन्सना एक पेट्रन सर वाघजी बहादुर ता. ९ मीए आवी पहोंच्या हता. तेमना मानमां पण एक सरघस काढवामां आव्युं. आखा सरघस दरम्यान सघळा वोलंटीयरोए ना. ठाकोर साहेबनी गाडी खेंची हती अने मार्गमां क्यांय पण घोडाओने जोडीने ते गरीब बिचारा प्राणीओने तस्दी आपी हती नहि! ता. १० मीए सवारे लींबडीना ना. ठाकोर साहेब दोलतसिंहजी आवी पहोंच्या तेमनो सत्कार करवाने स्टेशनपर वोलंटीयरोनी एक टुकडी तथा केटलाक प्रतिष्ठित गृहस्थो हाजर रह्या हता.

खास उतारा.

प्रमुख साहेबने शेठ उमेदमलजी लोढानी कोठीमां उतारो आपवामां आव्यो हतो तथा लिंबडी अने मोरबीना ठाकोर साहेबोने कोन्फरन्स मंडपनी पासेज आवेली लोढा साहेबनी बंगावाळी कोठीमां उतारो आपवामां आव्यो हतो. बीजा पण केटलाक आगेवान गृहस्थोने खास उतारा आपवामां आव्या हता.

पहेली बेठक (ता. १० मार्च १९०९ बुधवार)

मंडपमां धमाल.

नो के प्रोग्राम मुजबआजनी बेठकनुंकामकाज बपोरना १२ वागतां शरु थवानुं हतुं,तोपण आवनाराओनी अने मंडपमां दाखल थनाराओनी धमालने लीधे वखतसर काम शरु करी शकायुं न हतुं. लगभग १ वागतां सुधी तो प्रेक्षको अने प्रतिनिधिओ आव्याजकरता हता. आखो मंडप पचरंगी पाघडीओथी शोभी रह्यो हतो. आवनाराओनो सत्कार करवाने माटे एक खास बेंड पण राखवामां आव्युं हतुं. मंडपनी एक बाजुए एक तंबुमां कोन्फरन्स आफीस,वॉलंटीयर ऑफीस तथा "जैनसमाचार" ओफीस राखवामां आवी हती आखो मंडप ध्वजा पताकाथी शणगारवामां आव्यो हतो.

कामकाजनी शरुआत.

सुमारे दोढ वागतां कामकाजनी शरुआत करवामां आवी हती.स्वागत कमीटीना प्रमुख लो[illegible] प्रमुख मी. बालमुकुंदजी, जैन श्वे० कोन्फरन्स[illegible] जनरल सेक्रेटरी मी. गुलाबचंदजी ढढ्ढा, लींब[illegible] तथा मोरबीना ठाकोर साहेबो वगेरे मंडप[illegible] आवी पहोंचता रायशेठ चांदमलजीए तेम[illegible] यथायोग्य सत्कार कर्यो हतो. प्रारंभ[illegible] १० हिंदी विद्यार्थीओए मी. नथमलजी चो[illegible] डीयानां रचेलां चार हिंदी गायनो मंगळाच[illegible] णना रुपमां गाइ संभळाव्यां हतां, जे दर्म्या[illegible] सघळे शांति प्रसरी गइ हती.

त्यारबाद स्वागत कमीटीना प्रमुख रायशे[illegible] उमेदमलजी लोढाए प्रतिनिधिओने आवका[illegible] आपनारुं भाषण वांची संभळाव्युं हतुं, जे नी[illegible] मुजब हतुं.

स्वागत कमिटी के प्रेसिडेन्ट राय बहादूर सेठ उमेदमलजी साहबका भाषण.

नेक नामदार महाराजा साहिबान्, प्रिय स्वधर्मी बंधुओं और अन्य महाशयों !

भारत वर्षके जुदे जुदे भागोंमेंसे पधारे हुवे आप महाशयोंका सत्कार करनेका सुअवसर मिलने से आज मुझको पूर्ण आनन्द होता है. अपनी साधुमार्गी जैन समाज की हरतरहकी उन्नति करनके लिये जो कॉन्फरेन्स पहले भरी गई उसी सिलसिल को कायम रखने क लिये आप सर्व सज्जनोंने यहां पधारने की तकलीफ की, जिनकी सेवा करनेका अजमेर संघकी तरफसे जो मुझे किमती अवसर मिला है

उसके लिये मैं अपनेको भाग्यशाली समझता हुं.

अजमेर शहर एक प्राचीन मशहूर बादशाही तवारीखी स्थान है और अक्सर ओनरेबल एजन्ट गवर्नर जेनरल साहेब बहादुर का कायम रहेता है और जैन श्वेताम्बर व दिगम्बर सम्प्रदायों का विशाल मन्दिर है और रेल्वे वर्कशोप मेओकॉलेज जैनपाठशाळा और वैष्णवोंका तीर्थ पुष्करराज व ख्वाजेसाहब की जारत वगैरा स्थानों से मशहुर हैं.

अपने को ब्रिटिश गवर्नमेन्ट को अंतःकरणसे धन्यवाद देना चाहिये कि इस बादशाहतमें सबको पूर्ण सुख आजादी है.

जब से कॉन्फरेन्स भरने लगी है तब से देशों के सर्व विभागोंमें निवास करनेवाले आप भाई साहबों का पवित्र समागम व मिति बढनेका अत्यन्त लाभ हुआ व धर्म की उन्नति करना तथा हानिकारक रिवाजोंका बंद करना इसका मुख्य हेतु है, जिसकी योजना करने के लिये आप सर्व महाशयों ने परिश्रम उठाकर दूर २ से पधारने कि कृपा करके इस महासभा को शुसोभित की इस लिये पूर्ण आशा है कि आप ऐसा उपयोग करेंगे के जिससे कॉन्फरन्स की स्थिति कायम रहकर धार्मिक व व्यावहारिक कार्य्यों की सिद्धी हो ।

मेरे भाषण की समाप्ति के पहले आप सर्व महाशयों से प्रार्थना है कि इस कोन्फरन्स के प्रेसिडेन्ट पद के लिये योग्य अनुभवी नररत्नको स्थापन करें और अन्तमें यह भी प्रार्थना है कि आप सर्व महाशयों की सेवामें जो हमारी तरफ से न्यूनता रही हो उसके लिये नम्रतापूर्वक माफी चाहते हैं और आशा है कि आप अवश्य क्षमा करेंगे और पवित्र सम्मेलन को संपूर्ण रिति से विजई करेंगे ॥

प्रमुखनी चुंटणी.

प्रमुख चुंटवानी दरखास्त करतां रतलामवाळा

शेठ अमरचंदजी पितलीआए

जणाव्युं के-भाईओ ! आजे मळेला आ महासभाने जोइने मने अत्यंत हर्ष उत्पन्न थाय छे. आजे आ महासभाने माटे आपणे एक खास नायकनी जरूर छे. नायक एवा चतुर होवा जोईए के जे आपणुं कामकाज घणी सारी रीते चलाववाने आपणने एक नेता तरीके सन्मार्गे दोरे. जेनामां सघळा सद्गुणो होय तेज आपणा नायक अथवा नेता अथवा प्रमुख थवाने लायक थई शके. आवा प्रमुख तरीकेना सघळा गुणो आपणे आजे सतारावाळा शेठ बालमुकुंद चंदनमलजीमां जोई शकीये छीए. शेठ बालमुकुंदजी गुणी छे, धर्मीष्ट छे, दयाळु छे अने चार स्कंधनी तप र नित्यमेव करनार छे. तेमना तेवा धर्मगुणो आ धर्मनी महासभामां आपणने वधारे आकर्षे ते स्वाभाविक छे, आ कारणथी हुं दरखास्त करुं छुं के, आजनी महासभानुं प्रमुखपद शेठ बालमुकुंदनी चंदनमलजीने आपवुं.

टोलावाळा रा. बा. कालीदास नारणदास पटेले उपली दरखास्तने टेको आपतां जणाव्युं के:-

શેઠ અમરચંદજીએ જે ગૃહસ્થને પ્રમુખપદ માટે સૂચવ્યા છે તે ગૃહસ્થની શાન્ત મુદ્રા જ તેમની લાયકી બતાવી આપે છે. પૈસાદાર હોવા છતાં સુધારકમાર્ગી પ્રાગતિક મતો અંગીકાર કરવાં એ અતિ કઠિન કામ છે. શેઠ બાલમુકુંદજી શાસ્ત્રના ઘણા સારા અભ્યાસી છે અને પોતાને ઘણે સ્થળે દુકાનો છતાં તે દરેક કામ પર લક્ષ ન આપતાં વાચન મનનમાં જ લાગ્યા રહે છે. એ કારણથી જ એમની આવી શાંત મુદ્રા છે. દક્ષિણની શ્રીગોંદા મુકામે ભરેલી ઓલ ઇન્ડિયા કોન્ફરન્સમાં તેમણે સાધુમાર્ગી મંદીરમાર્ગીની સંયુક્ત કોન્ફરન્સની જરૂરીઆત સ્વીકારનો ઠરાવ પ્રમુખ તરીકે પસાર કર્યો હતો. આવા એક વિદ્વાન અને સરળ સ્વભાવી ગૃહસ્થને પ્રમુખપદે મેળવવાથી જરૂર આપણી આ કોન્ફરન્સ ફતેહમંદ થશે.

जंडीआलाना लाला टेकचंदजीए

वधु अनुमोदन आपतां जणाव्युं के, आप साहेबे मी. पीतळीयानी दरखास्त सांभळी छे, जे उपरथी आपे जाण्युं होवुं जोइए के आपणी कोन्फरन्सने एक नेता अथवा कमान्डरनी जरुर छे. आ कमान्डर हमेशां लायक जोइए. चारे तरफ जोवाय छे के सौ कोमो सुधारा करवा लागी गइ छे. नीचेथी उंचे चडवाने कोशेश करवा लागी छे. तेओ थोडुं घणुं पण करे छे. आज सुधी अमारा भाइओ सूता हता तेओ हवे जाग्या छे. आपणा भणेला भाइओ एक दिशाए चाले छे. त्यारे बीजाओ-नहि भणेलाओ बीजे रस्ते चाले छे पण आपणे सौए एकज रस्ते चालवुं जोइए. कारणके जो आपणे एक रस्ते न चालीए तो आपणुं प्रगतिनुं कार्य मुश्केल थइ पडे. आवुं एक महा भारत काम करवाने एक महापुरुष नायक जोइए. आवा महापुरुषो बहु मुश्केलीथी मळेछे. आजे आपणने प्रमुख तरीके जे नायक मळ्या छे तेओ सघळी रीते लायक छे, तेओ चारे स्कंधनी तपस्या करनारा छे, एम तेमनो संपूर्ण धर्मनी लायकी दर्शावेछे. वळी संपत्ति वाळाओ मोटे भागे धर्मथी विमुख होय छतां आ संपत्तिवळा गृहस्थ धर्मनी सन्मुख छे ए एक विशेषता छे. आ उपरथी आपणने जणाय छे के शेठ बालमुकुंदजी सर्व रीते प्रमुखपदने लायक छे, जेथी हुं ते दरखास्तने टेको आपुंछुं

मोरबीवाळा मी. लक्ष्मीचंद खोखाणीए

આ દરખાસ્તને વિશેષ અનુમોદન આપતાં જણાવ્યું કે મારી માતૃભાષા ગુજરાતી હોવા છતાં અહીં શ્રોતાવર્ગ હિંદી હોવાથી મારી માતૃભાષાનો દ્રોહ કરીને મને હિંદી બોલવાની જરૂર પડે છે. સાહેબો ! આ વખતે આપણને પ્રમુખ ચુંટતાં બહુ મુશકેલી પડે છે. મને લાગે છે કે આ વખતે આપણને મુશકેલી પડી છે તેવીજ મુશકેલી જો આપણને હરવખતે પડશે તો આપણને કોન્ફરન્સ બંધ કરવાની જરૂર પડશે. કોન્ફરન્સનું કાર્ય પુર્ણ કરવાને આપણે બીજાઓની દીલસોજીની જરૂર છે, મી. ગુલાબચંદજી ઢઢા આપણી કોન્ફરન્સમાં હાજર થયા છે- તે આ દીલસોજીનો દાખલો છે. અત્રે ભાષણકર્તાએ પ્રીન્સઓફ વેલ્સની હીંદી મુસાફરી નો દાખલો આપી જણાવ્યું હતું કે પ્રીન્સઓફ વેલ્સે ઇંગ્લાંડમાં પેતાના પિતાને જણાવ્યું હતું કે હિંદને માત્ર દીલસોજીની જરૂર છે; આ પ્રકારની દિલસોજીની જરૂર આપણી કોન્ફરન્સને માટે છે. વળી ના૦ ગાયકવાડે પણ આપણને એક મોટો દિલસોજીનો અને સારી સલાહનો પત્ર મોકલ્યો છે. આવી રીતે આપણને દીલસોજી (sympathy) ની જરૂર છે. કેટલાક કહે છે કે પ્રમુખને પૈસા ભરવાની જરૂર પડે છે, પરંતુ તે ભુલ છે. પૈસા ભરવાનું કાંઈ કરજીઆત નથી. પ્રમુખ તો Prince of Knowledge

જ્ઞાનનો ભંડાર હોવા જોઇએ. આવા પ્રમુખ આપણે શેઠ બાલમુકંદચંદજીને શોધવામાં ખરેખર ભાગ્યશાળી થયા છીએ. (અત્રે આપણ કર્તાને જણાવવામાં આવ્યું હતું કે પ્રમુખે પોતાની બેઠક લીધી છે, માટે હવે અનુમોદનને લંબાવવાની જરૂર નથી.) મને ભાષણ બંધ કરવાનું કહેવામાં આવ્યું હોવાથી મને કેટલાક પોઇંટ કાપી નાંખવાની જરૂર પડે છે. અને શ્રોતાઓને નિરાશ થવું પડેછે, પરંતુ આપણે પ્રમુખની સૂચના માન્ય રાખવી જોઇએ. હું આ દરખાસ્તને અનુમોદન આપુછું.

बाद इच्छावरवाला शेठ शोभागमलजी मुथाए ममत्व भरवानी दरखास्तने थोडा शब्दोमा टेको आप्यो हतो.

त्यार बाद शेठ बालमुकुंदजी मेघनमलजी सतारावाळा प्रमुखनी खुरशीपर बिराज्या हता अने नीचे मुजब पोतानुं भाषण वांची संभळाव्युं हतुं.

प्रेसीडेंटका भाषण.

ॐ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए-सव्वसाहुणं,

श्लोक.

न बंधो न मोक्षे न रागादिलोकम्,
न योगं न भोगं न व्याधि र्न शोकम् ।
न क्रोधं न मानं न माया च लोभम्,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

आदिनाथ आदेकरी, वंदु श्रीवृद्धमान ।
सूत्रदेवगणधर नमुं, दीजे निर्मळ ज्ञान ॥

श्रीमान् धर्मधुरन्धर महाराजा साहिबान् प्रियस्वधर्मी बन्धुओ ! तथा सद्गृहस्थों !

प्रथम श्रीपंचपरमेष्ठी महाराज को नमस्कार करके श्री जैनशासनाधीश श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी जी महाराज के जिन्हों ने संसार समुद्रमें भ्रमित करनेवाले राग और द्वेष को क्षय करके भव्यजीवों के कल्याणार्थ अमृत-धारारूप वाणी प्रकाश की है एसे श्रीवीतराग-देवको नमस्कार करके मेरे धर्म कुल गुनि महाराज के जिनके प्रताप से शुद्ध तत्वमार्ग की मुझे प्राप्ति हुई है उन को नमस्कार करते हुए आज मुझे अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है कि मैं हमारे भारत वर्ष के स्वधर्मी बन्धुओं की इस महासभा में आकर उपस्थित हुआ ।

इस अवसर में आप साहेबो ने कृपा पूर्वक इस महासभा का प्रेसीडेन्ट पद मेरे से अधिक गुणवान् विद्वान् व लियाकतवाले सज्जनो के उपस्थित होते हुए भी मुझ को ही योग्य समझकर बखशीस करने का निश्चय किया है, तो आप सज्जनों का उपकार मानते हुए श्री संघकी आज्ञा को शिर चढाता हुं. और प्रार्थना करता हुं कि मे सर्व देशों के रीति रिवाजो से पूर्ण तौर पर वाकिफकार नहीं हूं, इसलिये न्यूनाधिक की माफी चाहता हुं, आशा है कि सर्व सज्जन क्षमा करेंगे ।

मान्यवर महाशयो ! आज आप सर्व गृहस्थों की हाजरी से इस मंडप को रंग बिरंगा और आल्हादकारक देख कर जो खुशी मुझे प्राप्त होती है, जिसके कारणभूत श्रीमान् ब्रिटिश सरकार है कि जिनके निर्विघ्न राज्यमें अपन एकत्रित होकर धार्मिक और सांसारिक सुधारे कर सक्ते हैं ऐसे श्रीमान नामदार शाहनशाह सप्तम एडवर्ड महाराजकी समस्त साधुमार्गी जैन कोनफरेन्स की तरफसे वफादारी जाहिर करता हुं.

मेरे भाषण की सरूआतके पहले श्री श्रद्धाशील दयालु हृदय, सर्व गुणालंकृत अपनी कोनफरेन्स के परमेनेन्ट पेट्रन श्रीमान् धर्मधुरंधर महाराजा साहिब श्री श्री १०८ श्री सर वाघजी वहादूर G. C. I. E. कि जिन्होंने यहां पधारनेकी खास तकलीफ लेकर इस कोनफरेन्स को सुशोभित की है में इन उक्त महाराजा साहिब का मैं पूर्ण आभार मानता हूं।

संप.

प्रिय बंधुओ वर्त्तमान कालमें जैन नामकी प्रवृत्ति बिलकूल ही जूदी होगइ है जैन इस शब्दका खास अर्थ राग द्वेषका जीतने का है और इस धर्मके अनुयायी किसी भी रीति से विपरीत प्रवृत्ति में चले तो बहुत शोचनीय है सर्व भाइयों की तरफ सम्यक् दृष्टि से देखना भ्रातृभाव बढाना, किसी भी जीव को तकलीफ नही देना, यह जैन का मुख्य सिद्धान्त है जब हिंदुस्तान के चारों तरफ प्रत्येक कोम में संपका पवन फैल रहा है और जिस के लिये अपनी महान कोन्फरेन्स तन मन धनसे कोशिस कर रही है और जिसके ही जरिये से आज अपन ऐसी उच्च स्थिति में प्राप्त हो सक्ते है वो संप अपनों में कमती हो यह कैसा शोचनीय है! अपने श्रीमान विद्वान तथा मान्यवर पुरुषों ने जो २ संप के लिये कार्य किये हैं उनको अनुकरण करना यह अपना कर्त्तव्य है वर्त्तमान समय में अपनी तीन ही कौमें अपनी २ संप्रदाय में अलग २ कोन्फरेन्स भरका पैसे और समयका नाश करतीहै उनको सामान्य बाबत में संप से एकत्रित होकर एक ही कोन्फरेन्स भरना चाहिये. आपस में मत भेद रखने से पैसे और मेहनत की हानि होती है और अपने वीर प्रभु के महान फरमान का लोप होता है. ऐसी चित्र विचित्र स्थिति से अपन कब सुधर सकते है इसका विचार तो कीजिये यह सम्यक द्रष्टि अर्थात जैन के लक्षण नही है ॥

गइ साल रतलाम कोन्फरन्स में संपके लिये जो ठहराव हूआ था उससे संबंध रखनेवाले उसपर प्रतिबद्ध नहीं रहे तो यह कोन्फरेन्सको बलहीन बनानेका उपाय कहलावेगा. इससे मैं जोर देकर कहता हुं कि उसीपर बराबर प्रतिबद्ध रहनेमें अपना हित है ॥ अपनी कोन्फरेन्स को संगीन बनाने तथा सर्व भाइयोंकी दिलसोजी कायम रखने के लिये ऐसे लेखो को उत्तेजन देने से अलग रहने की मैं मलामण करता हुं ॥

व्यवहार शुद्धि (नीति)

मान्यवरो! व्यवहार की शुद्धि ही मनुष्य का खास भूषण है, जिसका व्यवहार (प्रवृत्ति) शुद्ध है वही सच्चा जैन कहा सकता है नीति ही धर्म का मूल है लेकिन आज उस नीति की प्रवृत्ति अपनेमें चाहिये वैसी दिखाई नही देती है एक वख्त ऐसा था कि हाकिम लोग जैनियोंकी गवाह और दलील को विशे मान देते थे. और उनके मुकदमे वगैरा वगैर गवाही सही करते थे वडी भारी प्रतिष्ठा थी लेकिन अफसोस की बात है कि अब कालदोष से इस प्रतिष्ठा में न्युनता हो गइ है इस के सुधार के वास्ते वीर परमात्मा ने श्रावक के लिये बार व्रतादि जो नियम फरमाये है उस फरमान अनुसार वर्ताव करने से व्यवहार वहुत ही शुध्ध रहता है इस लिये जो आप सच्चे जैन कहलाना चाहते हो तो प्रथम अपनी प्रवृत्ति को सुधारो वगैर नीति की प्रवृत्ति के धर्म प्रवृति विधवा का श्रृंगार जैसा है भाइयो! चेतो यह अवसर सो रहने का नहीं है देखो जवान उमर के अपने ही फरजंद बहुत ही गिरती हूइ स्थिति को प्राप्त हो रहे हैं बहूत से जवान उमर के लडके देवगुरु से दूर रहे लेकिन जिन्होने पोषण करके अथाह उपकार किया है उन्ही मात पिताओं के साथ ऐसा अपरिचित व्यवहार कर रहे है. कि जो अवर्णनीय है॥ लेकिन इस में उनका दोष नहीं है सोचा जाय तो दोष उन्ही माता पिताओं का है कि जिन्होंने प्रथम से ही सद्ज्ञान का बोध न कराया. क्या ऐसी स्थिति में भी आप साहेब उनके वर्ताव सुधारने का प्रयास नहीं करोगे। अब भी जो सुधारना चाहते हो तो उसका खास उपाय एक नैतिक ज्ञान ही पाया जाता है. वास्ते सभी माता पिताओं का यह फरज है कि बचपन से ही अपने लडके और लडकियों को नीति का प्रचार करावें जिससे व्यवहार शुद्ध रहे॥

धार्मिक तत्त्वज्ञान की वृद्धि।

महाशयो! वहुत भाई धार्मिक ज्ञान का अभ्यास करते हैं लेकिन शास्त्रों के रहस्य कोन समझने की वजह से कई लोग विपरीत श्रद्धावान् होकर उलटी प्रवृत्ति कर रहे हैं जिसका मुख्य कारण शास्त्रों की लेखक अशुद्धता और अभ्यास करानेवालों की खामी है वास्ते प्रथम विद्वानों व मुनि महाराजाओं से. शास्त्रों के लिखित दोषों को शुद्ध कराना चाहिये और अपने धर्म, कर्म व्यवहार को शुद्ध करने के लिये अनेक प्रकार क कष्ट सहन कर धर्म का प्रबल फैलाव कर रहे हैं एसे मुनि महाराजाओं को असरकारक वक्ता विचारशील और वादी बनने के लिये सूत्र सिद्धांतादि वस्तुओं से हर प्रकार मदद देना चाहिये सिवाय अपन लोगों में भी उंचे प्रकारकी विद्या व तत्त्वज्ञान शिखनेका रिवाज बहुत ही कम पड गया है आत्मिक शक्तिका विकाश करने व पदार्थोंका चराचर स्वरूप जाननके लिये धार्मिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करनेकी खास आवश्यकता है उस आवश्यकता के

देकर गत कोन्फरेन्स में जैन ट्रेनिङ्ग कॉलेज स्थापन करने का ठहराव किया गया था और मेनेजिङ्ग कमेटी में इसके निर्वाह खर्च के लिये हाल फण्ड कमी होने से मासिक रु० १००) कॉन्फरेन्स फण्ड के व्याज में से देने की मंजुरी दी गइ है परन्तु इतनी मंजुरी से जैन ट्रेनिङ्ग कॉलेज का निर्वाह नहीं हो सकता है वास्ते इस खाते में मदद देकर एक दम तरक्की पर लाने की खास आवश्यकता है सो हरेक बन्धु इस खाते मे तन, मन और धन से अवश्य मदद देवेंगे और ऐसे कॉलेज में पढाने के लिये व धार्मिक ज्ञान का फैलाव ज्यादा करने के लिये मागधीसीरीज इन के वास्ते जो मेनेजिङ्ग कमेटी ने ठहराव किया है वह भी उसके कार्य्यवाहक जल्दी तय्यार करेंगे ऐसी आशा रखता हूं और जैनशालाओंमें प्राथमिक धार्मिक ज्ञान देनकेलिये क्रमशः जैन सीरीज बनाकर हरएक जगह प्रचलित करने की भी आवश्यकता है ॥

व्यावहारिक शिक्षण.

प्रिय मान्यवरो ! धर्म कर्म व्यवहारके साधन में मुख्य आधार शिक्षण का है आज अपनी कोम शिक्षण में पश्चात रहनेसे धर्म, कर्म व्यवहारकी कितनी न्यूनता होती हुई चली जाती है आज जिस प्रकार अन्य समाज के गृहस्थ बडे बडे ओहदे पर देखनेमें आते हैं उसी तरह अपनी समाज के गृहस्थ विशेष नजर में नहीं आते वास्ते व्यावहारिक शिक्षण की खास आवश्यकता है ॥

कई विद्वान् बुद्धिमान और उपयोगी जैन बालकोंको गरीब स्थिति के कारण शिक्षण प्राप्त करने का अवसर ही नहीं मिलता है और जो किसीने शुरु किया तो निर्वाह नहीं होनेसे अधबीच में अभ्यास छोडना पडता है वास्ते मैं जोर देकर कहता हुं कि अब भी जागकर अपने सन्तानों व बुद्धिमंत चंचल विद्यार्थीयों को स्कोलरशिप देकर व्यावहारिक शिक्षण का अभ्यास कराओ और पश्चात रही हुइ जैन समाज को उंची पंक्ति पर लेजाने का प्रयास करो व्यावहारिक शिक्षण को उतेजन देनेके लिये कॉलेजो में पढनेवाले विद्यार्थियों की तकलीफों को दूर करने के वास्ते गत कोन्फरन्स में बोर्डिङ्ग स्थापन करने का ठहराव करके मेनेजिङ्ग कमेटी में हाल फण्ड कम होने के कारण मासिक रु० १००) निर्वाहार्थ व्यावहारिक शिक्षण के फण्ड के व्याज में से देने की मंजुरी हुइ है वो भी अब तुरन्त ही प्रकाशमें आने की जरुरत है इस खाते में भी मंजूरी बहुत ही कम है वास्ते हरेक स्वधर्मी तन, मन, धन से अवश्य मदद देवें ऐसा मैं आशा रखता हुं ॥

स्त्री शिक्षण.

प्रिय बंधुओ ! यह लिजीये सब से बडी बात तो यह है कि जहां तक अर्धांगिनी जो कि स्त्रियें हैं इनको नैतिक. तथा धार्मिक. व्यावहारिक. ज्ञानका बोध देकर गिरी हुई स्थिति को सतेज न करोगे. आपका कोई सुधारा नहीं हो सकेगा. क्यों कि पुरुषोंके घर के व बाहर के कुल कार्य्य स्त्रियों से ही चलता है, और कई बातों में स्त्रियोंसे सम्पति लेनी पडती है तो जहां तक. इनके ख्यालात दुरुस्त न होंगे कहांसे आपको अच्छी सलाह देंगी. संतति तब ही विद्वान, सुशील और सब तरहसे योग्य हो

ती है जब उनकी माता विद्याभ्यास की
हों संसाररूप रथ के स्त्री और पुरुष दोनों
ये हैं बगैर स्त्रियों की सहायता के पुरुष
ई कार्य्य नहीं कर सकते हैं. वास्ते जो
प सचही अपने घर की, अपने कुल की
नी जाति की और अपने धर्म की उन्नति
ने को एकत्रित हुए हो स्त्री वर्ग को सुधा-
के लिये अपने २ ग्रामों. व सहरोंमें जाते
स्त्रीशाला, कन्याशाला स्थापन करके उन
धार्मिक और नैतिक ज्ञान की वृद्धि कराकर
यालातों को सुधारो तबही आप उच्च श्रेणी
पढने के जितने प्रयास करोगे, सब साफ-
ल्यता को प्राप्त हो जावेगा. आशा है कि
प इस अगत्य के विषय को जरूर स्वीकार
ंगे परंतु स्वीकार किया. मैं जब ही मानूंगा
आप इसका उचित प्रबंध करेंगे.

हुन्नर उद्योग की केलवणी.

मित्रो! अपने जैनी भाई हुन्नर उद्योगमें
ही पश्चात् हैं जिससे द्रव्य करके बहुतही
दशामें प्राप्त हो गये हैं संसारमें सभी
ा द्रव्य की है बगैर द्रव्य के मनुष्य का
व्यवहार नहीं चल सक्ता मनुष्य का
दर सत्कार और प्रतिष्टा जो है इसीसे है कहा
कि:—

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः।
स पंडितः स श्रुतवान गुणज्ञः॥
स एव वक्ता स च दर्शनीयः।
सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयंति॥

देखिये! अमेरिका जपान आदि मुल्क
व्यापार हुन्नर के कार्य्यों में किस कदर बढ
रहे हैं और पूर्व काल में इस देश में भी व्या-
पार और हुन्नर करके लोग कुशल थे जिस
के के यह आर्य्यावर्त्त कैसा धनाढ्य स्थिति में
था उस वक्त. और अभी की स्थिति का मि-
लान करते हुवे. अत्यन्त ही खेद प्राप्त होता
है कि यह मुल्क द्रव्य: कर के कैसी नीची
स्थितिमें प्राप्त हो रहा है. जिसमें भी प्रायः
जैन समाज में से हुन्नर उद्योग की केलवणी
बहुतही कम है इस लिये द्रव्य पैदा करने के
वास्ते बालकोंको हुन्नर का अभ्यास कराने की
खास आवश्यकता है. मैं अपने धर्म के श्रीमंतों
को जोर देकर कहूंगा. कि इस अवसर में भी
आप का द्रव्य जाति सुधारे के काममें नहीं
आवेगा. तो फिर कब काम आवेगा आप को
चाहिये के जिन २ चंचल बालकों को हुन्नर
उद्योग का अभ्यास करनेकी इच्छा हो उनको
स्कॉलरशीपें देकर आर्य्य हुन्नर उद्योग का
अभ्यास करावें और व्यापारादि विदेश में बढा-
फर व आर्य्य कारखाने खोल कर अपने स्व-
जाति और स्वधर्मी बंधुओं को व्यापार के काम
में लगाकर उनकी खेदजनक स्थितिको सुधारें
मैं आशा रखता हूं की श्रीमंत स्वधर्मी भाई
साहब इस बात पर गौर फरमाकर प्रचार
बढावेंगे।

शारीरिक स्थिति॥

बन्धूओ! आजकल जैन धर्म के
नेवाले व व्यापारादि वर्ग में . . .

जन (वणिक) लोग है. जिन की शारीरिक बल आर्थिक स्थिति बहोत ही मंद है प्रायः देखा जावे तो सो में से थोडे ही तो निरोगी तथा ताकतवर नजर आवेंगे बाकी विशेष भाग रोगी और कम ताकतवर [दुर्बल] नजर आवेगा. जिससे क्या तो वह व्यापार और हुन्नर द्वारा द्रव्य पैदाइश कर शके और क्या धार्मिक नैतिक और व्यावहारिक ज्ञानका अभ्यास कर सके और क्या संसार का व्यवहार आदि चला सकें और क्या परमार्थका कार्य्य कर शके इसलिये शारीरिक स्थिति सुधारने की खास आवश्यकता है कि जिसके जरिये से धर्म कर्म के सब कार्य्य हो सके आजकल मेम और स्वार्थके वशीभूत होकर छोटे २ बालकों व कन्याओं का मात पिता विवाह कर देते हैं जिस करके न तो वह उस बुद्धिमान शान्त अवस्था में व्यवहारिक और नैतिक ज्ञान का अभ्यास कर सकें और न व्यापारादि कार्य्यों में कुशल होवें उस प्रपंच में पड जाने से रात दिन चिंता के समुद्रमें मग्न होकर जैसा आराम लेना चाहिये नही ले सक्के है और कच्चे वीर्य के खिर जाने से बडी उमर में उन की शरीर कर के ऐसी दुःखदायक स्थिति हो जाती है कि कभी उन को व्याधि नही छोडती जब खुदकी स्थिति ऐसी है तो सन्तानों का तो कहना ही क्या यह तो आप प्रत्यक्ष देखते हैं कि हाल जैसा ताकतवर और कार्य्य वृद्ध कर सक्के हैं उस से अर्धांश तो क्या लेकिन कइ भाग अभी के जवान पुरुष भी नही कर सके वास्ते जो आप साहेब धार्मिक, व्यावहारिक औ[र] व्यापारिक वगैरा उनति करना चाहते [है] तो आप इस बालविवाह को एकदम बंद क[र] के खानपान व कसरत आदि से बालकों को ऐसा अभ्यास कराना चाहिये कि जि[स] से उनका शरीर पुष्ट होवे !

हानिकारक रिवाज.

मान्यवरो ! सूर्य जोहै. जगत के अं[ध]कारका नाश करके. उद्योत कर देता है और सर्व प्राणिओं को सुख देता है पर[न्तु] जब सूर्य्य के आड में बद्दल आजाते हैं [तो] प्रकाशको मिटाकर सूर्य्य के दिग् दर्शन [भी] नही होनेदेते है इसीप्रकार. इन कुरिवाजरू[प] बद्दलो ने आड में आकर ज्ञानरूप सूर्य्य [के] प्रकाश करनेवाली सुमति और सद्बुद्धि [आदि] इत्यादि किरणो को रोककर. हृदय भेदनी में ऐसा अन्धकार छाय दिया है कि जिस[से] उन्नति रूप उद्योग को देखने में बाधा [आ] जाति है इस लिये जो धर्मोन्नति जात्युन्नति और कुलोन्नति करना चाहते हो तो कुरि[वा]जों को एक दम बन्ध कर दो. वह कुरि[वा]ज क्या २ है जैसे बाल विवाह-पुरुषा[र्थ] की जड को काटनेवाला और वृद्ध विवा[ह] हमारी जाति कुल देश ग्राम और. धर्मको लजाने वाला हमारे कइ स्वजाति भाइ वृ[द्ध] होजाने पर भी विषय हर्षी होकर द्रव्य [के] लालच में पटक कर कन्या के मात पिताको तथा खुद घोर नरक मे डूबते है और [वह] दया हीन दुष्ट कुबुद्धि मात पिता अपनी फर्जंद अनाथ बाला को द्रव्य के लालच में

..कर, पशुकी तरह, बेच देते हैं जिससे ..डेही काल से उन बालाओं को पति ..न होना पडता है कइ जो सुशीला और ..ण्यवती होती है, वो तो कइ प्रकार के ..ः सहन करके भी धर्म पर कायम रहती परंतु कुशील होती है वो अपनी मर्य्यादा छोडकर कुमार्ग गामी हो जाती है. इस ..ये बाल विवाह और वृद्ध विवाह को ..द करके उनकी हदें कायम होना जरूरी .. हालमें कन्या विक्रय का जो प्रचार हो ..ा है खासकर, देखा जावे तो इसी कारण ..है. अगर यह बन्द कर दिया जावे, तो ..या विक्रयका जोर आपही कम पड जावे ..जोर देके कहूंगा कि इस रिवाज को बन्द ..ये बगैर आपका सुधारा होना मुश्किल है ..वाय अज्ञान के समुद्र में प्रवेश होकर कइ ..ई विवाह तथा मृत्यु के प्रसंग पर देखा ..ी. एकसे एक वढकर फजूल खर्च करते .. जैसे दारू छोडना जिससे अग्नि कायका ..रम्भ जलने का भये, द्रव्यकी हानि और ..भ कुछ नही वेश्यानृत्य जिसमे सबको ..कार दृष्टि से प्राप्त करना और उच्चकी ..मी नीच, (हिंसक) के वशमें भेजना, ..ससे अधिक अनर्थ होवे, मृत्यू के प्रसंग .. कइ भाइ बड २ कर घरके आभूषण ..ा मकानों को होम कर जिमनवार करते .. कहते है, के अमुक गृहस्थ से क्या मेरा ..ाना कम है मैं इससे भी अधिक खर्च क- ..ा, यह कितनी बडी भारी भूल की बात ..इतना करो हुवे भी, जो एक भी साग कम हो जावे तो बस, लोग जीमणी जावे, और अपयश गावे, जिससे क्या फायदे है, ऐसे कार्य्यों में विशेष खर्च करने से आज हमारे बहुतसे भाइ द्रव्य करके कैसी दुःख जनक स्थिति में प्राप्त हो रहे है कि जो देखा नही जाता.

अरे अगर आप को यश प्राप्त करना है तो वही द्रव्य सुकृत कार्य्यों में क्यों नहीं लगाते, निराश्रित भाइयों को मदद क्यों नही देते? परन्तु ऐसे फिजूल खर्च को तो एकदम बन्द करना चाहिये, जिससे द्रव्य भाव दोनो को लाभ हो, भाइयो इस बात पर गौर करके कुरिवाजोंको जड मूलसे नष्ट कर उन्नति के शिखर पर चढो.

जीवदया.

जैनका मुख्य सिद्धान्त ही जीवदया है और जैनके सिवाय हिंदु, मुसलमान, ख्रिस्ती इसाई आदि सबही कौमें जीवों की रक्षा को प्रधान मानती हैं प्राणियोंकी रक्षा करना इसपर जैनियों को तो विशेष करके लक्ष देना चाहिये आजकल कितने ही लोग दया २ पुकारता परंतु दया किसतरह होती है उसका खयाल नहीं करते कितनेही भाई स्थावर जीव व कीडी मकोडीपर तो सूक्ष्म दृष्टि देते और अनंत पुण्याईवाले त्रसजीव पंचेंद्रिय अनाथ गरीब दुःख करके पिडित मनुष्यपर कम दृष्टि देते हैं कई दुखी जीव मारे क्षुधा तृष्णा और शीतोष्ण के मरे जाते हैं परंतु उनतरफ लोग बहुतही कम दृष्टि देते हैं अफसोस है कि नव

अपन अपनी समाज की भी रक्षा नहीं करसक्ते तो क्या उम्मेद है कि दुसरे जीवोंकी रक्षाकर सकेंगे श्रीमंतो को चाहिये कि दुखी जीवों को मदद देकर उनका दुःख दूर करे जब इस परोपकारी कार्यमें भी आप अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग नहीं करते हैं तो फिर लक्ष्मी क्या काम आवेगी लक्ष्मी की चंचल अवस्था है वर्तमान में सब समाज अपने २ निराश्रित भाइयोंको मदद देकर स्थिर कर रही है और अमेरीका देशवाले भी इस कार्य में लाखों रुपया खर्च करते हैं तो आप जैन कहलाने वाले बंधुओं को ऐसा प्रबंध करनेके लिये खास लक्ष देना ही चाहिये हरेक बडे २ शहेरो में अनाथालय होने की आवश्यकता है इनके सिवाय अवाचक जो प्राणी है उन पर दया करके उनकी रक्षा करने के लिये प्रत्येक शहरमें पींजरापोलोंका प्रचार होना चाहिये और जहां २ पिंजरापोल हो वहांकी स्थिति सुधारकर उत्तेजन देना चाहिये. कइ हिंसा ऐसी है कि जो सरकार को अर्जियें करने से रुकसक्ती है उन को रोकने के वास्ते सरकार से अर्ज करना चाहिये. मुझ को यह कहते हुवे अति हर्ष प्राप्त होता है कि दशहरेके मौके पर होता हुआ पशुवध अटकाने के लिये गत साल में कान्फरन्स ऑफिस तरफ से अर्जियें भेजी गइ थी जिन का मान देकर १०, १५ रियासतों के राजा महाराजाओं ने पशुवध बंद किया है जिन का मैं कॉन्फरन्स की तरफ से पूर्ण उपकार मानता हुं और आशा रखता हुं कि और राजा महाराजा साहिब भी इस कार्यमें लक्ष देकर उत्तेजन देंगे.

कान्फरेंस संगीन बनाने बाबत.

कान्फरेन्स तरफ कितनेक लोग यह संशय रखते हैं कि कान्फरन्स भरने में क्या लाभ है और क्यों भरते हैं और कान्फरेन्स चीज क्या है उस को बस आप का दाखला ही ठीक है इस मंडप में चोतरफ रंगबिरंगी पाघें व देश २ के मनुष्यों को देख के जानकारी होजाना चाहिये कि जब कान्फरेन्स नहीं थी तब अपन क्या जानते थे कि अपनी स्थानकवासी सम्प्रदाय कितनी और कहां २ तक फैली हुई है पूर्वमें कलकत्ता से पश्चिम में काठियावाड व दरियावके किनारे तक और उत्तर में काश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारिका तक भला यह कॉन्फरन्स नहीं होती तो कब जाके अपने पंजाबी काठियावाडी कच्छी मारवाडी वगैरा भाइयों से मिलकर धर्मराग में वृद्धि करते परन्तु इसी कान्फरेन्स के प्रताप से अपन सब भाइयों का समागम इस मंडप के अन्दर धार्मिक सांसारिक उन्नति करनेका विचार करनेके लिये सुशोभित होरहा है दूसरा लाभ यह है कि कॉन्फरेन्स के होने से कई गावों में जैन पाठशाला कन्याशाळा कायम होकर उन लोगों का धार्मिक नैतिकज्ञान की वृद्धि करने का उत्साह बढा है कई हानिकारक रिवाज बन्द हो गये हैं और भी कोशिश जारी है सिवाय सब की एकत्रता होने से अपन लोगों की कितनी ताकत और रुआब बढ गया है कि जीव दया आदि कार्यों के लिये राजा महाराजाओं से अर्ज की जाती है जिनको मान सहित स्वीकार फरमाते हैं ॥

ऐसी लाभदायक कॉन्फरेन्स जो आपके समझ में आई होवे तो इसको कायम रखने की

आवश्यकता है परन्तु कॉन्फरेन्स जैसी स्था बगैर कायमी आवक के निभ नहीं ी इसी विचारसे रतलाम कान्फरेन्स में चार । घरदीठ सालभर के लेने का ठहराव किया है जिसपर बहोत से शहेरों के संघने तो ठ करके विशेष रकम की साथ वसूल करके है वे धन्यवाद के योग्य है परन्तु कितने ग्राम से अभीतक रुपये वसूल होकर नहीं । हैं उनसे निवेदन है कि गतसाल व इस का फंड वसुल करके जल्दी भेजदेवे चार ना साल भरका देना कोई बडी बात नहीं है ारण आदमी भी देसकता है परन्तु यह फंड प्रान्त में एकही वक्त पर्युषण या कोइ ार वशूल करनेका पायदार ठहराव कर लेना हिये आशा है कि इस विषय में आप हिम्मत और खर्च के लिये कायमी शीट तम्बू आ- ा प्रबन्ध करेंगे के जिससे हरसाल रों रुपयों का होता हुवा खर्च बचे ॥

डायरेक्टरी.

आर्य्यावर्त्तके जुदे २ भागो में वसते हुये े स्वधर्मी बंधुओं की डायरेक्टरी (नुदवही) ा की खास जरूरत है. जिसके लिये गत करन्सों में ठहराव किया था और कोशिश की है हिंदुस्थान के बहुतसे भागोमें डायरे- ो फार्म भेज दिये गये हैं परंतु चाहिये । संगीन काम नहीं हुआ है वास्ते डायरे- ी अब जल्दी ही तैय्यार हो जाना चाहिये को कहते हुये हर्ष प्राप्त होता है की इस ठ कितनेक प्रान्तिक सेक्रेटरी साहबों ने इस ाय में परिश्रम लिया है इसी तरह सभी प्रांतिक सेक्रेटरीयों से डायरेक्टरी जल्दी तैयार करनेकी विनती है।

आखिरमें यह विनंती है कि बंधुओ १० दस दृष्टांतोंसे दुर्लभ कि जिस की चाहे २ देवता और इंद्र महाराजभी इच्छा करते हैं वह मनुष्य देह आर्य क्षेत्र उत्तम कुल पूरी इंद्रियां इत्यादि अपने को प्राप्त हुई हैं तो काम क्रोध मद, मान, माया स्वार्थान्धता में मग्न न रहते हुए इस उत्तम देही का सदुपयोग करना चाहिये और दान दया क्षमा परोपकार आदि गुणों को धारण कर धार्मिक व्यावहारिक स्थिति को सुधारकर मनुष्य भवको व हजारों रुपये का खर्च लगा कर तन मन धनका व्यय करके कॉन्फरेन्स जो भरी जाती है जिसको सफल करके उच्च श्रेणी पर चढो और सब एकमत होकर. कॉन्फरेन्स का जयजयकार करो।

आखिरमें श्रीमान् धर्म धुरंधर महाराजा साहिब मोरवी नरेशने तथा सर्व सज्जनोंने तकलीफ लेकर यहां पधारनेकी कृपा की जिन का और अन्य सब को आमंत्रण देकर श्री संघ की सेवा करके कोन्फरेन्स की जयपताका की है जिन श्री अजमेर संघका अंतःकरण से उपकार मानता हूं.

और इस कोन्फरेन्स में कोन २ से विषय पास करने जिसके लिये सबजेक्ट कमेटी मुकरर करनेकी सूचना करके मेरा भाषण खतम करता हूं।

यजजिनेन्द्र.

प्रमुखनुं भाषण अजमेरमां छपायली नकलमां फारफेर कर्या सिवाय अक्षरशः अत्र छाप्युं छे.

ना. गायकवाडनो सलाहकारक पत्र.

प्रमुख साहेबनुं भाषण पूर्ण थतां वकील मि. पुरुषोत्तम मावजीए ना. गायकवाडनो सलाहनो पत्र अंग्रेजीमां वांची संभळाव्यो हतो अने जणाव्युं हतुं के-आवती काले तेनो गुजराती तथा हिंदी तरजुमो (खुशालीना उद्गारो वच्चे) वांची संभळाववामां आवशे.

[ना गायकवाड सरकारना पत्रनुं भाषांतर बीजा खंडमां वांचो.]

दिलसोजीना पत्रो.

त्यारबाद दिलसोजीना पत्रो तथा तारो वांची संभळाववामां आव्या हता. रजपूतानाना ना. एजंट टु धि गवर्नरे जणाव्युं हतुं के हुं हाल आवी शकतो नथी पण बनशे तो ता. १२ मीए आवीश. किसनगढना महाराजा बहारगाम होवाथी आवी नहि शकवानुं जणाव्युं हतुं. त्यार बाद सर वाघजी बहादुरना पाटवी कुमार, राजकोट फिमेल ट्रेनिंग कोलेजनी प्रिन्सीपाल, रतलामना महाराजा, धरमपूरना महाराजा, कच्छ-मांडवीनो संघ, जोधपुरनो संघ, भावनगरनो संघ, "सनातन जैन" ना एडीटर, जामनगर जैन सभा, मुंबईना दिगंबरी शेठ माणेकचंद पानाचंद तथा कोचीन अने गोंडळना केटलाक गृहस्थो तरफथी दिलसोजीना तार वांची संभळाववामां आव्या हता.

रिपोर्टनुं वांचन.

त्यारबाद आसि. सेक्रेटरी मि. वेलरदास विरचंद तलसाणीयाए गत वर्षनो कोनफरन्स ऑफिसनो रिपोर्ट तथा हिसाब वांची संभळाव्यो हतो.

त्यार बाद कुंवर छगनमले [illegible] टूस कमीटी रात्रे ८ वागतां मळवानुं लगभग २५० नामो वांची संभळाव्यां [illegible] बाकी रहेला कोइ लायक गृहस्थोनां ना[illegible] क सेक्रेटरी मार्फत मोकली आपवा जणा[illegible]

गीतो.

त्यारबाद मी. छुयागी रचित बे [illegible] गायनो विद्यार्थीओए गायां हतां. पंजाब[illegible] सोहनलालजीए पण बे-त्रण भजनो ग[illegible] तां. अत्रे जाहेर करवामां आव्युं हतुं के [illegible] नर साहेब साडाचार वागतां पधारवा[illegible] त्यारबाद ओक वोलंटीयरे माफी मागी [illegible] कदाच अमारी सेवामां न्यूनता रहे तो [illegible] करशो.

मी. गुलाबचंदजी ढढ्ढानुं भाषण.

जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक वर्गना एक [illegible] मी. गुलाबचंदजी, ढढा-नजीकना शहेरमा[illegible] प्रसंगपर जता हता तेओ थोडा कलाक अ[illegible] न्फरन्समां हाजरी आपवा उतर्या हता. [illegible] ओळखाण आपवामां आव्या बाद मी. [illegible] 'केळवणी' अने 'संप' विषे व्या[illegible] आपवबानुं कही जणाव्युं के—जेने गुजरातीम[illegible] ळवणी कहे छे तेने हिंदीमां विद्या कहे छे. [illegible] मनुष्यत्वने माटे बहु जरुरनी छे. मनुष्[illegible] माटे वाडी-गाडी-लाडीमां मशगुल रहेवुं ते[illegible] छे के पठन पाठन श्रेष्ठ छे ? (पठन-पा[illegible] आपणे अत्रे रुपिया खरचीने, मोटी महेनत[illegible] ठावीने आव्या छीए ते शा माटे ? ज्ञानरुप[illegible] फळने माटेज, जेने श्री तीर्थंकर भगवान् नमोतित्थस्स करीने वंदे छे ते श्री संघ[illegible]

शैनज पुण्यरुप छे. तेथी श्रद्धा उत्पन्न थाय छे, आल्हाद वधे छे. कहेवाय छे के–"विद्याविहीनः पशुः" पशुमां अने मनुष्यमां शुं फेर छे? शरीरमां तो एटलोज फेर छे के मनुष्यने दाढी अने मूछ छे अने पशुने शींग अने पूंछ छे. पण सूक्ष्म फेर ए छे के मनुष्यमां ज्ञान छे अने ते पशुमां नथी.

जैन धर्ममां आत्माने अनादि, अनंत अने अनेक कहेल छे. तेनी स्थिति निगोदमां छे. त्यां अनंता काळ वीती जवाथी ते व्यवहार राशिमां आवे छे अने त्यार पछी ते विविध गतिओमां परिभ्रमण करीने मोक्ष पामे छे. मोक्ष पाम्या सिवाय आत्मानुं कल्याण थइ शकतुं नथी. सघळी गतिमां निद्रा, भय, मैथुन इत्यादि प्राप्त थाय छे पण मोक्षमां ते स्थिति नथी. मोक्षनी स्थिति ते आत्मानुं एटले के मनुष्यत्वनुं कल्याण छे. मनुष्यनी गति कर्माधीन छे. रंक के राजा छेवटे मरण तो पामवानाज छे अने एक श्रीमंत मनुष्य जो पोतानी श्रीमंताइनो सदुपयोग न करे तो ते एवुं नाम छे के जेम मनुष्य लिंगने प्राप्त होवा छतां नपुंसक होय छे.

आपणी धारणा शक्ति सफेद कागळना जेवी छे. तेनापर जेवा रंगनी लीली-पीळी-काळी शाहीथी जे भाषामां जे लखाण लखवामां आवे छे ते ते रुपे देखाय छे; तेमज एक बाळक पण मनुष्य योनिमां उत्पन्न थतां तेनी शक्ति सफेद कागळना जेवी होय छे. तेमां जेवा संस्कार नांखवामां आवे छे तेवा ते ठगी नीकळे छे. इंग्लांड, चीन, हिंदमां एकज समये उत्पन्न थएलां बाळकोमां एक अंग्रेजी, एक चीनाइ अने एक हिंदी भाषा बोलतां शीखे छे तेनुं कारण तेमना मगजमां नांखवामां आवेला तेमनी मातृभाषाना संस्कारो ज छे. हिंदमां पण जे जे बाळकोने जे जे संस्कार, संसर्ग पेदा थाय छे, तेमने तेवी गतिनी प्राप्ति थाय छे. जैननुं बाळक जीवदया मय थाय छे, ज्यारे कसाइने घेर उत्पन्न थएलुं बाळक निर्दय थाय छे. बन्ने मनुष्यो होवा छतां तेमनां कृत्योमां आटलो बधो फेरफार शा माटे? आ परिणाम शिक्षण अने संस्कारनुं छे.

आत्मानुं कल्याण ज्ञानथी थाय छे अने आत्माना कल्याणथी मोक्ष प्राप्ति थाय छे. आवी रीते ज्ञान उच्च स्थितिनो अधिष्ठाता छे. ज्ञानी अने अज्ञानी बन्नेने मरवुं तो छेज, तो पछी तेमनामां विशेषता शुं छे? पण जुओ, आप एकठा थया छो, ते फळ ज्ञाननुंज परिणाम छे. आप आपनी स्थितिनुं ज्ञान न धरावता हो तो आप कॉन्फरन्स भरवानुं कदि विचारो पण नहि अने आपनी कॉन्फरन्स थाय पण नहि.

श्री केवळी भगवान कहे छे के केवळ ज्ञान शिवाय मोक्ष प्राप्ति थइ शकती नथी. केवळ ज्ञाननी प्राप्तिथी मोक्ष प्राप्ति थाय छे, तोज आ संसार रुपी नाटकमांथी विमुक्त थवाय छे. ज्ञानी अवस्थामां राजा अने रंक उभय समानज छे. ज्ञानावरणीय कर्म ज्यारे दूर थाय छे त्यारे ज ज्ञान प्राप्त करी शकाय छे अने मोक्ष प्राप्ति करी शकाय छे. साचां मोती छोडीने झाकळना बिंदुओ अने अमृतने छोडीने विषना पान कोण चाहे?

हवे हुं संपना विषय उपर आवीश. हुं पुछीश के शुं आपणामां संप नथी के आपणे संपी

उपर विवेचन करवानी जरुर रहेछे ? पण नाः संपनी वात आपणे करीए छीए, ते उपरथी कांइ एम सुचित थतुं नथी के आपणामां कुसंप छे. आपणे कुसंप तोडवाने इच्छता नथी कारणके आपणामां कुसंपनी हैयातीज नथी, पण आपणे संपनी वृद्धि करवानेज इच्छीए छीए.(सांभळो, सांभळो !) ज्यारे स्वस्थताने प्राप्त करीए त्यारे आपणने बीजी कांइ वस्तुनी प्राप्तिनी जरुर रहेती नथी. संप आपणने बे बाबतमां मदद करे छे. दीन विना दुनिया अने दुनिया विना दीननो व्यवहार चालतो नथी; तेम संप विना दुनियानी वृद्धि थती नथी. जापानने दाखलो आपणे लइए. हिंदुस्ताननी अपेक्षाए जापान नानुं राज्य होवा छतां संपमां ते घणुं आगळ वधेलुं होवाथी अत्यारे सारी स्थिति भोगवे छे. तेमज संप करवाथी आपणा उपर जे जे अन्यधर्मीओना हुमला थाय छे तेनुं निवारण आपणे करी शकीशुं. अेक मकानमां आग लागे ते वखते तेना जुदा जुदा रक्षको नासी जाय ते। कांइ सार्थक करी शकाय नहि, पण जो सौ अेकत्र मळीने तेने बुझाववाने पाणीनो उपयोग करे तो ज सार्थक थाय.तेमज स्थानकवासी, मूर्त्तिपूजक, अने दीगंबर जैनोअे पण अेकत्र थइने कार्य करवानी जरूर छे, कारण के तथी आपणा महावीर भगवाने फरमावेला जैन धर्म उपर जे अन्य धर्मीओ खोटा खोटा हुमला करी रहेला छे तेनी सामे आपणे बचावनो कोट उभो करी शकीअे. (सांभळो, सांभळो) आपणे जैन धर्मनी प्रवृत्तिने माटे एकमत थइ जवानी जरूर छे. आपणे अन्य धर्मीओथी बचाव करवानुं साधन करवुं ते संप छे. आपणे हमेशा राजभक्त छीए अने राजभक्ति ए आपणा जैन धर्मना अनेक फरमानो मांहेनुं अेक छे. आपणी आ महा सभा पण धर्मने माटे छे, राजद्वारी आपणी माटे नथी. राज भक्ति आपणो धर्म होवाथी आपणे कदापि राज्यने माटे बेदरकार थइ सक्ता नथी (सांभळो सांभळो) छेवटे मारे जणाववुं जोइए के आपणे समाजोन्नतिमां कटीबद्ध थवानी जरुर छे, तथा आपणमां अक्षय ज्ञाननी वृद्धि थवानी जरुर छे. आपनो वधारे वखत लेवा हवे मारी इच्छा नहि होवाथी ना. शहेनशाहनो तथा अत्रे पधारेल चीफ कमीशनर साहेबनो आभार मानी हुं मारुं भाषण खतम करुं छुं.

बीजी बेठक.

(ता. ११–३–०९ गुरुवार).

आजे पण काम घणुं मोडुं-लगभग बपोरना बे वागतां शरु करवामां आव्युं हतुं. शरुआतमां मंगलाचरणनां गीतो गावामां आव्यां हतां, त्यार बाद नीचेना चार ठरावो प्रमुख तरफथी रजु करवामां आव्या हता.

ठराव १ लो. ब्रिटिश सरकारनो आभार.

ठराव २ जो. मोरबी ठाकोरनो आभार.

ठराव ३ जो. लींबडी ठाकोरनो आभार.

ठराव ४ थो. ना. गायकवाड सरकारनो आभार.

(वांचो पृष्ट १ लुं)

उपरना चार ठरावोने जयजिनेंद्रना पोका-रथी वधावी लेवामां आव्या हता.

ठराव ९ मो. कोन्फरन्स संगीन करवा बाबत.

(वांचो पृष्ठ १ लुं.)

उपरनो ठराव रजु करतां मी. नथमलजी गोरडीआए जणाव्युं के ना. मोरवी ठाकोर साहेबने रतलाम मुकामे कायमनुं पेट्रनपद आपवामां आव्युं हतुं, तेमने अत्रे जोइने मने अत्यंत हर्ष थाय छे. केटलाको आपणी कोन्फरन्सथी शुं फायदा थया छे ते जाणता नथी अने तेथी तेवा प्रश्न करे छे परंतु आपणे जाणी-ए छीए के आपणा आटला बधा स्वधर्मी बंधुओ के जेओ जुदा जुदा प्रांतोमांथी आवेला छे तेमनां दर्शन करवानो लाभ आपणने कॉन्फरन्स सिवाय कदापि मळवानो संभव न हतो. ते सिवाय कोन्फरन्सथी जूदे जूदे स्थळे पाठशाळाओ अने जैन शिक्षणशाळाओ खोलवामां आवी हती. आज सुधी आपणी कोमना विद्यार्थीओने माटे बोर्डी-ंगनी एक पण संस्था न हती अने आज आपणे तेने लगता ठरावनां दर्शन करीए छीए ते कॉन्फरन्सनुंज परिणाम छे. हानिकारक रीवाजो दूर करवाने आपणुं लक्ष खेंचवामां आव्युं छे, ते पण कोन्फरन्सनुंज परिणाम छे. आ कोन्फरन्समां २९०० टीकीटो खपी छे परन्तु एकठो थएलो समूह लगभग ७ थी ८ हजार माणसोनो छे. आटली मोटी संख्यानी व्यवस्था करवी, उतारा भोजननो सगवड करवी ते केटलुं मुश्केल काम छे तेनो अनुभव मने थयो छे अने आप पण कोन्फरन्सने आमंत्रण आपशो तो आपने पण थशे. १०० दर पाछळ पांच डेलीगेटो चुंटवानुं जे धोरण राखवामां आव्युं छे ते धोरण प्रमाण सघळा डेलीगेटोना पोताना गामोमां ते ठरावो लोकोने समजावे तो कोन्फरन्सनुं काम संगीन रीते पसार थाय. आवी मोटी व्यवस्थानी खातर कोन्फरन्सना डेलीगेटो अने वीझीटरोनी फी रु. २ बदले ४ करवानी जरुर पडे छे अने तेने दर वर्षे भरवानो ठराव करवाने मारा तरफथी दरखास्त रजु करवामां आवे छे.

आ दरखास्तने कच्छ प्रदेशना प्रांतिक सेक्रेटरी शेठ मेघजीभाइ देवचंदे टेको आपतां जणाव्युं हतुं के, कोन्फरन्सना फंडने पहोंची वळवाने माटे रु. २) ने बदले ४) नी फी करवानो तथा दर वर्षे कान्फरन्स भरवानो ठराव रजु करवामां आव्यो छे तेने हुं टेको आपुंछुं.

आ ठरावने अनुमोदन आपतां काठियावाडना जनरल सेक्रेटरी रा. गोकळदास तेजपाले जणाव्युं हतुं के. आपणी कोन्फरन्सना खर्चनो बोजो एटलो मोटो छे के तेने आमंत्रण आपवामां मुश्केलीनो ख्याल आव्या सिवाय रहेतो नथी. कानफरन्सना फायदा आप सर्वे जाणो छो तेथी पिष्टपेषण करवानी हुं जरुर जोतो नथी. कोन्फरन्सने संगीन करवाने माटे प्रतिनिधिओ तथा विझीटरोनी मददनी जरुर छे अने तेओ जे मदद करी शके ते मात्र फीना रुपमां छे, आथी हुं आ दरखास्तने अनुमोदन आपुंछुं.

रतलामवाळा शेठ अमरचंदजी पीतळीया तरफथी तेमना पुत्र बरद भाणजी पीतळीयाए आ ठरावने अनुमोदन आपतां जणाव्युं हतुं के: कोन्फरन्सनुं खर्च, मंडप, उतारा वगे-

ना खर्चने पहोंची वळवाने पहेलां एवो विचार चालतो हतो के प्रतिनिधिओने भोगव आपवुं नहि पण ए मुश्केलीनो ख्याल राखीने रु २) ने बदले ४) फी राखवानो ठराव करवामां आव्यो छे, के जेथी ते सघळी गोठवणनी जुम्मेदारी कोन्फरन्सने शिर रहेशे. कोन्फरन्स ए संघनुं काम छे अने तेने मदद करवी ते प्रतिनिधिओ तथा विझीटरोनुं कर्तव्य छे. आथी हवे कॉन्फरन्सने आमंत्रण आपनारने खर्च संबंधी मुश्केली भोगववानुं प्रयोजन रहेशे नहि.

जंडीयालावाळा लाला टेकचंदे आ ठरावने विशेष अनुमोदन आपतां जणाव्युं हतुं के "जय जिनेंद्र" ए आपणो watch wor. छे. ते शब्दथी आपणे जैन बंधुओने ओळखीए छीए. कॉन्फरन्स मातानुं रक्षण करवाने खर्चनो विचार करवानी जरुर छे. आ रक्षण करवाने खर्चनो विचार करवानी जरुर पडे छे. दरेक स्थळे आपणने शेठ अंबावीदास डोसाणी, अमरचंदजी पीतळीया, रायशेठ चंदमलजी मळवाना नथी; आ कारणथी खर्चनी मुश्केली टाळवाने कॉन्फरन्सनी फी वधारवानी जरुर पडे ते स्वभाविक छे.

त्यार बाद सर्वानुमते आ ठराव पसार करवामां आव्यो हतो.

"जैन समाचार"ना अधिपतिनुं ओळखाण.

मि. चोरडीयाए 'जैन समाचार'ना अधिपति मि. वाडीलालनी ओळखाण करावतां जणाव्युं हतुं के, आपणा उपर कोन्फरन्सनी ... द्वारा उपकार करनार आ उत्साही गृह... ओळखाण करावतां मने आजे हर्ष थाय छे. तेओने तमे एक चित्ते श्रवण करशो एम हुं आशा राखुं छुं.

ठराव ६ ठो-धार्मिक केळवणी.

आ पुस्तकना प्रथम खंडमां पृष्ठ १-२ थी आपेलो छठ्ठो ठराव रजु करतां 'जैन समाचार'ना अधिपति मि. वाडीलाल मोतीलाल शाह जणाव्युं के—

जैन समाचारना अधिपतिनुं भाषण.

ना. महाराना साहेबो, धर्मात्मा प्रमुख साहब, प्रिय स्वधर्मी व अन्य महाशयो !

आप सब साहेबान इधरमें इकठे हुवे हैं उसका क्या आशय है? आप कहेंगे "उदय" हां; मगर उदय करना कुच्छ बालकका खेल नहीं है. प्रत्येक मनुष्य 'उदय-उदय' ऐसा पोकार करता है, परंतु उदयका रास्ता समजनेवाले थोडेही मनुष्य दिखनेमें आते हैं. भिन्न भिन्न मनुष्यों उदयकी सिद्धि के लिये भिन्न भिन्न मार्ग ग्रहण करते हैं. कइ कहते हैं कि, जहांतक अपने हानीकारक रितरिवाजों दूर नहीं होंगे वहांतक उदय कभी होनेवाला नहीं है; कइ साहब कहते हैं कि जहां तक इंग्लीश पढाईका प्रचार नहीं किया जायगा, हम लोगोंकी बुद्धि कभी नहीं खुलेगी. कइ भाई साहब कहते हैं कि सामायिक-पोषध-प्रतिक्रमण-व्रत प्रत्याख्यान नहीं करनेवाले लोगका उदय कभी नहीं होनेवाला है. कइ कहते हैं कि राजकीय सुधारा जहां तक न हो वहांतक देशकी व देशके प्रत्येक समुदायकी दशा कभी नहीं सुधरनेवाली है. इस तराह अनेक मत चलते

है. मैं नहीं करता हुं कि एक भी मत असत्य है. परंतु, हां ! एक भी मत सम्पूर्ण नहीं वैसा तो मैं कह सक्ता हुं. ये सर्व विचारों के दो विभाग हो सके हैं. (१) धर्मद्वारा उदय (२) बाह्य प्रवृत्तिद्वारा उदय. जिस तराह योग शास्त्रके दो मार्ग हैं:—राजयोग व हठ-योग; जिसमें राजयोग दीर्घ कालमें प्राप्त होनेसे कइ लोग हठयोगको पकडते हैं, परंतु हठयोगके कइ अभ्यासीयों प्राण खोते हैं, और कभी उनका मनोरथ पूर्ण हुआ तो भी राजयोगसे जो इस जींदगी व मृत्यु बादकी जिंदगी दोनोका सार्थक होता है वो हठयोगसे कभी नहीं हो सक्ता है; इसी तराह अपने उदयके दो मार्ग है; बाह्य प्रवृत्ति द्वारा जो उदय होता दृष्टि-गोचर होता है वो बहोतकुच्छ धूमधामसे होता है परंतु क्षणभंगुर है. आंतरिक प्रवृत्तिद्वारा याने धर्मद्वारा जो उदय होता है वो विलंबसे होता है परंतु चिरस्थायी है, और इससे दोनो जिंद-गीका सार्थक होता है. आंतरिक शुद्धि प्राप्त करनेसे बाह्य स्थिति सुखी हो जाती है; क्यों कि बहारमें जो कुच्छ दिखता है वो शिर्फ भि-तरका प्रतिबिंब ही है. अंतरंग प्रकाश मिलनेसे बाह्य अज्ञानता, निर्बलता, निर्धनता इत्यादि सर्व अदृश्य होते हैं.

कोइ पूछेंगे: "क्या धर्मद्वारा उदय संभ-वीत है ?" मैं कहुंगा: "अवश्यमेव !" धर्मकी व्याख्या ही कहती है कि (धृ=to hold) अ-धोगतिमें गिरते हुवेको रोकनेवाला वो धर्म. अ-धोगति एक प्रकारकी नहीं है. मैं धर्म उसको कहता हुं कि जो सब तराहकी अधोगतिको रोक शके. मैं धर्म उसको कहता हुं कि जिसके कर्तव्यक्रममें हर तराहकी अवनति—अधोगतिको रोकनेका समावेश हो.

अवनतिके ३ प्रकार मैं संक्षेपमें बताउंगा और ये तीनोंको रोकनेके लिये जैन नामसे प्रसिद्ध हुआ धर्म कुच्छ रास्ता बताता है या नहीं वो भी आपकी समक्ष जाहेर करुंगा.

(१) आत्मिक अवनति दूर करके उन्नति करनेके लिये "सार्वत्रिक भ्रातृभाव" (परमदया) व "भावना" ये दो अति ही आवश्यकीय हैं. जहां तक सार्वत्रिक भ्रातृभाव (Universal Brotherhood) नहीं है वहां तक हृदयकी जमीन शुद्ध नहीं है—कृषिके लिये योग्य नहीं है. जमीन साफ होनेसे 'भावना' (Meditation) का 'जोर' (Force) लगानेसे मोक्षगति तक नफा प्राप्त हो सकता है. सातवी नरकमें गिरते हुवे प्रसन्नचंद्र राजर्षिको शुद्धतम 'भावना' बलने ही कैवल्य दिया था, वो आप साहेबानने मुनिवरोंसे कइ दफा सुना होगा. अपना जैन धर्म ये दोनो रास्ता बताता है और आत्मिक अवन-तिको रोक आत्माका मोक्ष कर देता है.

(२) नैतिक अवनति याने Moral degradation को दूर करनेके लिये भी जैन धर्म तैयार है. (अ) जैन शास्त्रोंने जो १२ व्रतकी योजना की है, ऐसी तो उत्तम है कि

तर्फ आपसे ही घृणा उत्पन्न होवे. (क) जैन धर्मने साधु-साध्वीका एक 'Mission' (मिशन—आश्रम) स्थापित किया है, जिससे वे निर्लोभी—निरारंभी—निस्पृही उपदेशकों ग्राम-नगर—पुर-पट्टन फिरते फिरते सामान्य नीति व विशेषतर नीतिका उपदेश कर रहे हैं, शिक्षणको प्रचार कर रहे है, सरकारको पोलीससे व प्रोफेसरोंसे जो लाभ नहि मिलता है वो लाभ आप पहुंचा रहे हैं. जैन समाजकी अशिक्षित दशाको सुधारनेका काम (to Cultivate masses) इतना तो कठीन है कि निःस्वार्थी—पवित्र-हृदयके मनुष्य सिवाय ये काम बराबर हो सकता ही नहीं है. ये काम निःस्वार्थी जैन साधु—साध्वी कर रहे हैं और शिक्षण व नैतिक उन्नतिका प्रचार कर रहे हैं.

(२) जैन धर्म व्यवहारिक अधोगतिको भी अच्छी तराह रोक सक्ते है. जैन धर्ममें व्यवहारशुद्धि को प्रथम स्थान दिया गया है. अन्य कइ महजब 'संसार सुधारे' (Social reform) के काममें डखल कर रहे हैं, परंतु जैन शास्त्रों तो आज के संसार सुधारकों जितने जोरशोरसे सुधारेका पोकार कर रहे है इससे भी ज्यादे आग्रहपूर्वक (यद्यपि शान्तिपूर्वक) सुधारेकी हीमायत करते आये है. हम लोग स्त्रीको उच्च स्थान देते हैं—हमारे श्री मल्लीनाथ स्त्री होने पर भी हमारे तीर्थंकर हुए थे. हमारे प्रथम तीर्थंकरने ब्राह्मी व सुंदरी दोनो पुत्रीको सब कला पढाइ थी. हम नहीं मानते है कि साध्वीसे सूत्र न पढा जावे. ज्ञानकी रोशनी सबके लिये खुल्ली हमारे तीर्थंकरने ही हीमायत की है और उनोंने ही रास्ता खोल दिया है. देव-देवीकी मानता-पूजा-ढोंग सोंग कोइ चीज हमारे शास्त्रमें नहीं है, बल्के ऐसे कृत्योंको 'मिथ्यात्व' कहा है. अमुक वर्षकी वय होने पेस्तर अपनी कन्याका लग्न करना ही चाहिये, ऐसा फरमान जैन शास्त्रमें कभी नहीं है; मगर शील रक्षणके तो अनेक दृष्टांत मिलते हैं. विजय शेठका दृष्टांत तो सम्पूर्ण आश्चर्यजनक है. मृत्यु के बाद रोना-कुटना हमारे शास्त्रसे बीलकूल बरखिलाफ है. विदेशगमन हमारे कइ बुझरगोंने किया था. सायन्स (Science)के नींवपर ही हमारा धर्म बना हुआ है, ये फिर सबसे ज्यादे आनंदकी बात है. मैं आपकी समक्ष कुच्छ जैन धर्मकी सब खुबीयें (Beauties) का वर्णन करनेको उपस्थित नहीं हुआ हुं, परंतु मनुष्यकी सब तराहकी उन्नति करनेवाला ये धर्म है ऐसा साबीत करके फिर ये धर्मसे जो कुच्छ लाभ प्राप्त होनेवाला है वो किस तराह प्राप्त करना वो बताना चाहता हुं.

आजकल ये झमाना आ पहुंचा है कि दुनियामें वो ही धर्म खडा रह सकेगा कि जो 'सायन्स' के सामने खडा रह सके. जैन धर्ममें भाषाके पुद्गलका वर्णन है वो अब फोनोग्राफ टेलीग्राफ इत्यादिसे साबीत होता हैं. जैन धर्ममें ८ प्रकारके 'प्रभावक' कहे हैं, जिसमें एक "विद्या प्रभावक" कहा है; अब मैं 'विद्या' का अर्थ 'Science' करता हुं. जो आदमी सायन्स-इल्मके जरीयेसे जैन धर्मकी सच्चाइ जगतको बता देवे वो सबसे अच्छा 'प्रभावक' है.

आज ऐसे 'विद्या प्रभावकों' कम हो

जानेसे, जैन शास्त्रमें रही हुइ खुबीयें समझनेवाले कम हो जानेसे, और अंधश्रद्धा व क्रियामूढताके प्रतापसे हमारे संघकी अवदशा हो रही है. ये बाह्यदशा देख होपकीन्सन जैसे पाश्चिमात्य विद्वानोंने हमारे महत्ववकी बहोतसी लघुता की है. अब ये समय आ पहुंचा है कि सर्व तरहसे मनुष्यका उदय करनेवाले जैन धर्मकी फीलसुफीका प्रचार अपने लोगमें करनेका कुच्छ प्रबंध करना, जिससे हमारा व्यवहार शुद्ध हो, हमारी नीति शुद्ध हो, हमारा गृहसंसार सुखी हो, हमारी आत्मा मोक्षकी अधिकारिणी हो.

अब ये सवाल होता हैः " जैन तत्वज्ञान याने फीलसुफीका प्रचार किस तरह हो सकता है ? "

ये प्रश्नका जवाब देना बहुत कठीन है. जो कुच्छ जानता हुं मैं कहुंगा, लेकीन अति संक्षेपमें कहना होगा, क्यों कि समय बहोत थोडा है.

उच्च इंग्लिश शिक्षण लेनेवाले विद्यार्थीयोंके अभ्यासक्रममें (बंबइ युनीवर्सिटीने) जैन ग्रंथ शामील किये हैं; इतना ठीक है. परंतु इतनेसे सब जगाह जैन फीलसुफीका प्रचार नहीं हो सकता है. (१) जैन साहित्यके अभ्यासके लिये स्कोलरशीपें रखनी चाहिये. (२) जैन बोर्डिंग हाउस खोलके वहां जैन विद्यार्थीयोंको एकही जगापर रखकर जैन फीलसुफीका अभ्यास (आवश्यकीय) कराना चाहिये, जिससे वे लोग श्रद्धावंत हो कर दुसरोंको ज्ञान दे सकें और गृहस्थाश्रममें पडे तबभी निर्दोष व उपकारी झींदगी बनावे (३) साहित्यके खास अभ्यासकेलिये, शास्त्रीय संशोधनके लिये, वक्तृत्व कला प्राप्त करनेके लिये एक खास कॉलेज निकालनी चाहिये. हर्षकी बात है कि अपनी कॉन्फरन्स तर्फसे रतलाममें "जैन ट्रेनिंग कॉलेज" खोलनेकी मंजुरी मिल गई है और पहले जो रु. १०० की मासिक ग्रान्ट दि गई थी उसके बदलेमें अब रु. २५० की ग्रान्ट देनेका ठहराव करनेके लिये मैं दरखास्त पेश करनेको आपकी समक्ष उपस्थित हुआ हुं. आप सब साहेबानके मुखपरसे मैं देख सक्ता हुं कि आप ये बातको पसंद करते हैं. गुजरात-काठियावाड-मालवा-दक्षिण-पंजाब वगैरा जो जो जगापर इस सालमें मेरा जाना हुआ था सब जगामें मेने 'जैन ट्रेनिंग कॉलेज' के बारेमें लेक्चर दिया था और मेने देखा था कि सब साहेबान ये कार्यको तेहेदिलीसे पसंद करते थे. कइ भाईयोंने साल भरके रु. २४ देनेका वचन दिया है. एक ग्राममेंसे तो मासिक रु. २० मिलते रहते हैं. और कइ भाईयोने मुझे वचन दिया है कि कॉलेजका काम संतोषकारक देखनेमें आवेगा तो हजारों रुपेकी मदद मिलती रहेगी. जिस कॉलेजमें तीन वर्ष तक विद्यार्थीओंसे सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य पलाया जायगा, जिस कॉलेजमें जैन साहित्य, जैन फिलसुफी, जैन इतिहास संशोधन, वक्तृत्वकला, तर्कशास्त्र वगैराका अभ्यास कराया जायगा, जिस कॉलेज सुशिक्षित नरोंको जैन धर्मकी सच्चाइ समझा सके वैसे उपदेशकोंको उत्पन्न करेगी, एसी कॉलेजको मदद मिलना क्या मुश्कील है ? ऐसी कॉलेजका विजय शिर्फ द्रव्य पर ही आधार रखता नहीं है; शिक्षणक्रम मुकरर करना-पढाना,

थयो छुं, मी. भंडारीने जैन ट्रेनिंग कोलेज अने मागधी शिक्षणशाळा अतिप्रिय छे, तेथी तेमणे ते विषे भाषण आपवानी पोतानी इच्छा जाहेर करी छे. गया भाद्रपद मासमां जैन ट्रेनींग कोलेज माटे रु. १०० नी मंजुरी मळी हती पण तेटली रकममां एवी मोटी संस्था चालवी मुश्केल छे. जूदा जूदा आचार्यो घणुं जैन साहित्य मूकी गया छे, पण हालमां तेमनो नाश थाय छे अने तेने समजावनाराओ पण मळी शकता नथी. हालमां आपणी पाठशाळाओमां मात्र गोखणपट्टीज चाले छे. आपणामां शुष्क क्रियानुं शिक्षण पण वधी गयुं छे. वळी नवी रोशनीवाळाओ स्वधर्मने भूली जाय छे. तेनुं कारण फक्त अभ्यासनां साधनो न होवाथीज आ स्थिति उभी थवा पामी छे. अंग्रेजी भणेलाओ जैन तत्त्वज्ञान मेळववा इच्छे छे पण साधनना अभावथी तेओनी इच्छा पूरी थती नथी. तेथी जैन ट्रेनींग कोलेज अने मागधी शिक्षणशाळानी जरुर छे. शिक्षक, उपदेशक अने लेखकोने तैयार करीने ते कोलेज घणी मददरुप थइ पडशे. आ कारणथी श्रीयुत वाडीलाले २५०) ना खर्च माटे जे दरखास्त करी छे, ते मंजुर करशो एम आशा छे.

आ ठरावना अनुमोदनमां पंजाब तरफना एक प्रतिनिधी मि. रेवाशंकरे जणाव्युं के-ज्ञान सिवाय सुख मळतुं नथी. मनुष्यनो आत्मा ज सुख दुःख आपी रहेलो छे. आत्माने परिभ्रमणमांथी छोडाववा माटे ज्ञाननी जरुर छे. विद्या विना ज्ञान मळी शकतुं नथी. धार्मिक अने व्यवहारिक ज्ञानना फायदा घणा छे. धार्मिक ज्ञानथी सुख मळे छे अने व्यावहारिक ज्ञानथी व्यापारमां कुशळता वगेरे मळे छे. धार्मिक ज्ञानने माटे आपणने जैन ट्रेनिंग कोलेजनी जरुर छे. लाहोरमां दयानंद कोलेज छे; बनारसमां सेन्ट्रल हिंदु कोलेज छे. तेम आपणे पण आपणी कॉलेज स्थापवी जोईए. जैन ज्ञान सिवाय पंजाबमां आपणा स्वधर्मीओ आर्यसमाजी थई जाय छे. त्यारबाद वक्ताए जैन ट्रेनिंग कोलेजने माटे रचेलुं एक गीत गाई संभाळाव्युं हतुं, तेमां उदार श्रीमंतोने तेमना हाथ लंबाववा माटे अरज करवामां आवी हती.

त्यार बाद मी. कालीदास जसकरणे जणाव्युं के, जैन ट्रेनींग कोलेज प्रत्ये ग्रेज्युएटोनी दिलसोजी नथी, एवो आक्षेप अमारा उपर केटलीक वार करवामां आवे छे, पण तेथी हुं मारा ग्रेज्युएट भाइओ तरफथी हुं तेनी प्रत्ये दिलसोजी धरावुं छुं. अमे ग्रेज्युएटो धर्मविनाना नथी. धर्म तरफ अमारी लागणी छे. धर्मनो झरो अमारा दिलमां वही रह्यो छे, ते सिवाय अमारी उन्नति नथी. कोइ एवो एक पण ग्रेज्युएट बतावी शकशे के जेणे पोतानो स्वधर्म त्याग दीधो होय ? रतलाममां मी. पीतलीआनी देखरेख नीचे विद्यार्थीओने सारी केळवणी मळशे, एम हुं आशा राखुं छुं.

ठराव ७ मो. व्यावहारिक केळवणी.

मी. दफतरीनुं भाषण.

(पृष्ट २मां आपेला ७ मा ठरावनी) दरखास्त रजु करतां मी. मगनलाल गुलाबचंद दफतरीए जणाव्युं के, भाईओ मारी मातृ भाषा गुजराती छे, छतां मने हिंदीमां बोलवानी ईच्छा हती, परंतु मारा गुजराती भाइओनी ईच्छाने वश थइने हुं गुजरातीमां बोलव[illegible]
जोउं छुं. व्यावहारिक केळवणीने लग[illegible]
अने रतलामनी कोन्फरन्सोमां प[illegible]
छतां तेने वधारे अगत्यता आपवा[illegible]
प्रश्नतुं महत्व ज छे. हु आपनी[illegible]

કેળવણીનો ફેલાવો ઓછો પ્રકાર થએલો છે તેનો ઇતિહાસ રજુ કરીશ. હાલમાં આપણી ઉન્નતિ કરનાર કોઈ પણ વસ્તુ હોય તો તે કેળવણી છે અને તે આપણે આદરવી જોઈએ. પછી ભલે તે કેળવણી અંગ્રેજી હોય વા સંસ્કૃત હોય વા અન્ય કોઈ ભાષાની હોય. અંગ્રેજી કેળવણી લેનાર વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા આપણામાં હજી ઘણી થોડી છે.

અંગ્રેજો પોતામાં કેળવણી ફેલાવવા માટે ઘણો પ્રયાસ કરે છે અને તેની અપેક્ષાએ હિંદમાં કેળવણી પાછળ કાંઈ પણ પ્રયત્ન કરવામાં આવતો નથી. પછાત પડેલી કોમોની સ્થિતિ જોતાં આપણને જણાય છે કે કેળવણી સિવાય આપણે કદી આગળ વધી શકવાના નથી. કેળવણીથી આપણે અધોગતિમાં પડતા બચીએ છીએ; પરંતુ જે કેટલાક અજ્ઞાન કેળવણીને-અંગ્રેજી કેળવણીને નુકશાન કારક માને છે, તેઓ તેને ટુંકી દ્રષ્ટિથી જ જોનારા છે. કેળવણી વિનાનાઓ પરોપકાર દ્રષ્ટિ વાળા હોઈ શકતા નથી. કેળવણીના સંબંધમાં બીજી પ્રજાઓએ કરોડો રૂપીઆ ખર્ચેલા છે. જ્યારે જૈનોમાં કેળવણીનું ખર્ચ ઘણું ઓછું છે. આર્ય પ્રજાની અધોગતિનું કારણ કેળવણીની ખોટ્ય સિવાય બીજું કાંઈ નથી. હાલમાં સરકાર ફરજીઆત કેળવણી કરવાનો વિચાર ચલાવે છે, અને આપણે આપણી કોમમાં પણ સરકારને મદદ રૂપ થવું જોઈએ. ના૦ ગાયકવાડ સરકારે આપણા ઉપર જે દિલસોજીનો પત્ર લખ્યો છે તેમાં પણ તેઓ નામદારે એવીજ સુચના કરી છે, કે જ્યાં સુધી જૈનોમાં કેળવણી વધશે નહિ ત્યાં સુધી જૈન કોમ કદાપિ આગળ પડતી કોમ ગણાશે નહિ.

પાંચ લાખ જેટલી મોટી કોમ આપણા ધર્મની છે. તેમાં ૪૮ ટકા પુરૂષો ભણેલા છે. અને બે ટકા સ્ત્રીઓ માત્ર લખી વાંચી જાણે તેવી છે ! આપણામાં કેળવણીની આ કેવી અધોગતિ ! આપણી આ કોન્ફરન્સમાં મોરબી લીંબડીના ના૦ ઠાકોર સાહેબો પધારેલા છે. તેમનું તે આગમન આપણી કોન્ફરન્સના ઇતિહાસમાં યાદગાર રહે તેવી કોઇ શુભ [illegible] ત આપણે કરવી જોઇએ. અમારા ના૦ મોરબી નરેશ હમેશાં વિદ્યાને ઉત્તેજન આપતા આવ્યા છે. મોરબી બહારની પ્રજામાંથી પણ જો કોઈ વિદ્યાર્થી વિદ્યાનો જીજ્ઞાસુ હોય અને ના૦ ઠાકોર સાહેબને તેની ખાત્રી થાય તો તેઓ મદદ આપે છે. મહુવાનો એક વિદ્યાર્થી તેઓ નામદારની ઉદારતાનો લાભ લઇને હાલમાં કોમર્શીયલ કલાસમાં અભ્યાસ કરે છે. આ વાત confidential હોવા છતાં હર્ષના ઉભરાથી હું તે જણાવી દઉં છું. તેઓ ના૦ નું આગમન ખાસ યાદગાર રહે તેવું કાંઇ કાર્ય આપણે કરવું જ જોઇએ.

મને ભય રહે છે કે જો આપણી સ્થાનકવાસી કોમ આને આ સ્થિતિમાં રહેશે તો આપણે કોમ તરીકે બીલકુલ ઓળખાઇ શકીશું નહિ. આપણા વિદ્યાર્થીઓને માટે મુંબઇમાં એક બોર્ડીંગની ખાસ જરૂર છે. હાલમાં મુંબઈમાં અન્ય ધર્મીઓની બોર્ડીંગોમાં રહીને અન્ય ધર્મના સંસ્કારોમાં ઉછરવું પડે છે એ ઘણા અફસોસની વાત છે. વેપારની કેળવણીની પણ હાલમાં બહુ જરૂર છે. આપણી વ્યવહારીક કેળવણી ગ્રેજ્યુએટો બનાવવાની નહિ પરંતુ વેપારીઓ બનાવવાની જ હોવી જોઇએ. આપ જ વિચારી શકશો કે અંગ્રેજી કેળવણી લીધા શીવાયના વેપારીને એક તાર વાંચતાં પણ કેટલી મુશકેલી નડે છે ? આ કારણથી વ્યાપારને માટે અંગ્રેજી કેળવણીની પણ ખાસ જરૂર છે. દુકાને બેઠાં બેઠાં મારવાડી ભાઇઓ પોતાના છોકરાને વ્યાપાર શીખવતા હશે, પણ તે વ્યાપારથી કાંઈ દેશનો ઉદય થઈ શકે નહિ, કે કોમની ઉન્નતિ પણ કરી શકાય નહિ. ધ્યાનમાં રહેવું જોઈએ કે સઘળા શ્રીમંતોની શોભા અમારા જેવા ગરીબોથી છે,

જૈન કોમને business commvnit કહેવામાં આવે છે તે આપણે સિદ્ધ કરી આપવું જોઇએ. આજની કોન્ફરન્સને બોર્ડીંગ એન્ડ એજ્યુકેશન કોન્ફરન્સ કહેવાનું આપણને મળે તેમ થવું જોઇએ. મુસલમાન ભાઇઓએ પોતાની કોમની કેળવણીનો ખ્યાલ કર્યો ત્યારે તેમને પોતાની કોમ ઘણી અવનવી સ્થિતિમાં પડેલી જોઇ. ત્યારે તેમાંથી સર સૈયદ અહમદ એક એવો હીરો નીકળ્યો કે તેણે અલીગઢ કોલેજ સ્થાપી. જામનગરના એક મુસલમાને

પોતાની કોમને ઉદયમાં લાવવાનું સાધન હા- ..ં ઉભું કર્યું છે, તેનું નામ અબદુલ કરીમ છે. મારા પંજાબી, મારવાડી ભાઇઓને અપીલ કરૂં કે તમારે વ્યાપારી કેળવણી તરફ બેદરકાર ર- .. જોઇએ નહિ. આપ જાણતા હશો કે બીજા ..ની સાથે સરખાવતાં આપણી અધોગતિના ૬ ..ણો છે. (૧) લોકોનું અજ્ઞાન. (૨) વ્યાપા- .. અને હુન્નર ઉદ્યોગની કેળવણીનું ઓછાપણું, (૩) એકનો એક વેપાર કર્યા કરવાનો ભ્રમ, (૪) ..ટી થાપણનું કમીપણું અને ખુણ ખચકે પડેલી ..લતનો યોગ્ય વ્યય નહિ થવો. (૫) નિવૃત્તિ ..ર્મનો આશય. (૬) સ્ત્રીઓની અધમ સ્થિતિ. ..મા સઘળાં કારણોમાં કેટલાંક કારણો આપણા જૈન ..ભાઇઓ સાથે વધારે સંબંધ ધરાવે છે. આપણે જૈનો નિવૃત્તિ ધર્મના ઉપાસક છીએ પરંતુ સાથે વ્યવહાર ધર્મની પણ આવશ્યકતા છે. સ્ત્રીઓની સ્થિતિ પણ આપણે ગુલામગીરીના સરખી બનાવી દીધી છે.

એ મનુ ભગવાનનું વાક્ય આપ જાણતા હશો, પરંતુ એ વાક્યાનુસાર અનુસરણ થતું શું કદાપી જોવામાં આવેછે કે ?

મૂડી થોડી હોવાથી આપણે કામ કરી શકતા નથી. જેમણે ઇતિહાસનું દર્શન કર્યું હશે તેઓ જુના વ્યાપારની સ્થિતિ જાણનારા હોવા જોઈએ. મુડી આપણી પાસે થોડી નથી પણ તે ડરી જાય છે. રખેને આપણી મૂડી ડુબી જશે એવો ભય આપણામાં બહુ હોવાથી આપણે સંગ્રહ કરી રાખીએ છીએ. ખરી રીતે તો આપણી કેળવણી એજ આપણી મુડી છે. કેળવણી હોય તો આપણી દોલત કદાપી વિલાયતમાં જાય જ નહિ આસ્ટ્રેલીઆમાં રહેનાર એક જણની વાર્ષિક આવક રૂ० ૬૦૦ હોય છે. ત્યારે એક હિંદવાસીની આવક માત્ર રૂ० ૩૦ છે. હાલમાં આપણે ૬૨ લાખ રૂપીઆનો તો ધુમાડો કરીએ છીએ; તેટલી રકમની સીગારેટો આપણે પીને વિદેશમાં મોકલીએ છીએ.

मी. जटाकीआनो टेको.

मी. मगनलालनी दरखास्तने टेको आपतां अमरेलीवाळा मी. जटाकीआए जणाव्युं हतुं के विद्यामां अद्भुत शक्ति रहेली छे. वस्तुतः विद्या एज द्रव्य छे. विद्यानी उन्नतिने माटे पाठशाळा अने बॉर्डींग हाउसोनी जरुर छे. बॉर्डींगनी साथे एक धार्मिक क्लासनी पण जरूर छेके जेथी तेनो लाभ लेनाराओ धर्मना तत्त्वोना अज्ञानथी दूर रहे. अंग्रेजी भणनाराओ कांइ धर्मभ्रष्ट थइ जता नथी. मुंबइमां श्वेतांबर मूर्तिपूजक अने दिगंबर भाइओनी बॉर्डींगो छे पण आपणी कोममां नथी ते आपणा करोडाधिपतिओने एक शरमरुप छे. बॉर्डींगमां धार्मिक शिक्षणथी धर्मविमुखता दूर थाय छे. विद्यार्थीओने ब्रह्मचर्यनी विशेष जरुर छे अने तेथी तेमना उपर सारी देखरेख जोइए. द्रव्यसंग्रह करनाराओ जो पोतानुं द्रव्य विद्यार्थीओने माटे वापरशे नहि तो तेमनुं द्रव्य अने तेमनुं जीवन बन्ने व्यर्थ गणाशे. शेठ उमेदमलजी लोढा के जेमनी बेंक मुंबइमां छे तेओ जो एकाद लाख रु. नी मदद करीने मुंबइमां एक 'लोढा बॉर्डींग' स्थापे तो घणो उपकार थाय. मने आशा छे के तेओ अमारी अदना मांगणीपर लक्ष देशे.

मी. मोतीलालजीए ए दरखास्तने टेको आपतां जणाव्युं के स्त्री केळवणीनी खास जरुर छे. स्त्री केळवणीनी बाबतमां रजपूताना बहु पछात रहेलो छे अने तेणेतो ते प्रत्ये बहुज लक्ष आपवानी जरुरत छे. केळवणी स्त्री अने बाळकोने बहुज सुसंस्कारी करेछे. गृहस्थनी जींदगीमां तेनी बहु जरुरत छे. केळवणी विना ज्ञान मळी शकतुं नथी तेथी ते प्रत्ये सौए विशेष लक्ष आपवुं जोइए.

मी. परमानंद प्लीडरे ते दरखास्तने विशेष अनुमोदन आपतां जणाव्युं हतुं के—स्त्री शिक्षामां आपणो देश बहुज पछात पडेलो छे अने ते देशनी एक शोकजनक स्थिति छे. ह-

मारा जैन भाइओनुं ... ते विषे ओछुं छे ते बाबद मने शोक थाय छे

त्यार बाद फंडनी रकमो भरावा लागी हती अने बोमाट-गरनडाटमां बीजी बेठक ५॥ वागतां संपूर्ण थइ हती.

ना. गायकवाडना पत्रनो तरजुमो.

आगले दिवसे वचन आप्या मुजब आजे ना. गायकवाडनी सलाहना पत्रनो हिंदी तथा गुजराती तरजुमो वांची संभळाववामां आव्यो नहतो. त्रीजा दिवसनी बेठकमां पण ते वांचवामां आव्यो नहतो. ते काम अमुक गृहस्थोए माथे लीधुं हतुं पण जेओ मात्र माथे लेवामांज बहादुरी समजता हता, तेओ ते काम छेवट सुधी पूरुं करी शक्या नहता; तेमज जे काम पोताथी न बनी शके तेम हतुं ते, ते कामने लायक बीजा कोइ गृहस्थने सोंपवा जेटली नरमाश पण तेओ बतावी शक्या नहोता.

त्रीजी बेठक.

(ता. १२–२–०९ शुक्रवार.)

आजे कोन्फरन्स कार्यनो छेल्लो दिवस होवाथी बराबर १२॥ वागतां काम शरु करवामां आव्युं हतुं. मंडपमां भाग्यज ¾ जेटला माणसोनी संख्या हाजर रही हती. काम चालु हतुं अने प्रतिनिधिओ तथा प्रेक्षको आवता जता हता

ठहराव ८ मो. संपनी वृद्धि.

पालणपुरवाळा श्री. कालीदास जसकरणे उपरनो ठराव रजु करतां जणाव्युं के—आ ठराव रतलाम तेमज मोरबीनी कोन्फरन्सोमां पसार करवामां आव्यो हतो, छतां आजे तेने पुन; रजु करवानुं महत्व छे. संपमांज श्रेय छे. ते कहेवानी कांइ जरूर नथी. आपणे जैनो रागद्वेषथी रहित होवा जोइए छीए छतां आपणामांज रागद्वेष होय ते ठीक नथी. आपणने कुसंप तोडवानी जरूर नथी कारणके आपणामां कुसंप छे ज नहि पण संपनी वृद्धि करवानी जरूर छे. घणाओ पोताना खानगी धंधाना हेतुथी तथा खानगी धंधानी खातर संघोमां कुसंप करावे छे. तेमने आप[illegible] गणकारवा जोइए नहि. आपणे संप साध[illegible]वाने एकत्र कोन्फरन्स करवी जोइए छे अने ग[illegible]यकवाडनी सलाह पण तेवीज छे. सुरतमां जै[illegible] यंग मेन्स एसोसीएशनना वड पण हेठळ ए[illegible] एकत्र कोन्फरन्स भराइ हती, ते उपरथी ना. ग[illegible] गायकवाड माने छे के हालना जैन युवानो आ[illegible] एकत्र कोन्फरन्स भरवाने तइयारज छे जैन को[illegible] व्यापारी कोम छे पण ते पछात पडी छे तेनुं क[illegible]रण मात्र फाटफुटज छे. एकत्र कोन्फरन्स भरवा[illegible] घणा फायदा थाय तेम छे. खर्च ओछुं थाय अ[illegible] तेटला बचाव वडे केळवणीने माटे फंड एकठुं क[illegible] शकाय, के जे जेम पारसीओ एक करोड रुपीआ[illegible]नुं पंचायत फंड करेलुं छे. मुंबाइमां एक जै[illegible] गृहस्थे आवी एकत्रता करवानो प्रयास कर्यो ह[illegible] परंतु तेमना मरणथी ते हीलचाल भांगी पडी [illegible] वळी जो आपणे संपथी एकत्र रीते फरीयाद [illegible] करीशुं तो आपणे सरकार पासेथी सारो लाभ [illegible] मेळवी शकीशुं. एकत्रतानां आशाजनक चिन्[illegible] दृष्टिगोचर थया सिवाय रह्यां नथी. मुनि चारी[illegible] विजयजीना उपदेशथी मुंबाइमां एक विद्याउद्यो[illegible] वर्धक मंडळ स्थापाएलुं छे, जेमां विद्यार्थीओ[illegible] रु. ४ थी १० सुधी स्कोलरशीपो आपवामां आवे छे अने तेनो त्रणे कोमना विद्यार्थीओ लाभ ले[illegible] शेठ मेघजीभाइ थोभण तेमना एक मुख्य मे[illegible] छे. श्री गोंदामां आपणा प्रमुख शेठ बालमुकुंद[illegible] दजीना प्रमुख पद हेठळ थएली एकत्र कोन्फरन्स पण तेज प्रकारनी एकत्रतानो नमूनो छे. पाल[illegible]पुरमां शेठ पीतांबरदास हाथीभाई पण दरेक कोम[illegible]ना विद्यार्थीने पोताना नियमो मुजब स्कोलरशी[illegible] आपे छे, हुं पण तेमनी कृपानुंज फळ छुं. गुजरा[illegible]ती काठीयावाडमां एकत्रता दुर थती जोइने म[illegible] शोक थाय छे कुसंपनां मूळ ऊंडां न जाय तेम [illegible]वानी जरूर छे. केटलाको पोतानो स्वार्थ सिद्ध कर[illegible]ने निंदा करे छे अने भोळा लोको तेमां सपडाय [illegible] अन्य मार्गीओनां निंदात्मक लखाणोनो जवाब [illegible]णु आपणा धर्मनां रहस्योने समजीने शांत री[illegible]

आपवो जोईए. आवां निंदावाळां छापां अने पुस्तको न वांचवानी हुं सौ कोईने भलामण करुं छु.

श्री. दुलेरुसिंहजीए आ दरखास्तने टेको आपतां जणाव्युं के—आपणामां संप तो जणाय छे अने आ आखो मेळावडो संपनुंज परिणाम छे, परंतु ते संपनी वृद्धि करवानी जरुर छे. रांधवा खावामां पण संपनी जरुर छे. हाथ म्हौंमां मूके, म्हौं चावे, शरीर ते अनाज पचावे तोज शरीरनुं पोषण थाय छे. आपणी पुंजी संपज छे. एकत्रता ज आपणी आबादी छे.

वाड क्षेत्रनेज जो खावा मांडे तो पछी क्षेत्रनी शुं गति थाय? आपण त्रणे पंथोए एकत्रज थवुं जोइए. कुसंपथीज आपणे घणीवार मुश्केलीमां आवी पडीए छीए.

भोपाळवाळा श्री. चांदमलजी नहारे जणाव्युं के—संप तो श्री भगवानेज फरमावलो छे. आपणां सघळां धर्मसूत्रोनो, ज्यारे १२ वर्षोना काळो पूरो पडया हता त्यारे विच्छेद थयो हतो पण जे केटलाक आचार्योने ते सूत्रोनो मुख पाठ हतो, ते सघळां तेमणे एकत्र मळी मळीने पुस्तकारुढ कर्यां हतां. जो तेमणे संप न राख्यो होत तो ते कदापि पुस्तकारुढ थात नहि अने आपणे धर्मना साहित्यो साचवी राखवाने भाग्यशाळी थया होत नहि कुसंपथी आपणने सरकारी कोर्टनो आश्रय लेवा जवुं पडे छ. आ प्रकारनो रागद्वेष आपणा धर्मनी पण विरुद्ध छे.

आ दरखास्तने विशेष अनुमोदन आपतां जैन यंगमेन्स एसोसीएशनना प्रतिनिधि एक दिगंबरी गृहस्थ श्री. रामलालजीए विशेष कहुं हतुं के-कार्यने सीधे कारणनी हमेशां जरुर पडेछे चेतन वा अचेतन पदार्थने पण संपनी जरुर छे. जूदा जूदा अनाजने पण एकत्र साथे राखीने रांधवाथीज मिष्ट अने पक्व थइ शके छे. व्यापार पण संपनी वृद्धिनुंज परिणाम छे अचेतन पदार्थोमां संपथी कार्य पेदा थायछे. कषायनी अधिकता प्रमाणे कुसंपनी वृद्धि थायछे. आपणे वीरना पुत्रो होवा छतां अने श्वेतांबर मूर्तिपूजक, दिगंबर तथा स्थानकवासी एकज होव छतां झगडा करीए छीए ते केटलुं अनर्थसूचक छे? कागडाओमां पण केटलो संप छे? एक कागडो मरी जाय छे तो सौ कागारोळ मचावी मूके छे वांदराओमां पण तेवोज संप छे. तओ एकठा मळीनेज खावानुं खाय छे. हुं दिगंबरी होवा छतां त्रणे कोमने समदृष्टिथी जोउंछुं अने तेथीज आटली सूचना करवानी मने जरुर पडे छे. पंजाबमां आ वखते में मुसाफरी करी हती; पण मने शोक थाय छे के तेओमां बहु कुसंप हतो. एक बीजाना साधुओनी तओ बहु निंदा करता हता. आ प्रकारनी निंदाथी आपणा 'जैन' नामने बहु खोटुं स्वरुप मळे छे. आपणने प्रतिकूळ कार्य बीजाओने माटे पण करवुं जोइए नहि आपणे कुसंपद्वारा बीजाओनी लागणी दुःखावीए छीए तेशुं जैन धर्मनुं फरमान छे? हुं आपने प्रार्थना करीने कहुंछुं के अभेदभाव न राखीने एकत्रता करवी जोइए. जैन यंग मेन्स एसोसीएशन आवा एकत्रताना कार्यने उत्तेजन आपती होवथी आपणे तेने मदद करवी जोइए.

त्यारबाद सर्वानुमते ए ठराव पसार करवामां आव्यो हतो.

ठराव ९ मो. मेनेजींग कमीटीमां सुधारो.

ठराव १० मो. कोन्फरन्स फंड.

ठराव ११ मो. मुनिराजोमां आचार्यो.

ठराव १२ मो. नैतिक व्यवहार.

उपरना चार ठरावो प्रमुख तरफथी रजु

करवामां आव्या हता अने ते सर्वानुमते पसार करवामां आव्या हता. (जुओ पृष्ठ २ जुं).

ठराव १२ मो. जीवदया.

जीवदयानो ठराव रजु करतां जंडीयाला वाळा लाला टेकचंदजीए जणाव्युं के 'जीवदया' ए आपणो मुळ धर्म छे, अने भगवानतुं दृष्टांत तेने माटे आपणी सामे मोजुद छे. जीवदया रूप परम धर्म न पाळी शकाय तेम काइ नथी. हिंसा न करवानो सिद्धांत जो दरेक जण पोताना मगजमां ठसावी राखे तो पछी कांइ पण करवुं अशक्य नथी. 'अशक्य' शब्द ज आपणा शब्द कोषनी अंदर होवो जोइए नहि. वळी जीवदयाना सिद्धांतमां आपणा जातिभाइओ उपर दया राखीने चालवाना विषयनो पण समावेश थइ जाय छे. आपणे नाना जीवे जीवदया करनारा छीए अने मोटा जीवोने भूली जनारा छीए एम कदापि कहेवावं जोइए नहि.

आ दरखास्तने टेको आपतां मी. करस-नजी जगजीवने टुंक विवेचन कर्या बाद मी. जीवराज नेमचंद सायलाकरे जणाव्युं के—हिंदुस्ताननी अधोगतिनुं कारण गौवध छे. दु-धाळा जनावरोनो नाश थाय छे तेथी ज देशमां संकट फेलाय छे. बळदोनो नाश थाय छे तेथी ज खेती खराब स्थितिमां आवी पडी छे. एवो हिसाब काढवामां आव्यो छे के दुष्काळना वर्षमां २ क्रोड माणसोनो नाश थयो छे ते बळदोनो नाश थवाथी ज थयो छे. एक गाय मरण पाम-वाथी देशने रु. ७१५६० नुं नुकशान थाय छे. अने तेथी २८६२४० माणसोना पोषणने खलेल पहोंचे छे. दरवर्ष ९ लाख बकरां अने ९० हजार गायो बांदराना कसाइखानामां कत्तल करवामां आवे छे. सर्व प्राणीओपर समभाव रा-खवो ते आपणा धर्मनुं फरमान छे. वेद, कुरान वगेरे पुस्तकोमां पण अहिंसानुं ज फरमान छे. मक्का जेवा मुसलमान तीर्थमां एक पण प्राणीनो नाश करवामां आवतो नथी, एटलुं ज नहि पण त्यांना प्राणीओने दुःख पण उपजाववामां आ-वतुं नथी.

मी० लीलाधर खीमचंदे आ दरखास्तने वधु अनुमोदन आपतां जणाव्युं के—हिंदनी पूर्व स्थिति साथे सरखावतां हालमां आपणो देश हलकी स्थितिमां आवी पड्यो छे, जेनुं कारण गायो जेवां उपयोगी प्राणीओनो वध छे. गा-योना वधथी देशने २६ खर्व रुपियानुं नुकशान थाय छे. जीवहिंसाना निषेध माटे वेजीटेरीयन मंडळो स्थपायां छे पण शोक छे के हिंदुभाइओ मांसाहारमां खेंचाता जाय छे. उत्तराध्ययन सू-त्रनी पहेली गाथाज आपणा दयामय धर्मनुं रहस्य समजावे छे.

मी० गिरिधरलाल शर्माए जणाव्युं के हिंसा न होय तो जुठ न होय; हिंसा न होय तो अस्तेय न होय, हिंसा न होय तो ज शील प्रधान होय अने हिंसा न होय तोज अपरिग्रह होय छे. आ उपरथी जणाय छे के अहिंसा ज सघळा नीतिना प्रमाणोनुं मूळ छे. पछी ते नी-तिना प्रमाणोने जैन धर्मानुसार व्रत कहो के ब्राह्मण धर्मानुसार यम कहो. आपणे सारी रीते सुखथी रहेवानी इच्छा राखीए छीए परंतु शोक छे के आपणे आपणां संतानो प्रत्ये दया वापरता नथी. तेमना उपर आपणे अत्याचार वापरीए छीए. बाळविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय ए बधा प्रकारना अत्याचारना दाखला छे. (त्यार बाद भाषणकर्त्ताए वृद्धविवाहने लगती एक मनोरंजक हिंदी कविता वांची संभळावी हती.)

त्यारबाद सर्वानुमते उक्त ठराव पसार करवामां आव्यो हतो.

ठराव १४ मो—हानिकारक रीवाजो.

(ठराव माटे वांचो पृष्ट २ जुं.)

उपरनो ठराव रजु करतां मी० सुगनचंदजीए जणाव्युं के आपणामां हानिकारक रीवाजो बहु वधी गया छे. आपणे महाजन कहेवाइ छीए. महाजननो अर्थ उत्तम जन थाय छे परंतु शोक छे के आपणामां हवे हवे उत्तमपणुं रह्युं नथी. जैनोनो सिद्धांत अहिंसा छे; परन्तु कन्याविक्रय जेवा हानिकारक रीवाजमां पार विनानी हिंसा थाय छे, ते बाबत जरापण लक्ष आपवामां आवतुं नथी. आपणा देशमां पुत्रीनो विवाह करवानी सत्ता वाळीना हाथमां आपवामां आवेली छे पण शोक छे के वाली पोतेज पुत्रीनी हिंसा करे छे. "होय रोकडा तो तो परणे डोकरा" ए शब्दो आपणी कोमने खरेखात लजावनारा छे. (त्यारबाद भाषणकारे एक हिंदी कविता वांची संभळावी हती जेमां एक बालिकानुं रुदन समाएलुं हतुं.)

प्रमुख साहेबना पुत्र मी० मोतीलाळजी बोलसुकुंदजीए ए दरखास्तने टेको आपतां जणाव्युं के ज्यां सुधी स्त्रीओने केळवणी आपवामां आवशे नहि, ज्यां सुधी बाळलग्नो, नकामां खर्चो, गणीकाओना नाच वगेरे अटकशे नहि, त्यां सुधी आपणो गृहसंसार कदापि सुखी नीवडशे नहि. आज ज्यां जोइए त्यां दुःखज जोवामां आवे छे, तेनुं कारण आपणी शोकजनक गृहस्थिति छे. आपणे बूमो पाडीए छीए के सरकार जुलम करे छे पण खरुं जोतां आपणामां हानिकारक रीवाज जेटलो जुलम प्रसरावे छे तेटलो कोइ प्रसरावतुं नथी. मरण पाछळनां नकामां खर्चो, दारु, गणिकाओना नाच, कन्याविक्रय, एवा नठारा रीवाजो ज्यां सुधी अदृश्य थशे नहि त्यां सुधी आपणी उन्नतिनो सूर्य दूर ज रह्या करशे. आपणे जैनो छीए, दयाना हिमायती छीए, बीजापर दया न आवे ते ठीक पण आपणी पुत्रीओपर पण दया न आवे अने आपणे तेनो विक्रय करीए ते केटलुं शोकजनक गणाय ? कन्याविक्रय करनारनी साथे व्यवहार बिलकुल बंध राखवो जोइए. बाळलग्न करवानो रीवाज पण बहुज खराब छे. रडवुंकुटवुं पण आपणा धर्म विरुद्ध छे. आ सघळा हानिकारक रीवाजो दूर करवाने हुं त्रण उपायो वाजबी मानुं छुं. ए त्रण उपायो ए छे के—केळवणीनो वधारो करवो, उपदेश आपवाने माटे खास उपदेशको रोकवा अने ज्ञातिए एवो प्रतिबंध करवो के जे माणस अमुक कार्य करशे तेनी साथे ज्ञाति

कोइ प्रकारनो व्यवहार राखशे नहि. आ त्रण उपायो लेवामां आवे तो सघळुं अंधारुं दूर थइ जाय. हुं महाराष्ट्रनिवासी होवाथी हिंदी भाषामां मारुं बोलवुं दोषमद जणाय तो हुं माफ मागुंछुं.

मी० नवरत्नमले आ दरखास्तने टेको आपतां जणाव्युं के—प्राचीन समयनुं स्मरण थतां आपणी हालनी स्थिति आपणने त्रास उपजाव्या सिवाय रहेती नथी. पूर्वे घणाओ जैन धर्म अंगीकार करता हता, ज्यारे हालमां जैन धर्म पाळनाराओने तेमां दृढ राखतां पण मुश्केली पडे छे. घणा जैनो मारवाडमां ओशवाळ थया छे. विद्यानुं बळ केटलुं छे ते हवे सौ कोइ जाणवा लाग्या छे. Knowledge is power. द्रव्य अने विद्या परस्पर संबंध धरावे छे. ते बन्ने एक गाडीना बे घोडाना जेवी स्थिति धरावे छे. संसाररूपी गाडी चलाववाने ते बन्ने घोडानी जरुर पडेछे. आपणामां नकामां खर्चो बहु थाय छे. ते तथा कन्याविक्रय जेवा नठारा रीवाजो बंध करवाने जाहेर हिंमत अथवा moral courage नी खास जरुर छे. मारवाडमां ओशवाळोमां मरण पाछळ बहु खर्चो थाय छे ते बंध करवां जोइए. कन्याविक्रयथी खर्च बहु छे. आवा रीवाजो बंध करवाने अग्रेसरोएज कमर कसवी जोइए. साधारण माणसोथी ते काम थइ शकवानुं नथी. नकामा खर्चोथी बचती रकम जैन ट्रेनिंग कॉलेज तथा बोर्डींगमां वापरवी जोइए.

मी० मीशरीमल बोराणाए बाळलग्न विषे विवेचन करतां जणाव्युं के, हालनां बाळलग्नो ए मूर्ख मातापितानी खोटी होंसनुं परिणाम छे. ८ वरसनी कन्याने एकवार ४५ वरसना वर साथे परणाववामां आवी हती ते दाखलो में मारी जाते जोएलो छे. बे बिचारी छोकरी पोताना स्वामीने कहे छे के—बापा ! मारे माटे ढींगढांगलीला लावजो ! कहो भाइओ ! केटली दयाजनक स्थिति ? बाळलग्नथी विद्यामां भंग थाय छे तथा विषयवासनाथी ज्ञाननी वृद्धि थती अटके छे, अने तेथीज कन्याविक्रय तथा विधवा विवाहो थाय छे. काले महाराजश्रीए व्याख्यान आप्युं हतुं ते समये ११ वर्षनी पुत्री तथा १६ वर्षना पुत्रथी ओछी उम्मरना जोडाने परणाववुं नहि तेवा सोगन घणाए लीधा हता अने बीजाओए पण तेवा सोगंद लेवा जोइए.

पंडित रामबक्स के जे कोन्फरन्सना उपदेशक छे, तेमणे अनुमोदन आपतां जणाव्युं के:—'जैन' शब्दनो अर्थ ए थाय छे के,—जेणे काम क्रोधादि कषायोने जीत्या छे ते. पण काम क्रोधादि जीतवाने बदले पैसानो लोभ पण आपणा जैनोए जीत्ये

नथी. तेओ पैसाना लोभथी पोतानी पुत्रीओने वेचे छे. कसाइओ तो ३ आने शेर मृतक मांस वेचे छे पण कन्याविक्रयीओ ५०० रु. शेरना भावथी जीवतुं मांस वेचे छे. मांस वेचनाराओमां जीवतुं मांस वेचनारने कसाइ नंबर वन अने मृतक मांस वेचनारने कसाइ नंबर टु कहेवा जोइए. लग्नविधिमां 'कन्यादानमहंकरिष्ये' बोलनार ते कसाइए "कन्याविक्रयमहंकरिष्ये" एम बोलवुं जोइए। डाकु—लुंटारानी पेठे ते कन्याविक्रयी वणिक बिचारा जमाइने लुंटी ले छे. लुंटाराओ जंगलमां अने रात्रे लुंटे छे पण आ लुंटारानो सरदार कन्याविक्रयी वणीक तो भरबजारे हजारो माणसनी मेदनीमां अने धोळे दहाडे लूंट चलावे छे! लग्न वखते कहेवाय छे के 'आदौतातवरंपश्य' परन्तु अत्यारे तो 'आदौ तातधनंपश्य'नी स्थिति थइ गइ छे. श्रेष्ठ जेवा उत्तम शब्दनो अपभ्रंश थइने 'शेठ' शब्द बनेलो छे, पण अत्यारे तेवाज शेठो श्रेष्ठो होवाने बदले 'शठो' बनी गया छे ते केटलुं शोचनीय ?

इच्छावरवाळा शेठ सोभागमलजी मुथाए अनुमोदन आपतां जणाव्युं के—पशुओ अने अन्य सर्व प्राणीओमां मनुष्य जाति श्रेष्ठ गणाय छे, कारण के तेमां परोपकार करवानी शक्ति रहेली छे. आ परोपकार अन्य शक्तिओथी थाय छे तेमज धनवडे पण थाय छे. पण कृपण लोकनुं धन के जे कुतरानी पूछडीना जेवुं वांकुंज होय छे ते कोमने काम लागी शकतुं नथी. कन्याविक्रय बंध करवानो इलाज ए छे के सौए कन्याविक्रय न करवाना सोगन लेवा जोइए, अने कन्याविक्रय करनारने त्यां जमवा न जवुं एवो प्रतिबंध करवो जोइए. मारवाडीओमां सौ करतां वधारे कुरीवाजो छे. कोट पेन्टलून पहेरवा जेवो विदेशी आचार दूर करवो जोइए, पण आपणा लोको ते तो जलदी ग्रहण करी ले छे, ज्यारे सदाचार शा माटे तुरत ग्रहण करता नथी ? आवा कुरीवाजो नष्ट करवामां स्त्रीओनी केळवणीनी पण जरुर पडे छे. स्त्रीओने योग्य केळवणी मळवी जोइए. स्त्रीओ वकीलात के बारीस्टरी करवा जेटली केळवायली थाय एम हुं कहेतो नथी पण सारां पुस्तको वांची शके तेटली केळवणी तेमने मळवी जोइए. स्पर्शास्पर्शथी कांइ पाप तो थतुं नथी पण खराब माणसना स्पर्शथी हृदयमां घृणा उत्पन्न थाय छे अने तेनो दाखलो लइने भविष्यमां प्रजा अनाचारी थाय छे. अनाथाश्रमोनी खास जरुर छे अने रायबहादुर के खानबहादुर थनाराओ हजारो रुपिआ ते अक्षरो मेळववामां उडावी दे छे तेओ अमारी कोमना रायबहादुर के खानबहादुर त्यारेज कहेवाशे के ज्यारे अमारी कोमनां एवां खातांने मदद आपशे.

मी० चंदनमलजीए वधु अनुमोदन आपतां जणाव्युं के—कन्याविक्रय ए पाप छे अने तेने अटकाववाने यत्न करवुं जोइए. वळी आपणामां फटाणां गावानो रीवाज बहु खराब छे. लग्न जेवां शुभ प्रसंगे फटाणां जेवां अशुभ गीतो गवाय ते आपणी कोमने शरम भरेलुं छे. त्यारबाद ए ठराव पसार थयो हतो.

ठराव १५ मो—अनाथाश्रम.

उपरनो ठराव रजु करतां राजकोटवाळा मी० भाइदास वेचरदासे जणाव्युं के, हालमां आपणी कोम अवनत स्थितिमां आवी गइ छे. अवनति अने लाचारीनुं कारण ए छे के कमाणीनां साधनो ओछां थतां जाय छे. केटलाको परधर्ममां वटलाइ जाय छे एनुं कारण ए छे के तेओ अनाथ होय छे अने अनाथोने मदद करवा जेवुं खातुं आपणी कोममां बिलकुल नथी. पालीताणा ए देरावासीओनुं जात्रा स्थळ छे, त्यां आवुं एक खातुं खोलवामां आव्युं छे. अनाथ विधवाओ अने अनाथ बाळकोने माटे एक खास जैन अनाथाश्रमनी जरुर छे. आवुं अनाथाश्रम मुंबइमां लेडीनोर्थकोट हिंदु अनाथाश्रम छे पण तेथी सघळां अनाथोने मदद नहि मळती होवाथी आवां बीजां अनाथाश्रमोनी खास जरुर छे.

उपरनी दरखास्तने टेको आपवाने माटे मी० दुर्लभजी झवेरी तथा कोन्फरन्सना उपदेशक मी० अमृतलाल दलपतभाइ शेटने मुकरर करवामां आव्या हता, परंतु वखत थोडो अने काम घणुं होवाथी टेको आप्या सिवाय दरखास्तने सर्वानुमते पसार करवामां आवी हती.

आवती कोन्फरन्सने जालंधर संघनुं आमंत्रण.

त्यारबाद जालंधर-पंजाबना संघे कोन्फरन्सनी चोथी बेठक जालंधर खाते भरवानुं आमंत्रण आप्युं हतुं. ए आमंत्रणनो स्वीकार करवामां आवतां मोरवीना ना० ठाकोर साहेबे जणाव्युं हतुं के आवती कोन्फरन्सने जालंधरना संघे आमंत्रण आप्युं छे ते खुशी थवा जेवुं छे अने ते माटे जालंधरना संघने मुबारकबादी घटे छे. आ कोन्फरन्सना

प्रमुख तरीके मी. शोभागमलजी लोढा

घणुं करीने थशे. हुं मानुं छुं के तेओ मारी मांगणीनो अनादर करशे नहि. मी० लोढाए जो के मने छेवटनो जवाब हकारमां आप्यो नथी, तो पण तेमने हा पडाववानी जुम्मेदारी हुं मारे माथे लउं छुं.

एजंट-टु-धी गवर्नरनुं आगमन.

आ समये मंडपमां सर्वत्र हर्ष व्यापी

रह्यो हतो अने वॉलंटीयरो तथा बिजाओ 'जयजिनेंद्र' ना अवाजो करता हता. एटलामां रजपुतानाना ना. एजंट टु धी गवर्नर पोतानां पत्नी साथे आवी पहोंच्या हता, जेमने सारो सत्कार आपवामां आव्यो हतो.

मोरबीना ठाकोर साहेबने मानपत्र.

त्यारबाद मोरबी तथा लींबडीना ठाकोर साहेबोने मानपत्रो आपवामां आव्यां हतां.

लींबडीना ठाकोर साहेबने मानपत्र.

त्यारबाद लींबडीना ठाकोर साहेबने मानपत्र आपवामां आव्युं हतुं.

मोरबी ठाकोर साहेबनो जवाब.

पोताने आपवामां आवेला मानपत्रनो जवाब वाळतां मोरबीना ठाकोर साहेब सर वाघजी बहादुरे संघनो उपकार मान्यो हतो अने " रतलाम कोन्फरन्स " वखते तेओए आपेला उत्तम विचारो फरीथी वांची संभळाव्या हता (वांचो " रतलाम कोन्फरन्स अहेवाल " पृष्ठ ८१-८२)

लींबडीना ठाकोर साहेबनो जवाब.

लींबडीना ना. ठाकोर साहेबे पोताने आपवामां आवेला मानपत्रनो जवाब वाळतां जणाव्युं केः-मने जैनोनो आ मोटो मेळावडो जोइने अति हर्ष थाय छे पण मने हिंदी भाषा बोलवानुं ज्ञान नहि होवाथी शोक साथे गुजरातीमां जवाब वाळवानी जरुर पडे छे; जे माटे मने आशा छे के आप क्षमा आपशो. मने आपवामां आवेला मानपत्रने माटे खरी रीते हुं अधिकारी नथी. हुं मात्र तमारी कोन्फरन्समां भाग लेवा माटे आव्यो छुं, ते तमारा मायाळु आमंत्रणने मान आपवानी मारी फरज हती, अने विशेष फरज एटला माटे हती के हुं एक मोटी जैन प्रजानो राजा छुं. मारा राज्यनी सघळी प्रजानो हुं राजा छुं अने तेथी दरेक कोमने मान आपवाने बंधाएलो छुं. (जयजिनेंद्रना अवाजो.) मारा राज्यमां जैनो आगळ पडतो भाग लेछे, अने मारे कोन्फरन्समां भाग लेवो ते मारी फरज हती. तमे मानपत्रमां में करेली मुफत केळवणी विषे इसारो कर्यो छे, पण ते में कांइ विशेष कर्युं नथी. मारी प्रजानी स्थिति जोतां तेनी जरुर हती अने ते मारी फरज हती. प्रजा केळवाशे तो तेनो लाभ अने पोतानेज छे. केळवणी ए घणी गहन वस्तु छे. हुं पण तमने सलाह आपुं छुं के तमे तमारी कोममां जरुर केळवणी वधारजो. तमारी कोमना विद्यार्थीओने हालमां जे मुसीबतो पडे छे, ते जो तमे बोर्डींग स्थापशो तो दूर थशे. आस्ट्रेलियामां में मुसाफरी करी छे; त्यां केळवणी फरजीआत हती.त्यां स्कूलो घणी हती. तेमज तमे जैन वसती धरावता दरेक गामे तेवी . ।

करशो तो तमने घणो लाभ थशे. जीव दयाना संबंधमां में रीतरीवाजथी कांइ विशेष कर्युं नथी. राजानो अने दरेक मनुष्यनो धर्म छे के अहिंसा परमोधर्मः ए सूत्रानुसार वर्तवुं. ए सुत्र तमे जैनोएज पकडी राख्युं छे तेथी ने कांइ अन्य धर्मनुं सूत्र नथी एमतो नथी ज. कोइ पण आर्य धर्ममां हिंसानुं प्रतिपादन करेलुं नथी. 'अहिंसा' धर्मने बराबर वळगी रहेनारने कदापि पोलीटीकल मुश्केली नडती नथी. छोकरो जो धर्म जाणे छे तो तेने वर्त्तन शिखववानी जरुर रहेती नथी. ते धर्मिष्ठ छोकरो पोताना मुरब्बी प्रत्येनी तेमज राजा प्रत्येनी फरज घणी सारी रीते समजी शके छे. वफादार थवुं ते जैनोनुं सूत्र छे. तमारा तीर्थंकरो पण राजाओज हता. हालना राजाओ जो के जैनधर्मी थइ शके तेम नथी तोपण सर्व धर्मोने मान आपवा साथे जैन धर्म प्रत्ये पण सारी दिलसोजी तेओ धरावी शके. छेवटे हुं तमारी मायाळु लागणीने माटे हृदयपूर्वक आभार प्रदर्शित करुं छुं. (जयजिनेंद्र.)

रायशेठ चांदमलजीने मानपत्र.

त्यारबाद रायशेठ चांदमलजीने मानपत्र आपवामां आव्युं हतुं, जेना जवाबमां तेमणे

ना० एजंट साहेब सामा हाथ जोडीने घणी ज नम्रतापूर्वक संक्षेपमां जणाव्युं केः-मने आनंद थाय छे के ना. ए. जी. जी. ना प्रयत्नथी तथा साहेब मी. ओ. ओ. एडवर्डनी सहायताथी आ मेलावडो थयो छे अने ते निर्विघ्ने संपूर्ण थयो छे. ओन. एजंट साहेब तथा तेमनां पत्नी, मेहेरबान मुमील्टन साहेब वगेरे साहेबो अत्रे पधार्या छे, तेथी पण मने बहु हर्ष थाय छे. मे कोमनी सेवा बजावी छे अने तेने माटे हुं बिलकुल मानपत्रने लायक नथी. मारे खरो आभार तो मी० लोढा साहेब तथा बीजा ओनररी काम करनाराओनो मानवानो छे के जेओ ए कोन्फरन्सना कार्यमां घणी मदद करी छे. मने उमेद छे के सौ धर्मनी रुचिमां आगळ वध्यां करे.

ना. एजंट टु धी गवर्नरनुं भाषण.

त्यारबाद ना. एजंट टु धी गवर्नरे हिंदी भाषामां बोलतां जणाव्युं के ज्यारे हुं अहीं आव्यो त्यारे मारा ध्यानमां न हतुं के मारे अहीं कांइक बोलवानी जरुर पडशे. अमारा दोस्त शेठ चांदमले वात करी त्यारे मने लाजीम छे के हुं मारी तथा सौ तरफथी आटली इज्जत साथे अमने ओळखाव्या छे ते बदल आभार मानुं. हुं सरकार तरफथी आपने जणावुं छुं के आप अमारा आश्रय तळे एकठा थया छो ते बहु खुशीनी वात छे. अजमेर एक मोटुं शेहेर छे, जेमां जैनोनी काररवाइथी शेहेरने

णा फायदाओ थया छे अने थाय छे. ते-
ना व्यापारथी अने तेमनी दोलतथी अज-
रने घणा फायदा छे. जैन कोन्फरन्स आ
हेरमां थइ ते घणुं वाजवी थयुं छे अने मने
मेद छे के तमे तमारुं काम निर्विघ्ने पुरुं
र्युं छे, के जेथी तमने भविष्यमां घणो
ायदो थशे.

त्यारबाद ना. एजंट साहेब वगेरेने सोनेरी
ार पहेरावत्रामां आव्या हता, अने छेवटना
ाचला ठरावो प्रमुख तरफथी रजु करतां मी०
वेरीए वांची संभळाव्या हता, जे सर्वानु-
ते पसार करवामां आव्या हता. त्यारबाद
ामुखनो आभार मानवानो ठराव पसार
थयो हतो.

चांद आपवानी क्रिया.

त्यारबाद वॉलंटीर कमीटीना सेक्रेटरी
मी० नथमलजी चोरडीया तथा उतारा क-
मीटीना सेक्रेटरी मी० केशरीचंदजी भंडा-
रीने तेमणे बजावेली सेवाने माटे प्रमुख त-
रफथी सोनाना चांदो तथा वॉलंटीयरोने
रुपाना चांदो ना. एजंटना हस्ते आपवामां
आव्या हता.

प्रमुखनुं अंतीम भाषण.

त्यारबाद प्रमुखे पोतानुं छेवटनुं भाषण
वांच्युं हतुं, जे नीचे मुजब हतुं:—

नामदार एजन्ट टु. धी. गवर्नर जन-
रल, करनल पीन्हे साहेब, कमीशनर साहेब,
नामदार मोरवी नरेश, नामदार लींबडी
नरेश, लेडीझ व जेन्टलमेन.

जैनोंकी उन्नतिके लिये इकठी हुइ इस
कान्फरन्सका काम शांति पूर्वक संपूर्ण हुवा
देख मुझे बडा संतोष होता है. जैन फील-
सुफीका फैलाव करनेकेलीये जैन ट्रेनींग
कोलेज, व इंग्लीश हाइ एज्युकेशन लेनेवाले
विद्यार्थीओंकी शुभीताके लीये जैन बोर्डींग
हाउस खोलनेका जो प्रेकटीकल याने व्य-
वहारु काम इस कोन्फरन्समें हुआ है इससे
भी मुझे परम आनंद हुवा है.

ज्यादातर आनंद तो इसलिये होता
है की हमलोगोंकी सभामें हमारे ब्रीटीश
राज्यके बडे बडे ओफीसर साहेबानने तस-
रीफ लाकर हमारी राज्यभक्ति याने ला-
यल्टीकी कदर बुझी है.

मैं करनल पीन्हे व कमीशनर साहेब
का शुक्रआदा करताहुं और नामदार मोरवी
नरेश व. लींबडी दरबारका भी शुक्रआदा
करताहुं.

अपनी कोन्फरन्सका तीसरा अधिवे-
शन फतेहमंदीसे पार उतारनेके वास्ते राय
बहादुर शेठ उमेदमलजी साहेब लोढा, राय

शेठ चांदमलजी साहेब व उनके सुपुत्रों इत्यादिने जो अथाग तकलीफ उठाइ है इसलिये में उन्होंकों पुनः धन्यवाद देताहुं.

आखीरमें मेरे प्यारे स्वधर्मी भाइओंको इस कोन्फरन्समें पसार कीये हुवे ठहरावोंका अमल करनेकी भलामण करता हुवा कोन्फरन्सका काम संपूर्ण हुवा जाहेर करता हुं.

बरखास्त.

लगभग सांजना पोणाछ वागतां हर्षना नाद वचे अने आनंदजनक कोलाहल वचे त्रीजी जैन श्वेतांबर स्थानकवासी कोन्फरन्स बरखास्त थइ हती अने एजंट साहेब तथा प्रमुख वगेरे मंडपमांथी रवाना थया हता.

☞ विशेष हकीकतो माटे वांचो द्वितीय खंड, के जे पण आ पुस्तकमां ज सामेल छे.

द्वितीय खंड.

परचुरण बाबतो.

कोन्फरन्समें गाये हुए मांगल गित.

प्रथम दिवस.

(१) मंगलाचरण.

ओ जीनेश्वर कृपाल, दीनबन्धु दयाल;
प्रभु करुणाके सागर, हो सर्व शक्तिमान. ओ०
करो करो मंगल, हरो हरो विघ्न नाथ;
हमपर प्रभुजी राखो अपना हाथ;
भरीये समाज तेरी कीर्तिके काज;
रक्षा करो महाराज तुमे धन धन धन
धन धन धन, धन धन धन. ओ०

(रा. नथमलजी चोरडिया—नीमच.)

(२) कोन्फरन्सके परमेनन्ट पेट्रन सर वाघजी बहादुर मोरवी नरेशकी तारीफमें.

धन्न सर वाघजी महीमा तुम्हारी, न नर एक जीमसें कर पाय पारी. धन्न.
सम्भाला बिर्द आपनेको बराबर, रखी मर्याद क्षत्रि कुलकी सारी. धन्न.
वास्ते धर्मके तन मन दीया धन; धराने निजकी यह रीति बिचारी. धन्न.
जीव रक्षा प्रजा के नाथ हो तुम; महाराजा सदा जय हो तिहारी. धन्न.
हिमाचल सम अचल गादी तपे यह; मान कीर्ति मीले जग बीच भारी. धन्न.
तुम्हारी दीर्घ आयुष चाहे नथमल; महीपत यह बिनय प्रभुसे हमारी. धन्न.
हात लीना मुरव्बी पद सदाका; रीति कोन्फ्रेन्सकी उत्तम निहारी. धन्न.

(रा. नथमलजी नीमच.)

** उपरनी कवितामां पहेलो अक्षर लेतां " धन सर वाघजी महीमा तुम्हारी " बने छे. तेमज आ नीचेनी कवितामां पहेला अक्षरोमांथी एक लाइन बने छे.

(३) श्रीमान् प्रेसीडेन्ट वालमुकुन्दजी साहबकी तारीफमें.

बाजत आज बधाइ नगर अजमेरकी शोभा खूब बनी.
लक्षपती अरु क्रोड पती बसतेहैं उन्हांपे अनेक धनी. बाजत.
मुकाम कीयो कोनफ्रेन्स यहां, शेठ बालमुकुन्द प्रधान तीहां;
कंचन के साथ सुगन्धी जीहां, तो उन्नति शिघ्रही है अपनी बाजत.
दर्दे दीलोंकी हे लेते खबर, गुण दानके जीनमें हे अतिही जबर;
जीव रक्षामें जीनकी सदा है नजर, है समाज सुधारेमें प्रीति घनी. बाजत.
प्रभूसें हमारी है विनती यही, रिद्धि सिद्धि दीर्घायुष होय सही;
मुल्कोंमें कहावत जाय कही, धन पुत्र जने एसे जननी. बाजत.
खलकतमें ज्ञान प्रचार करें, करुणा रसका विस्तार करें;
रक्षा हो दीन अनाथनकी, हो प्रसिद्ध जगत्में यही कथनी. बाजत.

(रा. नथमलजी चोरडिया—-नीमच.)

बीजो दिवस.

(४) स्तुति.

जय जय करुणाना सिन्धु, प्रभु सिद्धि दाता;
वन्दी वन्दना तनुजो, तम गुण गाता— जय जय.
उदय तणी आशा अजवाळो, क्लेश क्लेश खेंची संहारो;
भ्रातृ भाव उजास अमारा, मुखपर हो रेलाता- प्रभु सिद्धि दाता—जय जय.
अन्ध चक्षुनां व्हार उघाडो, धर्म कर्म सूचवी देखाडो;
अति जोरने वावाझोडे; "फरज" शब्द अफळाता- प्रभु सिद्धि दाता—जय जय.
एक एक सौनी आंगळीये, हजार बळीया सुभागी हाथे;
बळवन्ती अम कोन्फरेन्सने, शुभ दिन हो सोहाता—प्रभु सिद्धि दाता—जय जय.

(५) श्रीमान् सर वाघजी व्हादुरनुं यशोगान.

किन्नरीयो यशगान करे छे, सुरलोक मोतीना चोक पूरे छे;
देवकन्या वरमाळ धरे छे; वाघजी बीरनी जय उच्चरे छे- किन्नरीयो.
मानवी कोइ दइ न शके बदलो सुर सिद्धि सलामती केरा.
दाझ अखण्ड धरी हृदये सीरताज त्रिफेडी दुखाम्बर घेरां;
लाज समाज तणी सुखताज करी बहु काज वधारी रह्या छे,
शासन देव सुभागी बनी नित हाजरी आपी रिझावी रह्या छे.

किन्नरीयो यशगान करे छे— (सुभागी—राजकोट.)

(६) श्रीयुत् प्रेसीडेन्ट शेठ बालमुकुन्दजीने आवकार.

रुडा आवो हो ! चतुर सारथी मुकुन्द–
विजय विजय, आज थकी नकी, आवो हो ! चतुर–
लीधुं ज्यां हाथमां सुकान लक्ष्मिना पतिये,
रहे नव भीति पूछो कुन्ती पूत्रने रतिये;
रुडुं आ बालमुकुन्दे दिपाय स्थान ज्यहां,
कहो सुभागी पूर्ण सिद्धिमां शुं बाकी त्यहां–
निडर, न्हेतर, आप करो हवे; आवो हो !
चतुर सारथी मुकुन्द—रुडा.

(७) हवे क्यारे ?

राग खमाच.

विचारी चेतशो भाइ हवे क्यारे ? सुपुत्रो संघना थाशो हवे क्यारे ?
धुरुं चोगरदमे थाये छतां गाफील ! ! जरा उघाडशो आंखो हवे क्यारे ?
धुरा कलीकाळना पंखी अनीतिने; तजी पांखो प्रसारी उडशो क्यारे ?
तजीश नहीं तो मने तजशे अरे दौलत ! विचारी, वापशो शाणा ! हवे क्यारे?
सुकानी संघना धनने अमरताना; अरे मुकाबला करशो, हवे क्यारे ?
लीधुं बालक थइ देवुं पिता थइने; फरजनुं कर्ज ए करशो अदा क्यारे ?
अरे कतलो तमारे त्यां दुहितानी; फुटेलां जहाज ओळखशो हवे क्यारे ?
तमारा धर्मना सोदा बजारोमां; प्रभु दुभावबा बाकी रह्या क्यारे ?
नकामां धर्मने खोशो तमे जन्म; फरी कहो पामशो नरतन हवे क्यारे ?
गयो आयुष्यनो दिन आ तिमीर आव्युं ! बीछानुं सुखनुं सजशो हवे क्यारे ?
घणा साधुजनो थाक्या जगावीने; गयेला व्यर्थ बोधो उगशे क्यारे ?
सदाये रहो सुभागी त्यां जवा तैयार, झडपशे काळ नव जाणुं हवे क्यारे ?

त्रीजो दिवस.

(८) स्तुति.

आज थकी जीनराज ! समाजनुं मंगळ मंगळ हो–
पार दया नीधि आशव पाडो, नजर उदयनो पथ पाडो;
त्रिनवीये,वीर वन्दित आजे (२)
आपनुं शरण सदा जग नायक ! शुभ सहाय करो—आजथकी.

(सुभागी–राजकोट)

(९) राय बहादुर शेठ चांदमलजीनुं श्रमसाफल्य.

धन्य जन्म सफळ थयो आज; मळ्यो तम घर आ समाज— धन्य.
सतत् रही चींता मन मन्दिर, धर्मोन्नति शुभकाज;
दश दिश घुमी रह्या चांदमलजी, विजयविजयना अवाज—
मळ्यो तमघर आ समाज–धन्य.
गुणी पुत्रो दशरथ सुत सरिखा, छगन मगन घनश्याम;
वैभव छोडी अथाग लइ श्रम, राख्युं पिताजीनुं नाम—
पथ्यो यश छे गामगाम–धन्य.
समजी समजी कर्त्तव्य धनिकनुं, मेळवी धन दइ कीर्त्ति;
सार्थक जन्मतणुं करीनुं शुभ, शान्त प्रभु प्रिय मूर्ति;
सदाचरणे नित्य वर्ति–धन्य.
आपे सुभागी शुभाशिष नित्ये, कीर्त्ति वधो धन धाम;
धर्म बन्धु अने श्री धर्म नायक, जे थकी राजी तमाम;
थजो ए तमाराथी काम–धन्य.
(सुभागी राजकोट)

(१०) राजगीत.

अमे सदा नमी प्रभाभी नाथ याचीये! एडवर्ड सातमो तुं अमर राखजे—
छत्र करे आर्य उपर शितळ छांयडी; विस्तरो सुखद अमल आखिल धरापरे—
सिद्धि, निधि, बुद्धि, तेज आप एमने, सफळ कुशल मंत्री तंत्र रिपुकुळो दमे—
ज्यां सुधी शशांक सूर्य नभ पटे घुमे; तपो सहस्र सूर्य शुं ब्रिटीश तख्त ए—
(सुभागी–राजकोट.)

दुसरी श्री श्वे० स्था० जैन महिला परिषद्.

कान्फरन्सका तृतीय सम्मेलन समाप्त होनेके दूसरे दिन दोपोरको जैन महिलाओंकी एक सभा उसी मंडपमें हुईथी. महिला परिषद् भरनेकी है ऐसा समाचार पेस्तर जाहेर नहीं किया होनेसे शीर्फ ५०–१०० महिलाओं बहार ग्रामसे आइथी, सिवाय स्थानिक महिलाओं बहोतसी हाजरथी.

प्रेसीडेन्ट पद रायशेठ चांदमलजी साहबके धर्मपत्नी गुलाबबाइको दिया गया था, जिस्ने एक व्याख्यान पढ कर सुनायाथा. पंडीत राघवक्षकी धर्मपत्नी, मी० नथमलजी चोरडीया वगैराने भी कुच्छ विवेचन कियाथा; परंतु सबसे श्रेष्ट विवेचन एक आर्यसमाजी पंडीताका था, कि जिनके लेकचरमें बहोतसी उत्तम बातें कही गइथी.

स्त्री शिक्षणका प्रचार करनेके लिये जैन समाजको अरजका ठहराव, हानीकारक रीत रीवाजोंसे अलग रहनेकी स्त्रीयोंकी आवश्यक्ता स्वीकारनेका ठहराव व महिला परिषद्के जनरल सेक्रेटरी तरीके श्रीयुत् केवळदास त्रिभुवनदासकी धर्मपत्नी धीरजबाइको नियत करनेका ठहराव पास हुआथा. और रायशेठ चांदमलजी साहब व उन्के धर्मपत्नीका आभार माननेका वगैरा ठहराव पेश होनेके बाद सभा विसर्जन हुइथी.

सभामें स्त्रीशिक्षणके बारेमें एक निर्माल्य फंड रु. २०० का हुआथा.

मोरबी ठाकुर साहेबको दिया हुआ मानपत्र.

अनेक शुभ गुणालंकृत प्रौढ प्रतापी अखंड यशस्वी धर्म संरक्षक मोरबीके श्रीमन् महाराजाधिराज महाराज श्री १०८ श्री सर वाघजी बहादूर जी. सी. आइ. इ.

धर्म धुरंधर महाराजा साहब—

गत वर्षके कान्फरन्सके दूसरे अधिवेशनके शुभ प्रसंगके समय आपने रतलाम पधारनेकी कृपा कीथी. उसवक्त आप नामदारका कान्फरन्सके तरफका अपूर्व भाव देखकर हमको जो आनंद उत्साह और आल्हाद प्राप्त हुवाथा उसमें, आप नामदारश्रीने दूसरेवक्त उसी निमित्त यहां पधारनेकी तसदी ली उससे औरभी विशेष वृद्धि हुइ है. आप नामदारश्रीका अंतःकरण पूर्वक सत्कार करनेका जो ये अमूल्य मौका मिलाहै इस वास्ते हम आप नामदारश्रीके बहुत ऋणी हैं.

कान्फरन्सके जन्मसे आजतक इस संस्थाके तरफ आप ना०

श्रम है और उसको उन्नतावस्थाको पहुचानेको जो आप प्रसंसनीय प्रयत्न करते आये हो, इस वास्ते हम आपका आभार पूरापूरा नहि दरशा सकते. तिस परमोपकारका निरंतर स्मरण रहे, इस वास्ते हमारे अतःकरणका प्रेम प्रकट करनेके लिये समस्त अजमेर जैन संघकी तरफसे ये मानपत्र आप नामदारके चरणकमलमें अर्पण करनेमें आता है.

आप नामदारने विद्यावृद्धि और इसके प्रचारार्थ अनेक विद्वानोंका यथोचित सन्मान करके उनके शुभ कार्योंको उत्तेजन दिया है, और स्वमती अन्यमती महात्मा पुरुषोंके समागम में धर्मोन्नति करने वास्ते आप नामदार सतत यत्न करते है, इस सबबसे आप नामदारश्रीकी गुण ग्राहकता, उदारता, विद्वता, दया, क्षमा, नीति, परोपकार, शील इत्यादि अत्युत्तम गुण आपके प्रजावर्गमें ही नहि किन्तु देश देशांतरमें भी विख्यात हुवे हैं.

अहिंसा परमोधर्मः इस वेदवाक्य प्रमाणसे राजकर्त्ते अवाचक प्राणीयोंका रक्षण करते आये है; ये जीवदयाके उत्तम सिद्धांतानुसार जीवहिंसा प्रतिबंध करने वास्ते आप नामदार साहबने जो अनुकरणीयं कानून प्रसिद्ध कर लाखों अवाचक प्राणीके आशिर्वादको आप प्राप्त हुवे है. उसी प्रमाणे आप नामदारकी प्रजामें विद्याका जास्ती प्रसार होवे इस शुभ हेतुसे, बवतूवा चेरीटेबल हाइस्कूल स्थापन कर और लायक विद्यार्थीयोंको स्कोलरशिप देकर आप नामदारने भावी प्रजाको जो अमूल्य लाभकी प्राप्ति कर दी है, उसी मुवाफीक दुसरे बहुत लोकोपयोगी खाते खोल कर आपकी प्रजाको विस्मरण नहि होवे ऐसा ऋणबद्ध कर दिया है. इस सबका स्मरण होते आप साहबको अंतःकरणपूर्वक धन्यवाद दिये वगैर नहि रह सकते.

आप मानवंत महाराजा साहब दिन बदिन अधिक ऐश्वर्य संपादन कर राजकुटुंब सहित अविछिन्न सुखशांतिमें रहें, वैसेही आप नामदारकी यशकीर्ति ध्वज यावत् चन्द्रदिवाकर फडकता रहे, और परोपकार, विद्यावृद्धि और धर्मकार्योंमें आप नामदारकी मनोवृत्ति निश्चल रहे, ऐसी परमकृपालू परमेश्वरसे हमारी प्रार्थना है. तथास्तु.

आप नामदारका नम्र सेवक, श्रीसंघ—अजमेर.

लींबडी ठाकुर साहबको दिआ हुआ मानपत्र.

अखंड प्रौढ प्रतापी, सकल शुभ गुणालंकृत, धर्मसंरक्षक, श्रीमन्महाराजाधिराजा, महाराजाश्री दोलतसिंहजी साहब स्वस्थान लींबडीके नेकनामदार खुदावंद ठाकुर साहेब बहादूरकी सेवामें—

धर्मधुरंधर महाराजा साहब:—

हमारे कान्फरन्सके तीसरे अधिवेशनके शुभ प्रसंगपर आप नामदारने हमारे आ-मंत्रणको मान देकर यहां पधारनेकी कृपाकी है उससे आप नामदारश्रीका खरे अंतःक-रणसे सत्कार करनेका यह अमुल्य अवसरका लाभ हमको मिला है. इस वास्ते हम आप नामदारके बहुत उपकृत हुवे है.

लींवडीके स्वर्गवासी महाराजाश्री जशवंतसिंहजी के. सी. आइ. इ. सारे आर्या-वर्त्तमें धर्मजिज्ञासुगणके लिये, विद्यावृद्धि और उसके प्रचारके लिये, वैसेही विद्वान् पंडि-तोंको उत्तेजन देनेके लिये सुकीर्त्ति संपादन करके प्रसिद्धताको प्राप्त हुवेथे. वैसेही आप नामदारभी स्वर्गस्थ महाराजा साहबके मुवाफीक प्रजाके कल्याणार्थ अत्यंत फिकर रखते है. वो जानकर हम आप नामदारको धन्यवाद देते है. आप नामदार गादी नशीन होनेके बाद आप नामदारकी अगाध बुद्धि, कामकाजमें विलक्षण चातुर्य, राजकारोबारमें बाहोशी, अदल न्यायनिष्ठा, वगैरह अनेक सद्गुणोंसे आप नामदारकी कारकीर्दी बहुत थोडे स-मयमें यशस्वी हुइ है, जिससे हम बहुत ही खुश हुये हैं.

आप नामदारने उच्च शिक्षणके लिये हाइस्कूलकी फीस माफ की है. वैसेही आप नामदारकी प्रजाके तरुण विद्यार्थीयोंको हुन्नर कलाका शिक्षणकी प्राप्तिके लिये आप नाम-दारने अनेक स्कोलरशिपो स्थापन की है. उसपरसे स्पष्ट मालूम होता है की आप नाम-दार अपनी प्रजाके शिक्षण के लिये बहुतही उत्साह रखते है.

आप नामदारने लींवडीकी पांजरापोलको वडी सहायता दी है, व पवित्र श्रावण मास, पर्यूसण पर्वमें और हिंदु तहेवारोंमें जीवहिंसाके अटकावके लिये प्रशंसनीय कानून पास करके अबोल प्राणीयोंकी तर्फ दयालू हृदय बताया है, और लाखों प्राणीयोंका आ-शिर्वाद प्राप्त किया है; इतनाही नहि बल्के आप नामदार जैन प्रजा तरफ बडी दिलसोजी दरशाते है, वो जानके हमको बडा हर्ष उत्पन्न होता है.

सद् अनुकरण वह पारसमणी है. इसका समागम जिसको होता है, वो सुवर्ण हुवे वगैर रहता नहि. बालपनेमें बालकोंका कोमल मन सब तरहसे अनुकरणप्रिय होनेसे उस वक्त उनको जो अनुकरण मिलता है, वोही उनकी भविष्यकी उन्नति किंवा अवन-तिका कारण होता है. वैसेही आप नामदारश्री जैसे तेजस्वी महाराजाके साथ जिसको सानिध्य और उनके उमदा गुणोंका अनुकरण करनेका जो उत्तम अवसर मिला है, उ-ससे आप नामदारकी प्रजामें आप नामदारके गुण उतरे वह स्वाभाविक और योग्य है.

आखिरमें आप नामदारश्री राजकुटुंब सहित अहोनिश सुखशांति, दीर्घायू, और रिद्धिसिद्धिको प्राप्त होवें ऐसी परमात्मासे हमारी प्रार्थना है. तथास्तु.

ली. आपका, श्री अजमेर स्थानकवासी जैनसंघ.

नामदार वडोदरा नरेश सर सयाजीराव गायकवाडे कॉन्फरन्स जोग मोकलावेल सलाहकारक संदेशो.

नामदार गायकवाड सरकार हिंदनी तमाम कोमोना उत्कर्ष माटे जे काळजी धरावे छे ते याद लावीने अजमेर कोन्फरन्स वखते पधारवा ते नामदारने श्री साधुमार्गी जैन वर्ग तरफथी एक डेप्युटेशन मोकलवामां आव्युं हतुं तेमज केटलाक पत्रो लखवामां आव्या हता. ते नामदारे ते सर्वना उत्तरमां नीचेनो कृपापत्र पाठव्यो हतो. (आ जवाब लखवा पहेलां ते नामदारे 'जैन समाचार' ओफिस तरफथी छपायला मोरवी अने रतलाम कोन्फरन्सना अहेवालनी बुकोनी प्रतो मगावीने दरेक बाबतनो पुरतो अभ्यास कर्यो हतो.)

व्हाला शेठ चांदमलजी,

मार्च मासनी अधवचमां तमारा शहेरमां मळनारी त्रीजी श्वेतांबर स्थानकवासी कोन्फरन्समां हाजरी आपवा माटे आमंत्रण करवा माटे त्हमारा पुत्रना वडपण हेठळ त्हमारा संघ तरफथी आवेला डेप्युटेशनने आवकार आपतां म्हने अति घणो आनंद थयो हतो. अगत्यना कामनुं दबाण न होत तो त्हमारी साथे विचार करवा माटे जोडावानी तथा जे सुधारानी हीलचाल त्हमारी कोन्फरन्स चलावे छे त्हेमां हूं अंगत हित धरावुं छुं एवुं एकवार फरीथी साबीत करवा आपनानी आ तकनो म्हें खुशीथी लाभ लीधो होत. सने १९०४ मां वडोदरा खाते मळेली त्रीजी श्वेतांबर कोन्फरन्सने हुं आनंद सहीत याद करुं छुं, अने वळते वरस मारा राज्यमां पाटण खाते तेनी थयेली बेठकमां चालेलुं कामकाज म्हें आनंद साथे सांभळ्युं हतुं.

कोन्फरन्सनुं लक्ष्यबिंदु.

त्हमारा जेवी कोन्फरन्सो घणो लाभ करी शके तेम छे; पण ते लाभ तोज थाय के जो ते तद्दन 'सेक्टेरीअन' एटले 'सांप्रदायिक' अने पाछळ गति करनारी न थाय तो. आवी बधी कोन्फरन्सोनी नेम, जे पंथ अथवा कोमने लगती ते कोन्फरन्स होय ते पंथ अथवा कोममां खास करीने चालता सांसारीक कुरीवाजो नाबुद करवानी अने समग्र प्रजाने एकत्र करवा माटे ते कोमने तैयार करवानी होवी जोइए. मनमां आवो ख्याल राखीने हूं एवुं पण इच्छी शकुं के, हिंदमां आवा प्रकारनी वधारे कोन्फरन्सो थवी जोइए;—आवी कोन्फरन्सोनो अर्थ ए के जे कोन्फरन्सो अज्ञान तथा हिंमत वगरना लोकोने तेओनी अधम स्थितिमांथी उंची स्थितिए लाववाने वखत तथा शक्तिनो उपयोग करे छे.

संसार सुधारानी जरुर.

त्हमारी पहेली बे कोन्फरन्सोनुं कामकाज म्हें वांच्युं छे अने म्हने जोइने आनंद थाय छे के टुंका पण ते छतां बहोळा वि-

रुसारवाळा कार्यक्रममां ऱ्हमोए घणी ज्याजबी रीते संसार सुधारो तथा केळवणीने अगत्य आपी छे. बाळविवाह, कन्याविक्रय, अनेक स्त्री करवानो रीवाज ए वगेरे रीवाजो एवा छे के जे हरकोइ समाजने घणा नामोशीरुप छे. पेटा कोमो के ज्हेनी हैयाती म्हारा समजवा प्रमाणे जैन धर्मना मूळतत्त्वो विरुद्ध छे ते पेटा कोमो रद करवाथी आ रीवाजो सहेलथी नाबुद करी शकाय अगर ओछा बोजारुप करी शकाय. मात्र ठरावो करवाथी कांइ वधारे फायदो नहि थाय. ऱ्हमारामांना दरेक विचारवंत पुरुषे पोताना खानगी व्यवहारमां तथा पोताना कुटुंबी संबंधीओमां आवा रीवाजो चालवा देवानी मजबुत रीते सामा थवुं जोइए.

ज्ञाति बंधारणना पायामां रहेलुं नुकशान.

मुख्य वदी ज्ञातिना बंधारणनी छे. हाल जे रीते ज्ञातिबंधारण चाले छे तेवा बंधारणवाळी ज्ञातिओ लाभ करतां नुकशान वधारे करे छे. ज्ञातिबंधनथी जेओ बंधायला रहे छे तेओनी जींदगीनी दृष्टि मर्यादा तेथी संकुचित थाय छे. बीजी कोमो साथनो छुटो वहेवार के जे केळवणी माटे सौथी वधारे संगीन रीत छे ते, ज्ञातिबंधनथी अटके छे. वळी राष्ट्रीय जुस्सो तथा ऐक्यता तेनी घणी नुकशानकारक असर थाय छे. राष्ट्रीय विचारो तथा राष्ट्रीय लाभो तेने लीधे अंधकारमां जइ पडे छे. ज्ञातिबंधनमां केटलाक सारा मुद्दा पण हशे परंतु हाल तेनी जे स्थिति छे ते प्रमाणे तो ते घणा सुधारानो मोटो दुश्मनरुप थइ पड्युं छे, अने अज्ञानतामय वहेमोने तेथी उत्तेजन मळे छे. ऱ्हमारा शास्त्रोमां एवुं कांइ नथी के जेथी ज्ञातिओनी हयातीने वहाली मळती होय जेनोनी अंदर जे जे ज्ञातिओ छे ते ज्ञातिओनी तवारीख बतावी आपे छे के सैकाओ सुधी तमोए ज्ञाति बंधारण दाखल करवानी सामे लडत चलावी हती. बीजा पंथो तथा बीजी कोमो साथनो व्यवहार ऱ्हमोए मात्र थोडा वर्षोपरज बंध कर्यो हतो. ऱ्हमारी समाज, एक विचारवाळां माणसोनुं मंडळ (ब्रधरहुड) हतुं, अने ते मंडळमां सैकाओ सुधी ऱ्हमोए बीजी ज्ञातिओ तथा बीजा धंधाना माणसोने दाखल कर्या हता अने ऱ्हमारी तथा ऱ्हेमनी स्थिति तथा रहेणी करणीमां घणो तफावत होवा छतां ऱ्हमोए तेओने ऱ्हमारा मंडळमां दाखल कर्या पछी तेओ साथ संपूर्ण व्यवहार राख्यो हतो. थोडा जमानानी वातपर बधी कोमवाळा जैनो हिंदुओमांनी बीजी कोमना लोको साथे जमता हता तथा तेओ साथे बेटी व्यवहार पण राखता हता. परन्तु हाल आवो व्यवहार बंध पाडवानी वलण जोवामां आवे छे ते दिलगीरी उपजावे एवी छे. गया सैकामां कोमोनी संख्या घणी वधी पडी छे. पण कोमो जोडाइ जइ एक थती होवानो एक पण दाखलो जोवामां आवतो नथी. माटे हवे वधु विभाग पडता अटकाववा जोइए, अने हालना विभागोने एकत्र करवानी हीलचाल शरु करवी ... को ए मुख्य करीने जुदा जुदा मा

खावनारो कृत्रीम भेद छे. माणसो वच्चे, तेओना शरीर, नीति तथा विद्वता संबंधी फरको थयो कुदरती तफावत छे के कृत्रीम तफावत उभा करवानी अने माणसोने वधु जुदा पाडवानी कोइ जातनी जरुर रहेती नथी. बीजा लोकोना अनुभव तथा दाखलाथी आपणी खात्री थवी जोइए के, कृत्रीम तफावत उभा करवा माटे सत्ता पामेला आसामीओना प्रयास वगरज लोकोने पोतानी कुदरती पंक्ती शोधवाने छुट्टा मुकवा जोइए. कृत्रीम तफावत तो सुधाराना महा प्रवाहने गुंगळावी नांखवानुं तथा ते प्रवाह आडो बंध बांधवानुं काम बजावे छे. जेवी रीते त्हमो मूर्तीपूजानी व्हेमी श्रद्धानी सामे थया तेवीज रीते, वधु नहि तो त्हमारी कोमने लागेवळगे छे त्यां सुधी, ज्ञातिना अर्थ वगरना भेदने वाजुए मुकी शको. जो आ दर्शुं करवामां आवे तो त्हमारी कोन्फरसनी हयाती वाजवी ठराववा माटे आथी कोइ वधु पुरावानी जरुर हुं धारतो नथी. त्हमारी कोमनी महान सेवा बजाववा उपरांत त्हमे अनुवर्त्तन करवा माटे बीजी कोमोने एक वहेवारु दाखलो बेसाडी शकशो. पण एक वात याद राखवी जोइए के मात्र ज्ञाति बंधन तोडी नाख्या एटले पोतानी नेम पार पडी गइ एम थतुं नथी. कोमना सांकडा विचारनी जग्याए प्रजाकिय कल्याण माटेना विशाळ ख्याल तथा विशाळ दीलसोजीने जग्या आपवी जोइए. जेवी रीते त्हमे त्हमारा ज्ञाति रीवाज जाळववामां आतुर छो तेवीज मजबुत रीते त्हमारे प्रजाकीय ऐक्यने उत्तेजन आपवाने प्रयास करवो जोइए.

केळवणी.

नुकशानकारक सांसारिक रीवाजोमां त्हमे बारीक तपास करतां जोइ शकशो के आवा घणा खरा रीवाजो नैतीक, सामाजीक तथा शारीरिक नियमोनी अज्ञानतानुं परिणाम छे. लोकोमां ते नियमो ज्ञान फेलावो एटले म्हारी खात्री छे के सामाजीक बंधारण पर आ नुकसानकारक रीवाजो बंधाता जाय छे पोतानी मेळे अद्रश्य थशे. तेम थतां, त्हमां ध्यान नहीं आपनारा तथा बेदरकार श्रोताजनो आगळ खाली ठरावो पसार करवा रहेशे नहि. माटे हेठला वर्गना लोकोने केळववाने त्हमारे दरेक प्रयास करवो जोइए हिंदुओमांना वधा हानीकारक सांसारिक रीवाजोने नाबुद करवा माटे सौथी वधारे असरकारक इलाज केळवणी छे.

गामडांओनी शाळाओ.

छेल्ली कोन्फरन्सना ठरावोमां एवुं जोइने म्हने आनंद थयो छे के, दरेक शहेर अथवा गामडांमां पोतानी कोमना छोकराओने केळवणी माटे घटती सगवडो करी आपवानी दरेक स्थानीक संघने माथे फरज रहेली छे एम त्हमे स्विकार्युं छे. देखरेख राखवा माटे मजबुत तथा दीलसोज माणसोने राखवाथी त्हमे जोइ शकशो के आ फरज केटले सुधी बराबर रीते बजाववामां आवे छे. आ बाबतमां त्हमारे हमेशां आत्मबळ उपर आधार राखवा प्रयास करवो जोइए. जरुर पडे तो त्हमारे त्हमारी पोतानी शाळाओ

खोलवाने अने ह्मारी हाजतोने सौथी सरस रीते पहोंची वळी शकाय तेवुं हेमां शिक्षण आपवाने तैयार रहेवुं जोइए.

अज्ञान.

हुं खात्रीथी मानुं छुं के ह्मोए वस्तीनी गणत्रीना छेल्ला आंकडा वांच्या हशे. ह्मारा जेवी वहेवारु तथा धंधावाळी कोम माटे ते आंकडा शुं घणी दीलगीर थवाजोग स्थिति रजु करता नथी ? आखा हिंदना जैनोमां सेंकडे ४८ टका जेटला पुरुषो भणेला छे तथा मुंबइ इलाकामां सेंकडे ५२ टका जेटला पुरुषो भणेला छे. तमारी स्त्रीओमां आखा हिंदने लेतां सेंकडे मात्र १.८ टका जेटली स्त्रीओ केळवणी पामेली छे. मुंबइ इलाकामां ह्मारी सेंकडे २ टका जेटली स्त्री-केळवणी पामेली छे. ज्यां सेंकडे ५० टका जेटला पुरुषो तथा सेंकडे ९८ टका जेटली स्त्रीओ बीनकेळवायलां तथा अभण रहे तेवो कोइ देश सुधाराना संबंधमां उंची पंक्ति माटे दावो करी शके नहि. ह्मारी शक्तिओ काम लगाडवा माटे तथा संगीन परीणामो मेळववा माटे अत्रे विशाळ क्षेत्र पडेलुं छे.

स्कोलरशीप माटे फंड.

आ बाबतना संबंधमां उंची केळवणी माटे अने खास करीने वेपारी उंचा शिक्षण अने केटलाक "एप्लाइड सायन्सीस" ना अभ्यास माटे स्कोलरशीपो आपवा फंड उभां करवां जोइए. ह्मारी कोम एक वेपारी कोम छे अने तेथी आ विषयोनी ह्मारा पुत्रो केळवणी ले ए घणुं वाजवी छे. आथी ह्मारा लोकोने घणो संगीन लाभ थशे.

इतिहासीक शोधखोळ.

ह्मारी तवारीख तथा ह्मारा शास्त्रोने लगती शोधखोळना कामने ह्मारा कार्यक्रममां जग्या मळेली नथी ए जोइ हुं दीलगीर थाउं छुं. ह्मारा सिद्धांतो अने इतिहास थोडाएक ओरीअन्टल विद्वानो सिवाय अन्य धर्मीओमां भाग्येज जाणीता छे. जैन धर्मनी बहारना माणसो सैकाओ सुधी एम मानता आव्या हता के जैन धर्म ए बौध धर्मनो एक फांटो छे अने आ मान्यताने लीधे जैन धर्मनो अभ्यास करवामां आवतो हतो नहीं. आ गेरसमजुती कोणे दुर करी ? ह्मारी कोमना माणसोए नहिं पण एक जर्मन पंडीते दुनीआने जाहेर कर्युं के जैन धर्म बौध धर्मथी तदन जुदो छे. वळी ते एटलुं पण साबीत करवाने शक्तिवान थयो हतो, के तमारा त्रेवीसमा तीर्थंकर एक "माइथोलोजीकल परसोनेज" एटले के धर्मशास्त्रोमां जणावेला कल्पीत आसामी नहि हता. पण वास्तवीक रीते तेओ इस्वीसन पूर्वे ७०० बरसपर हैयाती भोगवता हता. आथी हुं एम कहेवा नथी मांगतो के ह्मारामां विद्वानो नथी. हुं घणी सारी रीते जाणुं छुं के ह्मारी उंडी फीलसुफी तथा न्यायशास्त्रनी घणी मुश्केली भरेली बाबतोमां घणा प्रवीण होय तेवा ह्मारामां घणा छे. पण इतिहासीक शक्ति तथा सुधाराना फेलावा तेमज अर्वाचीन विचारोना संबंधी ज्ञाननी आ

धर्मगुरुओ तथा आपणा लोकोनां दीलगीर थवा जोग खामी छे. अंध श्रद्धानो जमानो जतो रह्यो छे अने मात्र आगुकनी सत्ताना आधारे कोइ पण बाबत—पछी ते बाबत गमे तेटली पुराणी होय—दुन्या माननारी नथी. त्हमारो धर्म वेद धर्मथी वधारे पुराणो छे एम त्हमारे विद्वानो पासे मनाववुं होय तो ते बाबत त्हमारे सायन्सना संगीन पुरावा वडे तथा संगीन दलीलो वडे साबीत करी आपवुं पडशे.

शास्त्रो.

प्रथम तो त्हमारे शोधी काढवुं जोइए के त्हमारां शास्त्रो कयां छे अने क्यहां क्यहां छे. त्हेमांनां घणांखरां पाटण तथा जेसलमीरनां भोंयरांमां दटायलां छे. सैकाओ थयां तेओ त्यां संभाळ लेवाया वगर पडयां छे अने उधाइ तथा कीडाओने खोराक पूरो पाडे छे. म्हने धास्ती रहे छे के त्हेमांनां केटलांक तो अत्यार आगमच नाश पाम्यां हशे. त्हमारा धर्मना लाभ माटे तथा त्हमारो धर्म जाळवी राखवा खातर जो ते पुस्तकोनो काबु धरावनाराओ उदार थाय अने उमदा हेतुनी खातर ते पुस्तको आपे तो ते पुस्तको कोइ मध्य स्थळे एकठां करवां जोइए. ते शास्त्रो तपासी जवां, तेना तरजुमा कराववा अने छपाववा. कदाच त्हमारा साधुओ ज केटलाक शास्त्रीओनी मददथी आ काम करी शकशे. त्हमारो धर्म पाळता जुवानीयाओ माटे शोधखोळने लगती थोडी स्कोलरशीपो त्हमारे स्थापवी जोइए अने ते जवानोने शोधखोळना काम तथा तेना अभ्यासमां "ओरीएन्टल स्कोलर्स" एटले के पूर्व देशने लगती बाबतोमां प्रविणता धरावता पंडीतोना हाथ नीचे केळवणी लेवा माटे जर्मनी मोकलवा जोइए; तेओ पाछा फरे त्यारे तेओने चोकस काम सोंपवुं जोइए.

तवारीख.

त्हमारा धर्मनी तवारीख हजु लखवानी बाकी रही छे. त्हमारो धर्म क्यारे अने केवी रीते स्थपायो, त्हेनी खीलवणी केवी रीते थइ, श्वेतांबरो तथा दीगंबरो वच्चे भेद, दक्षीण हिंदमां तेनो फेलावो, राजदरबारमां तेनो लागवग, तथा त्हेनी अवनतीनां कारणो—आ बाबतो संबंधी तवारीख मेळववानी छे. त्हमारा धर्मनुं एक पण पुस्तक एवुं जोवामां नथी, के जेमांथी त्हमारा धर्मना बधा नियमो जाणी शकाय. त्हमारे आवुं मोटुं पुस्तक अंग्रेजीमां तेमज देशी भाषाओमां बनाववुं जोइए, के जेथी बीजाओ तेवडे त्हमारा धर्मनुं ज्ञान मेळवी शके. जैनोमां कोमनी शरुआत तथा त्हेनी खीलवणी, हिंदु धर्मनी त्हमारा धर्मपर असर, तथा त्हमारा लोकना रीत रीवाज, ब्राह्मण धर्म तथा बीजा धर्मोपर जैन धर्मनी असर, जैन धर्म पाळती जुदी जुदी कोमो वच्चेना तफावतो, त्हेनी शरुआत तथा सामान्य रीते त्हमारी कोमपर थती असर, आ तथा एवी बीजी बाबतो संबंधी त्हमारे तपास चलाववी जोइए. म्हारी खात्री छे के आ तपासनुं परीणाम त्हमारे माटे घणुं लाभकारी आवशे. त्हमारा पंथना

जुना विचारना लोकोनी दोरवणी माटे त्हमे तेओनी आगळ सत्तावार विगतो रजु करी शकशो. आथी त्हमारुं सुधारानुं काम वधारे सहेलुं थशे अने त्हमारा लोकोमां जे गेरसमजुती तथा जे अज्ञान फेलायलां छे ते नाबुद थशे.

प्रजाकीय ख्यालपर भार.

म्हें शरुआतमां जणाव्युं छे तेम, सुधारा तथा आगळ वधवा माटेना त्हमारा वधा प्रयासमां त्हमारे एक क्षणवार पण "नेशनल आइडीयल" एटले के आखी प्रजाने लगतो विचार वीसरी जवो जोइए नहि. हमेशां याद राखजो के, जे वधारे मोटा समाजने 'हिंदी प्रजाना' रुपमां मुकवानो छे त्हेना त्हमे एक 'अवयव' छो. कुसंपथी तथा दीलसोजीनी खामीथी हिंदे वणुं सहन कर्युं छे. त्हमारा धर्मनी अंदर तेमज बाहार "ऐक्य" ए त्हमारो "वॉचवर्ड" थवो जोइए अर्थात् ए आशयनेज त्हमो लक्ष्य बिंदु बनावजो.

आखा हिंदने लगती जैन कोन्फरन्स.

हुं जाणुं छुं के, जैन धर्मना जूदा जूदा पंथनी जूदी जूदी कोन्फरन्सो भरवाने बदले आखा हींदमांना त्हमारा धर्मना वधा पंथने लगती एकत्र कोन्फरन्स भरवाने प्रयास करवामां आव्यो हतो. आ प्रयासमां त्हमे एक वखत निष्फळ गया हो तो त्हमे ते फरीथी करी शको; अने म्हारी खात्री छे के सारी समजुती फेलातां त्हमे फतेहमंद थशो. एवुं जणाय छे के जुवानीआओ त्हेमां सामेल थवा खुशी छे, अने छुरत खाते "ओल इंडीया जैन कोन्फरन्स" भरीने तेओए शरुआत पण करी छे. दडाने गबडतो करवामां आव्यो छे, हवे त्हेने त्हमारी मदद वडे त्हमे वेगवाळो बनावो. आमां कोइ मोटी मुश्केली जणाती नथी. त्रणे कोन्फरन्सना ठरावोनी सरखामणी करतां तेओनुं कार्यक्रम एक सरखुं जणाय छे.

जीवदया माटे काळजी.

हुं पुरुं करुं ते पहेलां एक वे बाबतो एवी छे के जे बाबतोपर त्हमारी रजाथी हुं वे बोल बोली शकुं. त्हमे जाणोछो के घधा धर्मो अमुक बाबतमां घणा "एक्स्ट्रीम"मां एटले के जोइए ते करतां दूर जता होवानो संभव छे. न्हाना जीवोनी दरकार करतां त्हमारे त्हमारा मनुष्य बांधवोना हितना सवालने वीसरी जवो नहि जोइए. हुं जाणुंछुं के त्हमारा पछात पडेला तथा गरीब सहधर्मीओने बनती मदद आपवानी जरुरथी त्हमे वाकेफ छो, पण त्हमे समजी शकशो के न्हानां जीवो करतां मानव वर्गना मोटा विस्तारने त्हमारी दीलसोजी तथा त्हमारा तरफनी मददपर वधारे हक्क छे. जीवदयानुं दरेक काम सारुं छे; पण आवां काम ज्यारे गरीब लोकना संबंधमां तथा मनुष्योथी न्यात बहार थइ पडेला जेवा लोकोना संबं-

भगी करतामां आवे त्यारे तेहनुं पुण्य नाशी जाय छे.

संसारसुधाराने लगता एटला बधा सवालोनो नीवेडो करवानो छे के आपणुं मगज ध्यान ते उपर भरावुं जोइए अने मगज ज खंताथी ते काम करवुं जोइए. एवो एक संसारसुधारो बाळ लग्नना संबंधमां थवानी जरुर छे, के जे बाळ लग्ननी बदी ए निर्माल्य अने खोडीलां संतान उत्पन्न कर्यां छे अने जे घणा बिनजरुरी शारीरिक दुःखोनुं कारण छे. आ देशनां बाळकोमां मृत्युनुं प्रमाण शरमावा जेटलुं वधी गयुं छे. माटे ए बदी दूर करवाने द्रढपणे प्रयास करवो जोइए छे. नर्सो तथा सुयाणीओने केळवीने तथा आरोग्य विद्याने अनुकुळ टेवो, तन्दुरस्त खोराक, स्वच्छ घरो अने साफसुफ कपडांनी जरुर लोकोना मन उपर ठसावीने मरण प्रमाण घटाडवानो प्रयास करी शकाय. ए उपरांत वळी फरज्यात वैधव्य के जेथी घणी वखत घणुं दुःख उत्पन्न थाय छे ते वगेरे घणा सवालोनो नीवेडो करवानो छे. आ कहेवाती सांसारिक बदी प्राश्चीमाय जैन समाजना जेटली आ देशमां तिव्र नहि होय तो पण ए एक एवो सवाल छे के जेना सामे डाह्या माणसो आंख मींचामणां करी शके नहि. आ बदी नाबुद करवानो इलाज सूचववानो हुं कोशीश करीश नहि. पण मात्र सूचना करीश के जे समाज पोतानी उन्नति करवानी इच्छा धरावती होय तथा दुनियानी प्रजामां प्रतिष्ठा वाळो मोभ्भो जाळववा इच्छती होय तेहेणे आ सवाल ध्यान बहार रहेवा देवो जोइए नहि. एवो मोभ्भो जाळववानुं काम जींदगीनी बदीओ सामे हिंमतथी टक्कर झीलया सिवाय कदी बनी शके नहि.

स्वतंत्र विचारो जाहेर करवानी अगत्य.

केटलेक प्रसंगे म्हें जोयुं छे के केटली कोन्फरन्समां छुटथी वादविवाद (चर्चा) करवा देवामां आवती नथी. मात्र पसंद करेला वक्ताओ पासे तैयार करेलां भाषण अपाववामां आवे छे. आ कारणथी श्रोताजनो आगळ जूदा जूदा विचार भाग्येज रजु थाय छे. कदाच त्हमे धारता हशो के मोटा मंडळोमां छूटथी चर्चा चलाववी ए सगवडभर्युं नथी. पण वधु नहि तो "ठरावो करनारी कमीटी" मां तो उथलपाथल करी नांखनारा मत, मध्यमसरना मत तेमज जूना विचारना मत संबंधी सघळा द्रष्टिबिंदुथी छूटथी चर्चा करवानी संपूर्ण सत्ता मळवी जोइए. आम करवामां कांइ अगवड नडती होय तो जेम बने तेम थोडा विषयो हाथ धरवा परंतु गमे तेवा हदपारना विचारने पण दाबी देवो न जोइए; ने खास करीने जवानोना तथा वधारे आगळ वधवाना जेओ त्हमारी कोन्फरन्समां विचार धरावता होय तेओना विचार दाबी देवाने कांइ पण प्रयास करवो नहि जोइए.

विचारो छूटथी चर्चवानी अगत्य.

विचार छूटथी चर्चवाने तथा विचारो-

नी आपले करवानी बाबतने हुं घणीज महत्वता आपुं छुं. कोइ कोम केटली आगळ वधी छे त्हेनुं माप त्हेना विचार उपरथी थइ शके छे. हिंदुस्तान के ज्यां लोकोनां मन एकज चीले चाले छे अने रीतरीवाजो बंधाइ गयेला छे तेवा देशमां पण नवा विचारो दर्शाववानी अत्यंत सुगमता आपवानी जरुर छे. अने त्हमारा हालना बंधारण मुजब जो त्हमे चर्चा माटे वधारे वखत आपी शको तेम न हो तो हुं त्हमने एम सूचवीश के जूदां जूदां भाषणो लखावो, ते भाषणो सभा वच्चे वंचाणा होय एम मानी लो, अने बधाना हित माटे छापीने प्रगट करो; अथवा तो जूदा जूदा सांसारिक विषयो उपर निबंधो लखावी ते निबंधो कोन्फरन्स तरफथी छपावो. (कोन्फरन्स तरफनी टीका साथे.) कोइ शास्त्र के माणसने सत्ता बनावा करतां " सत्यासत्य विचारशक्ति " ने सत्ता बनावो.

छेवट.

छेवटे त्हमारी कोन्फरन्समां हाजरी आपवा माटे त्हमो तरफथी मळेला मायाळु आमंत्रण माटे हुं त्हमारो आभार मानुंछुं अने जणावुं छुं के जो कामकाजना दबाणनुं कारण वच्चे नडयुं न होत तो हुं खुशीथी हाजरी आपत. आ कागळमांनी थोडीएक टीकाओ त्हमने घणाज खुल्ला दीलथी करेली जणाय तो ते माटे म्हने माफ करशो. त्हमारी कोन्फरन्स के ज्हेना तरफ हुं अंतःकरणथी दीलसोजी धरावुं छुं, त्हेमां हाजर थवाने म्हने ज्यहारे आमंत्रण करवामां आव्युं छे त्यहारे म्हने एमज लागे छे के जे कांइ सत्य हुं जोउं छुं ते खुल्ले खुल्लुं म्हारे बोली जवुं जोइए. कदाच ते त्हमने थोडुंक अरुचीकारक होय तोपण म्हारे ते खुल्लेखुल्लुं बोली देवुं जोइए. हुं हिंदना हित माटे काळजी धरावुं छुं ने जयहां ते बाबतने संबंध होय त्यहां अभिप्रायनो तोड अथवा छुटछाट नज मुकी शकाय; मतलबके छुटछाट मुक्या सिवाय पोताना विचारो तादृश्य रुपमां बतावबा जोइए.

कोन्फरन्सने हुं दरेक फतेह इच्छुंछुं.

तमारो विश्वासु.

(सही) सयाजीराव गायकवाड.

परचुरण.

मुनिमहाराजो.

कोन्फरन्स निमित्ते दर्शननो लाभ सौ कोइने मळे तेथी अजमेरमां पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज पोताना केटलाक शिष्यो साथे पधार्या हता. ता. ११ मीने दिवसे स्हवारे एक मोटा मेळावडा सन्मुख केटलाकोए जीवदयानां भाषणो आप्यां हतां अने श्रीलालजी महाराजे हानिकारक रीवाजो विषे केटलुंएक विवेचन कर्युं हतुं, जेथी घणाखराखोए १६ वर्षथी ओछी उमरना पुत्रने अने ११ वर्षथी ओछी उमरनी पुत्रीने नहि परणाववा प्रतिज्ञाओ लीधी हती. राजे स्हवारमां उपाश्रय श्रोता वर्गथी भराइ जतो हतो सुमारे १०० साधुना दर्शननो लाभ मळतो हतो.

वॉलंटीयरोनो मेळावडो.

ता. १२ मीए कोन्फरन्सनी बेठक पूरी थइ ते रात्रे वॉलंटीयरोए पोता तरफनो एक मेळावडो भर्यो हतो अने पोताना सुपरीन्टेन्डन्ट मी. चोरडीयाने मानपत्र आप्युं हतुं बीजे दिवसे वॉलंटीयरोने चांद वेंहेंची आप्या बाद रजा आपवामां आवी हती.

जयपुरनी मुसाफरी.

जयपुर एक जूनी बांधणीनुं अने ऐतिहासिक शहेर होवाथी तथा त्यांनुं म्युझीयम अने अंबरनो किल्लो आखा हिंदमां बहु वखणातां होवाथी ते जोवाने घणा प्रतिनिधिओ तथा प्रेक्षको जयपुर रवाना थया हता.

प्रमुखनी विदायगिरि.

प्रमुख साहेब ता. १३ मीए सांजे जयपुर तरफ गया हता अने त्यांनां प्रसिद्ध स्थळो जोया बाद तेओ ता. १५ मीए जयपुरथी सतारा तरफ जवा माटे रवाना थया हता. अमदावाद खाते तेओ थोडो वखत थोभ्या हता अने "जैन समाचार" ओफीसनी मुलाकात लीधी हती.

वैद्यराजनो उपकार.

अजमेरना एक सुप्रसिद्ध वैद्यराज मी. रामदयाल शर्माए कोन्फरन्स उपर एक उपकार कर्यो छे, के तेमणे कोइ पण प्रकारनी फी न लेतां कोन्फरन्स मंडपनी नजीकना एक तंबूमां एक खास कामचलाउ दवाखानुं उभुं कर्युं हतुं अने तेमांथी कोन्फरन्समां भाग लेवाने आवेलाओमांथी जेओ दर्दी थइ पड्या हता तेमने मफत दवा आपवामां आवती हती. लगभग १२५ दर्दीओए आ दवाखानानो लाभ लीधो हतो.

उत्साही काम करनाराओ.

कोन्फरन्स संबंधी कामकाजमां रा० शेठ चांदमलजी, त्हेमना पुत्रो तथा अजमेरना अने एसीस्टंट सेक्रेटरी मी. व्हेचरदास तरफथी आप पुष्कळ महेनत लीधी हती. कांइ पण जातनी फरज सिवाय पण खरा अंतःकरणथी चुपकीथी काम करनार मी. झवेरी दुर्लभजी हता. मोरबीवाळा मी० गोकळदास जूना-नवा विचारना आगेवानो वच्चे एकता करावामां सारी कुनेह वापरता जोवामां आव्या हता. रेल्वे इन्स्पेक्टर मी० सुगनचंदजी नाहारे किमती सेवा बजावी हती. मी० भंडारी, मी० पोपटलाल, फेवलचंद, मी० सुभागी वगेरेए पण सारी महेनत लीधी हती. शेठ अमरचंदजी पीतलीआनी दीर्घदृष्टि घणी उपयोगी थइ पडी हती. केटलाको वच्चे नकामी दोडादोड करी पोताने पण भाव पूछवामां आवे छे खरो एवो देखाव करता हता.

मी. लोढानी पाछळथी करायली सखावत.

शेठ उमेदमलजी लोढा एक फरोडपाति तरीके प्रसिद्ध होवाथी, तथा सत्कार कमीटीना प्रमुख तरीकेनुं मान त्हेमने मळेलुं होवाथी सर्व कोइ आशा राखतुं के मुंबइ खातेनी बोर्डींग जेटली रकम उदारता हमणां तेओ जाहेर करशे. प० कोन्फरन्स वीखराइ जता सुधी तेओए का० उदारता जणावी नहोती. परोणाओ वीखराया बाद त्रीजे दिवसे तेओए रु. १७०० नी उदारता जाहेर करी हती.

અજમેર કૉન્ફરન્સ વખતે ફંડમાં ભરાયલી રકમો.

(मी.मगनलालना भाषण बाद शेठ मेघजी-
थोभणे रा. १०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां
ने २५० जैन बॉर्डींगमां आपवानुं जा-
कर्युं हतुं, अने पछी तुरतज फंडनी शरुआत थइ
ी. मांगरोळवाळा मी. लालजी हरखचंदे रु.
५०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, कच्छवाळा मी.
मेघजीभाइ देवचंदे रु. २५० जैन ट्रे० कॉलेजमां
अने २५० बॉर्डींगमां तथा प्रमुख साहेबे रु.
२१०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, १५०० बॉर्डींग-
मां अने १५०० जीवदया वगेरेमां नोंधाव्या हता.

રૂ૦ ૧૦૦ અને તેથી વધારે.

નામ.	ગામ.	કોલેજ. જૈ. ટ્રે.	બોર્ડીંગ.	જીવદયા.	નિરાશ્રીત.	કુલ
શ્રીયુત શિરેમલજી મુથા	ગુલેદગઢ	૧૦૦	૦	૨૦૦	૨૦૧	૫૦૧
,, જીતમલજી દોલતરામજી	મિરજગાંવ	૨૦૦	૦	૨૦૦	૦	૪૦૦
,, પિરથીરાજજી જીતમલજી	જળગામ	૦	૦	૧૦૧	૧૦૦	૨૦૧
,, લખમીચંદજી રામચંદજી	"	૦	૦	૫૧	૫૧	૧૦૨
,, નિહાલચંદજી ગંભીરમલજી	સિકંદરાબાદ	૦	૦	૧૦૦	૦	૧૦૦
,, વછરાજજી રૂપચંદજી	સાચોરા	૭૫	૨૫	૨૫	૦	૧૨૫
,, મેઘજીભાઇ થોભણ	મુંબઇ	૨૫૦	૫૦૦	૦	૦	૭૫૦
,, મગનલાલ મોહનલાલ ઝવેરી	વડોદરા	૫૦॥	૫૦॥	૦	૦	૧૦૧
,, લાલજી હરખચંદના ટ્રસ્ટી	માંગરોળ	૫૦૦	૦	૦	૦	૫૦૦
,, જીવણભાઇ આણંદજી						
,, અમરચંદજી રાઘવજી	પોરબંદર	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
,, મેઘજીભાઇ દેવચંદ	કચ્છભુજ	૨૫૧	૨૫૧	૦	૦	૫૦૨
,, રા. બ. ઉમેદમલજી લોઢા	અજમેર	૨૦૦	૧૦૦૦	૫૦૦	૦	૧૭૦૦
,, લખમીચંદજી છાજેડ	કીસનગઢ	૦	૦	૫૦૦	૦	૫૦૦
,, અગરચંદજી પારેખ	,,	૫૦	૦	૫૦	૦	૧૦૦
,, માનમલજી નવલમલજી	પીપાડ	૭૫	૭૫	૭૫	૭૫	૩૦૦
,, ઉદયપુરસંઘ સમસ્ત		૧૦૦	૫૦	૨૫	૨૫	૨૦૦
,, જવાનમલજી ગ્યાનમલજી	ભીલવાડા	૭૫	૭૫	૦	૦	૧૫૦
,, ફતાજી તીલોકચંદજી	મંદશોર	૧૦૧	૦	૫૦	૦	૧૫૧
,, વજેનાથજી ચુનીલાલજી	જોધપુર	૨૦	૨૦	૪૧	૪૦	૧૨૧
,, નોરતનમલજી ભાંડાવત B. A. L. L. B.		૦	૫૦	૦	૫૦	૧૦૦
,, મેઘજી ગીરધરલાલજી	છોટીસાદડી	૧૦૧	૦	૦	૦	૧૦૧
,, પનાલાલજી ગોપાલજી ધાર (મં. ળ ॥)		૦	૦	૦	૧૦૦	૧૦૦
,, પોપટભાઇ ડાહ્યાભાઇ	રંગુન	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
,, એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦		સ્રી શીક્ષણ		૫૦૦
,, એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦				૫૦૦

આ સિવાય ન્હાની ન્હાની રકમો ઘણી હતી

અજમેર કોન્ફરન્સ વખતે ફંડમાં ભરાયલી રકમો.

(मी.मगनलालना भाषण बाद शेठ मेघजी-थोभणे रु. ५०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां ते २५० जैन बॉर्डींगमां आपवानुं जा-[हेर] कर्युं हतुं, अने पछी तुरतज फंडनी शरुआत थंइ [हत]ी. मांगरोळवाळा मी. लालजी हरखचंदे रु. ५०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, कच्छवाळा मी मेघजीभाइ देवचंदे रु. २५० जैन ट्रे० कॉलेजमां अने २५० बॉर्डींगमां तथा प्रमुख साहेबे रु. २१०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, १५०० बॉर्डींगमां अने १५०० जीवदया वगेरेमां नोंधाव्या हता.

રૂ૦ ૧૦૦ અને તેથી વધારે.

નામ.	ગામ.	કોલેજ જૈ. ટ્રે.	બોર્ડીંગ.	જીવદયા.	નિરાશ્રીત.	કુલ
[શ્ર]ીયુત શિરેમલજી મુથા	ગુલેદગઢ	૧૦૦	૦	૨૦૦	૨૦૧	૫૦૧
,, જીતમલજી દોલતરામજી	મિરજગાંવ	૨૦૦	૦	૨૦૦	૦	૪૦૦
,, પિરથીરાજજી જીતમલજી	જળગામ	૦	૦	૧૦૦	૧૦૦	૨૦૦
,, લખમીચંદજી રાયચંદજી	"	૦	૦	૫૧	૫૧	૧૦૨
,, નિહાલચંદજી ગંભીરમલજી	સિકંદરાબાદ	૦	૦	૧૦૦	૦	૧૦૦
,, વછરાજજી રૂપચંદજી	પાચોરા	૭૫	૨૫	૨૫	૦	૧૨૫
,, મેઘજીભાઇ થોભણ	મુંબઇ	૨૫૦	૫૦૦	૦	૦	૭૫૦
,, મગનલાલ મોહનલાલ ઝવેરી	વડોદરા	૫૦॥	૫૦॥	૦	૦	૧૦૧
,, લાલજી હરખચંદના ત્રસ્ટી	માંગરોળ	૫૦૦	૦	૦	૦	૫૦૦
,, જીવણભાઇ આણંદજી						
,, અમરચંદજી રાઘવજી	પોરબંદર	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
,, મેઘજીભાઇ દેવચંદ	કચ્છભુજ	૨૫૧	૨૫૧	૦	૦	૫૦૨
,, રા. બ. ઉમેદમલજી લોઢા	અજમેર	૨૦૦	૧૦૦૦	૫૦૦	૦	૧૭૦૦
લખમીચંદજી છાજેડ	કીસનગઢ	૦	૦	૫૦૦	૦	૫૦૦
અગરચંદજી પારેખ	,,	૫૦	૦	૫૦	૦	૧૦૦
માનમલજી નવલમલજી	પીપાડ	૭૫	૭૫	૭૫	૭૫	૩૦૦
ઉદયપુરસંઘ સમસ્ત		૧૦૦	૫૦	૨૫	૨૫	૨૦૦
જવાનમલજી ગ્યાનમલજી	ભીલવાડા	૭૫	૭૫	૦	૦	૧૫૦
ફતાજી તીલોકચંદજી	મંદશોર	૧૦૧	૦	૫૦	૦	૧૫૧
વજેનાથજી ચુનીલાલજી	જોધપુર	૨૦	૨૦	૪૧	૪૦	૧૨૧
નોરતનમલજી ભાંડાવત B A L L B		૦	૫૦	૦	૫૦	૧૦૦
મેઘજી ગીરધરલાલજી	છોટીસાદડી	૧૦૧	૦	૦	૦	૧૦૧
પન્નાલાલજી ગોપાલજી ધાર (મ.ળ.વા)		૦	૦	૦	૧૦૦	૧૦૦
પોપટભાઇ ડાહ્યાભાઇ	રંગુન	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦		સ્ત્રી શીક્ષણ		૫૦૦
એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦				૫૦૦

આ સિવાય ન્હાની ન્હાની રકમો ઘણી હતી

અજમેર કોન્ફરન્સ વખતે ફંડમાં ભરાયલી રકમો.

(मी.मगनलालना भाषण बाद शेठ मेघजी-थोभणे रु. ५०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां २५० जैन बॉर्डींगमां आपवानुं जाहेर कर्युं हतुं, अने पछी तुरतज फंडनी शरुआत थइ. मांगरोळवाळा मी. लालजी हरखचंदे रु. ५०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, कच्छवाळा मी. मेघजीभाइ देवचंदे रु. २५० जैन ट्रे० कॉलेजमां अने २५० बॉर्डींगमां तथा प्रमुख साहेबे रु. २१०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, १५०० बॉर्डींगमां अने १५०० जीवदया वगेरेमां नोंधाव्या हता.

રૂ० ૧૦૦ અને તેથી વધારે.

નામ.	ગામ.	કાલેજ જૈ. ટ્રે.	બોર્ડીંગ.	જીવદયા.	નિરાશ્રીત.	કુલ
શ્રીયુત શિરેમલજી મુથા	ગુલેદગઢ	૧૦૦	૦	૨૦૦	૨૦૧	૫૦૧
જીતમલજી દોલતરામજી	મિરજગાંવ	૨૦૦	૦	૨૦૦	૦	૪૦૦
પિરથીરાજજી જીતમલજી	જળગામ	૦	૦	૧૦૧	૧૦૦	૨૦૧
લખમીચંદજી રામચંદજી	"	૦	૦	૫૧	૫૧	૧૦૨
નિહાલચંદજી ગંભીરમલજી	સિકંદરાબાદ	૦	૦	૧૦૦	૦	૧૦૦
વછરાજજી રૂપચંદજી	પાચોરા	૭૫	૨૫	૨૫	૦	૧૨૫
મેઘજીભાઇ થોભણ	મુંબઇ	૨૫૦	૫૦૦	૦	૦	૭૫૦
મગનલાલ મોહનલાલ ઝવેરી	વડોદરા	૫૦॥	૫૦॥	૦	૦	૧૦૧
લાલજી હરખચંદના તરફી જીવણભાઇ આણંદજી	માંગરોળ	૫૦૦	૦	૦	૦	૫૦૦
અમરચંદજી રાઘવજી	પોરબંદર	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
મેઘજીભાઇ દેવચંદ	કચ્છભુજ	૨૫૧	૨૫૧	૦	૦	૫૦૨
રા. બ. ઉમેદમલજી લોઢા	અજમેર	૨૦૦	૧૦૦૦	૪૦૦	૦	૧૬૦૦
લખમીચંદજી છાજેડ	કીસનગઢ	૦	૦	૫૦૦	૦	૫૦૦
અગરચંદજી પારેખ	,,	૫૦	૦	૫૦	૦	૧૦૦
માનમલજી નવલમલજી	પીપાડ	૭૫	૭૧	૭૧	૭૫	૩૦૦
ઉદયપુરસંઘ સમસ્ત		૧૦૦	૫૦	૨૫	૨૫	૨૦૦
જવાનમલજી જ્ઞાનમલજી	ભીલવાડા	૭૫	૭૫	૦	૦	૧૫૦
ફતાજી તીલોકચંદજી	મંદશોર	૧૦૧	૦	૫૦	૦	૧૫૧
વજેનાથજી ચુનીલાલજી	જોધપુર	૨૦	૨૦	૪૧	૪૦	૧૨૧
નોરતનમલજી ભાંડાવત B. A. L L B.		૦	૫૦	૦	૫૦	૧૦૦
મેઘજી ગીરધરલાલજી	છોટીસાદડી	૧૦૧	૦	૦	૦	૧૦૧
પનાલાલજી ગોપાલજી	ધાર (મ.બા)	૦	૦	૦	૧૦૦	૧૦૦
પોપટભાઇ ડાહ્યાભાઇ	રંગુન	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦	સ્ત્રી શીક્ષણ			૫૦૦
એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦				૫૦૦

આ સિવાય ન્હાની ન્હાની રકમો ઘણી હતી

वॉलंटीयरोनो मेळावडो.

ता. १२ मीए कोन्फरन्सनी बेठक पूरी थइ ते रात्रे वॉलंटीयरोए पोना तरफनो एक मेळावडो भर्यो हतो अने पोनाना सुपरीन्टेन्डन्ट मी. चोरडीयाने मानपत्र अर्प्युं हतुं बीजे दिवसे वॉलंटीयरोने चांद वगेरेनी आप्या बाद रजा आपवामां आवी हती.

जयपुरनी मुसाफरी.

जयपुर एक जूनी बांधणीनुं अने ऐतिहासिक शहेर होवाथी तथा त्यांनुं म्युझीयम अने अंबरनो किल्लो आखा हिंदमां बहु वखणातां होवाथी ते जोवाने घणा प्रतिनिधिओ तथा प्रेक्षको जयपुर रवाना थया हता.

प्रमुखनी विदायगिरि.

प्रमुख साहेब ता. १३ मीए सांजे जयपुर तरफ गया हता अने त्यांनां प्रसिद्ध स्थळो जोया बाद तेओ ता. १५ मीए जयपुरथी सतारा तरफ जवा माटे रवाना थया हता. अमदावाद खाते तेओ थोडो वखत थोभ्या हता अने " जैन समाचार " ओफीसनी मुलाकात लीधी हती.

वैद्यराजनो उपकार.

अजमेरना एक सुप्रसिद्ध वैद्यराज मी. रामदयाल शर्माए कोन्फरन्स उपर एक उपकार कर्यो छे, के तेमणे कोइ पण प्रकारनी फी न लेतां कोन्फरन्स मंडपनी नजीकना एक तंबूमां एक खास कामचलाउ दवाखानुं उभुं कर्युं हतुं अने तेमांथी कोन्फरन्समां भाग लेवाने आवेलाओमांथी जेओ दर्दी थइ पडया हता तेमने मफत दवा आपवामां आवती हती. लगभग १२५ दर्दीओए आ दवाखानानो लाभ लीधो हतो.

उत्साही काम करनाराओ.

कोन्फरन्स संबंधी कामकाजमां रा शेठ चांदमलजी, तेमना पुत्रो तथा अ संघ अने एसीस्टंट सेक्रेटरी मी ... तळसाणीआए पुष्कळ महेनत लीधी ह कांइ पण जातनी फरज सिवाय पण अंतःकरणथी चुपकीथी काम करनार झवेरी दुर्लभजी हता. गोरधीवाळा मी० गो कळदास जूना–नवा विचारना आ वच्चे एकता करावामां सारी कुनेह वा जोवामां आव्या हता. रेल्वे इन्स्पेक्टर मी सुगनचंदजी नाहारे किमती सेवा हती. मी० भंडारी, मी० पोपटलाल, ... लचंद, मी० सुभागी वगेरेए पण सारी मे नत लीधी हती. शेठ अमरचंदजी पीतलीआ दीर्घदृष्टि घणी उपयोगी थइ पडी हती. के टलाको वच्चे नकामी दोडादोड करी पो पण भाव पूछवामां आवे छे खरो एवो दे खाव करता हता.

मी. लोढानी पाछळथी करायली सखावत.

शेठ उमेदमलजी लोढा एक करो डपति तरीके प्रसिद्ध होवाथी तथा स त्कार कमीटीना प्रमुख तरीकेनुं मान ते मळेलुं होवाथी सर्व कोइ आशा राखतुं के मुंबइ खातेनी बोर्डींग जेटली रक उदारता हमणां तेओ जाहेर करशे. कोन्फरन्स वीखराइ जता सुधी तेओए उदारता जणावी नहोती. परोणाओ वे राया बाद त्रीजे दिवसे तेओए रु. १९ नी उदारता जाहेर करी हती.

અજમેર કોન્ફરન્સ વખતે ફંડમાં ભરાયલી રકમો.

(मी.मगनलालना भाषण बाद शेठ मेघजीभाइ थोभणे रु. १०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां अने २५० जैन बोर्डींगमां आपवानुं जाहेर कर्युं हतुं, अने पछी तुरतज फंडनी शरुआत थइ हती. मांगरोळवाळा मी. लालजी हरखचंदे रु. १०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, कच्छवाळा मी. मेघजीभाइ देवचंदे रु. २५० जैन ट्रे० कॉलेजमां अने २५० बॉर्डींगमां तथा प्रमुख साहेबे रु. २१०० जैन ट्रेनींग कोलेजमां, १५०० बॉर्डींगमां अने १५०० जीवदया वगेरेमां नोंधाव्या हता.

રૂ૦ ૧૦૦ અને તેથી વધારે.

નામ.	ગામ.	કોલેજ: જૈ. ટ્રે.	બોર્ડીંગ.	જીવદયા.	નિરાશ્રીત.	કુલ
શ્રીયુત શિરેમલજી મુથા	ગુલેદગઢ	૧૦૦	૦	૨૦૦	૨૦૧	૫૦૧
જીતમલજી દોલતરામજી	મિરજગાંવ	૨૦૦	૦	૨૦૦	૦	૪૦૦
પિરથીરાજજી જીતમલજી	જળગામ	૦	૦	૧૦૦	૧૦૦	૨૦૦
લખમીચંદજી રામચંદજી	"	૦	૦	૫૧	૫૧	૧૦૨
નિહાલચંદજી ગંભીરમલજી	સિકંદરાબાદ	૦	૦	૧૦૦	૦	૧૦૦
વછરાજજી રૂપચંદજી	પાચોરા	૭૫	૨૫	૨૫	૦	૧૨૫
મેઘજીભાઇ થોભણ	મુંબઇ	૨૫૦	૫૦૦	૦	૦	૭૫૦
મગનલાલ મોહનલાલ ઝવેરી	વડોદરા	૫૦॥	૫૦॥	૦	૦	૧૦૧
લાલજી હરખચંદના ટ્રસ્ટી જીવણભાઇ આણંદજી	માંગરોળ	૫૦૦	૦	૦	૦	૫૦૦
અમરચંદજી રાઘવજી	પોરબંદર	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
મેઘજીભાઇ દેવચંદ	કચ્છભુજ	૨૫૧	૨૫૧	૦	૦	૫૦૨
રા. બ. ઉમેદમલજી લોઢા	અજમેર	૨૦૦	૧૦૦૦	૫૦૦	૦	૧૭૦૦
લખમીચંદજી છાજેડ	કીસનગઢ	૦	૦	૫૦૦	૦	૫૦૦
અગરચંદજી પારેખ	,,	૫૦	૦	૫૦	૦	૧૦૦
માનમલજી નવલમલજી	પીપાડ	૭૫	૭૫	૭૫	૭૫	૩૦૦
ઉદયપુરસંઘ સમસ્ત		૧૦૦	૫૦	૨૫	૨૫	૨૦૦
જવાનમલજી જ્ઞાનમલજી	ભીલવાડા	૭૫	૭૫	૦	૦	૧૫૦
ફતાજી તીલોકચંદજી	મંદશોર	૧૦૧	૦	૫૦	૦	૧૫૧
વર્જેનાથજી ચુનીલાલજી	જોધપુર	૨૦	૨૦	૪૧	૪૦	૧૨૧
નોરતનમલજી ભાંડાવત B. A. L. L. B.		૦	૫૦	૦	૫૦	૧૦૦
મેઘજી ગીરધરલાલજી	છોટીસાદડી	૧૦૧	૦	૦	૦	૧૦૧
પન્નાલાલજી ગોપાલજી	ધાર (માળવા)	૦	૦	૦	૧૦૦	૧૦૦
પોપટભાઇ ડાહ્યાભાઇ	રંગુન	૧૦૦	૦	૦	૦	૧૦૦
એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦		સ્ત્રી શીક્ષણ		૫૦૦
એક મારવાડી ગૃહસ્થ		૫૦૦				૫૦૦

આ સિવાય ન્હાની ન્હાની રકમો ઘણી હતી

પ્રાંતવાર અને ખાતાંવાર રકમો નીચે મુજબ નોંધાઇ છેઃ—

પ્રાંત	જૈન ટ્રે. કોલેજ.	બોર્ડીંગ.	જીવદયા	નિરાશ્રીત	ધાર્મિક	વ્યવહારીક તથા સ્ત્રીશિક્ષણ	કુલ
દક્ષિણ	૨૬૯૯ા	૧૬૫૬ા	૨૫૯૪ા	[illegible]૦ા	૦	૦	૭૩૪ા
મુંબઇ શહેર	૨૭૮	૫૫૮	૪૩	૧૬	૫		૯૧૭
ગુજરાત	૮૩	૧૧૨	૯૭ાા	૪૦	૧૨ાા	૦	૯
કાઠિયાવાડ	૮૦૬ાા	૨૭૭ા	૧૫૨	૫૪	૪૦	૩૨	૧૪૦
કચ્છ	૨૫૧	૨૫૧	૦	૦	૦	૦	૫૦૨
સિંધ	૪૯	૨૪	૩	૦	૦	૦	૭૬
રજપુતાના-મારવાડ-મેવાડ માળવા-હાડોતી વગેરે.	૧૩૧૪ા	૧૬૦૫	૨૨૬૮ાા=	૪૬૨ાાા	૨૪૮	૧૬	૫૯૧૪
પંજાબ	૩૪૦ાા	૨૧૧ાા	૨૯૭ા	૩૨ાા	૪૫	૩૬	૯૬૩
યુક્તપ્રદેશ	૫૦	૧૫૦ તથા કોન્ફરન્સ નિભાવ ફંડમાં રૂ. ૫૦					૨૫૦
પરચુરણ	૫૦૦ એક મારવાડી						૫૦૦
,,							૫૦૦
ટોટલ-	૬૬૩૭ાાા	૪૮૪૫ાા	૫૫૧૫ાા	૯૯૫ાાા	૩૫૦ાા	૮૩+૫૦૮	૧૮૦

અજમેર કોન્ફરન્સ ઓફિસ તરફથી આ પત્રના અધિપતિનો માનવામાં આવેલો ઉપકાર.

Reg N. 3316. 20 th March 1909

To the Editor

Jain Samachar

Ahmedabad

Dear Brother,

In accordance with a resolution passed at the recent sessions of our conference held here in the last week I beg to convey to you the thanks of our community for the kindness you have shown in sending a special representative to report the proceedings of the confer[ence] AND FOR THE UNTIRING ZEAL YOU EVINCED IN THE WELFARE OF OUR [CON]FERENCE.

yours cordially

K. CHHAGANMAL

chief Secretary.

भावार्थः–आपने हमारी कॉन्फरन्सकी रिपोर्ट लेनेके लिये कृपा करके खास रिपोर्ट[र भेजा] इस लिये और हमारी कान्फरन्सके हितार्थ [आ]पने जो अथाक उत्साह बताया है इस लिये [ह]मारी कोमकी तर्फसे आपका आभार माना जा[ता है]

॥ इतिहासतिमिरनाशक ॥

ITIHÁSTIMIRNÁSHAK.

HISTORY OF INDIA
IN
THREE PARTS,

BY RAJA SIVA PARSAD, C.S.I.,
Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector, 2nd Circle, Department of Public Instruction, North-Western Provinces and Oudh.

तीन हिस्सों में

मुताबिक़हुक्म जनाब नव्वाब अनरबल लैफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर ममालिक शिमाल व मग़रिब और चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने बनाया

पहला हिस्सा

PART I.

इलाहाबाद-सरकारी छापेख़ाने में छापा गया था
विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

सुपरिन्टेन्डेन्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से ॥
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
सन् १९०९ ई०

18th Edition, 1,500 copies.
Price per copy, 3 as., 6 pies.

अठारहवींबार, १५०० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ≈)६ पाई

॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

ITIHÁSTIMIRNÁSAK

HISTORY OF INDIA

IN THREE PARTS

BY RAJA SIVA PARSAD, C.S.I.

Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector, 2nd Circle, Department public Instruction, North-Western provinces and Oudh.

तीन हिस्सो में

मुताबिक हुक्म जनाब नव्वाब अनरबल लैफ़टिनेंट गवर्नर बहादुर ममालिक शिमाल व मग़रिब और चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (इ) ने बनाया

पहला हिस्सा

PART I.

इलाहाबाद-सरकारी छापेख़ाने में छापागयाथा

विद्यार्थियोंके लाभकेलिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा

सन १९०६ ई०

" Our Schools and Universities are extending the idea of scientific method. Read carefully that extract from Raja Sivaprasad's Book I, quoted in the *Contemporary* for September. That man, at least, has obviously got hold of the scientific view of history."

M. R. GRANT DUFF.

The Contemporary Review, November 1875.

PREFACE.

I was not fully aware of the difficulty of my task when I promised to prepare a little work on the History of India in Hindi and Urdù for the use of our village schools. I knew how imperfect and full of errors the so-called histories are which have hitherto been written in the Vernacular, but I had not imagined for a moment that even so cautious a writer as Elphinstone was liable to commit such mistakes as to say that Fíroz Tuglak was nephew of the "late King" (Muhammad Tuglak), when Dow calls him "his cousin;" or that Nàsir-ud-Dín Mahmúd was the grandson of "Altamsh" (correctly Altimash), when he was in fact his son; or that "Altamsh" was purchased for 50,000 pieces of *silver*, when only 50,000 chitals were paid for him, 50 of which make a tanka or rupee of that time. Or that a talented author like Mr. Marshman would forget the topography of the country so far as to write that "the greatest achievement of this (Fíroz Tuglak's) reign was the canal from the *source of the Ganges* to the Sutlej, which still bears his name" (History of India, Serampore, 1863, page 65). He calls "Raja Jey Sing of Jeypore and Raja Jesswunt Sing of Joudhpore" "Mahratta Generals," and gives the name of Muhammad Shàh "Rustum Khan," instead of Roshan Akhtar! (pages 166 and 189 respectively). There is no room to disprove here his assertion that "Akbar made the settlement with the cultivators *themselves*, to the exclusion of all middlemen." Having thus no English book that would completely answer my purpose, I was obliged to have recourse to original Persian works. But Benares is not a place where Persian books can easily be procured, and there was no time to procure them from other quarters, so I was obliged to make the best of the means at my disposal. The difficulty of correcting Indian names written in Persian is rather greater than those written in English. Sunàrgànv, for instance, is written Sitàrgànv, Chatgànv (Chíttagong), Jebgànv, and so on, in the lithographed copy of Farishta!

My plan is to divide my book into three parts. In the first I give an outline of the Hindù and Muhammadan periods; in the second I relate the rise and growth of the British Empire up to 1858; and in the third I treat of the changes in manners and customs from the earliest ages, when our ancestors were drinking the exhilarating soma juice on the banks of the Sarasvatì, and of the revolutions in

laws and religions. I compare former governments and the British rule, and the state of society, and the general prosperity of the country under both. My endeavour is in this part to prove to my countrymen that, notwithstanding their very strong antipathy to "change," they *have* changed, and *will* change; that, notwithstanding the many heroic actions ascribed to our ancient Hindū Rājās, there was no such thing as an empire in existence; that the country was divided between numerous chiefs always fighting with each other for temporary superiority; that, notwithstanding the splendour attributed to Muhammadan dynasties, the country was sadly misgoverned, even during the reigns of the most powerful Emperors; and that, although the diamonds and pearls were weighed by "maunds" in the royal treasuries, the people in general were very poor and utterly miserable.

I may be pardoned for saying a few words here to those who always urge the exclusion of Persian words, even those which have become our household words, from our Hindī books, and use in their stead Sanskrit words, quite out of place and fashion, or those coarse expressions which can be tolerated only among a rustic population. The sister presidencies will sympathize with us when they remember that we are not blessed like them in having the same language and character for the Court and the community. Our Court language is Urdū, and the Court language has always been regarded by all nations as the most fashionable language of the day. Urdū is now becoming our mother-tongue, and is spoken, more or less and well or badly, by all in the North- Western Provinces. If we cannot make the Court character, which is unfortunately Persian, universally used to the exclusion of Devanāgarī, I do not see why we should attempt to create a new language. Persian words such as Ātish, Ma'rūf, Shitāb, Zambūr, Sardār, Koh, &c., have been used by our first Hindī author (as I at least regard him) Chand, the famous bard of Prithirāj; and I think it is better for us to try our best to help the people in increasing their familiarity with the Court language, and in polishing their dialects, than to make them strangers to the Courts of the districts and ashamed when they talk before the higher classes.

BENARES:
1st January, 1864.

SIVA PRASĀD.

इत्तिला

जो लफ़्ज़ फ़ारसी हर्फ़ों के सबब आइनै तारीख़नुमामें दूसरी तरह पर लिखे हैं उनके नीचे लकीर खींचदीहै और फ़िहरिस्त आगे लिखी हैः—

इतिहास तिमिरनाशक में	आईनै तारीख़नुमा में	इतिहास तिमिरनाशकमें	आईनैतारीख़नुमा में
इतिहास	तवारीख़	शरण	पनाह
राजधानी	दारुस्सल्तनत	शरणागत	पनाहगीर
सेनापति	सिपहसालार	बायुकोण	गोशै शिमाल व मग़रिब
गर्भ	हमल		
दुखदायी	मुज़िर	बिद्या	इल्म
आर्य्यद्वीप	जज़ीरानुमा	साक्षातईश्वर का कोप	हूबहू क़हरि ख़ुदा
माया	क़ुद्रत		
द्वारपाल	दर्बान	भगवान	ख़ुदा
क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की	क्याक़ुदरतहै ख़ालिक़वरज़्ज़ाक़ और क़ादिरेमुतलक़ की	सामदान भेददंड	फ़ाइदानुक़्सान भलाबुरा
		पूष्यपुत्र	रासनशीन
प्रलयकासाढुंद	क़यामत कासा हंगामा	निराकार जगदीश्वर	बेचून व चरा ख़ालिक़ अर्ज़ व समा
असार संसार	नापायदारदुनया	दुहती--नतनी	नवासी
		परलोक	इन्तक़ाल
संक्षेप	इख़्तिसार	बिधाताका लेख	क़ज़ाकाहुक्म
पाप	गुनाह		

॥ इतिहासतिमिरनाशक ॥

पहला हिस्सा

क्या ऐसे भी आदमी हैं जो अपने बाप दादा और पुरखा-ओं का हाल सुनना न चाहें । और उन के ज़माने में लोगों का चाल चलन बेवहार बनज बेवपार और राज दर्बार किस ढब बर्त्ता जाता था और देस की क्या दसा थी कब कब किस किस तरह कौन कौन से राजा बादशाहों के हाथ आये किस किस ने कैसा कैसा इन पर ज़ोर ज़ुल्म जताया और कौन कौन से ज़माने के फेर फार कहां कहां इन्हें झेलने पड़े कि जिन से ये कुछ के कुछ बनगये इन सब बातों के जानने की ख़ाहिश न करें ॥ बाप दादा और पुरखा तो क्या हम इस इतिहास में उस वक़्त से लेकर जिस से आगे किसी को कुछ मालूम नहीं आज तक अपने देस का हाल लिखनेका मंसूबा रखते हैं ज़रा दिलदो । और कान धरकर सुनो ॥

जानना चाहिये कि हिन्दुस्तान में सदा से हिन्दू का राज सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी घरानों में चलाआता है पहला सूर्य-वंशी राजा वैवस्वत मनु का बेटा इक्ष्वाकु था । राजधानी उस-की अयोध्या ॥ उससे पचपनपीढ़ी पीछे उस वंशके सिरताज रामचन्द्र हुए । बाप का हुक्म मान चौदह बरस बन में रहे ॥ इक्ष्वाकु की बेटी इला चन्द्रके बेटे बुध को ब्याही थी इसी का बेटा पुरूरवा प्रयाग के साम्हने प्रतिष्ठानपुर में जिसे अब झूसी कहते हैं पहला चन्द्रवंशी राजा हुआ । महाभारत यानी कुरुक्षेत्र की भारी लड़ाई में अपने चचेरे भाई हस्तिनापुरके

राजा दुर्योधन को मारने पर जब महाराज युधिष्ठिर जो पुराणों के मत बमूजिब पुरूरवासे पैंतालीसवीं पीढ़ी में पैदा हुएथे अपने भाइयों के साथ इन्द्रप्रस्थ यानी दिल्ली का राज छोड़कर हिमालय को चलेगये उन के भाई अर्जुन का पोता परीक्षित गद्दी पर बैठा और परीक्षित से लेकर छब्बीस पीढ़ी तक उसी के घराने में राज रहा॥ छब्बीसवीं पीढ़ी में राजा क्षेमक ऐसा ग़ाफ़िल और पस्तहिम्मत हुआ। कि उस का मन्त्री उसे मार कर आप युधिष्ठिर की गद्दी पर बैठ गया॥ इसके घराने में चौदह पीढ़ी राज रहा। फिर जिस तरह आयाथा उसी तरह दूसरे घराने में चलागया और सोलह पीढ़ी पीछे तीसरा घराना मुल्क का मालिक हुआ॥ निदान उस की भी नवीं पीढ़ी में राजा राजपालने अपने घमण्ड और बद मिज़ाजी से रअय्यत और सिपाह को नाराज़ किया। तब कमाऊं के राजा सुखवंत ने आकर राजपाल को मार डाला और इन्द्रप्रस्थ ले लिया॥ लेकिन महाराज विक्रमने उसकोभी गद्दीसे उतारा। और मुल्क पर अपना क़ब्ज़ा किया॥ इधर तो ये लोग एक के पीछे एक अपने नाम का डंका बजाते गये। और उधर मगध देस में जरासन्ध के पीछे जिसे कृष्ण की मदद से युधिष्ठिर के भाई भीमने उस की राजधानी राज गृह में मारा था उस की औलाद के राजा बाईस पीढ़ी तक राज करते रहे॥ आख़िरीराजा रिपुंजय को उस के मन्त्री सुनक ने मारकर सारा राज छीन लिया। इस अगले ज़माने की कोई तवारीख़ यानी इतिहास की पोथी ऐसी मुऽतबर नहीं है कि जिस से उस वक़्त का हाल मुफ़स्सल और सिल्सिलेवार मालूम होसके इस लिये अब हम ने सिकन्दर के ज़माने से कुछ ख़बरों का लिखना शुरूकिया॥

पच्छिम वालों की चढ़ाइयों का हाल जो पतेवार मिलता है। वह यह है॥ कि सन् ईसवी से ३३१ बरस पहले यूनान के बड़े बादशाह सिकन्दर ने ईरान के बादशाह दारा को जीतकर इस मुल्क पर चढ़ाई की उस वक़्त मगध देस का राज

चार पीढ़ी तक सुनक के घराने में रहकर तक्षक यानी नाग-वंश में आगया था। इन नागवंशी राजाओं ने दस पीढ़ी तक राज किया आखिरी राजा इस वंश का महानन्द था ॥ उस ज़माने में सारे हिन्दुस्तान के दर्मियान बौद्धमती फैल गये थे। खाली कहीं २ काशी क़न्नौज ऐसे शहरों के रहनेवाले वेद की रीति पर चलते थे ॥ फ़ारसी किताबों में लिखा है कि सिकन्दर क़न्नौज तक आया था। लेकिन यह बात निरी झूठ और बे असल है उसी के साथियों ने अपनी यूनानी किताबों में लिखा है कि वह सतलज के किनारे से आगे नहीं बढ़ा ॥ सिकन्दर एक लाख बीस हज़ार फ़ौज के साथ सिन्ध नदी पर पुल बांधकर पार उतरा था। लेकिन झैलम के इस पार कुल ग्यारह हज़ार सवार लाया ॥ कोहिस्तान और सिन्धसागर दुआब के सब राजाओं ने उसकी इताअत क़बूल की लेकिन पंजाब का राजा जो शायद पुरु या पुरु के वंश में था क्योंकि यूनानी उस का नाम पोरस लिखते हैं उस से लड़ने को तय्यार हुआ। और झैलम के इस पार तीस हज़ार पैदल चार हज़ार सवार और बहुत से हाथी लेकर सिकन्दर से लड़ा ॥ तीन पहर तक बड़ी लड़ाई रही। आखिर राजा की फ़ौज शिकस्त खाकर भागी ॥ लेकिन राजा तब भी नहीं हटा। अपने हाथी पर मैदान में डटा रहा ॥ सिकन्दर उसकी बहादुरी देखकर बड़े अचम्भे में आया। और कहला भेजा ॥ कि अगर अब भी हमारे पास चला आवे। तो तेरी जान बख़्शी जावे और इज्ज़त हुर्मतमें फ़र्क़ न पड़ने पावे ॥ राजाने इस बात को सुनकर क़बूल किया। और निडर सिकन्दर के पास चला आया ॥ सिकन्दर ने उस से पूछा कि हम तुम्हारे साथ क्योंकर पेश आवें राजा ने जवाब दिया कि जैसे बादशाह बादशाहों से पेश आते हैं सिकन्दर उस का यह दिल और दिलेरी देखकर बहुत खुश हुआ और तमाम मुल्क उसका उसी को बख़्शा। बल्कि कुछ थोड़ा सा और भी अपनी

तरफ़ से दिया ॥ इसके बाद सिकन्दर सतलज के किनारे पर आया। लेकिन फ़ौज बहुत थक गयी थी बरसात का मौसिम आजाने के सबब सिपाहियों ने आगे बढ़ने से इन्कार किया ॥ तबनाचार सिकन्दर वहां से उलटा फिर गया। कहते हैं कि उस वक़्त मगध देस के नागवंशी बड़े नामी राजा महानन्द के पास छ लाख पियादे बीस हज़ार सवार और नव हज़ार हाथी थे क्या जानें इन्हीं का दब्दबा सिकन्दर को यहां से फेर ले गया ॥ निदान महानन्द अपने मंत्री के हाथ से मारा गया। उस के आठ बेटों ने मिल के बारह बरस राज किया ॥ तब नवें चन्द्रगुप्त ने जो नायन के पेट से पैदा हुआ था चाणक ब्राह्मण की मदद से अपने सब भाइयों को मार सारा राज अपने क़ब्ज़े में कर लिया। और बड़ा इक़बालमन्द हुआ उस ने बाबिल के यवन बादशाह सिल्यूकस * की बेटी से ब्याह किया ॥ दस पीढ़ी तक यह राज उसी के घराने में रहा। हिन्दुओं के शास्त्र में लिखा है कि हिन्दुस्तान में अधर्म यानी बौद्धमत फैला हुआ देखकर ब्राह्मणों ने अर्बुदगिरि पर जिसे आबू का पहाड़ कहते हैं एक अग्निकुंड रचा और वहां देवताओं ने आप आकर चार मूरतें उस कुण्ड में डालदीं उन से अग्निकुल के चार क्षत्री यानी प्रमर या परमार जिन्हें पंवार भी कहते हैं चौहान सोलंकी और परिहार पैदा हुए इस बात से ऐसा मालूम होता है कि शायद उन ब्राह्मणों ने चार आदमियों को शास्त्र के संस्कारों से द्विजन्मा किया था यानी उन का नया जन्म मानकर उन्हें अस्ली क्षत्री बना लिया था ॥ उन में से प्रमर गोत्रवाले यानी पंवार बहुत बढ़े। और एक ज़माने में सारे हिन्दुस्तान के राजा हो गये ॥ इन अग्निकुलों ने बौद्धमतवालों को मारकर निकालना शुरू किया। और ब्राह्मणों का मत फिर फैला दिया ॥ इसी प्रमर

* सिल्यूकस सिकंदर के सेनापतियों में से था सिकंदर के मरने पर बाबिल से इसतरफ़ सिंधु नदीतक सारा मुल्क दबाबैठाथा ॥

वंश में सन् ईसवी * से सत्तावन बरस पहिले राजा बिक्रम उज्जैन की राजगद्दीपरबैठा इसे बीरविक्रमादित्य भी कहते हैं। और शक लोगों को जो तातार की तरफ़ से चढ़ आये थे शिकस्त देनेके सबब उसे शकारिभी पुकारते हैं॥ अगर्चि वह ऐसा बलन्द इक़बाल और इतने बड़े मुल्क का मालिक महाराजाधिराज था कि आजतक उसका सम्बत चलाजाता है। और वह परजन दुखभंजन कहलाता है तो भी नितचटाईपर सोता। और अपने हाथ सिप्रानदी से पानीका तूंबा भरलाता॥ इस में शक नहीं कि उज्जैनके राजा विक्रमादित्यके वक़्त से लेकर मुसल्मानोंकी पहली चढ़ाई तक अक्सर नामी होतेचले आये। लेकिन अंध्रवंश के राजा जिनकीराजधानी मगधदेश में पाटलीपुत्र यानी पटना थी बहुत बढ़ गये थे॥ रूमवालों ने उन की बहुत बड़ाई लिखी है इस अंध्रवंश को एक शूद्र ने अपने मालिक कन्नवंश के आख़िरी यानी चौथे राजा को जो चन्द्रगुप्त का वंश नाश होने पर सुंगवंशी दस राजाओं के बाद हुआ मारकर क़ाइम किया था। कहते हैं कि राजा महाकर्ण इसीघराने में हुआ॥ उसकी हिम्मत और सख़ावत की शुहरत आज तक चली जाती है। दीप दीप में उसकी बड़ाई गायी जाती है॥ अंध्रवंश के आख़िरी राजा का नाम पुलोमथा। यह पुलोम भी हिन्दुस्तानका बड़ा नामी राजा हुआ॥ और उस के राज काज का चर्चा चीन तक पहुँचा। आख़िरी वक़्त में वह आप से आप गंगामें डूब मरा॥ फिर उसका सेनापति रामदेव गद्दी पर बैठा। समुद्र के कनारे से कश्मीर तक सब राजा उस के ताबे थे जब वह मरा तो उसका भी सेनापति प्रतापचन्द्र राजा हुआ॥ उसी के ज़माने में ईरानके बादशाह नौशेरवां का लश्कर हिन्दुस्तानपर चढ़ा था और जितना ख़राज इस मुल्क का बाक़ी पड़ा था सब प्रतापचन्द्र से दाम दाम भर ले गया। नौशेरवां जिस का अदल इंसाफ़ आज तक मशहूर है

* ईसामसीहके जन्म दिन से सन् ईसवी गिनाजाता है॥

५३१ ई० सन् ५३१ ईसवी में तख़्त पर बैठा था ॥ प्रतापचन्द्र के मरने बाद उस के सारे सेनापति अपने अपने सूबे दबा बैठे। और जैसे नाऊ की बरात में जने जने ठाकुर जुदा जुदा राजा हो गये ॥ इन सेनापतियों के राजको अंध्रभृत्यों का यानी अं के नौकरों का राज कहते हैं । उस ज़माने में क्षत्रियों से राज बिल्कुल जाता रहा था ब्राह्मणों से लेकर शूद्र अहीर पहाड़ी और जंगलियों तक मगध प्रयाग मथुरा काशी क़न्नौज वग़ै में खुदमुख़्तार होकर राज करने लगेथे नौशेरवां के लश्कर उदयपुर के राजाओं की पहली राजधानी बल्लभापुर या वलभ ※ को नाश कर डाला और राजा के वंश में किसी को जीत न छोड़ा ये राजा अपने तईं रामचन्द्र के बेटे लव की औला में बतलाते हैं ॥ ख़ाली एकरानी पुष्पावती वहां से बचकर भ गी। और मलयगिरिकी किसी खोहमें जाकर छिपरही ॥ रा को गर्भ था। वहां उसके एक लड़का पैदाहुआ नामउसका गो रक्खा ॥ वही लड़का ईदर को जो वल्लभी और उदयपुर बीच में है अपने क़ब्ज़े में लाकर वहां का राजा हुआ और कहते हैं कि नौशेरवां की पोती † से ब्याह किया गोह के बाद आठराजा ईदर की गद्दीपर बैठे आठवें राजा छोटा लड़का जिसका नाम बापा था अपने बाप के म जाने पर भांडेर में भाग गया। और वहां गड़रियों में पल

७०० ई० सन् ७०० ई० के लग भग चित्तौड़ को चला आया अ वहीं रहने लगा ॥ उसी ज़माने में मुसल्मानों के पैग़म्

※ गुजरात में भाऊ नगर से २० मील पच्छिम जहांअब वल्ले बसा है

† मआसिरुलउमरा और बिसातुलग़नाइम दोनों तवारीख़ों में लिख कि जब ईरानका आखिरी आर्य और अग्निहोत्री बादशाह यज़्द गुर्द रब वालों से शिकस्त खाकर मारा गया उसकी बड़ी बेटी माहबानू भाग हिन्दुस्तान में चलीआयी उसी की औलाद में उदयपुर के राना हैं यज़्द नौशेरवां (नौशेरवां) के पोतेका पोताथा लेकिन नौशेरवांका पोता खुस पर्वीज भी नौशेरवां कहलाया और उस ने रूम के ईसाइ क़ैसर मारिस बेटी मर्यम् से व्याह कियाथा ॥

मुहम्मद * के मरने के बाद दूसरे ख़लीफ़ा उमर ने ईरान फ़तह करके कुछ फ़ौज हिन्दुस्तान की तरफ़ भेजी लेकिन उसका सेनापति पहली ही लड़ाई में मारा गया। फिर ख़लीफ़ा अली ने लश्कर भेजकर सिंधुनदी के कनारेका कुछ मुल्क फ़तह किया लेकिन अलीके मारे जाने पर वह लश्कर उस मुल्क को आपही छोड़कर चलागया॥

सन् ७११ ई० में जब कि वलीद ख़लीफ़ा था मुसल्मानों के लश्कर ने बड़ी आफ़त मचायी साशसिन्धु अपने क़ब्ज़े में कर लिया। और बहुत राजाओं से ख़राज वसूल किया॥ उसी लश्कर के सेनापति क़ासिमका बेटा मुहम्मद तीन बरस बाद फिर हिन्दुस्तान पर चढ़ा और गुजरात फ़तह कर के चित्तौड़ की तरफ़ झुका। लेकिन बापा से शिकस्त खाकर भागना पड़ा॥ बापा ने खम्भात के हाकिम सलीमकी लड़की से ब्याह किया और चित्तौड़ के पहले राजाको निकाल कर आप वहां का राजा बनगया। फिर थोड़ेही दिन पीछे अपना मुल्क और मत छोड़कर खुरासान की तरफ़ चला गया। सन् ८१२ ई० में ख़लीफ़ा हारूंरशीद के बेटे मामूंरशीद खुरासान के हाकिम ने एक बड़े लश्कर के साथ हिन्दुस्तान में आकर चित्तौड़ पर चढ़ाई की उस वक़् चित्तौड़ में बापा के पोते का बेटा राज पर था नाम उसका राजा खमान था। उस से और मामूं से चौबीस लड़ाइयां हुईं लेकिन आख़िर मामूं शिकस्त खाकर हिन्दुस्तान से भाग गया॥ इसके बाद सन् ९७० ई० में खुरासान के बादशाह अमीर नासिरुद्दीन सुबुक्तिगीन † ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की और पंजाब की सर्हद के कई क़िले फ़तह कर लिये यह ख़बर सुनकर लाहौर का राजा जयपाल ऐसा बिगड़ा कि अपनी फ़ौज सिंधु-

७११ ई०

८१२ ई०

९७० ई०

* मुहम्मद सन् ५६९ ई० में पैदाहुए थे और मक्के से मदीने गये तभी से सन् हिजरी जारी हुआ॥

† सुबक्तिगीन और सिबुक्तिगीन दोनों दुरुस्त हैं॥

पार ले जाकर खुरासान पर चढ़ दौड़ा। वहां अजब माजरा हुआ कि सुबुक्तिगीन से राजा ने शिकस्त खाकर उसे खराज देना क़बूल किया लेकिन जब वहां से छूटकर लाहोर में आया तो उस ने बादशाह को वह खराज नहीं भेजा॥ इसलिये सुबुक्तिगीन ने फिर पंजाब पर चढ़ाई की। राजा जयपाल भी दिल्ली अजमेर कालिंजर और क़न्नौज के राजाओं की कुमक लेकर सिंधुपार उतरा और लमगान के पास जाकर सुबुक्तिगीन से लड़ा निदान फिर भी इसी की फ़ौज ने मुसल्मानों के लश्कर से शिकस्त खायी॥

उस वक़्त उज्जैन और पाटलीपुत्र के राज को बिगड़े बहुत दिन हो चुके थे। और नये नये राजा हिन्दुस्तान के जुदा जुदा मुल्क में राज करते थे॥ जब से महाराज विक्रम ने दिल्ली के राजा को दूर किया। तब से वह राज पांच सौ बरस से ऊपर बिना राजा पड़ा रहा॥ यहां तक कि ज़माने के फेर से दिल्लीको तोमर राजाओं ने अपनी राजधानी बनाया। अनंगपाल तक इस घराने के इक्कीस राजा दिल्ली की राजगद्दी पर बैठे थे अनंगपाल ने अपने नाती ❀ पृथीराज चौहान अजमेर वाले को गोद लिया॥ क़न्नौज के राजपर राठौरों का क़ब्ज़ा था। मेवाड़ गोहलौतों के हाथ में था॥ गुजरात में सोलंकी राज करते थे। सिवाय इन के और भी बहुत से छोटे छोटे राजा थे अपने डेढ़ चावल की खिचड़ी जुदाही पकाते थे॥ आपस की फूट से मुसल्मानों को यहां चले आना सहज हो गया और देखतेही देखते सारामुल्क दबा लिया॥

सुल्तानमहमूदग़ज़नवी॥

سلطان محمود غزنوی

९९७ ई०

जब सुबुक्तिगीन मरा। तो उस के बेटेमहमूद को तीसवां बरस था॥ सात महीने के अन्दर अपने भाई इस्माईल को जो तख़्त पर बैठ गयाथा क़ैद करके आप बादशाह हुआ और सुल्तान अपना लक़ब रक्खा। सुल्तान अरबी ज़ुबान में

❀ बेटी का बेटा यानी दुहीता॥

बादशाह को कहते हैं उस से पहले यह लक़ब किसी बादशाहने नहीं इख़्तियार कियाथा॥

उसवक़्त फ़ारस वग़ैरः पच्छिम देस की मुसल्मानी सल्तनतें ऐसी कमज़ोर पड़ गयी थीं। और आपसमें लड़ाई झगड़ारख तीथीं॥ कि जो महमूद उधर को अपने लश्कर की बागउठाता। समुद्र तक उसे कोई रोकनेवाला न था॥ पर हिन्दुस्तान की दौलत और ज़रख़ेज़ी ऐसी मशहूरथी और दूसरे मज़हबवालों को ज़बर्दस्ती मुसल्मान बनालेना यह उसमज़हबवालों के नज़दीक उन दिनों नाम पैदा करने के लिये ऐसी एकबड़ी बात थी कि महमूद सा हौसिले वाला इस अजीब बे नज़ीर मुल्कको छोड़कर कब किसी दूसरे पर दिलचलाता। भलाअमृतफल छोड़कर वह कब इन्द्रायन खाता॥

ईरान में मुसल्मानों का दख़ल होने से कुछ ऊपर २५० १००१ई० बरस बाद महमूद ने दश हज़ार चुनेहुए सवार लेकर अपनी राजधानी ग़ज़नी से हिन्दुस्तानकी तरफ़ कूच किया। पहला मुक़ाबला पिशावर के पास उसके बापके पुराने दुश्मन लाहौर के राजा जयपाल से हुआ बादशाह ने फ़तह पायी राजा क़ैद में आगया॥ फिर महमूदने सतलज पार होकर बटिंडे * के क़िलेपर हल्ला किया। और उसे लेकर खूब लूटा॥ तबतक बटिंडा बहुतआबाद और नामी मुक़ाम था। लाहौरका राजा वहां आकर अक्सर रहा करता था॥

महमूद ने ग़ज़नी पहुंचने पर जयपाल से ख़राज देनेका फिर नया क़ौल क़रार लेकर उसे क़ैद से ख़लास किया और उस के साथ और भी बहुत से हिन्दुओं को छुड़ौती ले लेकर बन्द से छोड़दिया। लेकिन जयपाल के जी में उस मुसल्मान के क़ैदकी कुछ ऐसी ग़ैरत सी आगयी कि छुटतेही राजपाट अपने लड़के अनन्दपाल को दे आप तुषानल यानी फूसकी आगमें जलमरा॥

* संस्कृतनाम वितंडा मालूमहोताहै॥

१००४ई० अनन्दपाल अपने बापके क़ौल क़रार पर चलागया और महमूदको जोकुछ कि खराज ठहराथा बराबर देतारहा। लेकिन उसके ज़ैलदारोंमें से भटनेरके राजा ने अपने हिस्सेका खराज अदाकरनेसे इन्कारकिया॥ इसलियेमहमूदको वहांआनापड़ा। राजासिंधुनदीकेकनारे जंगलोंमें भागगया औरफिरवहां नाउम्मेदीकेसबब उसने अपनेतईं आपही मारडाला॥

तीसरीबार महमूद मुल्तानके हाकिम अबुलफ़तह लोदीको जोउससे फिरकर राजा अनन्दपाल से मिलगयाथा ज़ेरकरने को इस तरफ़ फ़ौजलाया राजाने अपने मेलीकी पच्छकी। पर आखिर हारकर कश्मीर भागना पड़ा अबुलफ़तहने कुछनज़र १००५ई० नज़राना देकर महमूदको राज़ी करलिया महमूदकोभीग़ज़नी जल्द लौटना मंजूरथा क्योंकि उधर से तातार के बादशाह की चढ़ाई की बहुतगर्म खबर आयीथी॥

महमूदके साथ पांचसौ हाथी जंगी मौजूद थे तोपखाने की तब तक कोईक़दर न जानताथा और न उसकी हिक्मतोंसे वाक़िफ़ था हाथियों के साम्हने तातारियों के घोड़े काहे को ठहर सकतेथे बलख के पास लड़ाई हुई महमूद ने फ़तह पायी। तातारियों ने पीठ दिखायी॥

१००६ई० महमूद सिंधु कनारेके ज़िलोंको सुखपालके सपुर्दकरगयाथा। यह सुखपाल हिन्दूसे मुसल्मानबनाथा॥ लेकिन जब महमूद बलखकी तरफ़ गया। तो इसने फिर हिन्दू बनकर उसकी इताअतसे सिरफेरा। महमूदने बलखसे लौटकर इसे तो जनमभरके लिये क़िलेमें क़ैदकरदिया। और अनन्दपालको सज़ा देने के लिये लश्कर इकट्ठा किया॥

१००८ई० अनन्दपालभी ग़ाफ़िल नथा देश देशके राजाओंसे दूतयानी एलची भेज भेजकर कहलाभेजा। कि इस महमूदका इधरबढ़ना हम सब के वास्ते एकसा दुखदायीहै इसके हाथसे किसीकाभी धर्म और धरती और धन नहीं बचेगा॥ अगर कुछ हौसिला और हिम्मत रखतेहो तो आओ रणमें मेरासाथदो अबतकभी कुछनहीं

क्खा है निदान उज्जैन ग्वालियर कालिंजर कन्नौज अज-मेर और दिल्ली के राजा अपनी अपनी सेना सजके अनन्द-पालका साथ देनेको पंजाबकी तरफ़ सिधारे पिशावर के पासही लड़ाई हुई इत्तिफ़ाक़ से अनन्दपालका हाथी भड़कगया और पीछेको भागनेलगा । लश्करने अपने सेनापतिको भागासमझ कर रनसे मुंहमोड़ा ॥ महमूदने पंजाबतक उनका पीछा किया बतो जिधर तिधर तीनतेरहहोगये महमूदने मैदान सूनापाकर नगरकोट यानी कोटकांगड़ा जालूटा सातलाखदीनार सातसौ मन* सोने चांदीका असबाब दोसौ मन निरा सोना दो हजार मन चांदी और बीसमन जवाहिर वहां महमूद के हाथलगा ॥

सन् १०१० ईसवीमें महमूद मुलतानसे अबुलफ़तह लोदी को क़ैदकर लेगया और फिर दूसरेसाल आकर थानेसर लूटा। और जहां तक हिन्दू उसके हाथलगे लौंडी गुलाम बनानेको ग़ज़नी लेगया ॥ कहते हैं कि वहां एक माणिक उसे साठ तोले का मिला । इसकेबाद उसने दोदफ़ा कश्मीरपर हमलाकिया ॥ १०१०ई०

नवीं चढ़ाई उसकी हिन्दुस्तान पर बड़ी तय्यारी के साथ हुई तवारीख़ फ़रिश्ता में उसके लश्करकी तादाद एक लाख सवार और बीस हज़ार पैदल लिखी है वह अपने लश्कर को इस ढब अचानक कन्नौज के साम्हने ले आया कि वहांके राजा कुंवरराय से कुछ भी न बनपड़ा । गले में दुपट्टा डालकर बाल बच्चों समेत महमूदके पास चलाआया ॥ महमूदने जो अपनी उमर में तारीफ़ के लाइक़ कोई काम किया । तो वह यही इस वक़ अपनी बड़ाईका दिखलानाथा ॥ राजाकी बड़ी ख़ातिर्दारी १०१७ई०

---

* मन कई तरहका होता है हिन्दुस्तानमें चालीस सेरका गिनाजाता है लेकिन उसमें भी सेर कम ज़ियादा रहता है तवारीख़ फरिश्ता के बमूजिब अला उद्दीन खिलजीके ज़माने में जो सन् १२९५ ई०में तख़्तपर बैठाथा यहां २४ तोले का सेरथा कि इस हिसाबसे तबकामन अबका बारहहांसेर हुआ तबरेज़ीमन साढ़ेपांचसेर का होताहै और अरबकामन कुलदोसेरका परमहमूद के साथवालोंने अगरसेरकाभीमनमानाहो तौभी बहुत होता है ॥

की। और उसे हरतरह से तसल्ली दी ॥ तीन दिनतक राजाका मिहमानरहा। चौथेदिन कन्नौजसे ग़ज़नीको लौटा॥ *किताबों में उसवक़ वालोंने कन्नौज की बड़ी बड़ाइयां लिखी हैं। कोई उसकी शहरपनाह का घेरा पंदरहकोस का लिखता है कोई उस में तीस हज़ार तंबोलियोंकी दूकान बतलाताहै कोई वहांके राजा की फ़ौजमें पांच लाख पियादे गिनता है कोई उस में तीस हज़ार सवार और अस्सीहज़ार ज़िरहपोश और बढ़ाता है पर अब तो निरा एक क़स्बा सा बाक़ी रहगयाहै टूटी फूटी इमारत अलबत्ता दूर दूर तक उस के गिर्द नज़र पड़ती है॥

महमूद रस्ते में मथुरा को तबाह करतागया बीसदिन तक उसे लूटा। और मूरतों को तुड़वा के मन्दिरों में बुराबुरा काम किया॥ १०० ऊंट निरी तोड़ी हुई चांदी की मूरतों से भरके लेगया। पांच खाली सोनेकी थीं उन में एकका वज़न हमारे अबके चारमनसे ऊपर था॥ महाबन को क़तल किया राजा अपने बालबच्चों को मारकर आप भी मररहा। इसबार महमूद यहां से पांच हज़ार तीन सौ आदमियों को ग़ज़नी पकड़ ले गया॥

दसवीं बार महमूद को कन्नौजके राजा की मदद के वास्ते आना पड़ा। पर कालिंजर के राजा ने उसे महमूद के पहुँचने से पहलेही काट डालाथा॥ और ग्यारहवींबार वह कालिंजर के राजा से लड़ने को आया। लाहौर के राजा अनन्दपालके बेटे ने कन्नौज के आने में महमूद का मुक़ाबला कियाथा इस लिये महमूदने उसका राज छीनकर ग़ज़नी में मिला लिया॥

बारहवां हम्ला महमूदका पत्तनसोमनाथ पर हुआ। अब १०२४ई० तो यहां वाले उस का नाम तक भी भूल गये परउस वक्त वह इसदेश के बड़े तीर्थों में गिनाजाताथा॥ गुजरातके प्रायद्वीप के दखन समुद्रके कनारे सोमनाथ महादेवका नामी मन्दिर बनाथा। छप्पन खंभे उस में जवाहिर जड़े हुये लगे थे औरदो-सौ मन भारी सोने की ज़ंजीर से घंटा लटकताथा॥ दोहज़ार गांव उस के खर्च के वास्ते मुआफ़ थे। और दो हज़ार पंडे वहां के पुजारी गिने जाते थे॥ तीर्थ की जगह समझके आस पास के बहुतेरे राजा उसके बचाने को इकट्ठाहोगये। पर महमूद कब छोड़ताथा तीनदिनतक लड़ाई होती रही पांच हज़ारसे ऊपर रजपूत खेलरहे बाक़ीनावोंपर सवार होकर निकल गये॥ महमूद जब मन्दिरमें गया तो ब्राह्मण बहुत गिड़गिड़ाये और अर्ज़ किया कि आप मूरतको न छूएं तो जितना रुपया कहें हम दण्ड भरें बादशाह ने कहा कि मैं बुतशिकनहूं बुत-फ़रोश नहीं बना चाहता। यानी मूरतों का तोड़नेवालाहूं बेचने वाला नहीं बनूंगा॥ और यह कहके एकगुर्ज़ यानी गदा उ-सपचगज़ी मूरतमें ऐसी मारी। किवह टुकड़े टुकड़े होगयी॥ परदेखो उस मालिककी माया कि उसके भीतरसे इतने हीरेमोती औ जवाहिर निकले जिनका मोलउस दण्डसे जोब्राह्मण देना क़बूल करतेथे कहीं बढ़करथा। महमूद ने उस मूरतके दोटुकड़े तोमक्के मदीने भिजवादिये और दोग़ज़नीमें अपनीकचहरी और मसजिदकी सीढ़ियोंमें जड़वादिये कहतेहैं कि इस हम्लेमें कम सेकम दश करोड़का माल महमूद के हाथलगा *॥

ग़ज़नी पहुंचकर तुर्तही महमूदको एकबार मुल्तानतक फिर आनापड़ा। वहां उन जाटोंको जिन्होंने सोमनाथसे लौटतेवक्त उसके सिपाहियोंके साथ कुछ छेड़छाड़ कीथी सज़ा देना बहुत ज़रूरथा॥ लेकिन फिर हिन्दुस्तानपरकोई चढ़ाई नहींकी ईरान

* वह चन्दनके किवाड़ जो सरकारी फ़ौज सन् १८४२ई०में ग़ज़नीसे उखाड़ लायीथी और अब आगरे के क़िलेमें रक्खेहैं इसी सोमनाथके बतलाते हैं।

की । और उसे हरतरह से तसल्ली दी ॥ तीन दिनतक राजाका मिहमानरहा । चौथेदिन कन्नौजसे ग़ज़नीको लौटा ॥ ❀ किताबों में उसवक़ वालोंने कन्नौज की बड़ी बड़ाइयां लिखी हैं । कोई उसकी शहरपनाह का घेरा पंदरहकोस का लिखता है कोई उस में तीस हज़ार तंबोलियोंकी दूकान बतलाताहै कोई वहांके राजा की फ़ौजमें पांच लाख पियादे गिनता है कोई उस में तीस हज़ार सवार और अस्सीहज़ार ज़िरहपोश और बढ़ाता है पर अब तो निरा एक क़स्बा सा बाक़ी रहगयाहै टूटी फूटी इमारत अलबत्ता दूर दूर तक उस के गिर्द नज़र पड़ती है ॥

महमूद रस्ते में मथुरा को तबाह करतागया बीसदिन तक उसे लूटा । और मूरतों को तुड़वा के मन्दिरों में बुराबुरा काम किया ॥ १०० ऊंट निरी तोड़ी हुई चांदी की मूरतों से भरके लेगया । पांच खाली सोनेकी थीं उन में एकका वज़न हमारे अबके चारमनसे ऊपर था ॥ महाबन को क़तल किया राजा अपने बालबच्चों को मारकर आप भी मररहा । इसबार महमूद यहां से पांच हज़ार तीन सौ आदमियों को ग़ज़नी पकड़ ले गया ॥

दसवीं बार महमूद को कन्नौज के राजा की मदद के वास्ते आना पड़ा । पर कालिंजर के राजा ने उसे महमूद के पहुँचने से पहलेही काट डालाथा ॥ और ग्यारहवींबार वह कालिंजर के राजा से लड़ने को आया । लाहौर के राजा अनन्दपाल के बेटे ने कन्नौज के आने में महमूद का मुक़ाबला कियाथा इस लिये महमूदने उसका राज छीनकर ग़ज़नी में मिला लिया ॥

❀ लेकिन तारीखयमीनीमें लिखाहै किराजागंगापार भागगया बादशाह ने एकहीरोज़ में सातोंक़िले जो अलग अलग गंगाकिनारे बनेहुयेथे फ़तहकर लिये दस हज़ार के लगभग वहां मंदिरथे बादशाहने अपने सिपाहियों को लूटने और क़ैदी लेनेकी इजाज़त दी लोग "अपनी गूंगीबहरी मूरतोंका,, यह हाल देखकर मारेडरके जिधर राहपायी निकलगये सब "बेवा और यतीमों की तरह" परेशान हुए जो निकल न जासके क़तल कियेगये ॥

बारहवां हमला महमूदका पत्तनसोमनाथ पर हुआ। अब १०२४ई० तो यहां वाले उस का नाम तक भी भूल गये परउस वक्त वह इसदेश के बड़े तीर्थों में गिनाजाताथा॥ गुजरातके प्रायद्वीप के दखन समुद्रके कनारे सोमनाथ महादेवका नामी मन्दिर बनाथा। छप्पन खंभे उस में जवाहिर जड़े हुये लगे थे और दो-सौ मन भारी सोने की ज़ंजीर से घंटा लटकताथा॥ दोहज़ार गांव उस के खर्च के वास्ते मुआफ़ थे। और दो हज़ार पंडे वहां के पुजारी गिने जाते थे॥ तीर्थ की जगह समझके आस पास के बहुतेरे राजा उसके बचाने को इकट्ठाहोगये। पर महमूद कब छोड़ताथा तीनदिनतक लड़ाई होती रही पांच हज़ारसे ऊपररजपूत खेतरहे बाक़ीनावोंपर सवार होकर निकल गये॥ महमूद जब मन्दिरमें गया तो ब्राह्मण बहुत गिड़गिड़ाये और अर्ज़ किया कि आप मूरतको न छूएं तो जितना रुपया कहें हम दण्ड भरें बादशाह ने कहा कि मैं बुतशिकनहूं बुत-फ़रोश नहीं बना चाहता। यानी मूरतों का तोड़नेवालाहूं बेचने वाला नहीं बनूंगा॥ और यह कहके एकगुर्ज़ यानी गदा उ-सपचगज़ी मूरतमें ऐसी मारी। किवह टुकड़े टुकड़े होगयी॥ परदेखो उस मालिककी माया कि उसके भीतरसे इतने हीरेमोती औ जवाहिर निकले जिनका मोलउस दण्डसे जोब्राह्मण देना क़बूल करतेथे कहीं बढ़करथा। महमूद ने उस मूरतके टुकड़े तोमके मदीने भिजवादिये और दोग़ज़नीमें अपनीकचहरी और मसजिदकी सीढ़ियोंमें जड़वादिये कहतेहैं कि इस हम्लेमें कम सेकम दश करोड़का माल महमूद के हाथलगा *॥

ग़ज़नी पहुंचकर तुर्तही महमूदको एकबार मुल्तानतक फिर आनापड़ा। वहां उन जाटोंको जिन्होंने सोमनाथसे लौटतेवक्त उसके सिपाहियोंके साथ कुछ छेड़छाड़ कीथी सज़ा देना बहुत ज़रूरथा॥ लेकिन फिर हिन्दुस्तानपरकोई चढ़ाई नहींकी ईरान

* वह चन्दनके किवाड़ जो सरकारी फ़ौज सन् १८४२ई०में ग़ज़नीसे उखाड़ लायीथी और अब आगरे के क़िलेमें रक्खेहैं इसी सोमनाथके बतलाते हैं।

तूरानहीकी मुहिम्मों में फँसारहा। यहांतक कि सन् १०३० ई० में बीमार होकर इसदुन्या से उठगया † ॥

१०३०ई०

मरनेसे कुछदेर पहले उसने खज़ानेसे मंगवाकर सोनेचांदी औरजवाहिरातका अपनीआंखोंकेसाम्हने ढेरलगवादिया और फिर देरतकउन्हें देखदेखकररोयाकिया। यहनहीं मालूम कि यह उनजुलमऔर ज़ियादतियोंको सोचकररोताथा किजिनसे वे हाथलगे या इसबातको कि अबउन्हेंसाथनलेजासकताथा॥

निदान सन् ११८६ ई० तक ग़ज़नीकी सल्तनतइसी महमूदके घरानेमेंरही परहिन्दुस्तानपर ऐसाकिसीनेदिलनहीं चलाया। हांपंजाबकोजिसेमहमूदनेग़ज़नीकीसल्तनतमें मिलालियाथाअलबत्ता अपनतहतेमेंरक्खा॥ उसके परपोते दूसरे मसऊद के वक्तमें कुछ फ़ौजगंगाके पारतक आकर लूटमार करती हुई फिर लाहौरको मुड़गयीथी सन् ११८६ ई० में महमूदके परपोतेके परपोते खुसरवमलिकको शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरीलाहौरसे क़ैदकर लेगया। और उसीके साथ वह ग़ज़नीकाघराना तमाम हुआ॥

१०९८ई०
مسعود ثانی
११८६ई०
خسرو ملک

शहाबुद्दीन मुहम्मदग़ोरी

شهاب الدین
محمود غوری

क़न्दहारसे सातआठ मंज़िलआगे ग़ोरएकजगहहै मुद्दत से वहांके हाकिम अलगहोतेआयेथे महमूदग़ज़नवीने अपनेताबे करलियाथा। औरउसकेजानशीनोंमेंसे बहरामने अपनीलड़की काब्याहभी वहांकेहाकिम कुतबुद्दीन मुहम्मद के साथ कर दियाथा॥ परफ़िरआपस में जोतकरार पड़गयीतोवहयहाँतक बढ़ी। किबहराम ने अपनेदामादकी जानहीलेडाली औरउस केभाई सैफुद्दीनकीभी बुरीनौबतकी॥ मुंहकाला करके बैलपर शहरमें घुमाया। और फिर शिर कटवा के ईरान के बादशाह के पास भेजदिया॥ इन्हीं अपने दोनों भाइयों का बदलालेने

को अलाउद्दीन ग़ोरीने जिसे तवारीख़ वालों ने जहां सोज़* खिताब दिया है ग़ज़नी पर चढ़ाई की सात दिन की लूटमार में शहरको तो फूंकफांककर बिल्कुल नेस्त नाबूद करदिया और शहरवालों को जो उसके साथियों की तलवार से बचे बहुतों को पकड़कर ग़ोर लेगया। और वहां अपने मकानोंकेलिये उनके लोहूसे गारासनवाया॥ निदान इसी अलाउद्दीन के भतीजे शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरीकी क़ैदमें जैसा कि अभी ऊपरलिख आयेहैं बहरामकापोता खुस्रवमलिक जो महमूदके घराने में आखिरी बादशाहहुआ जानसेगया। औरग़ज़नीका साराराज ग़ोरमें मिला॥

علاءالدين غوري

हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की बादशाही की जड़ जमाने वाला इसी शहाबुद्दीनको समझना चाहिये सन् ११७६ ई० में उसने उच्च लिया था और दो बरस बाद गुजरात पर चढ़ाई की। लेकिन वहां उसने शिकस्त खायी॥ फिर कुछ दिनोंपीछे सिंधकोलूटा। और सन् ११६१ ई० में दिल्ली की तरफ़फ़ौजलाया॥

इस पहिलीलड़ाई में जोथानेसर और करनालके बीचतलावड़ीके मैदानमें हुई। शहाबुद्दीनने पृथीराजसेशिकस्तखायी॥ पर सन् ११६३ ई० में वहबड़ीभारी फ़ौजलेकर आया। जयचंद राठौर कन्नौजवालेको अपनेमौसेरेभाईपृथीराजका अनंगपालकीगोद बैठनाऔरदिल्ली और अजमेरकाराज एकहोकरउसका बढ़ना बहुतबुरा लगाथा॥ राजसूय†यज्ञ और अपनी बेटीके स्वयम्बरमें उसे नबुलाकर उसकीसूरत सोनेकीबनाकर द्वारपालोंकी जगह रखवादी पृथीराज यहहालसुनकर बड़ेगुस्से में आया। औरचुनेहुए सर्दारोंकेसाथ धावामारकर जयचंदकीबेटी कोहरलेगया॥इसमें पृथीराजके अच्छेअच्छे आदमीकामआये।

११६१ ई०

११६३ ई०

---

* जगतदाहक यानी संसारका जलानेवाला॥

† यहयज्ञ और स्वयम्बर इसदेशमें आखिरीहुआ फिर कभी किसीने इस कातैसिलान किया॥

यानी १०८ सर्दारोंमें से ६४ खेतरहे ॥ औरयही आपसका बैर बिरोधइसदेशमें मुसल्मानोंके ग़ालिब होजानेका असलीसबब हुआ।पृथीराजको इसनाज़ुक वक्तमें जयचंदकी मददकाकुछभी भरोसा नथा ॥ बल्किदुश्मनसे साज़िश रखनेका खटकाथा ॥ तौभी घमंडके नशेमें चूरथा अपनेज़ोरके आगे दुश्मनकीकुछ हक़ीक़त नहींसमझताथा। तीन हज़ार हाथी और तीनलाख सवारोंका लश्कर इकट्ठाकरलियाथा।पैदलोंकाकुछशुमारनथा डेढ़सौसेऊपर उसकेलश्करमें राजागिनेजातेथे शहाबुद्दीनजैसे दूधकाजलाछाछभी फूंकफूंककर पीताहै बड़ीख़बर्दारीसे लड़ता था। लड़ाई के वक़्त धोखादेनेकेलिये यक्बारगी अपनेलश्कर कीबाग पीछे मोड़दी हिन्दुओंने समझा किमुसल्मानोंकेपांव उखड़े पीठदिखाकर भागेजातेहैं आगापीछा कुछनबिचारा जिधर जिसकाजीचाहा दुश्मनका पीछाकरनेको क़दमउठाया ॥ शहाबुद्दीनने जबदेखा किहिन्दू बिखरगये बारह हज़ारचुनेहुये ज़िरहपोश सवारोंकेसाथझट आराजाको धरदबाया। बहुतेरेसूर और सामंत उसजगहकामआये चितौड़काराजा समरसीबड़ी बहादुरीकेसाथ मारागया।पृथीराजकोशहाबुद्दीनने जीतापकड़लिया। और फिरउसके गलेपरछुराचलवाया* ॥ सचहैफ़तह और शिकस्त बिल्कुल उस मालिककेहाथहै अजमेर में इसने हज़ारोंको क़तलकिया। औरहज़ारोंको लौंडीगुलामबनाया॥ और तब पृथीराजके किसीरिश्तेदारको भारीख़राजदेनेकेक़रार पर वहांका राजदेकर और अपनेगुलाम कुतबुद्दीन ऐबकको हिन्दुस्तानमेंछोड़कर आप ग़ज़नीको लौटगया। कुतबुद्दीनने दिल्ली और कोयलपर अपना क़बज़ाकिया ॥

११९४ई० फूटका यहीफलहै किदोनोंबर्बादहों पसकन्नौजकाराजाजयचंदराठौरभी कबबचनेपाताथा। दूसरेसालशहाबुद्दीनने उसपर चढ़ाईकी औरइटावेके उत्तरउसे शिकस्तदेकर बनारसतकअप-

---

*पृथीराजका सबहाल उसके भाटचंद कवीश्वरने पृथीराजरायसेमें बहुत अच्छीतरह लिखाहै ॥

नेकबूज़ेमेंकरलिया गोया बंगालेकादरवाज़ा मुसल्मानोंकेलिये खोलदिया जयचंद इसलड़ाईमें कुतबुद्दीनके तीरसेमरा॥ उसके घरबारके लोग अंतर्वेद छोड़कर मारवाड़कोचलेगये। कहतेहैं कि शहाबुद्दीनने बनारसमेंकमसेकम एकहजारमंदिरतुड़वाये॥

सन् ११९५ ई० में शहाबुद्दीन फिर हिन्दुस्तानमें आया और बयाना लेकर ग्वालियरका मुहासराकिया। लेकिन इसी अर्सेमें किसी ज़रूरतके सबब उसेअपने मुल्ककीतरफ़ लौटजानापड़ा॥ सन् १२०६ ई० में एकदिन जब उसकादेरा हवाकेवास्ते ऐन सिंधु नदीके कनारेपर पड़ाथा। आधीरातकेवक्त कईएक बदमआश जिनके रिश्तेदार उसकी लड़ाइयोंमें मारेगयेथे दर्यामें तैरकरदेरे के अन्दर घुसआये और तलवारों से उसका कीमाकरडाला॥* ख़ज़ाना इसकेपास बहुतथा। तवारीखफ़रिश्ताके बमूजिब पांच मनतो उसमें निराहीराथा॥ ग़ज़नी में तख्तपर उसका भतीजा महमूदगोरीबैठा। लेकिन हिंदुस्तानपरकुतबुद्दीनऐबककाक़ब्ज़ा रहा॥ मालवा औरउसके आसपासके ज़िलोंके सिवाय बिल्कुल दख़लमें आगयाथा। सिंध औरबंगालाभी फ़तहहुआजाताथा॥ गुजरातकी राजधानी अनहलवाड़ेपर मुसल्मानोंका झंडा फह-राताथा। और जो राजा रहगयेथे उन्होंने खराजदेना क़बूलकर लियाथा॥ महमूदगोरी ने तख्तपर बैठतेही कुतबुद्दीनऐबकको बादशाही का खिलअत और खिताब भिजवादिया। और फिर तबसे यही कुतबुद्दीनऐबक हिंदुस्तान का बादशाह कहलाया॥

११९५ ई०

१२०६ ई०

कुतबुद्दीन ऐबक †

قطب الدین ایبک

कुतबुद्दीनऐबकको बचपन में किसी दौलतमंदने नैशापुरके दर्मियान गुलामीमें मोललियाथा और उसीने उसेफ़ारसीअरबी पढ़ाया। उसके मरनेपर वह एकसौदागरके हाथबिका और उस सौदागरने उसेशहाबुद्दीन मुहम्मदगोरीकी नज़रकिया॥ शहाबु-द्दीनकी उसपर ऐसी मिहर्बानीहुई कि होतेहोते वह हिंदुस्तानका

* تاریخ وفات شہاب الدین محمد غوری صاحب [illegible] سنه ۶۰۲ [illegible]

† ऐबक तुर्की में उसे कहते हैं जिसके हाथकी छोटी उंगली टूटी हो॥

बादशाह होगया। क्या महिमाहै सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरकी कि जिसने लड़कपन में नैशापुरके सौदागरोंकी गुलामीकी वह बुढ़ापे में हिंदुस्तान के तख़्तपर मरा ‡ और इसदेशमें मुसल्मानों के राजकी जड़ जमानेवाला हुआ॥

आरामशाह

آرام شاہ

१२१०ई०

चौगान खेलते घोड़े से गिरकर कुतबुद्दीनऐबकके मरने पर उसका बेटा आरामशाह बरसभरभी तख़्तपर न बैठने पायाथा। कि उसके बहनोई शम्सुद्दीन अल्तिमशने ताज बादशाही का अपने सिरपर रक्खा॥

शमसुद्दीन अल्तिमश *

شمس الدین التمش

कुतबुद्दीन ऐबकने इसे एकहज़ार रुपयेपर मोललियाथा।जिस दम इसने आरामशाहसे तख़्त छीना यह बिहारका सूबेदारथा॥ इसी अर्सेमें चंगेज़ख़ां † मुग़लों का सर्दार बेशुमार फ़ौजें लेकर तातारसे बाहर निकलाथा। और सिंधुपारके देसोंमें प्रलय कासा धुन्द मचारक्खाथा॥ कहतेहैं कि मुल्कों की तबाही ऐसी आज तक कभी किसी ने नहींकी। जैसी इस मुग़लके हाथसे मालिक को मंज़ूर हुई॥ जहां जाता था सिवाय काटने मारने दाहने जलाने लूटने डुबाने के और कुछ भी उसे काम न था। गोया इस सारी दुन्याको उसने बे आदमी कर डालना बिचारा था॥ जब ख़्वारज़्म का बादशाह जलालुद्दीन जान बचाने के लिये घोड़ा तैराकर सिंधु इसपार भाग आया तो मुग़लों की कुछ फ़ौज उसका

‡ تاریخ وفات قطب الدین ایبک سلطانت پناہ سنہ ۶۰۷ هجري

* رسالہ ترکي والہ التمش کے معني فوج لڑتا ہے جو میان ہراول و سردار ہو اور تواریخوں میں اسکا یہہ نام پڑنے کا باعث یوں لکھا ہے کہ وہ بروز خسوف متولد ہوا بہرکیف قاضي منہاج السراج جرجاني کے اشعار ذیل سے میم مکسور اور مشدد معلوم ہوتا ہے اگر تشدید جائز نرکھیں (ت) کے کسرہ کو بڑھکر خواہ (ت) کو (ي) کے ساتھہ ملاکر پڑھنا پڑیگا * آن خداوندي کہ حاتم بذل و رستم کوشش است * ناصر دنیا و دین محمود بن التمش است * زنو ناصرالدین شاہ محمود ابن التمش * ملک نزدش دعا خواندہ فلک پیشش زمین گشتہ * اور اِس تاریخ کے شعر سے ساکن * جو شش صد سي و سہ ازسال هجري * گذشت و بست روز ازماہ شعبان * بشد سلطان شمس الدین التمش * بسوے جنت الماوي خرامان *

† अमीर ख़ुसरव अपनी तारीख़ अलाई में चंगेज़ख़ांको सबजगह मलऊन लिखता है॥

पीछा करती हुई मुलतान और सिंध के इलाक़ेतक पहुँची थी। पर शम्सुद्दीन अल्तिमश निहायत अक़्लमन्द था जोंहीं जलालुद्दीन ने इस मुल्क में कुछ दिन ठहरने का इरादा ज़ाहिर किया तुर्त उसे कहला भेजा कि यहां की आब हवा आपके मिज़ाज मुबारक के मुआफ़िक़ न आवेगी ॥ जलालुद्दीन समझ गया। सिन्ध से ईरानकीतरफ़ चलताहुआ ॥ इस लिये मुग़लों की फ़ौज भी लौटगयी। पर नमूना अपने ज़ुल्म का उतनेही में दिखलातीगयी ॥यानीदसहज़ारहिन्दू जो गुलामबनानेकेवास्ते पकड़लियेथे। जबलश्कर में रसदकी कमीहुई तलवारोंसे काट डाले॥ बेचारे इनबेगुनाहोंमें से छोड़ा एककोभी नहीं चंगेज़ख़ां और उसके साथके मुग़ल मुसल्मान न थे। बल्कि एकतरहके बौद्धथे वे मूरतों को पूजतेथे और वेद और क़ुरान दोनोंकोएक सा समझते थे ॥

शम्सुद्दीन अल्तिमशने अपना दब्दबा सारे हिन्दुस्तानपर जमाया सिन्ध औरबंगालाभी बख़ूबीफ़तह करलिया। रनथंभौर जिसे रन्तभँवरभी कहते हैं और मांडू के मशहूर क़िलोंको सर किया॥ उज्जैनमें महाकालका सौगज़ऊंचा नामीमन्दिरतोड़ा। और ग्वालियर को दुबारा अपने क़ब्ज़ेमेंलाया ॥ बग़दादकेख़लीफ़ाने उसे बादशाहीका ख़िलअत भेजा औरवह ऊंचासुन्दर क़ुतब मीनारभी दिल्ली में इसी बादशाहने बनवाया ॥ निदान सन् १२३६ ई० में शम्सुद्दीन अल्तिमश उस दुन्याको सिधारा। और रुक्नुद्दीन उसका बेटा तख़्तपर बैठा ॥

रुक्नुद्दीन फ़ीरोज़शाह

ركن الدين فيروزشاه

इसे रात दिन भांड़ और कसबियोंसे कामथा। नशा और तमाशबीनी यही शग़ल आठोयामथा ॥ सल्तनतमाकेभरोसे छोड़ दीथी। ख़ज़ाना बिल्कुल वाहियातमें लुटाताथा मा भी इसकी बड़ी ज़ालिमथी ॥ सातहीमहीनेमें तख़्तसेउतारागया। और उसकी जगह लोगोंने उसकीबहन रज़ीया को बिठाया ॥

رضیہ بیگم
१२३६ई०

रज़ीया बेगम

यह बेगम बड़ी होशियार थी। अगर्चि बहुत पढ़ी लिखी न थी तौभी क़ुरान अच्छीतरह पढ़लेतीथी॥ नित बादशाहोंकी तरह क़बा और ताज पहन कर तख़्तपर दर्बार करतीथी। नक़ाब मुंहपर कभी नहीं डालती थी और बड़े अ़द्ल इंसाफ़ के साथलोगोंकी नालिश फ़र्याद सुनती थी॥ पर एकही चूक उससे ऐसी बनी। कि जिससे आख़िर उसकी जानगयी उसके इस्तबल का दारोग़ा एक हबशी गुलामथा। वही उसको बग़ल में हाथदेकर घोड़ेपर सवार कराताथा॥ उस पर ऐसी मि- हर्बानहुई कि उसे अमीरुल्उमराका ख़िताब दिया। इस सबब सबका दिलउससे फिरगया और बड़ा दंगा बखेड़ा हुआ॥न- तीजा उसका यह निकला। कि हबशी औरबेगम दोनोंमारेगये❀ और मुल्क उसके भाई मुइज्ज़ुद्दीन बहरामके हाथ आया॥

१२३९ई०
معز الدین بہرام

मुइज्ज़ुद्दीन बहराम

लेकिन दो बरस दो महीने सल्तनत करके वहभी बलवाइ- योंकी क़ैदमें जानसे गया। इसने बिल्कुल इख़्तियार अपने मि- हतर फ़राश को देरक्खा था और उसीकी सलाहपर चलताथा इसीसबब बलवाहुआ और अलाउद्दीन मसऊद जो रुक्नुद्दीन के लड़कों मेंसे था तख़्तपर बैठा॥

१२४१ई०
علاء الدین مسعود

अलाउद्दीन मसऊद

कुछ ऊपर चारही बरसका अर्सा गुज़राहोगा। अलाउद्दीन मसऊद भी मारागया॥ इसकेवक़्त में मुग़लोंने तिब्बतकी राह बंगालेपर चढ़ाई की। पर शिकस्त खायी॥

ناصر الدین محمود

नासिरुद्दीन महमूद

यह शम्सुद्दीन अल्तमश का बेटाथा। जब बादशाह हुआ

१२४६ई०

सल्तनतका बिल्कुलकाम अपने बहनोई वज़ीर ग़यासुद्दीन ब-

❀ रज़ीया मर्दानी पोशाकमें भागीथी रास्ते में सोगयी किसी किसान ने उसकी पोशाकके तले ज़री और मोती टकी अंगिया देखली जाना कि औरत है मारकर कपड़े उताराजिये लाश ज़मीन में गाड़दी॥

लबनके भरोसे परछोड़ दिया अपना शौक़ खाली किताब से रक्खा ॥ नामको बादशाहथा पर सच पूछो तो दर्वेशी करता था ॥ किताब नक़ल करके अपना पेटभरता । अपनी बेगमसे खाना पकवाता लौंडी या मज़दूरनी एकभी उसकेपास न रहने देता ॥ जोकुछ ग़रीब मुहताजोंके खानेमें आताहै वहीआपभी खाता । निकाह एकही कियाथा दूसरेकाकभी खयालभीजीमें नलाता ॥ वज़ीर बहुतहोशियारथा।शम्सुद्दीन अल्तिमश का गुलाम और दामाद था पहले बादशाहों की ग़फ्लतसेजोख़राबियां और बेइन्तिज़ामियां मुल्कमें पड़गयीथीं उनकेदूरकरने की कोशिशकरता । उधर ग़ज़नी फ़तहकी इधरकालिंजर तक दन्दनाजाया ॥ नरवर का क़िला लिया । चंदेरी को भी जा दबाया ॥ सन् १२५८ ई० में जब चंगेज़खां के पोते हलाकूका एल्ची आया । तो दो हज़ार हाथियों के साथ पचासहज़ारसवार और दोलाख पियादे लेकर दिल्ली के बाहर उसका इस्तिक़्बाल किया ॥ १२५८ई०

सन् १२६६ ई० में इस नेक बादशाह ने इस दुनया से कूच किया । इसकी नेकी यहांतक बयानकरतेहैं कि किसीदिन एक किताबजो अपने हाथसे नक़ल कीथी अपने किसी अमीरको दिखला रहाथा उस अमीर ने कई जगह ग़लती बतलाई बादशाहने दुरुस्त कर दिया ॥ लेकिन जब वह अमीर चलागया। तोफिर वैसाही बनादिया जैसा पहले था । लोगोंने सबबपूछा आपने फ़र्माया कि मुझको पेश्तर से मालूम था कि किताब ग़लत नहीं थी । लेकिन एक खैरख्वाह सलाहदेनेवाले का दिल दुखाने से यह मिहनत अपने ऊपर लेनी मैंने बहुत मुनासिब समझी ॥ १२६६ई०

ग़यासुद्दीन बल्बन

غیاث الدین بلبن

काम तो बादशाहीका यह नासिरुद्दीन महमूदहीके वक़्से करताथा । लेकिन अब उसके मरनेपर पूरा बादशाह हो गया॥ सन् १२६६ ई० में मेवातियों ने सिर उठाया पर जैसा किया

वैसाही फलपाया॥ कुछ कम जियादा एकलाख आदमी उनके मारेगये सन् १२७९ ई० में बंगाले का सूबेदारतुग़रल बिगड़ा और दावा बादशाही का किया। लेकिन जल्दही उसकासिर काटागया॥

१२७९ई०

दिल्ली इसज़मानेमें बड़ीरौनक़ परथी सिवाय उनबादशाह और बादशाहज़ादोंके जोमुग़लोंकेडरसे अपनेमुल्क छोड़छोड़ कर पहलेसेयहां आबसेथे औरपच्चीससे कमनथे पंद्रह इसबादशाहकेवक़्तमेंआये। यहसभोंकी ख़ातिर्दारी औरपर्वरिशकरता और वहसबखुशीसे इसके तख़्तकेगिर्द हाथबांधकर खड़ेहोते॥ शहरमें हरएकके मुल्कके नामसे महल्लेबसगये थे। और समक़ंदी काशग़री ख़ताईरूमीग़ोरी ख़ारज़्मी वग़ैरा पुकारेजातेथे यहबादशाह अपनादब्दबाजमाने औरशानशौक़त दिखलाने में जैसी कोशिशकरता। वैसीही अद्लइंसाफ़में सुस्तईदीरखता॥ अवध के सूबेदार हैबतख़ां ने शराबके नशेमें किसीग़रीब को मारडाला था उसकी औरतने नालिशकी। बादशाहने हैबतख़ांको पांचसौ कोड़े लगवाकर उस औरतके हवालेकिया और कहदिया कि आज तक हमारा गुलामथा अब तेराहुआ है बत ख़ांजीने बड़ी सिफ़ारिशों से बीसहज़ार रुपये देकर उस औरत की गुलामी से आज़ादी पायी॥ कहतेहैं कि जबसेवह बादशाह हुआ शराबपीना बिल्कुल छोड़ दिया। नमाज और रोज़ा इख़्तियारकिया॥ मातमपुर्सीकेलिये अपने अमीरोंके घरजाता। जुमे के दिन मस्जिद से लौटते वक़्त आलिम फ़ाज़िलों के मकानपर उनसे मुलाक़ात करता॥ इस धूमसे सवारी निकलती थी कि पांचसौ आदमी नंगी तलवार लेकर अर्दलीमें चलते तौभी रास्ते में जहां देखता कि वाज़ की मज्लिस यानी उपदेश सभा है उतरकर सुनता और अक्सर रोने लगजाता। वे वज़ू कभी न रहता बेमोजे और टोपी कभी किसी ख़िदमतगारनेभी उसे न देखा पर सज़ा बहुत सख़्त देता और सल्तनतकी पायदारी के लिये नाहक़ भी बहुतों की जान लेडालता॥ आख़िरी

वक़् में इस बादशाह को पंजाब की तरफ़ लड़ाई में मुग़लों के हाथ से अपने बड़े बेटे मुहम्मद के मारेजानेका बड़ा रंजहुआ। अमीर खुसरव मशहूर शाइर इसी शाहज़ादे मुहम्मद के पास रहताथा जब शाहज़ादा मारागया अमीर खुसरव दुश्मनों की क़ैदमें पड़गया लेकिन फिर छूटआया ॥ निदान ग़यासुद्दीन बल्बन ८० बरसकी उम्रमें इस असार संसार से कूच करगया। और जब उसके बेटे*क़राखां ने सल्तनत से इन्कार किया वज़ीरों ने उसके पोते कैक़ुबादको तख़्तपर बिठाया ॥ १२८६ई०

मुइज़्ज़ुद्दीन कैक़ुबाद

معزالدین کیقباد

इसकी उम्र अठारह बरसकीथी यक्बारगी ऐशमें डूबगया। पहले अपने चचेरेभाई कैखुस्रवको क़त्लकिया और फिर और भी बहुतसे अमीरोंका सिरकटवाया ॥ मस्जिद औरमंदिरोंमेंभी वाहियात और तमाशबीनी होनेलगी। सारीदिल्ली भांड़ भग तियेढाढ़ी कत्थक कस्बी भड़वे इसी क़िस्मके आदमियों से भर गयी ॥ जब उसका बाप क़राखां बंगालेका सूबेदार समझाने और नेकनसीहत देनेकोआया। यह उससेलड़नेके इरादेपर फ़ौजले कर निकला ॥ और फिर जब वह इसकेदर्बारमें हाज़िरहुआ। यह पत्थरकी तरह तख़्तपर बैठारहा और अपने बापको तीन २ बार ज़मीन चूमते और आदाब बजालाते देखकर ज़राभी न हिला ॥ आख़िर जब चोबदार पुकारा "क़राखां निगाह रूबरू जहांपनाह सलामत" क़राखांसे न रहागया। डाढ़ मारकर रोनेलगा ॥ तब तो कैक़ुबादके दिलपर ग़ैरतने असरकिया। तख़्तसे उतरकरबाप के क़दमोंपर गिरपड़ा और हाथ पकड़कर अपनेबराबर बिठाया ॥ क़राखांने समझाने और नसीहत करने का फ़ाइदा न देखकर उलटेपांव अपने सूबेका रास्तालिया। औरबेटेको उसकी क़िस्मत के हवालेकिया† ॥ कैक़ुबाद थोड़ेही दिनोंमें अपने सर्दारोंके १२८८ई०

---

* असली नाम इसका बुग़राख़ां है बुग़रा तुर्की में शेरको कहतेहैं (ग़)(क़) से बदलजाताहै-बुक़राहुआ संक्षेपकेलिये क़राखां पुकारनेलगे ॥

† अमीर खुसरव ने इसीमुलाक़ात के हालमें किरानुस्सादैन लिखी है ॥

हाथसे मारागया। बीमारतो थाही एककम्बलमें लपेटकर लात और लाठियोंसे भुरता करडाला॥ जबदम निकलगया खिड़की की राह जमनामें फेंकदिया। और उसकी जगह समाने का नाइब नाज़िम जलालुद्दीन फ़ीरोज़ खिल्जी तख़्तपर बैठा॥ निदान ग़ोरी बादशाहों के गुलामोंकी सल्तनत कैक़ुबादतक रही। जलालुद्दीनसे ख़िल्जियों के घराने में आयी॥

जलाल الدين فیروز خلجی

जलालुद्दीन फ़ीरोज़ ख़िल्जी

ख़िल्जी अफ़ग़ानिस्तानकी सर्हदपर पहाड़ियोंकी एककौम है जलालुद्दीन फ़ीरोज़ जब तख़्तपरबैठा ७० बरसकाथा। मिज़ाजउसका सादा और रहमदिल पहले सिरेका। सन् १२६४ ई० में उनके भतीजे अलाउद्दीनने ८००० सवारों के साथ दखनमें देवगढ़*के राजारामदेवको जाघेरा॥ और बहुतसा†सोनाचांदी और जवाहिरात लेकर तब उसका पिंड छोड़ा॥ यहमुसल्मानों की दखनमें पहली चढ़ाईथी अलाउद्दीनने यह बड़ाभारीपापका कामकिया। कि सल्तनतके लालचसे अपनी आंखोंके साम्हने अपने बूढ़े चचाको धोखादेकर मरवाडाला॥

१२२४ई० १२९५ई०

علاء الدين خلجی १२९७ई०

अलाउद्दीन खिलजी

इसने तख़्तपर बैठतेही पहलेतो जलालुद्दीनके दोलड़कों को क़त्लकिया। फिर जब गुजरात फ़तहकरके अपनी सल्तनतमें मिलाया तो फ़ौजसे लूटका मालमांगा फ़ौजने बलवाकिया॥ बहुतआदमी मारेगये जो भागे बादशाहने उनके बालबच्चे और घरके लोग कटवाडाले॥ उनकी औरतोंको ख़राब करनेकेलिये नौकरोंके हवाले किया। उनके दूधपीते बच्चोंको उनकीमा और बहनों के सिरपर पटकवापटकवाकर भुरताकरडाला॥ अलाउद्दीन के वक़ में मुग़लों ने इस मुल्क पर कईबार चढ़ाई की।

---

*जिसे अब दौलताबाद कहते हैं॥

† तवारीख़फ़रिश्ता में लिखा है कि हज़ारमन चांदी छसौमन सोना सातमन मोती औ दोमनहीरा पन्ना और माणक लिया॥

और बड़ी हायहूय मचायी ॥ लेकिन शिकस्त हमेशा खातेरहे। जो गिरफ़्तारहुए हाथियोंके पैरोंसे पिसवायेगये या उनकेगलों पर छुरे चलवादिये ॥ एकदफ़ा नौहज़ार मुग़ल इसी तरह मारे गये। इनके बच्चे और औरतों की भी जान नहीं बख़्शतेथे ॥

सालभरके मुहासरेमें रनथंभौरका क़िला फ़तहहुआ हम्मीर १३००ई० वहांका राजा बड़ी बहादुरी से लड़ा। उसके मारेजानेपर सारा रनवास बेइज्जतीके डरसे आगमें जलमरा ॥ बाक़ी जितनेआदमी उसक़िलेमेंरहे। क्या मर्द क्या औरत और क्याबच्चे सबकेसब क़त्ल कियेगये॥ कहतेहैं कोईबाग़ी मीरमुहम्मदशाह हम्मीरकी शरणमें चलागयाथा जबबादशाहने तलबकिया हम्मीरनेकहला भेजा कि चाहे सूरज पच्छममें क्यों न निकले और चाहे सुमेर धरतीसे क्यों न मिलजाय मैं अपने शरणागतको हर्गिज़तुम्हारे हवाले न करूंगा। जबतक दमहै उसे बचाऊंगा ॥ इसीपर बादशाह ने ख़फ़ाहोकर चढ़ाईकी क़िलाफ़तह होनेपर बादशाहने देखा कि मीरमुहम्मद मैदानमें घायलपड़ा है पूछा कि अगर इलाजकराके चंगाकरें हमारेसाथ क्या सलूककरेगा। जवाब दिया कि तुझे मारकर यह मीरमुहम्मद हम्मीरके बेटेको बादशाह बनावेगा बादशाहने ग़ुस्से में आकर उसेहाथीके पैरों से पिसवाडाला ॥

तीनबरसबाद चित्तौड़का मशहूर क़िला फ़तहहुआ। राजा १३०३ई० रतनसैन*मारागया॥ उसकी पद्मनीरानी जिसकानाम पद्मावतीथा अपनी सबसखी सहेलियोंकेसाथ चितापरबैठकर जल गयी। इसीरानीके रूपकी बड़ाई सुननेपर बादशाहने धोखा देकर राजा को क़ैद करलियाथा और हुक्म देदिया कि जब तक रानी न मँगादे रिहाई न पावे रानीने चालाकी की कहलाभेजा कि मैं आतीहूं मेरी सखी सहेली और बांदियोंके लिये डोलियां भेजो और फिर सातसौ डोलियों में इस ढब हथियारबन्द सि-

---

* टाड साहिब इसराजाकानाम भीम लिखते हैं ॥

पाही छुपालायी कि आपभी सलामत निकलगयी और अपने राजाको भी बन्दीखाने से निकाललेगयी ॥ उसवक़ तो बादशाहसेकुछ न बनपड़ा। लागकी आगसे अपनीहीछातीजलाता रहा ॥ लेकिन फ़तह पानेपर जब क़िले के अन्दरगया। और चाहा कि उससे अपना जी ठंढाकरे उसकेबदले वहां उसका मकान उसकी चिताके धूंएसे भराहुआ पाया ❀ ॥

१३०६ई० देवगढ़के राजा रामदेव ने मामूली नज़राना भेजने में कुछ उज़्र किया था इसलिये दखनकोफ़ौज भेजीगयी राजाने मुक़ाबलेकी ताक़त न देखी दिल्ली में आकर हाज़िरहुआ। औरबहुत सा नज़्र नज़राना देकर बादशाहको राज़ीकरलिया ॥ लेकिन फ़ौज जब देवगढ़को जातीथी उसकेअफ़सरने गुजरातके भागे हुए राजाकीरानी कमलादेवीको पकड़के बादशाहके हुजूर में भेजदिया। यह रानी ऐसी खूबसूरतथी कि बादशाहने उसीदम उसे अपनी बेगम बनालिया ॥ रानीने अर्ज़की कि जहांपनाह मेरी लड़की मुझसे भी बढ़कर खूबसूरत है वहभीराजासे मँगा लीजाय लड़की उसकी देवलदेवीउन्हीं दिनोंमें देवगढ़केराजा के लड़के से ब्याही गयीथी। बिदाहोकर बापके यहांसे देवगढ़ जातीथी ॥ बादशाहका हुक्म होतेही रास्तेसे पकड़ी आयी। बादशाहने अपने लड़के खिज़्रखांकोदे दी ॥ अमीर खुसरवने अपनी एक किताबमें इसी देवलदेवी और खिज़्रखांका हाल लिखा है † वह इस बादशाह के वक़्त में हज़ार रुपया साल

१३१०ई० तनख़ाह पाताथा। सन् १३१० ई० में फिर दखन को फ़ौज

❀ इस का हाल मलिक मुहम्मद जाइसी ने शेरशाह के ज़माने में अपनी किताब पद्मावत में कहानी के तौरपर दोहे चौपाइयों में बहुत अच्छा लिखा है जहां सती हुई लिखता है ॥

लागी कंठ आग दै होरी। छार भयी जरि अंग न मोरी ॥

† अमीर खुसरव लिखते हैं कि अलाउद्दीन के बाद मलिककाफ़ूरने खिज़्रखांको अंधाकरके ग्वालियरके क़िलेमें क़ैद कियाथा देवलदेवी उसकेसाथ थी मुबारकशाह ने जबखिज़्रखां को क़त्ल के लिये जल्लाद भेजे लिपटगयी हाथकटाचिहरा घायलहुआ पर अपनेखाविन्दको नछोड़ाउसकेसाथक़त्लहुई॥

भेजीगयी कर्नाटक के राजा बल्लालदेवको क़ैदकरलिया ॥ उस की राजधानी द्वारसमुद्र श्रीरंगपट्टनसे १०० मील बायुकोन को अब तक ऊजड़पड़ीहै बादशाही फ़ौज सेतबंदरामेश्वरतक पहुंची। और वहां भी मस्जिद बनादी ॥ सन् १३११ ई० में बादशाहने मुसल्मान मुग़लों को जो नौकर होगये थे यकक़लम मौक़ूफ़करदिया। और जब उन्होंने दंगाकिया तोबिल्कुल पंदरह हज़ार को क़त्ल करके उनके बालबच्चोंको लौंडीगुलाम बनाके बेचडाला ॥

१२११ई०

अलाउद्दीन को पढ़ना लिखनाकुछ नहींआता था। बादशाह होनेके बाद पढ़ना सीखना शुरू किया पर तौभी घमंडी इतना कि अपने तईं सारी दुन्यासे बढ़कर पढ़ा लिखा और अक़्लमन्द समझताथा ॥ मक़्दूर क्या कि कोई उसकी बात दुहरासके कभी नयामज़्हब चलाना चाहता कभी सारी दुन्या को अपने तहतमें लानेका मंसूबा बांधता। बिना उसकीपर्वानगी न कोई सर्दार अपने बेटा बेटी का ब्याह कर सकता न दस पांच भाई बंद या दोस्त आश्नाओं को अपने घर बुला सकता ॥ मालगुज़ारी बढ़ायी गयी। ज़मीन की पैदावार में आधों आध बटायी होने लगी कूते और बलाहर के लियेभी एक कौड़ी न छोड़ी ॥ मुक़र्रर तादाद से ज़ियादा ज़मीन गाय बैल बकरी रखनेकी मनाही थी। जब बादशाह ने फ़ौज की तन्ख़ाह घटानी चाही सिपाहियों की ख़ातिर जिंस सस्तीकर दी ॥ सब चीज़ का निर्ख * सर्कारसे मुक़र्रर होगया। जोमाल एकरुपयेको बिकता था वहअब आठही आनेका बाक़ीरहा ॥ इस बादशाह की फ़ौज में पौने पांच लाख सवार गिने जाते थे। घोड़े दाग़े हुए सर्कार से और तन्ख़ाह में दोसौ चौंतीस

---

* तवारीख़ फ़रिश्तामें लिखाहै कि उसवक़्त दिल्लीमें अब के हिसाबसे एक रुपये का दो मनतो गेहूं बिकता था और पौने चार मन जव साढ़े सात सेर की मिसरीथी और तीस सेरका घी रुपये की ४० गज़ छींटिया गज़ी मिलती थी और २००) से ५) तक ग़ुलाम और लौंडी ॥

रुपये साल पातेथे॥ जबमुग़लों ने आकर दिल्लीका शहरघेर लियाथा॥ तीन लाख सवार और सत्ताईस सौ हाथी लेकर उनके मुक़ाबले को निकला था॥ सत्तर हज़ार इसकेयहांशागिर्द पेशे थे उनमें सातहज़ार मेमार बेलदार और गिलकार नौकर थे॥ बड़ी से बड़ी इमारत दोहफ़्ते में तय्यार करा सकताथा। अब की तरह ठीके में कम मज़बूत काम नहीं बनवाता था॥ वह अपने तईं दूसरा सिकन्दर बतलाताथा। बल्कि यह लक़ब सिक्केमें भी खुदवा दिया था॥ बेशक यह बादशाह बड़ा ज़बर्दस्तहो गुज़रा निज़ामुद्दीन अह्मद अपनी किताब तबक़ातिअक्बरी में लिखता है कि इसने तमाम वक़्फ़ और इनाम और मिल्क के गांव ज़ब्त कर लिये थे। और लोग यहां तक मुहताज हो गये थे कि पेट भर रोटी नहीं पाते थे॥ तो भी मक़्दूर क्या था कि किसी तरह की शिकायत ज़ुबान पर लासकते। इतने जासूस मुक़र्रर थे कि शिकायत करने की तुह्मत में पकड़े जाने की दह्शत से लोग आपस में बात चीत भी बहुत कम करते थे॥

११३१६ई० निदान इसने २० बरस से ऊपर बादशाही की। आख़िरी वक़्त में मुल्क के दर्मियान कुछ कुछ हलचल पड़ गयी॥ रामदेव के दामाद हरपाल ने दखन से बादशाही अमल उठादिया। और गुजरातमें भी बलवा हो गया॥

कुतबुद्दीन मुबारकशाह

قطب الدین مبارک شاه

मलिककाफ़ूरको जिसे अलाउद्दीन ने खोजे और गुलाम से पहले दर्जेका अमीर बनादिया था उसके मरने पर अब हौसिला तख़्त और ताज लेने का हुआ। अलाउद्दीनके दो बड़े लड़कों की तो आंखेंनिकलवालीं लेकिन तीसरे मुबारकखांकी जबजान लेनीचाही बादशाही सिपाहियों ने काफ़ूरहीको मारडाला॥ १३१७ई०

मुबारकने तख़्तपर बैठतेही अपनेछोटेभाई शहाबुद्दीन उमर को जो निराबच्चाथा और नामकेलिये मलिककाफ़ूरके कहनेसे तख़्तपर आबैठताथा अंधाकरादिया। गुजरातमें फ़ौजभेजी दख·

नजाकर हरपालको क़ैदकरलाया और जीतेहुएकी खाल खिंचवाकर भुस भरवादिया ॥ जबमुल्क में दबदबा जमा । बादशाह बिल्कुल ऐशमें डूबगया ॥ रातदिन नशेमें चूररहता । जनानी पोशाक पहनकर अमीरोंकेघर नाचने को जाता ॥ जिनऐबोंको आदमी छुपाताहै वह उनको खूब ज़ाहिर करनेकी कोशिश करता । कस्बियों को बुलवाकर दरबारमेंअपने बड़ेबड़ेअमीरोंकी बराबर बिठलाता कभीकभी नंगा मादरज़ाद बाहर निकलआता ॥ निदान वह ऐसा बदनामहुआ । किआख़िर हिन्दूकेएक छोकरे खुसूरवख़ां ❀ के हाथसे जिसे उसने गुलामसे वज़ीर बनायाथा माराहीगया ॥ खुसूरवने अलाउद्दीनकी औलादमेंसे १३२१ई० किसी को भी बाक़ी नछोड़ा । अलाउद्दीन की बेगम को हरम बनाया और ताज सल्तनतका अपने सिरपर रक्खा ॥ चार महीने तक दिल्लीमें सिक्का खुतबा इस हिन्दू के नामका जारी रहा । औरज़ुब्दतुत्तवारीख़के मुताबिक़ हिन्दुओंने मुसल्मानियां रखकर और कुरान की चौकी और सीढ़ी बनाकर मस्जिदों में अपनी मूरतोंका पूजनकिया ॥ लेकिन पंजाबके सूबेदारगाज़ीख़ां तुग़लक़ने जल्दही आनकर उसकाकाम तमामकिया । और ख़िल्जियोंके ख़ानदानमें कोई लायक़ आदमी नरहनेकेसबब ख़ल्क़त की ख़ाहिश बमूजिब वहआपही तख़्त पर बैठा ॥

ग़यासुद्दीन तुग़लक़ (غياث الدين تغلق)

ग़ाज़ीख़ांने अपना नामग़यासुद्दीनरक्खा । यहग़यासुद्दीन बल्बनके गुलामका बेटा था ॥ मुल्कका अच्छाबंदोबस्तकिया । दखन में बिदर फ़तहहुआ ॥ व रंगूलका राजा क़ैदहोकरदिल्ली आया । दिल्लीमें तुग़लक़ाबाद का क़िला इसी ग़यासुद्दीन ने बनाया ॥ बंगाले की तरफ़ बादशाह खुदगया । वहां अब तक कैक़ुबाद का बाप कराख़ां सूबेदार था फिरते वक्त तिरहुतलेकर

❀ असल नाम इस हिन्दू बच्चे का किसी तवारीख़ में नहीं मिलताहै लेकिन क़ौम का नीच पर्वारी लिखा है इसके माप का नामरनदालया ॥

वहां के राजाको पकड़लाया॥ बादशाहके बड़े बेटेफ़ख़रुद्दीन जौनाने जिसका ख़िताब अलग़ख़ांथा दिल्लीसे निकलकरबाप से मिलने और जशन करने के लिये तीन रोज़ में एककाठका मकान बनवाया। लेकिन ऐन जशन में वह मकान गिरपड़ा और बादशाह पांच आदमियोंकेसाथ दबकर मरगया॥ * अलग़ख़ां उस वक्त मौजूद न था इसलिये लोग उसपर यह भी शुबहा करते हैं कि बाप के मारनेही के वास्ते यह मकान बनाया था॥

११२५ई०

मुहम्मद तुग़लक़

الغ خان
محمد تغلق

अलग़ख़ां, मुहम्मद तुग़लक़के नामसेतख़्त पर बैठा इनाम इक्रामनें ख़ूब रुपया लुटाया। हज़ार सुतूनका महलबनाया॥ बिद्या इसेअच्छी थी और हौसिलेवाला भी बड़ाथा सराब नहीं पीता। और शरा यानी अपने धर्मशास्त्रको बहुत मानता॥ शुरू सल्तनत में इन्तिज़ाम भी मुल्क का अच्छा होगयाथा। दख़न वग़ैरः दूर दूर के सूबों को भी इसने ज़ेर कर लिया था॥ लेकिन फिर ऐसे पागलपनेके काम किये। किलोग इसे झक्की और बावला समझने लगे॥ पहले तो इस ने ईरानपर चढ़ाई करनेका मंसूबा बांधा और तीन लाख सत्तर हज़ार सवारों का लश्कर इकट्ठाकिया। लेकिनजब ख़र्च बढ़नेसे ख़ज़ाना ख़ाली होगया तो एक लाख सवारों को नैपालके पहाड़ोंकी राह चीन लेनेके लिये रवानाकिया॥ तांबेका रुपया चलाया। औररअय्यतपरमहसूलबेठिकाने बढ़ाया॥नतीजा यहनिकला। किलाख सवारोंमेंसे एकभीउन हिमालयके जंगल पहाड़ोंमेंजीतानबचा॥ बेवपार बेवहार बिल्कुल बंदहोगया रअय्यतफिरगयी सूबेअकसर हाथ से निकलगये। खेत बंजर पड़े लोग मरी और कालसे मरनेलगे॥ मुहम्मदने अपनी फ़ौजको हुक्मदियाकि रअय्यत का शिकारकरें। शेरकेलिये जिसतरह हकुआ होताहै चारोंतरफ़

* تاریخ وفات غیاث الدین تغلق خلیفه سنه ۷۲۵ هجری

से घेरघेरकर मारें और सिर उनकेकाट काटकर क़िलेके कंगूरों से लटकानेके लिये भेजदें॥ आपभी रऋय्यतके शिकारमें शरीक था और हज़ारोंही आदमियों का सिर कटवाया। लेकिन सबसे बढ़कर पागलपनेका काम जो उसनेकिया वह यहथा कि दिल्ली उजाड़कर देवगढ़को दौलताबादकेनामसे अपनादारुस्सल्तनत यानीराजधानी बनानाचाहा॥क्या आफ़त गुज़रीहोगी दिल्ली वालों के दिलपर जब इस पागल बादशाहने हुक्मदिया कि जो आदमी हुक्म सुनतेही दिल्ली छोड़कर दौलताबाद न चला जायगा। बालबच्चों समेत क़त्ल कियाजायगा॥ निदान दौल-ताबाद तो न बसा लेकिन दिल्ली का शहर अलबत्ता वीरान हो गया॥ २७ बरसकी बादशाही के बाद ठट्ठे के पास बीमार पड़ कर मरा। और * यहांवालों का उसके ज़ुल्मसे गला छूटा॥ १३५१ई०

फ़ीरोज़ तुग़लक़

فیروز تغلق

मुहम्मद तुग़लक़के बाद फ़ीरोज़ तुग़लक़ उसका चचेराभाई तख़्तपर बैठा। सिंध गुजरात और बंगाले पर चढ़ाइयां कीं पर उनसे ऐसा कुछ फ़ाइदा हाथ न लगा॥ बुढ़ापेमें वज़ीरने चाहा १३८५ई० था कि उसका जी बड़ेबेटे नासिरुद्दीन मुहम्मदकी तरफ़से खट्टा करदे लेकिन बेटेने चालाकीकी किसी ढबसे महलों में जाकर अपने बापके पैरोंपर सिररखदिया। बापने वज़ीरको उसके हवा-ले किया और सल्तनतका काम भी सब उसीको सौंपदिया॥ लेकिन नासिरुद्दीनको सल्तनतकी अक़्ल न थी दोबरसभी नहीं गुज़रने पाये कि उसके दोभाइयोंने मिलकर बखेड़ा किया। नासिरुद्दीन सिरमौरके पहाड़ोंकी तरफ़ भागा॥

इस अर्से में फ़ीरोज़ तुग़लक़ नव्वे बरसका होकर दुनया से १३८८ई० सिधारा। † जिन लोगोंने बखेड़ा कियाथा उन्हीं लोगोंने उस के पोते ग़यासुद्दीन तुग़लक़को तख़्तपर बिठाया॥

---

* मरतेवक़्त उसने यह शेर कहेथे॥

بسیار درین جهان چمیدیم * بسیار نعیم نو دیدیم * اسپان بلند بر نشستیم * ترکان گران بها خریدیم * کردیم بسے نشاط و آخر * چون † قامت ماه نو خمیدیم *

† تاریخ وفات فیروز تغلق سنه ۷۹۰ هجری

फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ दिल्ली के बहुत नेकनाम बादशाहों में था कहतेहैं कि उसने ५० बंधबंधाये १५० पुल तय्यार कराये ४० मस्जिद और १०० सरायबनवायीं और तीसमदर्से और १००शिफ़ाख़ाने यानी अस्पताल मुक़र्ररकिये॥ सिवाय इसके उसने यहभी एकबड़ा कामकिया। कि जमनाकी नहर करनाल होकर हांसी हिसारकोलाया॥ उसकेपानीसे लाखोंबीघे ज़मीन सिंचती है। और हज़ारों आदमी की रोटी चलती हैं॥

غياث الدين تغلق ثاني

ग़यासुद्दीन तुग़लक़ (दूसरा)

ग़यासुद्दीनकी उन्हीं लोगोंसे तकरार हुई जिन्होंने उसे तख़्तपर बिठायाथा। और आख़िर पांचही महीने बाद उनके हाथसे मारागया॥ १३८९ई०

ابوبكر تغلق

अबूबकर तुग़लक़

१३९०ई०

यहभी फ़ीरोज़शाहका पोताथा। सालभर भी बादशाही न करने पाया कि नासिरुद्दीन ने पहाड़ों से निकलकर इसे क़ैद करलिया और तख़्तपर आप बैठा॥ लेकिन इन्तिज़ाम मुल्क का कुछ न बन पड़ा। इसके मरने पर इसका बड़ा बेटा हुमायूं तुग़लक़ सिकन्दर शाहके लक़बसे बादशाह हुआ॥ पर ४५ दिनके बाद जब वहभी मरगया। तो उसके छोटे बेटे महमूद तुग़लक़ने ताज सल्तनत का अपने सिरपर रक्खा॥ १३९४ई०

ناصر الدين محمد تغلق

नासिरुद्दीन महमूद तुग़लक़

बादशाह लड़काथा। गुजरात मालवा खानदेस बिल्कुल दिल्लीके तहतसे निकलगयाथा॥ जौनपुर वज़ीर दबाकर जुदा ही बादशाह बन बैठाथा मुल्कमें हरतरफ़ बखेड़ा पड़गया था॥ आपस में एक दूसरे से लड़ता था। दर्बारमें भी एका न था॥ कि इसी अर्से में समर्क़न्द के बादशाह अमीर तैमूरने जिसे

तिमरलंग और साहिबक़िरां औरगूरकां * भी कहते हैं औरजो उसी खानदान में था जिसमें चंगेज़खां हुआ तातारियों की फ़ौज लेकर हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की काबुलसे बन्नूहोता हुआ बेड़ोंके पुलपर सिन्धपार उतरा। और फिर तुलम्बा भटनेरऔर समानेको लूटता फूंकता क़त्ल करता दिल्ली के सामने आन पहुंचा॥ रास्ते से जिन बेचारों को पकड़ता लाया था। यहां इस बेरहम संगदिलने १५ बरस तक के लड़कों को गुलामीके लिये बचाकर एकलाख आदमियों का गला कटवाया॥

महमूद गुजरात की तरफ़ भागा। दिल्ली में तैमूरके नाम का खुतबा पढ़ागया॥ १३९८ई०

तैमूर तो इस फ़तहकी खुशियां मनाता था और बड़ाभारी जशन कररहाथा। औरउसकी फ़ौज को लूटमारसे कामथा॥ शहर में आग लगा दी थी शहरवाले क़त्ल होते थे। मुर्दोंके ढेर से अक्सर गलियों के रास्ते बन्द होगयेथे॥ जब लूटनेको कुछबाकी न रहा और उसकी फ़ौज भी घासकीतरहआदमियों की गर्दन काटते काटते थक गयी और लौंडी गुलाम बनाने को लोगों की बहू बेटियां और लड़के भी ख़ाहिश से ज़ियादा हाथ आगये तैमूरलंग पन्द्रह दिन दिल्लीमें रहकर मेरटक़त्ल करताहुआ औरहरिद्वार औरजम्बूहोताहुआ जिधरसेआयाथा उसीतरफ़को चलागया। हिन्दुस्तानमें अपने पीछे काल और मरी और हरएकबातकी बेबन्दोबस्ती छोड़ गया॥ हमारी समझमें तो चंगेज़खां और तैमूरलंग इन दोनों जल्लादकानाम दुन्याका दुश्मन रखना चाहिये। बल्कि इनको साक्षातईश्वर का कोप कहना चाहिये॥

तैमूर के जानेके पीछे थोड़े दिनोंतो दिल्ली उजाड़सीपड़ी रही आखिर महमूद गुजरातसेआया। औरफिर कुछदिननास

---

* گورگانی شخصے کہ نسبتش بسلاطین رسد و نسبت دامادی هم داشته باشد تاریخ ولادت تیمور مولد تیمور سنه ۷۳۶ هجری تاریخ وفات تیمور تیمورقاآن سنه ۸۰۷ هجری [illegible] تاریخین میں تیمور کو ترک لکھا ہے اس کے دادا پردادا چنگیز خان کے بیٹے جغتائی کے امیر الامرا تھے ۔

१४१२ई० دولت خان لودي की बादशाही करके इस जहान्से सिधारा॥ महमूदकेमरनेपर पन्दरह महीनेतक दौलतखां लोदीने डंकासल्तनतका अपने خضر خان سيد नाम से बजाया लेकिन खिज़्रखां सय्यद पंजाबके हाकिम ने इसे निकाल बाहर किया। और काम सल्तनतका तैमूर के नामसे अपने हाथमें लिया॥ सल्तनत काहे को थी। खाली नामको दिल्ली रहगयी थी॥ चारपुश्ततक सय्यदोंने हुकूमत سيد علاء الدين की चौथी पुश्तमें यानी सय्यदअलाउद्दीनके वक्तमेंदिल्लीकी अमल्दारी कुल छ कोसके घेरेमें आरही॥

बहलूलखां लोदी उसवक्त पंजाबका मालिक बनबैठायास-य्यदअलाउद्दीनने दिल्ली उसके हवालेकरदी। और आपबदा १४५०ई० ऊंकी राहली॥

بهلول لودي

बहलूल लोदी

बहलूलके तख़्तपर बैठने से पंजाबफिर दिल्लीके शामिल होगया। और छब्बीसबरसकी लड़ाईमें बहलूल ने जौनपुरभी फ़तह किया॥

१४८८ई० जबबहलूल मरा। तो दिल्ली की हद हिमालय से लेकर बनारस तक पहुंच गयी थी बल्कि जमना पार बुंदेलखण्डभी इसी के ताबे था॥

सिकन्दर लोदी

असली नाम इसका निज़ामखांथा। एकसुनारन से पैदा हुआथा॥ इसने अपने बाप बहलूल की सल्तनत और भी बढ़ायी बिहार फ़तहकिया मुल्कका किसीक़दर बंदोबस्तबांधा। आलिम फ़ाज़िलोंकी क़दर की लेकिन हिन्दुओंपर बड़ाज़ुल्म रवारक्खा॥ इनकी तीर्थयात्रा सबअपनी अमल्दारी भर में बंद करदीं। जो शहर क़िला हाथलगा मंदिर मूर्त्ति उस में की बिलकुलतोड़ डालीं। एक ब्राह्मण ने इतना ही कहा था कि हिंदू मुसल्मान दोनों का मत सच्चाहै इसी पर उसकी जान ली। मथुरामें हिन्दुओंकी हजामत तक बंदकरदी॥ तौभीयह बादशाह दिल्लीके अच्छे बादशाहोंमें गिनाजाताहै क्योंकिइसी

के वक़ में हुआ और फ़रंगियों का पहला जहाज़ यहां इसीके ज़माने में आया। अट्ठाईस बरस सल्तनत करके दुनया से सिधारा + ॥

इब्राहीम लोदी ॥

सिकन्दर के पीछे उसका बेटा इब्राहीम लोदी तख़्त पर बैठा लेकिन। इसमें अपने बापके से गुण न थे जल्दही अपने शक्की मिजाज और घमंड से सारे भाई बिरादर और सर्दारोंको नाराज़ कर दिया मुल्क में हरतरफ़ बखेड़ा उठने लगा॥ सूबेदार सर्कश होगये। बादशाहसे मुक़ाबला करने लगे॥ पंजाब केसूबेदार दौलतखां लोदी † ने अपनी मदद के लिये काबुल से बाबर को बुलाया। बाबर ने आतेही पहले तो लाहौर फूंका और फिर देवालपुर वालों को क़त्ल करता हुआ सरहिंद के सामने आनपहुंचा॥ इसअर्से में दौलतखां बिगड़कर पहाड़ों की तरफ़ भाग गया। इसी ख़याल से बाबर भी काबुल को लौट गया॥ लेकिन जल्दही बाबरने फिरअपने घोड़ेकी बाग

१५२४ई०

+ तारीख़ दाऊदी में लिखाहै कि सिकन्दर लोदी असर की नमाजकेबाद मुल्लालोगों के जल्से में जाता था और फिर कुरान पढ़ता था और तब मग़रिब की नमाज़ मस्जिद में पढ़कर वजीफ़े के बाद घंटे भर के लिये हरम सरा में जाताथा तमाम रात दीवानख़ासमें बैठकर सल्तनतका कामकरताथा सत्तरह अहलकार हमेशा हाज़िर रहतेथे आधी रात ढलनेपर खाना मांगता था अहलकार हाथधोकर सामने बैठजातेथे वहदंगलपर रहताथा और खाना एकनहीसी कुरसीपर चुनाजाताथा उन सत्तरहअहलकारोंके आगेभी रक्खा जाताथा लेकिन वह खाते नथे उठाकर घरले जातेथे सालारमसऊद ग़ाज़ी के झंडेका मेलाऔर मक़बरों में औरतोंका जाना मौक़ूफ़ करदिया था जो पाक़ी दारी की इल्लतमें क़ैद होते थे ईदपरसबको छोड़देता था जब किसी के लिये कुछमुक़र्रर होजाताथा फिरकभी उसमें कुछफ़र्क नहीं पड़नेपाताथा शेख़अब्दुल्‌ग़नी जौनपुर से गर्मियों में आया था इसलिये खाने के साथ छ पहाशर्बत उसके पासभेजागया फिरजबवहजाड़ोंमें आया तबभी छपहाशर्बत उसे पहुंचतारहा अमीरोंके सबलड़कों को हुक्मथा किकुछ कसबसीखें और कारख़ाने जारी करें॥

† कहतेहैं किपह दौलतखां लोदी उसी दौलतखां लोदी की औलाद में थाजो महमूद तुग़लकके मरनेपर कुछदिनों दिल्लीकाबादशाहबन बैठाथा॥

हिन्दुस्तान की तरफ़ मोड़ी लाहौर से पहाड़ों में दौलतखां को सर करता हुआ रोपड़की राह जब पानीपत में पहुंचा। तो वहां इब्राहीम लोदी को एक लाख सवार पियादे और हज़ार हाथी के साथ मुक़ाबले पर मुस्तइद पाया॥ बाबर के साथकुल बारह हज़ार आदमियों की जमअ़य्यतथी लेकिन फ़तह शिकस्त तो भगवान् के हाथ है इब्राहीम इक्कीसवीं अपरैल को पंदरह सोलहहज़ार आदमियों के साथ लड़ाईमें मारागया।[1]

१५२६ई० और दिल्ली आगरा बाबर के हाथ लगा॥

बाबर लिखता है कि उसरोज़सुबहसे तीसरे पहरतक लड़ाई होतीरही। इसअ़र्से में कईबारउसके तोपख़ानेसे बाढ़दगी॥वाह अबतो अंगरेज़ी गोलंदाज़ एक मिनटमें पांच फ़ैर करते हैं। गोले क्या ओले बरसाते हैं॥ बाबरको फ़तह उसके तीरंदाज़ोंके सबब सेमिली। लेकिन हमजानते हैं कि इब्राहीमके पास एकलाखसवार पियादे और एकहज़ारहाथी के बदले अगर आधीकम्पनी भी इंफ़िल्ड रफ़लवाले गोरोंकीहोती बाबरके बारह हज़ार तीरंदाजों के भगाने को काफ़ीथी॥

ظهيرالدين محمد بابر

ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर

बाबर तैमूरसे छठी पुश्तमें हुआ मा इसकी चंगेज़ख़ांकेबेटे चग़त्ताईख़ांके खानदानमें महमूदख़ां मुग़लकीबहनथी। बाबर की नौजवानी बड़ेलड़ाईझगड़ोंमेंकटी॥ और उसने ज़मानेके बड़ेहीऊंचनीच और फेरफार देखे कभी तोसमरक़न्द और बुखारे का बादशाहहोताथा। कभीपानीपीनेको एकलोटा भी पास न रहता॥ बापइसे बारहहीबरसका छोड़करमरगयाथा एक दफ़ा मुसीबतकीहालतमें इसनेइरादाकिया किफ़क़ीर होकर चीनको चलाजावे। लेकिन भगवान्को तोयहमंज़ूरथा किउसीकापोता हिन्दुस्तानका बड़ेसेबड़ा औरअच्छेसे अच्छाबादशाहहोवेऔर अंगरेज़ों के पहुंचनेतक उसी के घरानेमें यहांकी सल्तनतरहे॥

[1] नौ सै ऊपर था बत्तीसा। पानी पत में भारत दीसा॥
अठवां रजब बार सुकबारा। बाबरजीत बराहिमहारा॥

निदान बाईस बरसकी उम्रमें समर्कंदकी बादशाहीसे नाउमेद होकर बाबर हिमालय इसपार काबुलमें चला आया । काबुल उसके भाई भतीजों के पासथा लेकिन उनदिनों बेदखल सा होरहाथा बाबरको वहां की सल्तनत हासिलकरनेमें कुछ ऐसी दिक़त न पड़ी बाईस बरस काबुलकी बादशाहीकरके तब हिन्दुस्तानकी तरफ़ क़दम बढ़ाया ॥

दिल्ली आगरा हाथ आनेपर बाबरने खूबदिलखोलकरधन दौलत बांटा अपने बेटे हुमायूं को दोऊपर एकसौरत्ती का एक ऐसाहीरादिया किवैसा उसवक्त सारीदुन्यामें दूसरा न था और काबुलके मुल्कभरमें मर्द औरत बच्चे ग़ुलाम लौंडी समेत सबको एक २ शाहरुखी रुपया जो क़रीब अठन्नी के बराबर होता है भेजा ॥

थोड़ेही दिन बादशाहज़ादा हुमायूं कुछफ़ौजलेकर निकला और बयाना धौलपुर ग्वालियर वग़ैरः सबमुल्क जौनपुर समेतबाबर के ताबे करलिया ॥

चित्तौड़ यानी मेवाड़काराज इसवक्त अपनी पूरी औजपर था । सांगाराना गद्दीपर था ॥ अजमेर से लेकर भिल्साचंदेरीतक उसीका डंका बजता था । जयपुर जोधपुरवग़ैरःसबजगंहकेराजाओंका वह सिरताज और पेशवा गिनाजाताथा । बड़ी भीड़भाड़लेकर बाबरकेमुक़ाबलेको आया । जब बयानेसे आगे बढ़ा औरफ़तहपुर सीकरी के बराबर बादशाही हरावुलको शिकस्तदेकर पीछेहटाया बाबरके साथियोंकादिल सुस्तपड़गया॥ और इसीअर्सेमें काबुलसे एकनामी नजूमी यानी ज्योतिषीने आकर यह मशहूर करदिया किमंगल साम्हने है । बाबरकेफ़ौज की बर्बादी यक़ीनीहै ॥बाबरमंगलसे तो न डरा । लेकिनअपनी फ़ौज के बेदिलहोने से बहुत हिरासाहुआ ॥ मन्नत मानी कि अगर सांगापर फ़तहपाऊं । फिरकभी शराब न पीऊं औरदाढ़ी बढ़नेदूं ॥ बल्कि शराब पीनेके सोने चांदीके पियाले उसीवक्त मुहताजोंको बांटदिये औरअपने सिपाहियों से कहा कि यारो

बेइज्ज़तीकेसाथ पीठदिखलानेसे तो रनमें सामने होकर मरना बिहतर है सबने कुरानकी क़सम खायी कि मरजायेंगे पर पीठ न दिखायेंगे निदान बाबरने फ़तहपायीसांगा मुशकिलसे अपनी जानलेकरभागा। जबवह नजूमीबाबरकोफ़तहकी मुबारकबाद देने आया दूसरा कोई होता ज़रूर क़त्ल करता हमभी उसका मुंह काला किये बग़ैर हर्गिज़ न छोड़ते लेकिन बाबर ने उसे लानत मलामत के साथ बहुतसा धन देकर खाली इतनाकह दिया कि जा अब तू मेरेमुल्कसे निकल जा॥

१५२८ई० दूसरे साल बाबर मेदनीराय चंदेरीवालेपरचढ़ा। जबबाबरके सिपाही क़िलेमेंपहुंचे क़िलेवालोंने जिवहरकिया॥ पहलेअपनी औरतों को मारडाला। फ़िर आप सबके सबकोई बाबरके आदमियों से जूझके और कोई आपसमें एकदूसरेके हाथसे कटमरे अपनी इज्ज़त और धरमको बचाया॥

इसीसाल बाबरने अफ़ग़ानों से अवध और बिहार लिया। और रनथंभौर का क़िलाभी उसके हाथ आगया॥

१५३०ई० बाबर ५० बरसकी उम्रमें आगरेके दर्मियान दुन्यासे सिधारा। * उसके मरनेका सबबयों बतलाते हैं कि जबहुमायूंबहुत बीमारहुआ और हकीमों ने जवाबदिया बाबरने हुमायूंकेपलंग कीतीन फेरी देकर यहदुआ मांगी कि या खुदा तू इसकीजान बख्श और इसके बदले मुझेले और इसदुआका दोनोंके दिल पर ऐसा असरहुआ कि हुमायूं तो उसीदमसे अच्छा होनेलगा और बाबरबीमार पड़ा॥ इसकी क़बर इस के कहने मुताबिक़ काबुलमें एक बहुत सुंदर सुहावनी जगह में बनी है वहांभीउस से बढ़कर बिहतर कोई दूसरी जगह लाइक़ सैरके नहीं है॥

बाबर बेशक एशियाके अच्छे बादशाहोंमेंथा। अच्छाक्यायह तोकोई अजीब बुज़ुर्गहो गुज़रा॥ सज़ा कड़ी देताथा। परवेसबब कभी किसीको नहीं सताताथा॥ अपना साराहाल अपनेहाथ से एकतुर्की किताब में लिखगयाहै। लाइक़ देखनेके है वहलिख

* تاریخ وفات بابر بهشت روزی باد سنه ۹۳۷ هجری

ताहै कि ऐसा सुख मैंने उम्रभर नहींपाया । जैसा कुछदिनसम॰ क़ंद छोड़ने पर मिला ॥ किजब मुझको फ़िक्र और तरद्दुद में डालनेके लियेकोईभी सल्तनत मेरे पास न थी पेटभरकर मैंने उन्हीं दिनोंमेंखाया । और गहरी नींदकाभीमज़ामैंने उन्हींदि॰ नोंमेंपाया ॥ दुखऔरसुख तबीअतपर मौकूफ़ है यहउसीकीतबी॰ अतथी कि जिन हालतों में आदमी को जानकी फ़िक्रपड़ती है वहअपनी किताबमें जंगल और पहाड़के फलफूलों का हाल और जो खुशियां उसे उनके देखनेसे हासिलहोतीथीं लिखता है यहउसीका कामथा किबादशाह होनेपरभी लड़कपनके यार दोस्त औरसंगी साथियोंकीयादमें घड़ियोंरोयाकरता । बीमारी सेथोड़ेहीदिन पहले कालपीसेआगरे १६० मीलदोदिनमें घोड़े पर चलागया औरगंगाजमनातो तैरकर कईबारपार उतराथा ॥

हुमायूं

همایون

हुमायूं तख्त पर बैठा । उसका एकभाई कामरां पहले से काबुलकंदहारका नाज़िमथा बाक़ी हिंदाल औरमिर्ज़ाअस्करी इनदोभाइयोंको हुमायूंने संभलऔरमेवातका नाज़िमबनाया ॥ हुमायूंमें कोईऐसाऐब न था किहमउसको किसीबातका इल्ज़ा॰ मदें आखिरबाबरका बेटाथा । लेकिन वह ऐसे थोड़े दिनके हासिल कियेहुएमुल्कको दुश्मनों से बचाने और झटपट जोड़ तोड़लगाकर और क़ाबू निकालकर इंतिज़ाम करनेके वास्ते न था । आराम और इतमीनानके साथ सल्तनत बख़ूबी करस॰ कता । इसीलिये जबदुश्मनोंने सिरउठाया उनके दबानेमें इस ने ऐसी बेमौक़ा देरकी और उन्हें फुर्सत दी कि बेज़ोर पकड़ गये सबसेज़बर्दस्त इसका दुश्मन शेरखांथा ॥ उसकानामफ़रस॰ नखांपठान सहसरामसें ५०० घोड़ोंका जागीरदारथा । लेकिन सल्तनतोंके फेरफार में यहशेरखां ऐसाबढ़ा कि बिहार और बं॰ गालादबाकर उसनेहुमायूंके मुक़ाबिलेका सामानकिया ॥ जब हुमायूंतख्त परबैठा चनारका क़िला शेरखांके क़ब्ज़े में था । हुमायूंपहलेतो कालिंजर औरजौनपुरमें दुश्मनोंसे लड़ताभि॰

ड़ता गुजरातके बादशाहबहादुरशाहको शिकस्तदेता औरउस के मुल्कमें दख़लकरता खंभाततक चला गया था लेकिनजब ख़बर शेरख़ांके सर्कशी की सुनी गुजरात छोड़कर मुंह पूरबकी तरफ़ फेरा॥ कहतेहैं कि गुजरात में चंपानेरका क़िला दीवार की तरह एक खड़े पहाड़ पर बनाहै हुमायूं ३०० चुने हुए सिपाहियों को लेकर रात के वक़ लोहे की मेख़ों पर जोपहाड़ में गाड़दी थीं पैर रखता हुआ ऊपर पहुंच गया। और दुश्मनों से उसे ख़ाली करवा लिया॥ ख़ज़ाना बहादुरशाह का सिर्फ़ एकही आदमी को मालूम था। उस ने बतलाने में इन्कार किया॥ लोगोंने चाहा कि उसपर सख्ती करें। और तकलीफ़दें॥ लेकिन हुमायूं ने यहबात पसन्द न की और सलाह दी कि इसे राज़ीकरो। और ख़ूब शराब पिलाओ॥ जबवह नशेमें आया। तो उसीदम जहां ख़ज़ाना गड़ाथाबतलादिया॥

१५३५ई०

निदान चनार तक तो हुमायूं अपनी अमल्दारी में चला आया। लेकिन चनार का क़िला लेने में कई महीने का अर्सा लगा॥ शेरख़ां ने इस वक़ मुक़ाबिला मुनासिब न समझा। अपने बालबच्चों को ख़ज़ाने समेत रोहतास* के क़िले में भेज कर क़ाबूका मुंतज़िर रहा॥ हुमायूं को बंगाले की राजधानी गौड़ तक चला जाना सहल हुआ। लेकिन जब बरसात आयी नदी नाले सबभरगये हुमायूं के लश्कर में बीमारी फैली बहुतेरेआदमी बेइत्तिला और बेपरवानगी नौकरी छोड़ छोड़ कर आगरे को जाने लगे शेरख़ां शेर की तरह मांद में से निकला

* शेरख़ांने यह क़िला बड़ी हिक्मतसे लिया वहां के राजा हरकृष्ण से कहलाभेजा कि मैं मुहिम्मपर जाताहूं अपने बालबच्चे और ख़ज़ाना तुम्हारे पास भेज देताहूं राजा निहायत खुशहुआ शेरख़ां ने पांचसौ चुनेहुएजवान तो डोलियों में औरतों की जगह बिठलाकर और पांचसौ जवानों के सिर पररुपये अशरफ़ी के नामसे पैसों के तोड़े रखकर रवाना किया औरआप अपनी फ़ौज समेत घातमें रहा जबइन्हों ने क़िले में पहुंचकर दर्वाज़ों पर क़ब्ज़ाकिया शेरख़ांने जाकर क़िला लेलिया राजा खिड़कीकीराहभागगया॥

और बिहार बनारस चनार लेताहुआ जौनपुर जावेरा॥ हुमायूं को फ़िक्र आगरे पहुंचने की पड़ी। बकसर से इधर आकर शेरखां से जो अब शेरशाह बनगया था शिकस्त खायी॥ हुमायूं ने घोड़ा गंगा में डाला। घोड़ा पार पहुंचने से पहले थक कर डूब गया॥ हुमायूं भी डूबने ही पर था। लेकिन निज़ाम नाम एक सक्का यानी भिश्ती मशक पर सवार उसके पास पहुंच गया॥ इस लिये जान बच गयी। फ़ौज बिल्कुल ग़ारतहुई॥ १५३९ई०
इमादुस्सआदत में यों लिखाहै। कि इस सक्केने अपनी खिद-मतके इन्आम में आधे दिन की सल्तनत मांगी और जब हुमायूं ने उसकी ख़ाहिश पूरी की उसने आधे ही दिन में च-मड़े का सिक्का चला दिया कि उसका चर्चा आज तक चला जाता है॥

आगरे पहुंचकर हुमायूं ने फिर लड़ाई की तय्यारी की इस अर्सेमें शेरशाह भी क़न्नौजके सामने पहुंच गयाथा हुमायूं ने पार उतरकर मुक़ाबला किया लेकिन फिर शिकस्त खायी॥ १५४०ई०
इस बार हाथी गंगा में डाला। करारा इस पार बहुत ऊंचा था हाथी समेत हुमायूं के डूबने में कुछ बाक़ी न रहा था॥ पर दो सिपाहियोंने अपनी पगड़ी जोड़कर उसका एक सिरा करारे पर से हुमायूं की तरफ़ फेंक दिया। उसे थाम कर वह किसी तरह ऊपर चढ़ आया॥ थोड़ीदूर चलकर हिंदाल और अस्करी उसके दोनों भाई भी कुछ बची हुई फ़ौज लेकर शामिल हो-गये। डर ज़मींदारों के हाथ से लुटजानेका था बड़ी मुशकिल से आगरे पहुंचे आगरे में भी अब ठहरना मस्लहत न जाना झट पट घरबार के लोगोंको लेके लाहौर में कामरांकेपास चल दिये॥ कामरां ने भाइयों के लिये शेरशाह से वैर बिसाहना मुनासिब न समझा। हुमायूं ने जब कामरां का रुख़ अपनी तरफ़ न पाया मुंह सिंध की तरफ़ किया॥ सिंध में भी हुमायूं से कुछ न बन पड़ा। ख़ाली हैरान परेशान इधर उधर घूमता रहा॥ जो उपाय मुल्क लेने का किया। बेफ़ाइदाहुआ॥ सिंध

में हुमायूं ने बड़ी बड़ी मुसीबत और सख़्तियां उठाईं। रेगि-स्तान में पानी बिना प्यास के मारे उस के साथियों मेंसे बहु-तेरों ने जानदी॥ क्या महिमाहै सर्व शक्तिमान् जगदीश्वरकी कि इसी आफ़त और तकलीफ़ में १४ अकतूबर को अक्बर से बादशाहका जन्महुआ। कि जिससे बढ़कर और नेकतर आज-

१५४२ई० तक कोई मुसल्मान हिंदुस्तान के तख़्तपर नहीं बैठा॥

कहते हैं कि हुमायूं हिन्दुस्तान में आने से पहले एक दिन अपनी सौतेली मा यानी हिंदालकी मा के महलमें खाने को गयाथा। वहां हिंदालके उस्ताद एकसय्यदकी कुमारी लड़की हमीदा ऐसी खूबसूरत देखी कि रहा न जा सका उसीदम उस के साथ निकाह करलिया॥ अब जिसदिन अमरकोट से कूच हुआ उसी के दूसरे दिन वह अक्बर जनी हुमायूं के पास उस वक़ सिवाय एकमुश्कनाफ़े के और कुछभी देनेकोमौजूद न था उसी को काटकर चुटकी चुटकी मुश्क यानी कस्तूरी बेटा होने की खुशी में यह कहकर सबको बांटा॥ कि जैसा यह मुश्क खुशबू दे। उसी तरह अक्बर की तारीफ़ और नेकनामी भी सब तरफ़ फैले॥

उस वक़ हुमायूं पर जो आफ़त और मुसीबत थी इसीएक बात से समझलेनी चाहिये कि हुमायूंने अपनी बेगम हमीदा की सवारी के वास्ते किसी उहदेदारसे एकघोड़ा जो उसकेपास खाली था मंगनी ले लिया था लेकिन जब उस उहदेदार का घोड़ा थका तो उसने उसी दम हमीदा को उतरवा दिया। और अपना घोड़ा लेलिया॥ हुमायूं ने अपना हमीदा को दिया। और आप पैदल हुआ॥ कुछ दूर चलकर बोझे का ऊंटमिला। नाचार उसी के ऊपर बैठ लिया॥

निदान जब सिन्ध में किसी बात की कुछ उम्मेद न पायी और दुश्मन वहां भी सताने लगे तीन बरस खराबखस्ता

१५४३ई० होकर हुमायूं ने इरादा क़न्दहार का किया। क़न्दहार में उस वक़ अस्करी कामरां की तरफ़ से था॥ लेकिन जब क़न्दहार

१३० मील रह गया एकसवार ने दौड़कर खबर दी। कि अस्करी फ़ौज लेकर गिरफ्तार करने के लिये आता है हुमायूं को अक्बरके उठाने की भी फ़ुर्सत न मिली ॥ हमीदा को लेकर गर्मसेर और सीस्तान होता हुआ ईरान की अमलदारी में चला गया। थोड़ी ही देर बाद अस्करी पहुँचा लेकिन हुमायूं को न पाया ॥ तब दोस्ती की बातें जाहिर करने लगा। और अक्बर को बड़ी मुहब्बत से क़न्दहार लेगया ॥ ईरानके तख्त पर उस वक्त तहमास्पशाह सफ़वी था हुमायूं की बड़ी खातिर्दारी की। और मुलाक़ात के वक्त सब बात में बराबर की इज्जत दी ॥ लेकिन अपना शीआ मज़हब कबूल कराने को सामदाम दण्ड भेद सब कुछ दिखलाया। हुमायूं को यह बहुत बुरा लगा ॥ पर इलाज कुछ न था। मुन्तख़- बुत्तवारीख़ वाला तो लिखता है कि हुमायूं ने जाहिरा उस मजहब को क़बूल कर लिया था और नमाज़ भी उसी तौर पर पढ़ता था ॥ लेकिन हम इतना ही कहसकते हैं कि वह शेख़ सफ़ीयुद्दीन की जिसे शाहसफ़ी भी कहते हैं दर्गाह की ज़ियारत को अर्दबील बेशक गयाथा। और यह काम पक्के सुन्नियों के तरीक़से अलबत्ता बर्खिलाफ़ था ॥

निदान तहमास्पशाहने क़न्दहार मिलनेके वादेपर १४००० सवार अपने लड़के मुराद मिर्जाके साथ हुमायूंकी मदद को दिये क़न्दहार में उस वक्त कामरां की तरफ़ से मिर्जा अस्करी हाकिमथा। पांच महीने घिरेरहनेके बाद बेक़ाबू होकर हुमायूं के पास हाज़िर होगया ॥ हुमायूंने पहले तो बड़ी खातिर्दारी की लेकिन फिर किसी पुराने क़सूर के बहाने से उसके पांवमें बेड़ी डालकर क़ैद करादिया। क़िला क़न्दहार का और जोकुछ उसमें खज़ाना था सब ईरानियों के हवाले किया ॥ लेकिन जब बहुत से ईरानी अपने मुल्क को लौटगये और मुराद मिर्जा भी मरगया हुमायूं धोखा देकर क़िले में घुसा। और बहुतेरे ईरानियों को क़तल करके बाक़ीको बाहर निकालदिया

१५४५ई०

वे बेचारे ईरान चले गये क़न्दहार हुमायूं के क़ब्ज़े में रहा ॥ अबुल्फ़ज़ल* हुमायूं को इस दग़ाबाज़ीकी बदनामी से बचाने के लिये लिखताहै कि ईरानी क़न्दहार में जुल्म करतेथेलेकिन उसको शर्म नहींआती किजब मददकी कीमतमें क़न्दहारई-रानियों को देदियाथा । तोफिर उनके जुल्म औरइंसाफ़सेहुमा-यूंको क्यामतलबथा ॥

क़न्दहार लेनेके बाद हुमायूंने काबुलपर चढ़ाईकी रास्तेमें हिंदाल भी आमिला । कामरां सिंधकी तरफ़ भागा ॥ हुमायूं ने अक्बरको कि अब दोढाई बरसका होगयाथा छातीसेलगा-या लेकिनजबहुमायूं बदख़्शां सरकरनेकोगयाकामरांनेफिरका-बुललेलिया काबुलकेसाथ अक्बरभी उसके हाथआया । जब हुमायूंने लौटकर काबुलघेरा औरगोलाचलानाशुरूकिया । तो कहतेहैं किकामरांने अक्बरको भालेसे बांधकर क़िलेकीदीवार पर खड़ाकरदिया ॥ लेकिन कहावतमशहूरहै किमारनेवालेसे बचानेवाला ज़बर्दस्तहै अक्बरको कुछभी आंचनपहुंचीकामरां १५४७ई० को फिरभागनापड़ा । दूसरेसाल थककर हुमायूं के पास चला आया । हुमायूंने इस वक़्त बड़ी हिम्मत दिखलायी । मिर्ज़ा अस्करीको भी कैद से छोड़दिया चारों भाइयों ने साथबैठकर १५४९ई० नमक खाया और इस मेलमिलापकी बड़ीखुशी मनायी ।

लेकिन जब हुमायूं बदख़्शांकी तरफ़ गया । कामरांने बिगड़ कर फिरकाबुल पर क़ब्ज़ा किया और अक्बर तीसरीदफ़ाउस के हाथपड़ा ॥ जबहुमायूंलौटा । कामरांलड़ाईमें शिकस्तखा-करहिंदुस्तानकीतरफ़ भागा ॥ पर गक्करोंके† सर्दारने उसकेसाथ १५५२ई० दग़ाकी पकड़करहुमायूंके हवाले करदिया । दोदिनतोहुमायूंने कामरांकी बड़ी खातिर्दारीकी लेकिन तीसरेदिन उसे अंधाकर-नेका हुक्मदिया ॥ जहांतक उसकी आंखमें नश्तर लगायेगये

---

* अक्बर का वज़ीर था ॥

† गक्कर वेहीहैं जिन्हें संस्कृतमें केकय कहतेहैं और अब कश्मीरकी अमल-दारीमें कक्काके नामसे आमिलेहैं ॥

वह कुछ नहीं बोला लेकिन जब नमक डालकर नींबू निचोड़ा गया चिल्लाउठा ए खुदावन्द करीम जोकुछमैंने गुनाहकिये थे पूरी सज़ा पाचुका अब आक़िबत में मुझपर रहमकर कामरां अंधाहोकर मक्केको चला गया। और हुमायूं काबुल क़ंदहार की बेखटके हुकूमत करने लगा॥

शेरशाह सूर

شیرشاه

१५४०ई० हुमायूं के भागने पर इस मुल्क का बादशाह शेरशाह हुआ। कामरां के काबुल चले जाने पर पंजाब भी जा द-बाया॥ और झेलम पार एक पहाड़ी पर रोहतास उसी नाम का और वैसाही मज़बूत एक क़िला बनाया। कि जैसा उस की जनमभूम बिहार में था॥

१५४२ई० मालवा फ़तह होने पर इसने रायसैन के क़िले वालों के साथ बड़ी बेईमानी की उन्हें जानकी अमान देकर क़िले से बाहर निकाला। लेकिन फिर मौलवियों से फ़तवालेकर सबको कटवा डाला॥ फल इस बेईमानी का शेरशाह को इसी दुन्या में मिलगया। यानी जब इस ने कालिंजर का क़िला घेरा और क़िले वालोंको जान की अमानके वादे पर क़िलाख़ाली कर देने का पयाम भेजा उन्होंने यही जवाब दिया कि तू ने रायसैनवालों से भी तो ऐसाही वादा किया था अब तेरी बातका इतबार नहीं रहा॥ और फिर खिझकर ऐसा गोला मारना शुरू किया कि शेरशाह का मेगज़ीन उड़गया। और उसकी आग से ऐसा झुलसा कि उसीदिन निहायत तक्लीफ़ के साथ दुन्या से सिधारा ॥

१५४५ई० शेरशाह यहां के अच्छे और अक़्लमन्द बादशाहों में गिना जाता है जमाने मुताबिक़ मुल्क का इन्तिजाम भी खूब किया था। और बंगाले से पंजाब तक ऊंची सड़क बनवाकर मंजिल मंजिल पर सराय और कोस कोस पर कुआ खुदवा

दिया था॥ कहते हैं कि सरायों में ग़रीबों को खाना मिलने का भी बन्दोबस्त किया गया था हिन्दू के लिये हिन्दू और मुसल्मान के लिये मुसल्मान नौकर मुक़र्रर थे। और सड़क पर दुतरफ़ा दरख़्त भी लगाये गये थे *॥

सलीमशाह सूर †

سلیم شاہ سور

शेरशाहकेबाद नवबरसतक उसकेबेटेसलीमशाहने जिसका असलीनाम जलालख़ां था बादशाहीकी इसेभी इसकेबापकी तरह नेकनाम बतलाते हैं। दिल्लीमें सलीमगढ़ इसीका बनाया अबतक मौजूदहै हुमायूंके ख़ानदानवाले उसेनूरगढ़कहते हैं॥

جلال خان

मुहम्मदशाह अदली॥

محمود شاہ عدلی

सलीमशाहके मरनेपर उसकाचचेराभाई मुबारिज़ख़ां उसकेबेटेको जोकुल बारहबरसकाथा मारकर मुहम्मदशाह आदिल के लक़बसे तख़्तपरबैठा। यह बड़ा नादान और बदकार था॥ सल्तनतका बिल्कुल काम हेमूनाम एक बनियेको सुपुर्दकर दियाथा। ख़ज़ानाजल्दही खालीहोगयासर्दारोंकी जागीरेंज़ब्त करनेलगा॥ लोगनिहायत नाखुश और बेदिलहोगये। अदली यानी आदिलकेबदले उसेअंधली यानीअंधापुकारनेलगे॥ मुल्कमें हरतरफ़ बलवाहोगया। जहांजोथा मालिक बनबैठा॥ उसीके खानदानके एकआदमी इबराहीम सूरने दिल्ली आगरा लेलिया। दूसरे आदमी सिकंदरसूरने पंजाबमें अपने नामका डंकाबजाया॥ मुहम्मदशाह पूरबकोचला। लेकिन पूरबमें भी तीसरे आदमी मुहम्मदसूरने बंगाला अपने क़ब्ज़ेमें करलिया॥

१५५२ई०

१५५४ई०

हुमायूं की दूसरी सल्तनत

हुमायूंको यहमौक़ा फिर हिंदुस्तानमें आनेका बहुतअच्छा मिला। १५००० सवार लेकर सिंधु नदी पार उतरा पहले लाहौर लिया और फिर सरहिंदमें सिकंदरसूरको शिकस्तदेकर

१५५५ई०

---

* तारीख शेरशाही में लिखा है कि इसके बावर्चीखाने का खर्च पांचसौ अशरफ़ी रोज़था हज़ारों सवार सिपाही किसान कंगालों को सदा उसके बावर्चीख़ाने से खाने को मिला करताथा॥

† [illegible] इसलामशाहथा॥

दिल्लीआगरे में क़ब्ज़ा किया॥ लेकिन मौतने उसे ज़ियादा दिन इसद्वारा हिन्दुस्तानकी सल्तनतमिलनेकासुख न भोगनेदिया। दिल्ली लेनेसेछही महीनेके अंदर पैरफिसलनेकेसबब सीढ़ीसे गिरकर उनचास बरसकी उमरमें इस दुनियासे कूच करगया *॥

अबुल मुज़फ़्फ़र जलालुद्दीन मुहम्मद अकबरशाह †

ابوالمظفر جلال الدین محمد اکبر شاہ

बादशाह अकबर उस वक़्त कुल तेरहबरस चारमहीनेका लड़काथा। लेकिनहोशियारी और जवांमर्दीमें बड़ेबड़ेजवानों के कान काटताथा॥ बैरमखां ‡ खानखानां जो हुमायूंकाबड़ा मातबर सर्दारथा। सल्तनतका काम अंजाम देनेलगा अकबर ने उसे खांबाबाका खिताब दिया॥

बैरम अकबरके साथपंजाबमें सिकंदरसूरको क़ाबूमें लानेकी फ़िक्र कररहाथा। लेकिन जबखबरसुनी कि हेमू+बनियामुहम्मदशाहअदलीका वज़ीरमुहम्मदसूरको मारकरऔरआगरेदिल्लीको अपने क़ब्ज़ेमें लाकर तीसहज़ार फ़ौजकेसाथलाहौर कीतरफ़ बढ़ाआताहै तुर्तपानीपतके मैदानमें लड़ाईकेदर्मियान उसे जीतकर क़ैद करलिया॥ बैरमने चाहा कि अकबर अपनी तलवार उसके खूनसेलालकरे और ग़ाज़ी कहलावे लेकिन अकबर दावा मर्दुमीका रखताथा। बोला कि घायल क़ैदीपर तो मैं हर्गिज़ हाथ नहीं उठाऊंगा॥ तबबैरमने गुस्सेमें आकर नाचार अपने हाथ से उसका सिर काटडाला। दिल्ली आगरा फिर अकबर के क़ब्ज़े में आया॥

बैरम बड़े दबदबे का आदमी था यह खाली इसकी हिम्मत और मुस्तैदी थी। कि सल्तनत तैमूरके घरानेमेंरही॥ लेकिन अपने आगे किसी दूसरेको कुछचीज़नहीं समझताथा दुश्मन

---

* تاریخ وفات ھمایون ع ھمایون پادشاہ از بام افتاد سنہ ۹۶۳ ھجری

† تاریخ جلوس اکبر ع جلوس خداوند عالم پناہ سنہ ۹۶۳ ھجری

‡ असलीनाम बैरामखां है तुर्की में बैराम ईदको कहते हैं

\+ रिवाड़ी का रहनेवाला दूसर बनियाथा॥

दर्बारमें बढ़गये। जब बाहरके लड़ाईझगड़ोंका ऐसा खौफ़बाक़ी न रहा बादशाह के कान भरनेलगे॥ बादशाह भी अब जवान होताचलाथा। बिल्कुल बैरमके हाथमें रहना पसंद नहींकरता था॥ और बैरमने शेख़ीमें आकर दोचारकामभी ऐसेकिये। कि वह बादशाहको बहुतबुरे मालूमहुये॥ निदान अकबर शिकार के बहाने बैरमके क़ाबूसे निकलकर दिल्ली चलागया और एक इश्तिहार जारीकिया। कि अब सल्तनतका काम मैंने अपने हाथमेंलिया॥ सिवाय मेरे हुक्म के कोई किसी दूसरेका हुक्म न माने तब तो बैरमकी आंखें खुलीं मक्के चलेजाने का इरादा किया लेकिन गुजरातकेपास पहुंचकर दिल बदलगया। कुछ सिपाही जमाकरके पंजाबपर चढ़दौड़ा॥ और जब बादशाही फ़ौजने उसेशिकस्तदी। तो अकबरसे अपने क़सूरकी मुआफ़ी चाही॥ आकर पैरोंपर गिरपड़ा। और रोनेलगा॥ अकबरने उसे अपने हाथसे उठाया। और दाहनी तरफ़ बैठाया॥ और कहा कि चाहो कोई सूबालोचाहो पहलेदर्जेके सर्दारहोकर दर्बारमेंरहो चाहो मनमानती पिंशनलेकर मक्केकोजाओ॥ बैरमकी ग़ैरतने हिंदुस्तान का रहना क़बूल न किया। मक्केजाने की इजाज़त मांगी लेकिन गुजरात पहुंचकर एक पठान के हाथसे जिसके बापको उसने किसी लड़ाई में माराथा मारागया॥

१५६०ई०

अकबरने जो इस अठारह बरसकी नौजवानी में सारी सल्तनतका बोझ अपने सिरपर उठाया। लोगोंको उसकी ताक़त से बिल्कुल बाहर मालूमहोगा॥ लेकिन याद रखनाचाहिये कि कैसी आफ़त में तो उसका जन्महुआ। और कैसी क़ैदमें वह पालागया॥ अपने बापकेसाथ लड़ाइयों में रहकर वह दिलेर क्योंकर न होता। और बैरमसे सख़्तमिज़ाज आदमी के तहत में रहकर वह हरदम होशियाररहना क्योंकर न सीखता॥ बदन उसका बहुत सुडौल और ज़ोर और फ़ुर्ती से भराहुआथा। रंग गोराथा॥ बातें उसकी दिलको लुभातीथीं। दिल्लगियांभीउस की हाथी घोड़ों के फेरने और शेरों के शिकार करने में थीं॥

लेकिन उसने अपनी नेकनामी की उमेद ऐसीलड़ाइयोंकेजी, तने पर नहीं बांधी। जैसी अपनी रअय्यतके सुख चैन देनेसे रखी॥

गज़नी और ग़ोरवाले बादशाहतो पास होनेके सबब अपने मुल्क वालों से भी मददले सकतेथे। लेकिन तैमूर के खान-दान वाले तबतक यहां निरे परदेसीथे॥ अकबर अपनीआंखों से देख चुका था। कि यहां वालों ने कैसा झटपट उसके बाप को निकाल दिया॥ निदान अकबरने अपनी नेकमिज़ाजीसे यह पक्का मंसूबा बांधा कि न तो मज़हब का कुछ ख़यालकरे। और न रंग और क़ौम का जो लोग इस देशमें बसतेहैं सबको दिल जान से अपना कर ले॥ उसके वक़्तमें मुसल्मान और हिंदू दोनों को अपनी अपनी लियाक़त बमूजिब बड़े से बड़े उहदे मिलतेरहे। और यही सबब था कि तमाम आदमी बाप से भी ज़ियादह उसे चाहनेलगे॥

बैरम के रहते ही अकबर का अमल पूरब में जौनपुर तक पहुंच गया था और ग्वालियर और अजमेरका क़िलाभीहाथ आगया था॥

मालवा अबतक पठान बादशाहोंके सूबेदार बाज़बहादुरके क़ब्ज़े में था अकबर ने आदमखांको कुछफ़ौजके साथ उधर रवाना किया॥ बाज़बहादुर जब शिकस्त खाके भागा उसकी औरत जिसेलोग पद्मिनी कहतेहैं आदमखांके हाथपड़गयी। उसने उसे अपने महलों में दाखिल करना चाहा लेकिन वह बिचारी इस खबरके सुनतेही ज़हर खाकर सो रही। मालवा १५६१ ई० में बिल्कुलफ़तहहोगया। औरबाज़बहादुर अकबर १५६१ई० केअमीरोंमें दाखिलहुआ॥

अकबर ने आमेर यानी जयपुर के राजा की बेटीब्याही थी इस लिये वह और उसका बेटा भगवान्दास × औरभग-

× भगवान्दास की बेटी सलीम को ब्याहीथी अकबरआप बरातकेसाथ भगवान्दासके मकानपरगया था औरवहां हिन्दुओंके दस्तूरमुताबिक आग के

वान्दास का भतीजा और पुष्यपुत्र मानसिंह सदा अक्बर के तरफ़दार रहे जोधपुरके राजा की लड़की से भी अक्बर ने ब्याह किया था। जब तक मालदेव गद्दीपररहा कुछ सर्कशी सी करतारहा लेकिन उसके पीछे उसकाबेटा अक्बरकी खिद्मत में हाज़िर होगया॥ चित्तौड़ यानी उदयपुर के रानापर अक्बर ने चढ़ाई की रानाउदयसिंहजीका बोदाथा। क़िलाछोड़ कर जंगल पहाड़ों में जाघुसा॥ लेकिन जयमल क़िलेदारने अक्बरका खूब मुक़ाबिलाकिया। आखिर एकदिनरातको जयमल मशालके उजालेसे बुर्जोंकी मरम्मत करारहाथा अक्बरने जो क़िला घेरेहुयेपड़ाथा पहचानलिया॥ तक्कर ऐसानिशाना मारा। कि जयमलउसी जगह लोटगया॥ ऐसे बहादुर क़िलेदारके मारेजानेसे रानाकीफ़ौज बिल्कुलबेदिल होगयी औरतों को जोक़िलेमेंथीं जयमलकी लाशकेसाथ चितापरबिठलाकर जलादिया औरआप तलवारें सूतकर औरकेसरिये बागे पहन कर क़िलेसे बाहर निकलआये। कहतेहैं किउसवक्त कमसेकम आठहज़ार आदमी मुसल्मानोंकेहाथसेक़तलहुये। जीताएकभी नबचा*हां कुछथोड़ेसेआदमी अपनेलड़के औरअपनीऔरतों को क़ैदियोंकी तरह बांधबांधकर बादशाही फौजके बीचसेहोते हुये अलबत्तानिकलगये। बादशाही फौजवालोंने यहजानाकि हमारेहीआदमी क़िलेवालोंके बालबच्चे पकड़ेलिये आतेहैं इस लिये कुछनबोले॥ रानाचित्तौड़ टूटजानेपर भी जंगल पहाड़ों में घुसारहा। नव बरस पीछे उसके बेटेऔर जानशीन राना प्रतापको वहजंगल पहाड़भी छोड़कर सिन्ध कीतरफ़ भागना

गिर्द फेरी फिरकर ब्याहहुआ था बहूके डोलेपर रुपये अशरफियां लुटाता आया भगवान्दास ने सौहाथी कई तबेले घोड़ेबहुतेरेलौंडी गुलाम सोने चांदी जवाहिरके असबाब हथियार बरतन दहेज में दिये अमीरोंको जोबराती थे इराक़ी तुरक़ी ताजी सोनेचांदी के साज़ समेत घोड़ेदिये॥

* टाड साहब अपनी किताब में लिखते हैं कि मुर्दों के जनेऊ साढ़ेचौहत्तरमनतोलेगये थे चिट्ठियोंपर अबतक वहीतलाक़ लिखाजाताहै लेकिनमन्नारसेरकाथा॥

पड़ा॥ पर जो उसने हिम्मत की ॥ तो भगवान्की तरफ़ से उसे मदद पहुँची॥ अकबर के मरने से पहलेही उसने अपना बहुतसा मुल्क फिर अपने क़ब्ज़े में कर लिया। और अपने बाप के नाम पर उदयपुरका शहर बसाया॥

गुजरात जो मुद्दतसे जुदा बादशाहों के क़ब्ज़ेमें चलाआता था सन् १५७३ ई० में अकबरकेहाथआया। और सन् १५७६ ई० में बंगाला और बिहारभी फ़तह होगया॥ पठान बादशाह जो वहां ढाई चावलकी जुदा खिचड़ीपकातेथे। अब नाम निशान कोभी बाक़ी न रहे॥ १५७३ई० १५७६ई०

कश्मीर चौदहवींसदीके शुरूसे मुसल्मानोंके क़ब्ज़ेमेंचला आताथा हिन्दुओंकाराजबिल्कुलनाशहोगयाथा सन् १५८६ई० में अकबरने उसे हिन्दुस्तान की सल्तनत में मिलाया। इसी साल राजा बीरबल जो अकबरका नामी मुसाहिब था सिंधपार यूसुफ़ज़ाइयोंकी लड़ाईमें मारागया॥ १५८६ई०

सन् १५९२ ई० में सिन्धके हाकिम ने जो अबतक खुद-मुख्तार रहाथा ज़ेरहोकर अकबरकीइताअत क़बूलकी। और वह भी मीरास इस बादशाहके इख्तियार से बाहर न रही॥ कहते हैं कि यह सिंध का हाकिम लड़ाईके लिये पुर्तगीज़ सिपाही भी साथ लाया था। और दो सौ हिन्दुस्तानियों को अंगरेज़ी जामा पहनायाथा॥ यानी गोरे और तिलंगे * उसकी फ़ौजमें मौजूदथे इनके नाम इस मुल्क की फ़ौजमें इसी जगहसे सुनने में आये॥ १५९२ई०

दखनमें जोमुद्दतसे अहमदनगर और बिजयपुर यानी बीजा-पुर और गोलकुंडेके जुदा जुदा बादशाह होते चले आते थे अहमदनगरमें इत्तिफ़ाक़ से चार दावीदार खड़ेहुए॥ एक ने जो उस वक्त अहमदनगरमें था अकबरसे मददमांगी इस ने ऐसे मौक़े को ग़नीमत समझकर शाहज़ादे मिर्ज़ामुरादको बेर- १५९५ई०

* पहले मंदराज में तैलंगदेशके आदमी अंगरेज़ी फ़ौज में भरती हुए थे इसलिये यहांवाले पलटनके सिपाहियों को तिलंगा पुकारने लगे॥

म के बेटे मिर्ज़ा अबदुर्रहीमखां ख़ानख़ानां के साथ फ़ौजलेकर अह्मदनगर जाने का हुक्मदिया । लेकिन जबतक ये लोग पहुँचे अह्मदनगर दूसरे दावीदार बहादुर निज़ामशाह के क़ब्ज़े में आगया ॥ यह तो बच्चाथा लेकिन इसकी चची चांदसुलताना बड़ी दाना और दिल की दिलेरथी । इस क़िस्म की औरत इस मुल्क में कम सुनी गयी हैं जिस वक्त अक्बर की फौज सुरंग उड़ाकर क़िले पर चढ़ने लगी चांदसुल्ताना मुंह पर नकाब डालकर और हाथ में नंगी तलवार लेकर जहां सुरंग उड़ायी गयी थी आकर खड़ी होगयी ॥ और चिल्लाकरअपने आदमियों से कहने लगी कि अब ऐसे वक्तमें औरत न बनो। निदान उस दम अह्मदनगर में ऐसा कोई न था जो उसकी मदद को न पहुँचा हो ॥ अक्बर की फ़ौज क़िले पर न चढ़ सकी । और बराड़ का इलाक़ा लेकर जो अहमदनगर वाले ने कुछ दिनों से अपने क़ब्ज़े में कर लिया था चांदसुल्ताना से सुलह करली ॥ लेकिन चांदसुल्ताना ने मुहम्मदखांको पेशवा के ख़िताब से अपना वज़ीर मुक़र्रर कियाथा वह उस से फिर गया। और उसने फिर शाहज़ादे मिर्ज़ामुरादको अह्मदनगर में बुलाया ॥ शाहज़ादे मिर्ज़ामुराद से तो कुछ न बन पड़ा लेकिन जबअक्बरने शाहज़ादे दानियाल और ख़ानख़ानांको भेजा और बुरहानपुर तक आप भी आया। तो इस दफ़ा अहमदनगर के सिपाहियों ने बलवा करके चांदसुल्तानाको मार डाला ॥ अक्बर की फ़ौज को क़िले में घुस जाना और उसे अपने दख़ल में कर लेना पहलीबार का सा मुश्किल न रहा। क़िलेवाले सब मारेगये और बहादुर निज़ामशाह क़ैद रहने के लिये ग्वालियर के क़िले में भेजा गया ॥

अक्बर अभी बुरहानपुरही में था कि उसे अपने बड़े लड़के वलीअह्द † शाहज़ादे सलीम के बाग़ीहो जानेकी ख़बरपहुंची यह अब तीस बरस का हो गया था और सब तरह से लाइक़

† युवराज ॥

था॥ लेकिन शराब और अफ़यून ने उस का दिमाग़ बिगाड़ दिया था। वह आप अपनी किताबमें लिखताहै किमैंजवानी की हालत में हर रोज़ कम से कम बीस पियाले शराब पीता था अगर घंटा भर भी बेशराब गुज़रता। तो मेरा हाथ कांपने लगता॥ लेकिन जब से मैं तख़्त पर बैठा कुल पांच पियाले पर किफ़ायत करताहूं। और सो भी रात के वक़् पीताहूं॥

निदान अक्बर तो दखन की लड़ाइयों का बन्दोबस्त कर रहा था शाहज़ादे सलीम ने डंका बग़ावत का बजाया। और इलाहाबाद लेकर सूबे अवध और बिहार में भी अपनाक़ब्ज़ा कर लिया॥ अक्बर ने लड़के पर सख़्ती करना मुनासिब न जाना। नर्मी के साथ फ़हमाइशका ख़त लिखा और आपभी जल्द आगरेको चला आया॥ सलीम ने बहुत मिन्नत समाजत के साथ अपने बापको जवाबलिखा। और क़दमबोसी हासिल करने को आगरे रवाना हुआ॥ लेकिन जब इटाये में पहुंचा अक्बर ने मालूम किया कि सलीम के साथ सिपाह बहुत है हुक्म भेजा कि अगर मुझे देखा चाहते हो जरीदा चलेआओ। नहीं तो इलाहाबाद लौट जाओ॥ सलीम इलाहाबाद लौट गया। और फिर थोड़ेही दिनों बाद अक्बरने सूबे बंगालाऔर उड़ेसा उसके हवालेकिया॥

सलीम को अक्बर के वज़ीर अबुल्फ़ज़ल से बड़ी दुश्मनी थी जब वह दखन की मुहिम्म से लौटकर आगरे की तरफ़ आताथा सलीम की मर्ज़ी बमूजिब उर्छाके राजा नरसिंहदेवने उसका सिर काट के सलीम के पास भेज दिया। अक्बर को अबुलफ़ज़ल के मारे जानेका बड़ा रंज हुआ दो दिन रात न कुछ खाया न सोया पर उसे यह न मालूम हुआ कि अबु-लफ़ज़लका खून उसी के बेटेकी गर्दन पर था॥ सन् १६०२ ई० १६०२ई० में सलीम अक्बर के पास हाज़िर भी हुआ था अक्बर बहुत मिहर्बानी के साथ पेश आया सन् १६०४ ई० में फिर हाज़िर १६०४ई० हुआ॥

अक्बर का दूसरा लड़का मुराद कई बरस हुये मरगयाथा। अब तीसरे लड़के दानियाल के मरने की ख़बर पहुंची यह भी शराब बहुत पीता था। जब बीमारपड़ा और अक्बर ने उसके पास शराब जाना बन्द कियावह अपने नौकरों से बंदूक़की नलियों में भरकर शराब मँगवाता था। मरगया पर इससे पहेज़ नकरसका॥ यह बुरी बलाहै जब बढ़ती है। जानही लेकर छोड़ती है॥ निदान अक्बर को अपने अज़ीज़ों के मरनेका इतना रंजहुआ। कि आख़िर बीमारीने उसके बदनमें घरकिया॥ भूख बिल्कुल जातीरही दस दिनतक सिवाय पलँग पर लेटे रहने के और किसी काम की ताक़त न रही॥ आख़िर वक़्तमें सलीम मौजूद था अक्बर ने हुक्म दिया कि मेरे सब अमीरों को यहां हाज़िर करो। मैं नहीं चाहता कि जिनलोगोंने जन्म भर मेरीख़िदमत की अब किसी तरह पर तुमारे साथ उनकी नाइत्तिफ़ाक़ीहो॥ जबसब अमीर हाज़िर हुए बहुतसीपंद और नसीहत करने के बाद सबकीतरफ़ देखकरकहा भाइयो अगर मैंने कुछक़सूर कियाहो मुआफ़कीजियो सलीमसे न रहागया पैरोंपर गिर पड़ा। और डाढ़ मारकर रोने लगा॥ अक्बर ने अपनी तलवार की तरफ़ इशारा किया। और कहा किमेरे सामने अपनी कमर पर बांधोऔर फिर एक बड़े मुल्ला को बुला कर उसके सामने मुसल्मानों का कलिमा पढ़ते पढ़ते इस नापायदार दुन्यासे कूचकिया *॥

आगरे को बयाने के तहतसे निकालकर सिकन्दर लोदीने अपना पायतख़्त बनाया था लेकिन रौनक़ उसे अक्बरने दी इसीलिये वह अक्बराबाद कहलाया॥ क़िला उस में लाल पत्थरका अक्बरहीका बनायाहै इलाहाबाद भी अक्बर ने बसाया और वहां गंगा जमना के संगम पर क़िलाबनाया। अंगरेज़ों ने अबउसे बहुतमज़बूत कर लिया॥

अक्बर सालमें छः महीने से ऊपर गोश्त नहीं खाताथा॥

* تاریخ وفات اکبر فوت اکبر شہ سنہ ۱۰۱۴ ھجری

उसके दर्बारमें सदा गंगाजल पिया जाता था॥ गावकुशी की मनाही थी। रात दिन में तीन घंटेसे ज़ियादा कभीनहीं सोता था इतनी लड़ाइयां लड़ने और ऐसे बड़े बड़े कामकरने परभी वक़्त जैसा चाहिये बांट देनेसे और कामके निकास की तर्कीब जानने से उसे पढ़ने लिखने और खेल तमाशा देखने की भी बहुत फ़ुर्सत मिला करती थी॥ वह पंदरह बीस कोस बखूबी पैदल चल सकता था। एक बार खाली अपने शौक़से दोदिन में घोड़े की डाक पर २२० मील अजमेरसे आगरे चलाआया॥ बरसात के मौसिम में अहमदाबादसे खबर पहुंची कि दुश्मनों ने क़िले को चालीस हज़ार फ़ौजसे घेरलिया और अब उसके बचने की कुछ उमेद नहीं है अक्बर उस वक़्त आगरे में था। इतनी दूर से ऐसे मौसिम में फ़ौज का रवाना करना निरा बे-फ़ाइदा था॥ फ़ौरन साड़नी पर सवार हो बैठा। और तीन सौ साड़नियों पर जो उस वक़्त शुतरखानेमें मौजूदथीं सर्दारोंको तीर कमान बंधवाकर साथ सवार कर लिया एक अठवाड़े में २२५ कोस चलकर अहमदाबाद के सामने डंका जा बजाया॥ बादशाही निशान देखतेही दुश्मनोंका होश उड़गया। बहुतेरा हाथ पैर पीटा पर सिवाय मरने और भागने के कुछ भी न बन पड़ा॥ आपस में सलाम का काइदा अक्बरने बिलकुल बदल दिया था "सलाम अलैकुम" के बदले एककहताथा "अल्लाहु अक्बर" दूसरा जवाब देता था "जल्लजलालुहु" बात इसमें यह थी कि अक्बर और जलाल दोनों उस बादशाह का नाम था। बादशाह के सामने सबको ज़मीन चूमने का हुक्मथा॥ मुसलमानों को इस तरहकी बातें बहुत बुरी लगती थीं क्योंकि "सलाम अलैकुम" उनके मज़्हब का हुक्महै। और आदमी के सामने ज़मीन पर गिरना बिलकुल उनके मज़्हब के ख़िलाफ़ है॥ अक्बर ने बहुत से आइन रअय्यत के निहायत फ़ाइदे के जारी किये थे उसने गोला उठाना और जलते तेल में हाथ डालना ऐसी क़स्मों पर मुक़द्दमों का फ़ैसलहोना

बिल्कुल बंद करादिया था। होश सँभालने से पहले लड़का लड़की दोनों का ब्याह मना था॥ दूसरा ब्याह करनेकी हिंदू बेवाओं को भी परवानगी थी। बिना अपनी पूरी रजामंदी के किसी की ज़बर्दस्ती से कभी कोई सती नहीं होने पाती थी॥ जिज़्याका महसूल उसने एकक़लम मौक़ूफ़ कर दिया क्योंकि हिंदू और मुसल्मान उसकेनज़्दीक दोनों बराबरथे। यात्रियों से महसूल लेनाभी बिल्कुल बंदकिया क्योंकि सबलोग अपने अपने मज़्हब के मुताबिक़ उसी एक निराकार जगदीश्वरकी पूजा करते थे॥ शहरके बाहर दो मकान बनवा दिये। जिस मकान का नाम धर्मपुर था उस में हिंदू साध संत और जिस का नाम खैरपुर था उसमें मुसल्मान फ़क़ीर नित खाने को पाते थे॥ ज़मीन की पैदावार से अक्बर कुल एकतिहाई लेता था। और लड़ाई के कैदियोंको लौंड़ी गुलाम बनाने कादस्तूर बिल्कुल उठादिया था। अक्बर के दख़ल में हिंदुस्तानके १८ सूबेथे। उसके लश्कर केडेरे ५ मील के फैलाव में खड़े होते थे॥ सालगिरह के रोज़ बड़ी धूम धामसे तय्यारी होती थी। इंगलिस्तान की मलिका एलिज़ेबथ की चिट्ठी लेकर फ़िचसाहिब जो उसके दर्बार में आये थे लिखतेहैं किऐसी दौलत हमने कभी आंख से नहींदेखी। सोने की तुला पर सोने और फिर चांदी औरफिर और चीज़ोंसे बादशाह तुलता था। और वह सब उसी जगह लुटा दियाजाताथा॥ बादशाह लोगोंको इनामभी बहुत देताथा। और सोने चांदी के बादामदर्बारियों पर फेंकता था॥ उसके दर्बारी सब सिरपर कलगियां बांधते थे। और उन्हीं फ़िच साहिबके लिखने बमूजिब जैसाआसमान तारों से चमकताहै वे हीरों से चमकते थे॥ पांचहज़ार उसके फ़ीलख़ाने में हाथी थे। और बारहहज़ार इस्तबल में ख़ासे के घोड़े॥ उन के साज़ देखनेसे आंखें चौंधियातीथीं। और सवारों के बदनपर कमख़ाब की वर्दियां जगमगातीथीं॥ पर तौ भी अक्बर निहायत सीधा सादाथा। अक्सर तख़्त के

नीचे बैठकर और कभी खड़ाभी रहकर अपनी रअय्यतका इंसाफ़ करताथा ॥ उसके नेक मिज़ाजीकी हम कहांतक तारीफ़ लिखें एकदफ़ा सवारीमें किसीने अक्बरपर एकतीर चलादिया। और वह आकर उसके कंधे में लगा ॥ मुज़्रिम पकड़ागया लोगोंने अर्ज़की कि अभी इसकोक़तल न होनेदीजिये तो इस से उस असल मुज़्रिमका नाम मालूमकरें जिसके कहने से इसने ऐसे काम का हियाव किया। अक्बरने कहा कि इसको धमकानेसे असल मुज़्रिमके बदले किसी बेगुनाहके फँसजाने का डरहै और उसे उसी दम क़तल होनेदिया॥

एक मर्तबा अक्बर जब लड़ाई में जानेकेलिये पोशाक पहन रहाथा देखा किसी राजाका लड़का अपने डीलडौलसे ज़ियादा ज़िरह बक़्तर पहनेसाथ चलनेको तय्यारहै। और उसके बोझ से दबाजाताहै॥ बादशाहने उसकी उमर मुवाफ़िक़ एक हल्का सा ज़िरह बकतर अपने तोशेखानेसे मँगवादिया। और जब उस ने वह भारी अपने बदनसे उतारा एक दूसरे राजाको जो बे-ज़िरह बकतरथा पहनलेने का इशाराकिया॥ लेकिन यह राजा उसलड़के के बापसे कुछ दुशमनी रखताथा इससबब लड़केको बहुत बुरालगा अक्बर का दियाहुआ ज़िरह बकतर तुर्त उतार कर फेंकदिया। और कहा कि मैं लड़ाई में बेज़िरह बकतरही जाऊंगा अक्बर ने इस बेअदबीपर ज़राभी खयाल न किया॥ और खाली इतनाही बोला कि तब आज हमभी ज़िरहबकतर न पहनें। क्योंकि हमको यह मुनासिब नहीं कि अपने सर्दारों को अपने से ज़ियादा खतर में पड़नेदें॥

बाबा तुलसीदास * इसीके ज़माने में हुये। जो ऐसी अच्छी भाषा रामायण बनागये॥

नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर

अक्बरकेबाद सलीमतख्तपर बैठा। और लक़बअपनाजहां

* संम्वत सोरहसे असी असी गंगके तीर। सावन शुक्ला सत्तमी तुलसी तज्यो शरीर॥ कोई २ "सावन श्यामा तीजको" ऐसाभी कहते हैं और इसीदिन उनकी बरसी मानते हैं॥

गीररक्खा॥ अकसर महसूल जिनसे रअय्यतको तकलीफ़ पहुंचतीथी और अकबरके वक्तमेंभी जारी रहगयेथे। बंदकरदिये॥ हुक्मदिया कि कूचकेवक्त कोईसिपाही या बादशाही नौकर जबर्दस्ती किसीरअय्यतकेघरमें न उतरे नाक कान काटनेकी सजा भी जहांगीरने मौकूफ़की। आप जैसी शराब पीताथा वह तो मालूमहै पर औरोंको सख्त मनाही थी॥ अपनेरहने के महलों में एकज़ंजीर सोनेकी घंटियां बांधकर लगादीथी और उसज़ंजीर का दूसरा सिरा क़िलेके बाहर लटकवादियाथा। कि फ़र्यादी को अगरकोईचपरासी चोबदार बादशाहतक न पहुंचनेदेतो वह उसज़ंजीरकोहिलादे जहांगीरघंटियांबजतेही बाहरनिकलआता था॥ लेकिन इनसब अच्छेकामोंसे यह न समझनाचाहिये कि जहांगीर का दिलभी अकबरकासा नर्म था जब इसकाबड़ाबेटा खुस्रव इससेबिगड़कर काबुलकीतरफ़ भागा। औरभेलममेंनाव अटकजानेके सबब पकड़ा आया॥ जहांगीरने उसकेसाथियोंमें से सातसौ आदमियोंकी खालखिंचवाकर उन्हें लाहौरके बाहर खड़ाकरवादिया। और खुस्रवको हाथीपर बिठलाकर उन्हेंदेखनेकेलिये भिजवाया और नक़ीबको हुक्मदेदिया कि एकएकका नामलेकर मामूल मुताबिक़ "निगाहरूबरू" पुकारताजावे खुस्रवने तीनदिनतक कुछ न खाया और रोया और कराहाकिया॥

१६०६ई०

१६११ई०

तख़्तपर बैठने के छ बरस बाद जहांगीरने नूरजहांके साथ निकाहकिया। नूरजहांका दादाईरानमें बड़ेदर्जेका आदमीथा लेकिन उसकाबाप मिर्ज़ाग़यास ऐसाग़रीबहोगया कि उसेरोज़गारकी तलाशमें हिंदुस्तानकी तरफ़ आनापड़ा और क़ंदहारमें जब नूरजहां पैदाहुई उसने उसे सड़कपर फेंकदिया॥ क़ाफ़िले वालोंने रहमखाकर उठालिया। और उसीकी माको उसकीधाय मुक़र्रर करदिया। उसके बापसेभी क़ाफ़िलेवाले कामकाजलेने लगे औरफिरहोतेहोते वहबादशाहकेयहां नौकरीपागया अपनी माकेसाथ जब नूरजहां अकबरके महलमें जाती। वहांजहांगीर कीभी उसपर आंख पड़ती॥ जब जहांगीर उससे छेड़छाड़करने

लगा और इसका चरचा अक्बरतक पहुंचा अक्बरने उसकेबाप से कहके उसका निकाह शेरअफ़गनखांसे कि जिसकेसाथमंसूब होचुकीथी करादिया। जहांगीर जब तख़्तपर बैठा नूरजहां की यादने इसे बेचैन किया॥ शेरअफ़गनखांको अक्बरने बंगालेमें जागीरदीथी जहांगीरने बंगालेके सूबेदारकोलिखा कि जिसतरह से बने नूरजहांको शेरअफ़गनसे लेकर भेजदो सूबेदारका सम-झाना शेरअफ़गनने कुछभी न माना। और जब सूबेदारने धम-काना शुरूकिया शेरअफ़गनने उसपर हथियार चलाया॥ सूबे-दारकेमरतेहीउसकेनौकरोंनेशेरअफ़गनकोटुकड़ेटुकड़ेकरडाला और नूरजहांको पकड़कर जहांगीरकेपास भेजदिया। पहले तो जहांगीरने उसके साथ बड़ी धूमधामसे ब्याह किया और फिर खालीनामको आपबादशाहरहा हक़ीक़तमेंसाराकामबादशाही का उसीके हवाले करदिया॥ बादशाही क्यावह तो जहांगीरकी भी मालिकथी। और अक़्लमंद ऐसी कि उससेभी अच्छीसल्-तनत करतीथी॥सिकेपरभी जहांगीरकेसाथ उसकानाम रहता था। और बेउसके एकदम जहांगीरको आराम न था॥

जहांगीर ने कुछ फ़ौज शाहज़ादे खुर्रम यानी शाहजहां के साथ उदयपुरको भेजीथी। लेकिन राना शाहजहांकेपासहाज़िर होगया इसलिये शाहजहां ने उसकी बहुत ख़ातिरकी॥ अक्बर की चढ़ाईसे जो कुछ उसका मुल्क बादशाही क़ब्ज़े में आगया था वह भी छोड़ दिया। और रानाके लड़के को दिल्ली लाकर अपने बाप जहांगीरसे बड़ा दर्जा दिलाया॥ १६१४ई०

शाहजहां को जहांगीर ने बहुत सी फ़ौज देकर दखनकी मु-हिम्मपर रवाना किया। और आपभी उसकी मददके इरादेपर मांडूतकआया॥ इंगलिस्तानके बादशाह पहले जेम्सके एलची सर टामसरो साहिब बादशाह के साथथे। लिखते हैं कि बार-बरदारी न मिलने के सबब हम और ईरान के बादशाह का एल-ची दोनों कुछ दिन तक अजमेर में पड़े रहे॥ औरबादशाहको भी अपनी फ़ौजका बहुत सा डेरा डंडा जलवा देना पड़ा। नहीं १६१६ई०

तो उनका भी कूच होना मुश्किलथा॥ वही साहिब लिखते हैं कि जहांगीर फरंगियोंकी बड़ी ख़ातिर करताहै रअय्यत हिन्दी बोलती है। पर दर्बारमें फ़ारसी बोली जाती है॥ मैंने बादशाह को एक उमदा विलायती गाड़ी और तस्वीर दीथी बादशाही कारीगरों ने थोड़ेही दिनों में उससे बिह्तर गाड़ी बनाली। और तस्वीर कीतो ऐसी नक़ल उतारी कि मुझको असल से नक़ल जुदा करनी मुश्किल पड़गयी॥

शाहजहां जल्दही फ़तह फ़ीरोज़ीके साथ दखनकी मुहिम्म ख़तम करके अपने बापकेपास हाज़िर होगया। और फिरथोड़े ही दिनोंपीछे कांगड़ेकानामीक़िला जहांगीरके क़ब्ज़ेमें आया॥

शाहजहांको नूरजहांकी भतीजीब्याहीथी। इसलियेवहअब तक शाहजहांकी तरफ़दारथी॥ लेकिन अबउसने अपनी बेटी जो शेरअफ़गनके घरमें हुईथी॥ जहांगीरके छोटे लड़के शहर्यार को ब्याहदी॥ और इस फ़िक्रमें पड़ी कि शाहजहां को ख़राब करके जहांगीरके बाद शहर्यार को तख़्तपर बिठावे निदानजब शाहजहांको यहबात मालूमहुई और उसने देखा कि नूरजहांने मेरेबापका दिल मेरीतरफ़से फेरदिया न मुझको बापके पास आनेदेतीहै। और न यहां दखनमें रहनेदेतीहै॥ जागीरें मेरी जो थीं ज़ब्तहोकर शहर्यारको मिलगयीं और फ़ौजभी जोमेरेतहत मेंहै अबशहर्यारको मिलाचाहतीहै डंकाबग़ावतकाबजाया। और मांडूसे आगरेकी तरफ़ रवानाहुआ॥ लेकिन जब क़रीबपहुंचा और बादशाही फ़ौज इसके मुक़ाबलेको आयी यह हटकरफिर मांडूकी तरफ़ रवाना हुआ॥ बादशाही फ़ौजने वहांभी उसका पीछाकिया॥शाहजहां तैलंगदेश यानी तिलंगानेकी तरफ़भागा और फिर मछलीबंदर होताहुआ पूर्बमेंआकर बंगाला और बिहार अपने क़ब्ज़ेमें किया लेकिन जब ज़मींदारों से मदद न मिल- नेके सबब इसतरफ़भी उसने बादशाही फ़ौजसे शिकस्तखायी फिर दखनकी तरफ़भागा। औरआख़िर थककर अपने बापको अर्ज़ीलिखी कि अब मेराक़सूर मुआफ़हो बहुत सज़ा पाचुका॥

वहांसे हुक्म आया कि दाराशिकोह और औरंगजेब अपने दोनों लड़कोंको हाज़िर रहनेकेलिये दर्बारमें भेजदो। और फिरकभी ऐसाकाम मतकरो॥ शाहजहांने कुछ उज़र न किया और फ़ौरन् अपने दोनों लड़कों को बादशाह के पास भेजदिया॥

इसी अर्सेमें क्या जानिये नूरजहांको क्यासूझा। महावतखांको बंगालेकी सूबेदारीका हिसाब समझानेके लिये बुला भेजा॥ महावतखां आया। लेकिन पांच हज़ार राजपूतों को साथ लेताआया॥ बादशाहके पास हाज़िरहोनेसे पहले बिना बादशाह की परवानगी उसने अपनी बेटी एक जवान सर्दार बर्खुर्दार को ब्याहदी। जहांगीर को यह बात बहुत बुरी लगी॥ बर्खुर्दार को बुलाकर उसकी नंगी पीठपर कोड़े लगवाये और घरबार उसका बिलकुल ज़ब्त करलिया। जब महावतखां पास पहुँचा जहांगीर काबुलको जाताथा झेलममें पुलबांधकर फ़ौज तो पार उतरगयीथी जहांगीर अपने खेमेमें अभी इसीपारथा॥ महावतखां ने सूरज निकलने से पहले दो हज़ार रजपूत तो पुलपर भेजदिये और आप दो सौ रजपूत लेकर जहांगीर के देरेमें चलागया। जहांगीर घबराकर उठा और इतनाही कहने पाया नमकहराम महावतखां यह क्याहै महावतखांने ज़मीन चूमी और अर्ज़किया कि मेरे दुश्मनोंने मुझको हुजूरतक नहीं पहुँचने दिया तब मैं लाचार इस गुस्ताख़ी के साथ हाज़िर हुआ॥ निदान जब जहांगीर ने अपने तईं महावतखांके इख़्तियार और उसकी क़ैद में पाया। नर्मी और मुलायमतके साथ बातें करनेलगा महावतखां जहांगीरको अपने देरेमें लेआया॥ नूरजहां भेस बदलकर टूटी सी डोली पर सवार महावतखां के सिपाहियों के दर्मियानसे पुलपार अपनी फ़ौज में चलीगयी। दूसरे रोज़ दर्या पायाब उतरकर सारी फ़ौज महावतखांपर चढ़ लायी। आप तीरकमान लेकर हाथीके हौदेपर सवारथी॥ लेकिन महावतखांके सामने कुछ पेश न गयी॥ आदमी बहुत मारेगये॥ बादशाहको न छुड़ासके॥ नूरजहांका हाथी फ़ील-

१६२५ई०

वानके मरने और सूँड़के कटनेपर दर्यामें भागगया। और फिर बहुतदूर बहकर कनारेलगा॥ नूरजहांके साथ हौदेपर उसकी दुहिती यानी नतनी भी थी निरीबालक और तीरसे घायल नूरजहां हाथी से उतरी और उस लड़की के घावमें पट्टी बांधी। आख़िर थककर वह भी अपनी क़िस्मतके भरोसेपर जहांगीरके पास महावतख़ांकी क़ैद में चली आयी॥

महावतख़ां जहांगीर को लेकर काबुलकी तरफ़ चला। जहांगीर ज़ाहिरमें उससे ऐसा हिल मिलगया कि महावतख़ांको इसकी तरफ़ से कुछ भी खटका बाक़ी न रहा॥ जहांगीरने नूरजहांकी सलाह बमूजिब महावतख़ां से कहकर हुक्म दिलवा दिया कि सब जागीरदार अपनेअपने सवारोंकी मौजूदात देवें नूरजहां भी जागीरदारथी। अपने सवारोंको डुरुस्त करनेलगी और नये सवार इस हिक्मतसे भरतीकिये कि मौजूदातकेदिन तक किसीको उनकी तादाद से ख़बर न हुई॥ महावतख़ांको नूरजहां की तरफ़से खटका हुआ लेकिन जहांगीरने यह कहके मिटादिया कि नूरजहांके सवार हम जाकर देखआवेंगे तुम उनके नज़दीक मतजाना। लेकिन जब जहांगीर नूरजहांके साथ उसके सवारों को देखने गया वह इतनेथे कि फ़ौरन् उन्हों ने इनके हाथियों को घेरलिया और महावतख़ां के आदमियोंको जो बादशाहके साथथे काटडाला॥ जब महावतख़ांने देखा कि बादशाह और बेगम दोनोंहाथसे निकलगये वहांसेकूचकिया। और फिर दखन में शाहजहांसे जामिला॥

१६२७ई०

जहांगीर काबुलसे कश्मीर गया वहां उसको दमेका मरज़ ऐसा बढ़गया कि लाहौर आना पड़ा। लेकिन मौतने रास्तेही में आलिया साठवें बरसमें दुन्यासे कूचकरगया ❀॥

شہاب الدین محمد شاہجہان صاحب قران ثانی

शहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहां (साहिब क़िरान सानी)

जहांगीरके बाद शाहजहां बड़ी धूम धामसे तख़्तपर बैठा जैसी उसके वक़्तमें सल्तनत ने रौनक़ पायी। कभी किसी के

❀ تاریخ وفات جہانگیر ع جہانگیر از جہان عزم سفر کرد سنہ ١٠٣٦ ہجری

सुनने में नहींआयी ॥ जोजो इमारतें उसनेबनायीं कभीकिसी के देखनेमें नहींआयीं ॥ शाहजहांनाबाद की इमारतोंको देखो (१६२८ई०) क़िला कैसा उमदा और जामेमसजिद किस शानकी बनी है आगरे में ताजगंजका रोज़ादेखो कि वैसी दूसरी इमारत आज तक किसीको दुनयामें नहीं मिली । एक तख़्त ताऊस † उसने सात करोड़ दसलाख रुपयेका बनवायाथा कि जिसके देखने से चकाचौंध आजातीथी ॥ शाहजहांकी सालगिरहमें सिवाय मामूली तुलादानोंके जवाहिरातसे भर भरकर पियाले सदक़े उतारे जातेथे ॥

ख़फ़ीखांलिखताहै कि इनामइक़राम ख़िलत तुलादानसदक़े वग़ैरः सब मिलाकर इससालगिरहमें एककरोड़साठलाख रुप- येसे कम ख़र्च नहीं पड़तेथे ॥ टेवर्नियर फ़रासीसी सौदागर जो उसवक़ यहांआयाथा अपनीकिताबमें लिखताहै कि शाहजहां लोगोंपर बादशाही नहींकरताहै बल्कि अपने लड़कोंकी तरह उन्हें पालताहै ॥ उसके इंतिज़ामकीखूबी इसीबातसे जानलेनी चाहिये कि इस शाहख़र्चीपरभी वह सिवायसोनेचांदी औरज- वाहिरातके चौबीसकरोड़ रुपया नक़द छोड़मरा । और कभी रअय्यतसे एकपैसा मामूलसे ज़ियादा नहीं मांगा ॥ ख़फ़ीख़ां शाहजहांकी आमदनी तेईसकरोड़रुपया साल लिखताहै । ले- किन टेवर्नियर बत्तीस करोड़ बतलाता है ॥

---

† तूल इसतख़्तका छः फुट औरअर्ज चार फुट एकसौ आठ लाल उसमें सवासौ रत्तीसे लेकर अढ़ाईसौ रत्तीतकके लगेथे और एकसौसाठ पन्ने छत्तीस रत्तीसे लेकर बहत्तररत्तीतकके जड़े थे उसी के सायबानमें तमामहीरे औरमो- तीटकेहुयेथे और झालर निरेमोतियों की लटकतीथी उसतख़्तकी मिहराबपर एकमोरदुमफैलाये सोनेका जवाहिरसे जड़ाहुआरक्खाथा दुमेंबिल्कुल नीलम और छातीपर एकबड़ालाल तथा गर्दनमें तिरसठरत्तीका मोतीलटकताथा ए- कहीरेका आवेज़ाभी उसमें एकसौ सत्तरहरत्तीका था बारहचोबें जिनपर उस तख़्तका सायबान खड़ाहोताथा तमाम आबदार गोल मोतियोंसे बारहरत्तीतक के मोतियों से जड़ीथीं और उसके दोनोंतरफ़ जो दो छतरियां रहतेथे उनकी डंडि- यां साढ़ेपांच फुट लम्बीसारी नीचेसे ऊपरतक हीरोंसे ढकीथीं ॥

१६३१ई० इसी बादशाहके जमानेमें यानी सन् १६३१ ई० में पुर्तगाल वालों ने कलकत्तेके पास हुगलीमें जो क़िला बनायाथा। बंगालेके सूबेदारने घेरकर लेलिया॥

क़ंदहार अकबरकी सल्तनतके शुरूमें ईरानियोंने ले लिया था। लेकिन कुछदिन बाद फिर अकबरके क़ब्ज़ेमें आगया अब जहांगीरके जमाने से फिर ईरानियोंके हाथमेंथा॥ लेकिनउनका १६३७ई० सूबेदार अलीमर्दांखां शाहजहांसे आमिला। इसलिये क़ंदहार फिर हिंदुस्तानमें शामिल होगया॥ यह अलीमर्दांखां बड़ानामी हुआ दिल्लीकी नहर इसीने बनवायी। और दौलत उसकेपास इतनीथी कि लोगोंकी समझमें उसने कहींसे गड़ीहुई पायी॥ १६४७ई० सन् १६४७ ई० में ईरानियोंने फिर ज़ोरमारा और क़ंदहार उनके दखलमें चलागया॥

मीरजुम्ला पहले तो दखनमें हीरेकी तिजारत करता था। लेकिन अबबहुतदिनोंसे अबदुल्लाह कुतुबशाह गोलकुंडेकेबादशाहका वज़ीर होगयाथा॥ अबदुल्लाहने कई बातोंसे नाराज़ होकर इसकेबेटे मुहम्मद अमीनको क़ैदकिया तब इसने शाहजहांसेमदद मांगी। शाहजहांकीफ़ौजने अबदुल्लाहको बहुतज़ेर किया शाहज़ादे औरंगज़ेबके इशारेमुताबिक़ धोखादेकर उसके इलाक़ेमें घुसगयी॥ अबदुल्लाहने तोऔरंगज़ेबके आदमियोंको साबिक़ सुलहनामेके मुवाफ़िक़ दोस्तसमझा उनके खाने पीने का बंदोबस्त करनेलगा लेकिन इन्होंने अचानक उसकी राजधानी हैदराबादको लूटना औरफूंकनाशुरूकिया। नाचार अबदुल्लाहने मुहम्मदअमीनकोभी क़ैदसे छोड़दिया और औरंगज़ेबके लड़के सुल्तान मुहम्मदको अपनीबेटी व्याह में और एक करोड़ रुपया नज़र बादशाहकेलिये देकर अपना पिंडछुड़ाया॥ मीरज़ुम्लाने शाहजहांको वहमशहूर ३१९ रत्तीका कोहनूरहीरा नज़रदियाजो उसके किसी किसानको गोदावरी कनारेकोलूर*

* शाहजहांके जौहरियोंने इसे ७८१५७२५ का आंकाथा और कोलूर कीखानमें मिला कौनजाने शायद इसीसबब उसकानाम कोहनूररक्खागया॥

की खानमें खर्बूज़ेकाखेतजोततेहुये मिलाथा औरअब पंजाबसे मालिकैमुअज्ज़मै इंगलिस्तानयानी हिंदकीकैसरइम्परेसविक्टोरियाकी ख़िदमतमें पहुँचा। वह बराबर औरंगज़ेबका मोतमद मुसाहिब बनारहा॥

शाहजहांके चारलड़केथे दाराशिकोह ४२ बरसकाशुजा ४० बरसका औरंगज़ेब ३८ बरसका और चौथा मुरादभी जवान हो चुकाथा दाराशिकोह बहुत नेकथा हर मज़हब के अच्छे फ़क़ीरों से सुहबत रखता मज़हब उसका वेदान्त था। उपनिषदों का फ़ारसी में तर्जुमा उसी के हुक्म से हुआ था॥ औरंगज़ेब बड़ा दूरंदेश हिक्मती मतलबका यार और ज़ाहिरमें बड़ा कड़ा मुसल्मानथा शुजा शराबी औरअय्याश औरमुराद कुछबेवक़ूफ़सागिनाजाताथा। औरंगज़ेबको शाहजहांकेसंसूबों का हाल अपनी बहन रौशनआरा ×सेमिलाकरताथा॥ दाराशिकोह वलीअहद था। जों जों शाहजहांउसका इख्तियार बढ़ाता जाता था औरंगज़ेब छटपटाताथा॥ इसके दिल में तख़्त की पूरीआर्ज़ूथी। उमेद निरी मज़हबके बहाने से थी॥ सदा मौलवियों की तरह रहा करता। जोकुछ हाथकीमिहनत से मिलता उसी से अपनी गुज़रान करता॥ साथियोंसे सदा कहा करता कि मैं तो फ़क़ीरहोकर मक्के चलाजाऊंलेकिनक्या करूं दाराशिकोह काफ़िरहै अगरइसकाइख्तियारहोगा॥ दीन को बहुत ख़राब करेगा॥ निदानयही सबबथा कि मुसलमान उसको जी से चाहतेथे और इसमें शकनहीं कि उन्हीं की मददसे उसे सल्तनत हाथ लगी। लेकिन साथही यहभीयाद रक्खो कि हिन्दुओंकेबेदिलहोजानेसे वहसल्तनत बिल्कुलबेज़ोर होगयी॥ उसवक्तो न मालूम हुआ। लेकिन औरंगज़ेबके बाद उसका नतीजा अच्छी दिखलायी दिया॥

१६५७ई०

शाहजहां इस अर्सेमें सख़्तबीमार होगयाथा उमेद बचने

× शाहज़ादियां भी तालीम पाती थीं अकबरके ४ जहांगीर के ८ शाहजहांके ४ औरऔरंगज़ेबकेभी ५थीं लेकिनइन१६ में ब्याहीबाली १ गयीथी॥

की न थी दाराशिकोह ने बहुतेरा चाहा किख़बरनफैले। डाक बन्द करदी मुसाफ़िरोंको चलने से रोका लेकिन यह न सोचा कि भला हिन्दुस्तान में भी कभी ऐसा होसकताहै कि भेद न खुलनेपावे॥ शुजा बंगालेका सूबेदार और मुराद गुजरातका सूबेदार दोनों अपनी अपनी फ़ौजें लेकर दिल्लीको रवानाहुए औरंगज़ेब दखन का सूबेदारथा मुरादको लिखभेजा। कितख़्त आपको मुबारकहो मैंमक्केजानेकी बिल्कुल तय्यारी करचुकाहूं लेकिन दीनकाकाम समझकर जबतक किइस काफ़िर दाराका कुछ बन्दोबस्त न होजावे मैं भी तुम्हारा मददगारहूं और फिर मालवे में आकर मुरादसे मिलगया॥

शुजा तो बनारस के पास दाराशिकोहके लड़के सुलैमान-शिकोहसे शिकस्त खाकर बंगालेको लौटगया। मुरादऔरंग-ज़ेबकेसाथ उज्जैनकेपास राजाजसवन्तसिंहको जिसे दारा-शिकोहने उनके मुक़ाबले को भेजाथा शिकस्तदेकर आगरेसे एक मंज़िल के तफ़ावतपर आन पहुंचा॥ दाराशिकोह तख़-मीनन् एकलाख सवार लेकर उनके साम्हने आया बड़ीभारी लड़ाईहुई मुराद का हौदा तीरों से साही की पीठ बनगया॥ वह आपभी कईजगह घायलहुआ। हाथीने मैदानसेभागना चाहातो पैरोंमें कठबंधनडलवादिया॥ राजा रामसिंह केसरिया बागा पहने मोतियोंकाहार सिरमेंलपेटे मुराद के हाथी से जा भिड़ा। और भाला चलाया॥ मुरादने उसका भालातो ढाल परसेका। औरराजाको एकहीतीरसे मारडाला॥ उसकेमरतेही रजपूत बड़ेजोशमेंआये। और ढेरकेढेर वहां उनकीलाशकेलग गये॥ औरंगज़ेब चिल्लाचिल्लाकर अपने सिपाहियोंकोयही सुनाताथा "अल्लाहुमाकुम" यानीअल्लाहतुम्हारेसाथहै राजा रूपसिंह घोड़े परसे उतरपड़ा और दौड़कर अपनी तलवार से औरंगज़ेबके हौदेका रस्सा काटने लगा। औरंगज़ेब उसकी बहादुरी देखकर ऐसा ख़ुशीहुआ कि पुकारा यह मारा न जावे लेकिन उस हुजूम में कौन सुनता था॥ बात की बात में

उसकी धज्जियां उड़ादीं दाराकी फ़ौजको गल्बाया। लेकिन उसके हाथीको एक बान आ लगा इस सबबसे उसने भागना चाहा दाराशिकोह नीचेकूदपड़ा॥ फ़ौजने जाना कि वहमारा गया फ़ौरन् सबकीसब भागगयी दाराकोभी भागनापड़ा। मारे शरमके बापके सामने तोन गया अपनीबेगम और लड़कोंको लेकर सीधा लाहौर को रवाना हुआ॥ औरंगज़ेब ने आगरे पहुंचकर बहुत मिन्नत समाजतके साथ शाहजहांके पासपयाम भेजा कि यह मुक़ाम नाचारी का था मैं आपका वही फ़र्मांबदार लड़काहूं लेकिन साथही क़िले में जा बजा चौकी पहरा भी बैठा दिया। कि जिसमें शाहजहां किसी के साथ बातचीत या ख़त किताबत न करसके शाहजहां सातबरस तक इस के बाद जिया॥ औरंगज़ेब उसकी बड़ी इज़्ज़त और खातिरकरता रहा। लेकिन सल्तनत उसकी इसी तारीख़ तक गिनी जाती है आगे सिक्का खुतबा औरंगज़ेब का चला॥ शाहजहांने ३० बरस बादशाही की। ६७ बरसकी उमरमें बादशाही उस से छीनीगयी और ७४ बरस की उमरमें उसने वफ़ात पायी॥

जब मुरादका कुछ काम बाक़ी न रहा औरंगज़ेबने एकरोज़ उसकी ज़ियाफ़तकी और इतनी शराब पिलायी कि वहबेहोश होगया। तब उसके हथियार उतरवाकर और पैरों में बेड़ियां डलवाकर ग्वालियर के क़िले में भेजदिया॥

मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर

محی الدین محمد اورنگ زیب عالمگیر

औरंगज़ेब ने तख़्त पर बैठकर अपना लक़ब आलमगीर रक्खा। मुल्तान के पास तक दाराशिकोह का पीछाकिया॥ लेकिन जब सुना कि दाराशिकोह मुल्तान से सिन्धकी तरफ़ भागगया और शुजा बंगाले से आता है फ़ौरन् इलाहाबादकी तरफ़ मुड़ा। खजुए में शुजाके साथ लड़ाईहुई शुजा शिकस्त खाकर फिर बंगालेकी तरफ़ भागा और जब वहांभी पर न जम सका तो अराकान में जाकर वहांवालोंके हाथ से अपनेकुनबे समेत मारा गया॥ १९५९ ई०

दाराशिकोह मुल्तानसे भागकर सिन्ध और कच्छ होता हुआ गुजरात में पहुँचा। और वहांके सूबेदार से मिलकरबीस हज़ार आदमी अजमेर में जमाकर लाया॥ लेकिन वहां औरंगज़ेब से शिकस्त खाकर क़न्दहारकी तरफ़ भागा। रास्ते में सख़्तियां बहुत उठायीं जब सिंध की सरहदपर पहुँचा अजोवन के हाकिम मलिक जीवनने दग़ा की और इसको इसके लड़के समेत क़ैद करके औरंगज़ेबके पास लेआया ❀॥ औरंगज़ेब ने बड़ी ख़ुशियां मनायीं दाराशिकोहको पहले तो हाथोंमेंहथकड़ियां और पैरों में बेड़ियां डालकर बे झूल के हाथी पर बाज़ार में घुमाया। और फिर क़ैदखाने में भेजकर इस बहाने से कि उसने मुसल्मानों का दीन छोड़दिया मौलवियोंसे फ़तवा लेकर जल्लादों के हाथसेक़तल करवाडाला और उसकेलड़के सिपिहरशिकोह को क़ैद रहने के लिये ग्वालियर के क़िले में भेज दिया॥

सन् १७००ई०के शुरूतक मरहटोंका नाम कुछ ऐसामशहूर न था दखनके बादशाहोंकी फ़ौजमेंसवारोंकीनौकरी अलबत्ता करनेलगेथे। लेकिन हुकूमतके दर्जेकोनहीं पहुँचेथे॥ मालूजी भोंसला दखनके हाकिमोंमें से एकके यहां कुछसवारोंके साथ नौकरथा। और लूकजी यादवराव उसी हाकिम के तहतमेंदस हज़ार आदमियोंका अफ्सरथा॥ एकदिन मालूजी भोंसलाके लड़के शाहजीको अपनी लड़कीकेसाथ गोदमेंबैठाकर हँसीकी राहसे कहनेलगा कियहतो अच्छाजोड़ा ब्याहने लाइक़है मालूजी भोंसलाने उसीदम बिरादरीवालोंको जो वहांमौजूदथेगवाह ठहरादिया और कहा कि देखो भाइयो लूकजी यादवरावने मेरे बेटेको अपनी बेटीदी। नाचार लूकजी यादवरावकोअपनीबेटी साहजीकेसाथ ब्याहनीपड़ी॥कहते हैं कि यादवरावकेगोतवाले यदुबंशी रजपूतोंसे निकलेथे। और मुसल्मानोंकी चढ़ाईसेपहले

❀ यह वही मलिक जीवनहै जिसको शाहजहां ने किसी जुर्ममें क़तलका हुक्म दियाथा और दाराशिकोह ने सिफ़ारिश करके बचालियाथा॥

देवगढ़के राजा भी यदुबंशी कहलाते थे॥ तो अगर लूकजी याद-वरावका निकास इन्हीं देवगढ़वाले राजाओंके घरानेसे हुआ हो कुछ अचरज नहीं निदान मालूजी भोंसलाकी क़िस्मत ज़ोरपर थी देखतेही देखते अहमदनगरके बादशाहकी नौकरी में पांच हज़ारसवारों का जागीरदार होगया। और पूना उसे जागीरमें मिला॥ मालूजी भोंसला का पोता यानी लूकजी यादवरावका नाती सेवाजी बड़ा नामी और इक़्बालमंद हुआ। वह सन् १६०७ ई० में जनमा था और उसीसे मरहटों का राज क़ाइम हुआ॥

सेवाजी अभी पूरा सोलह बरसका भी नहीं होने पाया था कि बदनमें उसके जवांमर्दी का ख़ून जोशमें आया। रात दिन शिकार खेलने और डाका मारने से कामथा और वही वहां के जंगल पहाड़ोंमें जंगली और पहाड़ी आदमियों के साथ उसे आराम था॥ वह उन बिकट जंगलों की राह और टेढ़े पहाड़ों के घाटोंसे ख़ूब वाक़िफ़ होगया था और एक२ जंगली आदमी का नाम तक जान लियाथा। बीजापुरकी सल्तनत कमज़ोर पड़गयी थी सेवाजी डाका मारते मारते बीजापुरकी अमल्दा-री के क़िले लेने लगा। पहला क़िला जो उसने अपने दख़्ल में किया पूना से दसकोस पर तोरना नामथा॥ बीजापुर के बादशाहने दग़ाकरके सेवाजीके बाप साहजीको क़ैदकरलिया तब सेवाजी ने शाहजहां को अर्ज़ी लिखी शाहजहांने उसके बापको भी छुड़वादिया और उसे पंजहज़ारी यानी पांचहज़ार सवारों के अफ्सरका ख़िताबदिया॥ जबबाप छुटगया। सेवाजी फिर अपना इलाक़ा बढ़ानेलगा॥ बीजापुरके बादशाहने अफ़-ज़लखां के तहत में एक बड़ा भारी लश्कर उसके ज़ेर करनेको भेजा सेवाजीने कहला भेजा कि आप इतना लश्कर क्योंलाये हैं मैं तो आपका चाकरहूं। लश्करसे ख़ौफ़खाताहूं अगर आप अकेले चले आवें जो फ़र्मावें मैं बजालानेको मौजूदहूं॥ अफ़-ज़लखां मलमलका जामा पहने एक तेग़ा हाथमेंलिये अकेला अपने लश्करसे बाहरनिकला। सेवाजीभी परतापगढ़के पहाड़ी

क़िले से बाहर आया॥ लेकिन अंगरखे के नीचे फ़ौलादी ज़िरह पहने हुए। और हाथोंमें शेरपंजा*चढ़ाये हुये॥ सिवाय इसके उसने एक छुरा भी कमर में छुपा लिया। जब अफ़ज़लखां ने सेवाजीको गलेसे लगाया सेवाजीने उसे शेरपंजेसे भींचलिया और फ़ौरन् छुरेसे उसकाकाम तमामकिया॥ सेवाजीका इशारा पातेही उसकी तमाम फ़ौज जो पहाड़ों में छिपीथी निकल आयी। और अफ़ज़लखां की फ़ौजपर जो बिल्कुल ग़ाफ़िलथी इस तेज़ी के साथ गिरी कि वह उसी दम तीन तेरह होगयी॥

सेवाजी को तो लूट मार से काम था। कौन किसका इलाक़ा है यह उसे कहां ख़याल था॥ जब औरंगज़ेब के क़िलोंपर भी उसने हाथ डाला। औरंगज़ेबका मामू शाइस्ताखां जो उस वक़ दखनका सूबेदार था फ़ौज लेकर मुक़ाबलेको बढ़ा॥ सेवाजी सिंगार या सिंहगढ़ के पहाड़ी क़िलेपर चढ़गया। शाइस्ताखां छ कोस पर पूना में उसी मकान के दर्मियान ठहरा जिस में सेवाजी कुछ दिनों रह चुका था॥ निदान एकदिन वह रात को २५ आदमी साथलेके भेस बदलेहुए किसी बरात के साथ शहर में घुसआया। और एक चोर दर्वाज़े की राह पहरेवालों से बचकर ठीक उस जगह जापहुंचा जहां शाइस्ताखां पलंगपर सोता था॥ सेवाजी की तलवार से शाइस्ताखां की सिर्फ़ दो उंगलियां कटनेपायीं खिड़की की राहकूदकर जानबचागया। लेकिन लड़का उसका काम आया॥ सेवाजी उसी दम फ़ुर्ती के साथ वहांसे निकलकर साथियों समेत मशालें जलाये अपने पहाड़ी क़िलेपर चढ़गया। और शाइस्ताखांका लश्कर सारा देखता ही रह गया॥ सन् १६६५ ई० में औरंगज़ेब ने राजा जयसिंह और दिलेरखां को दखन की मुहिम्मपर भेजा। सेवाजी ने पयाम सुलह का दिया और राजा जयसिंहकेपास चला आया॥ राजा जयसिंहने उसकी ऐसीखातिरदारीकी औरऔरंगज़ेबसे उसकेनाम ऐसा एकफ़र्मान मंगवाया कि वह बिल्कुल

१६६५ ई०

* एक तरह का हथियार है शेर के पंजेकी तरह॥

तावेहोगया। और अपनेलड़केसंभाको लेकर बादशाहकी क़द्-मोसीके लिये दिल्लीमेंचलाआया ॥ लेकिनवहांउसकीखाति-रदारी कुछ अच्छीनहुई औरइसबातसे जबउसने अपनी दिल-गीरी ज़ाहिरकी औरंगज़ेबने उसपर पहरे बिठला दिये सेवाजी बड़ेबड़ेखांचों+में फ़क़ीरोंको खानेकेलिये भेजाकरताथाएकरोज़ बेटेसमेत दोखांचोंमें बैठकर पहरों के बीच से निकलगया। और कुछदिनोंबाद फ़क़ीरीभेसमें पूना जापहुँचा और फिर धीरे धीरे उसने अपना इलाक़ा बहुतबढ़ाया और बड़ानामपाया ॥

इसीसालमें शाहजहांका परलोक हुआ। अगर्चिवहकि़लेसे बाहर नहीं निकलनेपाताथा लेकिन वहां औरंगज़ेब उसेबहुत इज्ज़त और अदब के साथ रखताथा ॥ १६६६ ई०

यहज़माना औरंगज़ेबकी पूरीतरक़्क़ीकाथा उधरकश्मीरकेसूबे-दारने हिमालय पार छोटा तिब्बत फ़तह करलिया था। और इधर बंगालेके सूबेदारने चटगांवका इलाक़ा बादशाही अमल्-दारीमें मिलादियाथा ॥ फिर इस लंबे चौड़े मुल्कके दर्मियान झगड़ा फ़साद कहीं कुछ न था अरब और हब्शसे लेकर ईरान् तूरानतकके एल्ची[1] उसके दर्बारमें हाज़िरथे लेकिनऐसीसल्-तनतों में क्या यह अमनचैन कुछ अर्सेतक ठहरसकताथा ?॥

औरंगज़ेबने जिज्या फिर जारीकिया। इसकामके लिये एक मुल्ला मुक़र्रहुआ कि हिंदूलोग अपने धर्मकेकामोंमें कुछधूम धाम न करनेपावें तेवहार और पर्वोंपर जो मेलेहोतेथे वहभीबंद

+यानी दौरा यानी टोकरा ॥

[1] एकसाल पांचबादशाहोंके एल्ची आये बड़ाभारी दर्बार हुआ ईरान के एल्चीकी बड़ीखातिरहुई शहरकी आईबन्दी कीगयी सड़कपर कोसोंतक सवार खड़े कियेगये उमर इस्तिक़्बालको गये तोपोंकी सलामीहुई शाहका खरीता औरंगज़ेब ने अपनेहाथसे लिया पचीसघोड़े बीस शुतुर ईरानी कम-ख़ाबपार्चे क़ालीन बेदमुश्ककेअर्क़ तुह़फ़ामें गुज़रे मक्केके शरीफ़ने अरबी घोड़े और एकझाड़ू जिससे काबाझाड़ाजाताथा भेजी यमनके बादशाह और हब्-शके हाकिमने भी घोड़ेभेजेथे इंगलिस्तानके बादशाह जेम्स के एल्चीने ए-कबेलका सींग कुछ हाथीदांत एकगोरखर और २५ गुलाम कि नक़्क़ारची थेनज़र किये ॥

करदिये उसने तो यहांतक हुक्म देदियाथा कि सिवाय मुसल्मानोंकेकहीं कोई हिंदूबादशाही नौकरी नपावे लेकिनतामील न होसकी तामीलतो किसी हुक्मकी पूरी न हुई लेकिन दिल हिंदुओंका मुसल्मानों की सल्तनतसे पूरा हटगया ॥ जो कुछ कि उस वक़्त इनकी सल्तनतका हालथा उसी एक ख़त से ज़ाहिर होजाताहै जो किसीराजानेऔरंगज़ेबको लिखाथा और ख़फ़ीख़ांने अपनी तवारीख़में दर्जकरदिया है। खुलासाउसका यह है ॥ कि देखिये अक्बर जहांगीर औरशाहजहांकेवक़्तमेंइस मुल्कका क्याहालथा और अब क्या होगया है । जबसबफ़िर्के और सबमज़हबके आदमी नाराज़ हैं और आमदनी दिनपरदिन घटीजाती है जबरअय्यतपर ज़ुल्म होताहै और ख़ज़ानाख़ाली पड़ता जाताहै पुलिसकी कोई ख़बर नहींलेता और ख़ुदशहरों में ख़तरा रहताहै तो यह बेड़ा कैदिन चलसकताहै ? ॥

राजा जसवंतसिंह जोधपुरवाला काबुलकी मुहिम्मपर मर गयाथा उसकी रानी और दोबालक लड़केबादशाहकी परवानगीका इंतिज़ारनकरके दिल्लीचलेआये बादशाहने उन्हेंक़ैदकरने का अच्छा बहाना पाकर घेरलेनेका हुक्मदिया अगर्चिरानी और लड़कोंको तो उनकेसाथ रजपूत भेस बदलाकरनिकालले गये पर हिंदुओंका दिल रहासहा औरभी टूटगया बड़ालड़का अजीतसिंह जोधपुरकी गद्दीपरबैठा। और जबतक औरंगज़ेबजीतारहा वहअजीतसिंह चाकरी बजालानेके बदलेलड़भिड़करसदा उसेतंगकरतारहा ॥ रानाराजसिंह उदयपुरवाला* भीउससेमिल गया । और जिज्यादेनेसे इन्कार किया । फ़ौजें जोधपुर और

१६७९ ई० उदयपुर पर भेजी गयीं बादशाहका उनको हुक्मथा कि मुल्क वीरान कर डालें । गांव सब फूंकदें ॥ दरख़्त फलदार काटनेसे बाक़ी न छोड़ें । बाल बच्चे और औरतें सबको पकड़लावें ॥

---

* कहतेहैंकिउदयपुरवालोंने कभी अपनीलड़की बादशाहको नहींदी लेकिनऔरंगज़ेब रुक़आतआलमगीरीमें अपनेलड़के कामबख़्शकोलिखताहै ॥

सन् १६८० ई० में सेवाजी ५३ बरस का होकर परलोकको सिधारा । बेटा उसका सम्भाजी बदचलन था † ॥

थोड़ेही दिनों बाद औरंगज़ेबने दखनपर बड़ी भारी फ़ौज लेकर चढ़ाई की गोलकुण्डेके बादशाह अबुल्हसनने जो तानाशाह के नामसे मशहूर है सम्भाजी से आपसकी मदद का क़ौल क़रार किया था इसीलिये औरंगज़ेबने पहले कुछ फ़ौज गोलकुण्डे पर भेजी ॥ बादशाह तो क़िले में जा छुपा । और हैदराबाद तीन दिनतक बराबर लुटा किया ॥ आख़िरबादशाह ने बहुत सा रुपयादेकर किसी तरह उस दम यह बला अपने सिरसे टाली । और औरंगज़ेबके साथ सुलह करली ॥ औरंगज़ेबको इधर से जो फ़ुर्सत मिली सारी फ़ौज लेकर बीजापुर पर गिरा । और उसशहर को जाघेरा ॥ थोड़ेही दिनोंमें दीवारें टूट गयीं औरंगज़ेब तख़्तरवाँ पर अन्दर गया बालक बादशाह को क़ैदकरदिया । औरउसकासारा इलाक़ा अपनी अमल्दारी में मिला लिया ॥ जबबीजापुर क़ब्ज़ेमें आगया इस बहाने से कि गोलकुण्डेका बादशाह काफ़िरोंको पनाह देता है फिर यकायक उसे जादबाया । सातमहीने के मुहासरे में गोलकुण्डा भी टूट गया और बीजापुरकी तरह यह इलाक़ा भी औरंगज़ेब के हाथलगा ॥ १६८६ ई० १६८७ ई०

इन दोनों इलाक़ों का हाथ लगना गोया औरंगज़ेब की सारी आर्ज़ूओंका पूरा होना था । पर सच पूछो तो हम इसी तारीख़ से दिल्ली की सल्तनतका घटना क़रार देते हैं इस में किसी तरह का शक नहीं कि तैमूरी ख़ानदान के ज़वाल का बीज इसी वक़्त में बोया गया टहनियां और पत्ते उस में चाहे जब निकलें बीजापुर और गोलकुण्डेकी बादशाहियोंसे दखन में एक तरह का इन्तिज़ाम बँधाहुआथा और मरहटोंपर बड़ा दबाव था ॥ इनके टूटतेही वहां हर तरफ़ ग़दर मचगया । जो

† सेवाजी और सम्भाजीका ठीकनाम शिवाजी और शंभूजी मालूमहोताहै ॥

सवार सिपाही उनके नौकर थे वह भी अक्सर मरहटों से जा मिले मरहटों ने जी खोल के लूट मार करना शुरू किया॥ औरंगज़ेबकी यहीबड़ीतारीफ़ है किअपने जीते जी सल्तनत में खलल नहीं पड़ने दिया पर आसार ज़वालके उसे मालूम होगये थे अक्बर के वक्त तक भी बू सिपहगरी की बाक़ी थी। उसके सर्दारों में सर्दमुल्क की चालाकी देखने में आती थी॥ लश्कर बादशाहका सब से बड़ा ज़ेवर था। और उसीकी दुरुस्तीका सदा उसे खयालथा॥ लेकिन जहांगीर औरशाहजहां के ज़मानों में खौफ़ खतर कम और अमन चैन बहुत रहने के सबब ऐश इशरततो बढ़ गयी। पर जिसको सिपहगरी कहते हैं बिल्कुल जाती रही॥ सदा से यही दस्तूर चलाआताहै कि कंगालों को जब हौसिला होता है बड़े बहादुर बन जाते हैं। और जो कुछ चाहते हैं पाते हैं॥ और जब बहुत मिलजाताहै ऐश में पड़कर ऐसे बोदे होजाते हैं। कि फिर उसीतरह जैसा उन्होंने औरोंको दबायाथा नये हौसिलेवाले उन्हें दबालेतेहैं॥ इसी तरह दान्यूब पारवालोंने रूमियों को दबाया। इसी तरह अरबवालों ने ईरानियों को दबाया॥ इसी तरह तातारवालों ने चीनियोंको दबाया॥ औरअब आखिरी ज़मानेमें इसीतरह फ़रंगिस्तानवालोंने सारी दुन्याको दबाया॥ कारखानाइनका भी अब बहुत बढ़गयाहै पर इल्मका इनमें ऐसारवाज है और दिन पर दिन और भी ऐसा होताचलाजाता है कि अय्याशीमें न पड़कर ये सिपहगरी के दर्मियान और भी ज़ियादा दुरुस्त होते जातेहैं। अगर दौलत हश्मत बढ़जाने के सबब आराम तलबी से कुछ बदनी ताक़त घटभी जातीहै तो इल्मके वसीले से ऐसीऐसी तोप बंदूक़ जहाज़ और नयीनयी तरहकेऔज़ार औरहथियार बनाते चलेजातेहैं कि जिन से एक एक आदमी में सौ सौ हज़ार हज़ार बल्कि लाख लाख का ज़ोर हासिल करलेते हैं॥

निदान अब ज़रा औरंगज़ेबकी फ़ौजपर निगाह करनीचा

हिये। ज़रा इसके सर्दारों के घोड़ोंको देखना चाहिये ॥ दुम और यालें विल्कुल रँगी हुई। सोने चांदी के साज़ सिरसे पैर तक लदे हुए कलगियां बहुत लंबीलंबी पैरों में झांजनेंबजती हुई ॥ मोटे इतने कि जितने लंबे शायद उसी के क़रीब क़रीब चौड़े। और फिर चारजामे उनपर मख़मली ज़र्दोज़ी बड़ेभारी पड़ेहुये और उनमें सुरागायकी दुम के चंवर दोनों तरफ़लटकतेहुये ॥ सवार घोड़ों से भी ज़ियादह देखने के लायक़ हैं कोई अपनेसे ज़ियादह भारी दगला और ज़िरह बकतरपहने हुए। कोई घेरदार जामा औरशालदुशाले लपेटेहुए ॥ लेकिन चिहरे ज़र्द रात के जागे नशे में चूर या दवा खाते पीते। दस क़दम घोड़ा चला घोड़ेको पसीनाआया सवार बेहोश होगया अगर दूर चलना पड़ा दोनोंबेदमहोकर गिर पड़े ॥ जैसेसर्दार वैसेंही उनके पियादे और सवार लश्कर में जहां दस सिपाही तो सौ बनिये दूकानदार भांड़ भगतिये रंडीछोकरे नौकरखिदमतगार खानसामां रसद काहेको मिल सकती। डेरेडण्डेऐश इशरतके साज़सामान इतने कि कभी अच्छीतरह बारबरदारी की तदबीर न हो सकती ॥ तलवार पीछे रहजाय मुज़ाइक़ा नहीं पर तंबूरा साथ रहनाचाहिये। दुश्मनवारकियेजायपरवा नहीं पर चिलम न जलने पावे। उस वक़्त का एक फ़रासीसी इसफ़ौजकी ख़ूबतारीफ़ लिखता है वहलिखताहै कि तनख़्वाहें बहुत बड़ीबड़ी और चाकरी कुछ भी नहीं नकोई पहरा चौकी देताहै। न कोई दुश्मन से मुक़ाबला करता है॥ और बड़ी सज़ाहुई। तो एकदिनकी तनख़्वाह कटगई ॥ जिमेलीकेरेरी* ने मार्चसन् १६९५ ई० में औरंगज़ेब की छावनी गलगले में देखी थी वह लिखताहै कि दसलाख से ऊपर आदमीथे। और छै कोसमें तो निरे बादशाह और शाहज़ादों के डेरेखड़ेथे†॥ १६९५ई०

* Gemelli Carreri.

† बर्नियर लिखता है कि इनसबको शिकस्त देने के लिये २५००० फ़्रांसीसी काफ़ी हैं ॥

इनको काम पड़ा उन मरहटों से जो अँगरखा जांघिया एक पेची पगड़ी पहने कमर कसे हाथ में भाला दक्खनी घोड़ोंपर सवार तीस कोस तो हवा खाने को घूम आते थे। न थकते न मांदे होते थे॥ जो बाजरेकी रोटी पयाज़केसाथ उनका खाना था। और घोड़े का ज़ीन तकिया ज़मीन बिछौना और आसमान सामियाना था॥

निदान औरंगज़ेब इनकी फ़िक्र ही में था कि इसके एक सर्दार ने कहीं से पता ठिकाना लगाकर संभाजी को बेख़बर संगमेश्वर के बाग़में जा घेरा। वहां वह थोड़ेही से आदमियों के साथ जी बहला रहाथा नशेमें होनेके सबब भाग न सका॥ यह उसे औरंगज़ेब के पास क़ैदकर लाया औरंगज़ेब ने इससे कहा कि तू मुसल्मान हो जा लेकिन उसने ऐसा कड़ा जवाब दिया कि औरंगज़ेब ने गर्म लोहेसे उसकी आंखनिकलवाकर और जीभ कटवाकर उसी दम मरवा डाला॥

संभाजी का लड़का साहूभी कुछ दिनों बाद क़ैदमें आगया लेकिन उस का भाई राजाराम उसी तरफ़ लड़ता भिड़ता रहा जों जों औरंगज़ेब इन मरहटों को दबाने की फ़िक्र करता था वों वों ये और भी ज़ोर पकड़ते जाते थे औरंगज़ेब की फ़ौज घटतीथी इनका शुमार बढ़ताथा। औरंगज़ेब कोईतद्बीर बाक़ी नहीं छोड़ता था लेकिन इनसेदिनपरदिन तंगहोता जाताथा॥

१७०७ई० यहां तक कि इक्कीसवीं फ़ब्रवरी सन् १७०७ ई० को अहमदनगर में पचास बरस बादशाही करके नवासी बरस की उमर में दुन्या से सिधारा॥ और हिंदुस्तान का आख़िरी मुसल्मान बड़ा बादशाह हो गया॥

यह इतना बूढ़ा था पर तौ भी सल्तनत के कामों से कभी जी नहीं चुराता। ज़रा ज़रा काम आप देखता आनेजानेवालों

---

† تاريخ تولد عالمگير آفتاب عالم تاب سنه ١٠٢٨ هجري ٭
تاريخ جلوس عالمگير آفتاب عالم تابم سنه ١٠٦٨ هجري ٭
تاريخ وفات عالمگير آفتاب عالم تاب من سنه ١١١٨ هجري ٭

से सब तरफ़ की खबर लेता रहता ॥ बे उसके हुक्म कुछ भी न होता। दखन की लड़ाइयों में वह जवान सिपाहियों सेभी ज़ियादा सख़्तियां सहता ॥ इस बादशाह के अक़्लमन्द और हिम्मत वाले होने में किसी तरह का शक नहीं लेकिन दिल इस का बहुत छोटा था। मज़हब की ज़िद से हिंदुओंको यक बारगी नाराज़ करदिया बनारसमें विश्वेश्वर और बिन्दुमाधव का और मथुरामें गोविन्ददेव का मशहूर मन्दिर तोड़ा ॥ जो राजपूतजी से अकबर की चाकरी करते थे उन्होंने इसका मुक़ाबला किया। मरहटों का जी बढ़गया वक़्त पाकर यही मुसल्मानों की सल्तनत के ज़वाल का बहुत बड़ा सबब हुआ आदमी का दिलभी भगवान ने कैसा बनाया है बाप को क़ैद करके और भाइयों को मार के तख़्तपर बैठा। इस में कुछ गुनाह न समझा ॥ और मरतेदम लिखगया कि टोपियां सीकर जो मैं बेचता था उसमें का साढ़ेचार रुपया बाक़ी है वही मेरेक़फ़न में खर्चकरना। और कुरानलिखकर जो मैंने ८०५) रुपया जमा किया है उसे फ़क़ीरों को बांट देना ॥ गोया इसीबातसे वह नेकी का झंडा बनगया। जोहो मरते वक्त उस के जीमें बड़ा पछतावा था ॥ अपने लड़के कामबख़्शकोलिखताहै मैंने बड़ेगुनाह कियेहैं देखाचाहिये क्या सज़ा मिलती है। मौत दिन पर दिन नज़्दीक आती जाती है ॥

जिमेली केरी ने औरंगज़ेबको ७८ बरसकी उमरमें देखा था। लिखताहै कि क़द नाटा था बदन दुबला पीठ झुकीहुई नाक लम्बी डाढ़ी गोल बिल्कुल सफ़ेद सादा कपड़ा पहने पगड़ी में एक बड़ासा पन्नालगाये छड़ी के सहारे से अपने अमीरों के दर्मियान खड़ा लोगों से अर्ज़ियें लेकर बेचश्मेआप पढ़ता और उनपर हुक्म लिखता जाता था और चिहरा उस का इस काममें बहुत खुश मालूम होता था ॥

बहादुरशाह

औरंगज़ेबके तीनलड़केथे आज़म मुअज़्ज़म औरकामबख़्श

यहां लश्कर में तो आज़म तख़्त पर बैठा। और वहां काबुल में मुअज़्ज़म ने ताज बादशाही का सिर पर रक्खा॥ आख़िर आगरेके पास दोनों में बड़ी सख़्त लड़ाई हुई आज़म मारा गया। मुअज़्ज़म बहादुरशाहके नामसे हिन्दुस्तानकाबादशाह हुआ॥ कामबख़्श भी दखन में इस से लड़ कर ऐसा घायल हुआ। कि उसीदिन दुन्यासे सिधारा॥ आज़म ने दखन से मुअज़्ज़मके मुक़ाबलेको आते वक़्त साहूको सुलहके वादेपर क़ैद से छोड़ दिया था। औरफिर वहां के सूबेदारने उसेचौथ देनेमें कुछ हुज्जत तकरार नकी इसालिये बहादुरशाह को दखन की तरफ़ से खातिरजमई रही लेकिन उत्तर में तरद्दुदका एक नयासामान पैदा हुआ॥

पंदरहवीं सदीमें कबीर की तरह नानकशाह ने सिक्खोंका एक नया मज़्हब निकाला। ग़रज़ उसकी शायद यहथी कि हिन्दू मुसल्मान एकहोजावें मुसल्मानोंको यह बहुतबुरालगा अक्बरके बाद साल ही के अन्दर उनके गुरू को मारडाला॥ तब तो सिक्ख बिगड़े। मुसल्मानों को मिलाने के बदलउनके नास करने पर मुस्तइद होगये॥ चाहे जितने काटे मारे गये। पर बादशाही इलाक़ों में बखेड़ा उठाने से बाज़ न रहे॥ जब फ़ौज जाती पहाड़ों में भागजाते। जब क़ाबू पाते फिर लूट मारमचाते॥ इनकादसवांगुरु गोबिंदसिंहजो सन् १६७५ ई० में गद्दी पर बैठा। बड़ा नामी और हौसिलेवाला हुआ॥ पर तब तक जमाअत की कमी के सबब इनका सितारा चमकने न पाया। आख़िर वह किसीअपने दुश्मन के हाथसे नांदेड़ में मारागया॥

निदान अब इन सिक्खोंने सरहिंदके हाकिमोंको शिकस्त देकर वह शहरलूटा औरफूंका और क़त्लकिया। औरसहारनपुरतक हरतरफ़ ग़दर मचादिया॥

बहादुरशाह को इनके मुक़ाबले के लिये आप जाना पड़ा ये फिर पहाड़ों में भाग गये बहादुरशाह लाहौर पहुंचकर ७१

फ़र्रुख़सियर को बादशाह होने के पहले इलाहाबादके सूबेदार सय्यद अबदुल्लाह और बिहार के सूबेदार सय्यद हुसेन-अली इन दोनों भाइयों से बहुत मदद मिलीथी इसीलियेपहले को वज़ीर और दूसरे को अमीरुलउमरा मुक़र्रर किया । लेकिन दिलों में फ़र्क़ पड़गया ॥ बादशाह को उनकी तरफ़ से खटका था और उनको बादशाहकी तरफ़ से न बादशाहमें इतनी अ-क़्लथी कि उन्हें अपना खैरख़ाह बनालेता । और न इतनी जुरअत कि उन्हें दूरकरदेता ॥ निदान इनसय्यदोंने फ़र्रुखसियर की जानली और जब रफ़ीउद्दर्जात और रफ़ीउद्दौला दोनोंशा-हज़ादे जिनको उन्होंने तख़्तपर बिठायाथा चारहीचार महीने के अन्दर इस दुन्यासे उठगये तो उन्होंने रोशनअख़्तर नाम औरंगज़ेबके एक पोते को तलाश करके तख़्तपर बिठाया जहांदारशाह और फ़र्रुख़सियरने इतने शाहज़ादों को क़त्लकर डालाथा कि सिर्फ़ महलों में जो छिपे छिपाये बचरहे थे । वेही ज़रूरत के वक्त तलाश करके निकाले जाते थे ॥

१७१९ई० رفیع الدرجات و رفیع الدولہ

محمد شاہ

मुहम्मदशाह

रोशनअख़्तरने तख़्तपर बैठकर अपना लक़ब मुहम्मदशाह रक्खा * लेकिन इन सय्यदोंसे वहभी बेज़ारथा । कठपुतलीकी तरह कब कोई आदमी किसी दूसरेके हाथमें रहनापसंदकरता है पर उनसे छुटकारा पानेकी कोई सूरत नहीं देखताथा॥सय्य-दोंके दुश्मनोंने जो बादशाहकीमर्ज़ी मालूमकी आपसमेंउनके मारडालनेका एका किया चींक़िलीचख़ां आसिफ़जाहजिसका बाप गाज़िउद्दीन औरंगज़ेबकेनामीतूरानीसर्दारोंमेंथा । औरजि-सकीऔलादमें अबतकहैदराबादकीनव्वाबीचलीआतीहै दखन मेंबादशाहतोनामकाथा इनसय्यदोंसे बिगड़गयाथा॥इसीलिये हुसैनअलीबादशाहको लेकर फ़ौजसमेत दखनकोरवानाहुआ॥ औरअबदुल्लाहको दिल्लीमेंछोड़ा ॥ पररास्तेमें एक क़लमाक़ †

---

* تاریخ جلوس محمد شاہ سریر آرائے جاہ دولت سنہ ۱۱۳۱ ہجری

† तातारकी एक क़ौमका नाम है ॥

यह ईरानके इतिहाससे इलाक़ा रखताहै यहां हमको इतनाही लिखना चाहिये कि कुछक़ंदहारी अफ़ग़ान उससे फिरकर काबुलकीतरफ़ चलेआयेथे और जब उसने उनकी गिरफ़्तारीकेलिये मुहम्मदशाहको लिखा तो यहांसे कुछभी जवाब न गया। और फिर ताकीद के लिये जब उसने दूसरा हरकारा रवानाकिया तो वह पहाड़ोंमें अफ़ग़ानोंके हाथसे मारागया॥ इसीपरख़फ़ाहोकर उसने हिंदुस्तानपर चढ़ाईकरदी। असल बातयहहै कि अगर कोई सोनेकी खान बेमालिक और बेपहरे चौकी पड़ीहो तो वह कौनहै जिसकाजी उसपर हाथडालनेको न चाहे? जबदिल्ली में ख़बरपहुंची कि नादिरशाह यहांके हाकिमोंको शिकस्तदेता सिन्धुनदीपार उतर आया और जैसेकोईबाज़ बटेरपर गिरता है बढ़ाही चला आताहै बड़ी घबराहट पड़गयी॥ मुहम्मदशाह का हाल वाजिदअलीशाह*लखनऊ के बादशाह से भी जो मुल्क खोकर कलकत्ते में तशरीफ़ रखते हैं बत्तर था। हमारे पास उस वक़्त के एक मेले की तस्वीर मौजूदहै उसीको देखना मुहम्मद शाह का सारा ज़माना देख लेनाहै वह उस मेलेकी तस्वीर है जो मुहम्मदशाहने महादेव का कियाथा वाजिदअलीशाह के

हुआ नादिरशाहने बड़ीइज़्ज़त और ख़ातिरदारीकी ॥ दोनोंबा दशाहमिलकर दिल्ली के क़िलेमें दाख़िल हुए। और उसी में एक साथ रहने लगे॥ पर दूसरेहीदिन शहरवालोंने अफ़वाह उड़ा दिया कि नादिरशाहमरगया। और बदमआशोंने उसके साथवालों को जो शहर में थे क़तल करना शुरूकिया॥ नादिरशाह ने बहुतेरा चाहा कि बल्वा दब जावे। और ख़ूनरेज़ी न होने पावे॥ बल्कि सुबह होते ही ख़ुद घोड़ेपर सवारहोकर निकला। और लोगोंको फ़हमाइश करनेलगा॥ लेकिनजब हर गली कूचे में अपने सिपाहियोंकी लाशें पड़ीहुई देखींऔर हर तरफ़ से पत्थर और ढेले ख़ुद उसपर पड़ने लगे ख़ून जोश में आया। घोड़े से उतरकर रोशनुद्दौला वाली सुनहरी मस्जिदमें बैठगया और क़तल आम ⊛ का हुक्मदिया॥ दोपहर से ऊपरक़तल हुई। और लाख से ऊपर आदमी मारेगये कई जगह आगभीलगगयी† ॥ आख़िर मुहम्मदशाह अपनेवज़ीरोंसमेत साम्हने आकर खड़ा हुआ। औरजबनादिरशाहनेबोलनेकी इजाज़तदी तोमुहम्मदशाहरोपड़ा॥ नादिरशाहने उसी दम क़तलकी मौक़ूफ़ी काहुक्म दिया लेकिन वाहरे हुक्म इस ज़ालिम का किअगर किसीने किसी की गर्दन पर काटने को तलवार रक्खी थी औरमौक़ूफ़ी यानी अमानके हुक्मकी सुनादी कान में पहुंचगई। तुर्तउठाली॥

नादिरशाहको हिन्दुस्तानमें ख़ालीदौलतका लालचलाया था। उसे मालदर्कारथा। मुल्क से कुछभी सरोकार न था॥ जो कुछ ज़र जवाहिर माल असबाब बादशाही ख़ज़ानेमें मौजूद था और जहांतक सर्दार और शहरवालोंसे हाथलगसका सबलेकर अट्ठावनदिन रहनेकेबाद दिल्लीसेफिर अपनेमुल्क कीतरफ़ चलागया। कहतेहैं कि उस को यहां सत्तर करोड़से

⊛ [illegible]

† इस ग्रंथकर्त्ता के परदादा राजा दालचन्द [illegible] इसी नादिरशाही में मारेगये ॥

यह ईरानके इतिहाससे इलाक़ा रखताहै यहां हमको इतनाही लिखना चाहिये कि कुछकंदहारी अफ़ग़ान उससे फिरकर काबुलकीतरफ़ चलेआयेथे और जब उसने उनकी गिरफ़्तारीकेलिये मुहम्मदशाहको लिखा तो यहांसे कुछभी जवाब न गया। और फिर ताकीद के लिये जब उसने दूसरा हरकारा रवानाकिया तो वह पहाड़ोंमें अफ़ग़ानोंके हाथसे मारागया॥ इसीपरख़फ़ाहोकर उसने हिंदुस्तानपर चढ़ाईकरदी। असल बातयहहै कि अगर कोई सोनेकी खान बेमालिक और बेपहरे चौकी पड़ीहो तो वह कौनहै जिसकाजी उसपर हाथडालनेको न चाहे? जबदिल्ली में ख़बरपहुंची कि नादिरशाह यहांके हाकिमोंको शिकस्तदेता सिन्धुनदीपार उतर आया और जैसेकोईबाज़ बटेरपर गिरता है बढ़ाही चला आताहै बड़ी घबराहट पड़गयी॥ मुहम्मदशाह का हाल वाजिदअलीशाह लखनऊ के बादशाह से भी जो मुल्क खोकर कलकत्ते में तशरीफ़ रखते हैं बत्तर था। हमारे पास उस वक़्त के एक मेले की तस्वीर मौजूदहै उसीको देखना मुहम्मद शाह का सारा ज़माना देख लेनाहै वह उस मेलेकी तस्वीर है जो मुहम्मदशाहने महादेव का कियाथा वाजिदअलीशाह के जोगी जोगनवाले मेलेका भला उसकेसाम्हने क्यारुतबाथा॥ उस में नंगे मर्द और नंगी औरतें इस तरह पर बनायी हैं कि हरगिज़ बयाननहीं करसकते शर्मदामनगीरहै निदान जोकुछ टूटीफूटी सड़ीगली फ़ौजबहमपहुंची इकट्ठाकरके करनालपहुंचा। आसिफ़जाह और सआदतख़ां दोनोंसाथथे सआदतख़ां पहले तो खुरासान का एक सौदागर था लेकिन अब सर्दारी करता था॥ लखनऊके बादशाह इसी की बेटी की औलाद में हैं करनाल में नादिरशाह से लड़ाई हुई भला कहां नादिर शाह के मंजे हुए जर्रारसिपाही और कहां मुहम्मदशाहकी गुड़ियां मरहटों से तो कुछ बस चलता ही न था। नादिरशाह से कब खेत हाथ लगता था। शिकस्त खायी। इलाज कुछ बाक़ी न रहा सर्दारों समेत नादिरशाह के पास जाकर हाज़िर

हुआ नादिरशाहने बड़ीइज्ज़त और ख़ातिर्दारीकी ॥ दोनोंबा दशाहमिलकर दिल्ली के क़िलेमें दाख़िल हुए । और उसी में एक साथ रहने लगे ॥ पर दूसरेहीदिन शहरवालोंने अफ़वाह उड़ा दिया कि नादिरशाहमरगया । और बदमआशोंने उसके साथवालों को जो शहर में थे क़तल करना शुरूकिया ॥ नादिरशाह ने बहुतेरा चाहा कि बल्वा दब जावे । और ख़ूनरेज़ी न होने पावे ॥ बल्कि सुबह होते ही ख़ुद घोड़ेपर सवारहोकर निकला । और लोगोंको फ़हमाइश करनेलगा ॥ लेकिनजब हर गली कूचे में अपने सिपाहियोंकी लाशें पड़ीहुई देखींऔर हर तरफ़ से पत्थर और ढेले ख़ुद उसपर पड़ने लगे ख़ून जोश में आया । घोड़े से उतरकर रौशनुद्दौला वाली सुनहरी मस्जिदमें बैठगया और क़तल आम * का हुक्मदिया ॥ दोपहर से ऊपरक़तल हुई । और लाख से ऊपर आदमी मारेगये कई जगह आगभीलगगयी† ॥ आख़िर मुहम्मदशाह अपनेवज़ीरोंसमेत साम्हने आकर खड़ा हुआ । औरजबनादिरशाहनेबोलनेकी इजाज़तदी तोमुहम्मदशाहरोपड़ा ॥ नादिरशाहने उसी दम क़तलकी मौक़ूफ़ी काहुक्म दिया लेकिन वाहरे हुक्म इस ज़ालिम का किअगर किसीने किसी की गर्दन पर काटने को तलवार रक्खी थी औरमौक़ूफ़ी यानी अमानके हुक्मकी मुनादी कान में पहुंचगई । तुर्तउठाली ॥

नादिरशाहको हिन्दुस्तानमें ख़ालीदौलतका लालचलाया था । उसे मालदर्कारथा । मुल्क से कुछभी सरोकार न था ॥ जो कुछ ज़र जवाहिर माल असबाब बादशाही ख़ज़ानेमें मौजूद था और जहांतक सर्दार औरशहरवालोंसे हाथलगसका लेलिवाकर अट्ठावनदिन रहनेकेबाद दिल्लीसेफिर अपनेमुल्क कीतरफ़ चलागया । कहतेहैं कि उस को यहां सत्तर करोड़से

* [illegible]

† इसग्रंथकर्त्ता के परदादा राजा दालचन्दके दोभाई इसीनादिरशाही में मारेगये ॥

यह ईरानके इतिहाससे इलाक़ा रखताहै यहां हमको इतनाही लिखना चाहिये कि कुछक़ंदहारी अफ़ग़ान उससे फिरकर काबुलकीतरफ़ चलेआयेथे और जब उसने उनकी गिरफ़्तारीकेलिये मुहम्मदशाहको लिखा तो यहांसे कुछभी जवाब न गया। और फिर ताकीद के लिये जब उसने दूसरा हरकारा रवानाकिया तो वह पहाड़ोंमें अफ़ग़ानोंके हाथसे मारागया॥ इसीपरख़फ़ाहोकर उसने हिंदुस्तानपर चढ़ाईकरदी। असल बातयहहै कि अगर कोई सोनेकी खान बेमालिक और बेपहरे चौकी पड़ीहो तो वह कौनहै जिसकाजी उसपर हाथडालनेको न चाहे ? जबदिल्ली में ख़बरपहुंची कि नादिरशाह यहांके हाकिमोंको शिकस्तदेता सिन्धुनदीपार उतर आया और जैसेकोईबाज़ बटेरपर गिरता है बढ़ाही चला आताहै बड़ी घबराहट पड़गयी॥मुहम्मदशाह का हाल वाजिदअलीशाह लखनऊ के बादशाह से भी जो मुल्क खोकर कलकत्ते में तशरीफ़ रखते हैं बत्तर था। हमारे पास उस वक़्त के एक मेले की तस्वीर मौजूदहै उसीको देखना मुहम्मद शाह का सारा ज़माना देख लेनाहै वह उस मेलेकी तस्वीर है जो मुहम्मदशाहने महादेव का कियाथा वाजिदअलीशाह के जोगी जोगनवाले मेलेका भला उसकेसाम्हने क्यारुतबाथा॥ उस में नंगे मर्द और नंगी औरतें इस तरह पर बनायी हैं कि हरगिज़ बयाननहीं करसकते शर्मदामनगीरहै निदान जोकुछ टूटीफूटी सड़ीगली फ़ौजबहमपहुंची इकट्ठाकरके करनालपहुंचा। आसिफ़जाह और सआदतख़ां दोनोंसाथथे सआदतख़ां पहले तो खुरासान का एक सौदागर था लेकिन अब सर्दारी करता था॥ लखनऊके बादशाह इसी की बेटी की औलाद में हैं करनाल में नादिरशाह से लड़ाई हुई भला कहां नादिर शाह के मंजे हुए जर्रारसिपाही और कहां मुहम्मदशाहकी गुड़ियां मरहटों से तो कुछ बस चलता ही न था। नादिरशाह से कब खेत हाथ लगता था। शिकस्त खायी। इलाज कुछ बाक़ी न रहा सर्दारों समेत नादिरशाह के पास जाकर हाज़िर

विज़ारतसे इस्तीफ़ादेकर अवधकी तरफ़ अपनी सूबेदारी पर चलागया ॥ लेकिन बादशाहकी मीर्ज़ा ग़ाज़िउद्दीनसे बनीनहीं पटी जबवहजाटोंके क़िले भरतपुर और डीगसे लड़रहाथा बादशाह शिकारके बहाने उसपर फ़ौजलेकर चढ़ा ॥ ग़ाज़िउद्दीन ने बीचहीमें बादशाहको पकड़वाकर मासमेत उसकीआंखें निकलवालीं और जहांदारशाह के बेटे को तख़्तपर बिठलाकर उसका लक़ब आलमगीरसानी रखदिया ॥ १७५४ई०

आलमगीर सानी

عالمگیر ثانی

इस बादशाह के तख़्तपर बैठनेके थोड़ेही दिनोंबाद ग़ाज़िउद्दीन उस सूबेदारकी बहनसे जो अहमदशाह दुर्रानीकीतरफ़से पंजाबमें था शादी करनेके बहानेसे लाहौरमें घुसगया।औरउस की मा को अपने लश्करमें क़ैद करलाया ॥ अहमदशाह दुर्रानी इस ख़बरको सुनतेही आग बगूला बनगया । औरफ़ौरन् अपनी फ़ौजलेकर हिंदुस्तान पर चढ़ दौड़ा और सीधा दिल्ली चला आया ॥ १७५६ई० ग़ाज़िउद्दीन ने इस अर्से में सूबेदारकी माको भी छोड़दिया।और ख़ुद भी अहमदशाह दुर्रानी के हुज़ूर में हाज़िरहुआ ॥ लेकिन बेकुछ लिये वह कब फिरता था उस ने लोगों से रुपया वसूल करने में नादिरशाहसेभी ज़ियादासख़्ती और ज़ियादती की उधर शुजाउद्दौला से रुपया वसूल करनेको उसपर फ़ौज भेजी इधर जाटों से रुपया वसूल करने को आप चढ़ा।पहले बल्लमगढ़वालों को क़त्ल किया फिर मथुरा में क़त्लआम किया दिन मेले का था बेचारे बहुतेरे यात्री मर्द औरत लड़केवाले बेगुनाह काटगये मौसिम गर्मियोंकाआगया था इसीलिये जो कुछ हाथ लगा लेलिवाकर फिर अपने वतन को चलता हुआ ॥ चलते वक़ बादशाहने उससे यह कहा कि आप मुझको ग़ाज़िउद्दीन के हाथ में न छोड़जाइये इसलिये नजीबुद्दौला रुहेले को अपनीतरफ़से सिपहसालार मुक़र्रकरगया।जब ग़ाज़िउद्दीन बेक़ाबू हुआ उसने अपनी मदद के लिये मरहटोंको बुलाया । बाजीरावके तीनबेटे थे।बाला

ऊपर इस लूट का माल हाथ लगा सात करोड़ का तो निरा एक तख़्त ताऊस था ॥ नादिरशाह ने लोगों से रुपया लेनेमें बड़ी ज़ियादती की बड़ेबड़े इज्ज़तदारों को कोड़ोंसे पिटवाया। बहुतेरों ने इस ख़ौफ़ से ज़हर खालिया ॥

निदान सिंधु नदी पार तो नादिरशाह ने सब इलाक़ों पर अपना क़ब्ज़ा रक्खा। और सिंधुवार का मुल्क मुहम्मदशाह को छोड़ दिया ॥

एक तवारीख़वाला यह भी लिखता है कि नादिरशाह को हिन्दुस्तानमें आसिफ़जाह औरसआदतख़ांने मिलकर बुलाया था। और इन्हींकी दग़ाबाज़ी से मुहम्मदशाहने शिकस्तखायी लेकिन इसका कुछ पक्का सुबूत नहीं मिलता ॥

कुछदिनों पीछे जब नादिरशाह अपने मुल्कमें बलवाइयोंके हाथसे मारागया *। उसके सर्दारोंमें से अहमदख़ां अबदाली जिसे लोग अब अहमदशाहदुर्रानी कहते हैं क़ंदहार का बादशाह बन बैठा ॥ और बल्ख़सिंध कश्मीरपर सबर न करके रुख़ हिंदुस्तानकी जानिब फेरा और लाहौर लेताहुआ सरहिंदमें आ दाख़िलहुआ। लेकिनवहां बादशाही फ़ौजसेशिकस्तखाकर पंजाबकेसूबेदारसे कुछख़राजठहराताहुआ अपनेवतनकोमुड़गया

४७ई०

थोड़ेही दिनोंबाद मुहम्मदशाह इस दुन्यासे सिधारा †। और उसका वलीअहद अहमदशाह तख़्तपर बैठा ॥

४८ई०

अहमदशाह

احمد ٤

इसने सआदतख़ां के दामाद सफ़दरजंगको वज़ीर बनाया लेकिन सफ़दरजंगकी आसिफ़जाहकेपोते ग़ाज़िउद्दीनसेलाग पड़गयी औरदर्बारकेसबलोग ग़ाज़िउद्दीनकीतरफ़थे नितदिल्ली केगली कूचोंमें तर्फ़ैनकेआदमियोंसे दंगाफ़सादहोनेलगा और ख़ानेजंगीका बाज़ार ख़ूबही गर्महुआ। इस सबबसेसफ़दरजंग

* تاریخ وفات نادرشاه في النار و السقر معه الجد والپدر سنه ١١٦٠ هجري

† इस ग्रंथकर्त्ता के परदादाके चचेरे भाई फ़तहचन्दको इसीने जगतसेठी का ख़िताब दियाथा ॥

विज़ारतसे इस्तीफ़ादेकर अवधकी तरफ़ अपनी सूबेदारी पर चलागया ॥ लेकिन बादशाहकी मीज़ां ग़ाज़िउद्दीनसेभीनहीं पटी जबवहजाटोंके क़िले भरतपुर और डीगसे लड़रहाथा बादशाह शिकारके बहाने उसपर फ़ौजलेकर चढ़ा ॥ ग़ाज़िउद्दीन ने बीचहीमें बादशाहको पकड़वाकर मासमेत उसकीआंखें निकलवालीं और जहांदारशाह के बेटे को तख़्तपर बिठलाकर १०५४ई॰ उसका लक़ब आलमगीरसानी रखदिया ॥

आलमगीर सानी

عالمگیر ثاني

इस बादशाह के तख़्तपर बैठनेके थोड़ेही दिनोंबाद ग़ाज़िउद्दीन उस सूबेदारकी बहनसे जो अहमदशाह दुर्रानीकीतरफ़से पंजाबमें था शादी करनेके बहानेसे लाहौरमें घुसगया।औरउस की मा को अपने लश्करमें क़ैद करलाया ॥ अहमदशाह दुर्रानी इस ख़बरको सुनतेही आग बगूला बनगया। औरफ़ौरन् अपनी फ़ौजलेकर हिंदुस्तान पर चढ़ दौड़ा और सीधा दिल्ली १७५६ई॰ चला आया ॥ ग़ाज़िउद्दीन ने इस अर्से में सूबेदारकी माको भी छोड़दिया। और ख़ुद भी अहमदशाह दुर्रानी के हुज़ूर में हाज़िरहुआ ॥ लेकिन बेकुछ लिये वह कब फिरता था उस ने लोगों से रुपया वसूल करने में नादिरशाहसेभी जियादासख़्ती और जियादती की उधर शुजाउद्दौला से रुपया वसूल करनेको उसपर फ़ौज भेजी इधर जाटों से रुपया वसूल करने को आप चला। पहले बल्लभगढ़वालों को क़त्ल किया फिर मथुरा में क़त्लआम किया दिन मेले का था बेचारे बहुतेरे यात्री मर्द औरत लड़केवाले बेगुनाह काटेगये मौसिम गर्मियोंकाआगया था इसीलिये जो कुछ हाथ लगा लेलिवाकर फिर अपने वतन को चलता हुआ ॥ चलते वक़्त बादशाहने उससे यह कहा कि आप मुझको ग़ाज़िउद्दीन के हाथ में न छोड़जाइये इसलिये वह नजीबुद्दौला रुहेले को अपनीतरफ़से सिपहसालार मुक़र्रर करगया। जब ग़ाज़िउद्दीन बेख़ौफ़ हुआ उसने अपनी मदद के लिये मरहटोंको बुलाया। बाजीरावके तीनबेटे थे। बालाजी

जीराव रघुनाथराव और एक मुसलमानीके पेटसे शम्शेरबहादुर बाजीरावके मरने पर बालाजीराव पेशवाहुआ और शम्शेर बहादुरके हाथमें बिल्कुल बुंदेलखण्डरहा बांदे के न०्वाब इसी शम्शेर बहादुरकी औलादमें हुए॥

परशूजी भोंसला सितारे के गिर्दनवाहका रहनेवाला पहले तो सवारों में नौकरी करताथा। लेकिन साहूने दर्जा बढ़ाकर उसे बराड़का हाकिम बना दिया अब उसका चचेरा भाई रघुजी उसकी जगह पर बैठकर पेशवासे खार खाता था॥ जब रघुजीने अपने मंत्री भास्कर पंडित को बंगाला लूटने के लिये भेजा। बादशाही अहल्कारों ने क़ाबू चलता न देख कर पेशवाको उसके मुक़ाबले के लिये उभारा॥ यह फ़ौरन् मुर्शिदाबाद पहुँचा। और उस वक़् तो जो कुछ क़रार हुआथा लेकर बंगाला भास्करसे बचादिया॥ लेकिन जबदूसरी दफ़ा भास्कर ने बंगाले में लूटमार मचायी। और पेशवा से कुछ मदद न पायी॥ सूबेदार ने फ़रेब देकर भास्करको मुलाक़ात के लिये बुलाया। और मुलाक़ातके वक़् उसका कामही तमाम करडाला॥ पर आख़िर रघुजीको कटकका इलाक़ा देकर बंगाले की आमदनीसे भी चौथके नामसे कुछ सालाना मुक़र्रकरना पड़ा। निदान इधरभी समुद्रतक मरहटों का क़दम आगया॥

१७४२ई०

सांहू बेऔलाद मरा राजारामकी बेवाऔरत ताराबाई अब तक जीतीथी बालाजीराव ने अपना मतलब गांठने के लिये उससे कहलादिया कि मैंने एक आपका पोता रामराजा छुपा रक्खा है और साहू से मरते वक़् एक काग़ज़ लिखवा लिया कि नामको तो राजसेवाजीके खानदानमें रहे। पर कामबिलकुल राजका पेशवाकरे॥ निदान रामराजा सितारे में रहा। और पेशवाका दर्बार पूनामेंजमा॥

१७४९ई०

ग़ाज़िउद्दीन की मदद के लिये पेशवाकाभाई रघुनाथराव आया। महीनेभर तक दिल्लीका क़िला घिरारहा॥ बादशाह ने अपनेवलीअहद अलीगुहरको तो जान बचानेकेलियेपहले

सेकिसी तरफ़को भेजदियाथा अब नजीबुद्दौलाकोभी भागना पड़ा। बादशाहने क़िलेका दर्वाज़ा खुलवादिया ग़ाजिउद्दीन को फिर विज़ारत का इख़्तियार मिला॥

अहमदशाहदुर्रानी अपनेलड़के तैमूरशाहको पंजाबमेंछोड़ गयाथा जब रघुनाथरावने दिल्लीसे फ़ुर्सतपायी ग़नीमत समझकर पंजाब परभी क़ब्ज़ा किया और मरहटों का निशान कटकसे अटक तक पहुंचा दिया॥ हिमालय से समुद्र तक इन्हीं का डंका बजता था। और सारे हिन्दुस्तान पर इन्हीं का हुक्म चलता था॥ जो था इन्हीं की खुशामद करताथा। और जो आफ़त में पड़ता था इन्हीं से मदद मांगता था॥ रघुनाथरावतो किसी मरहटे को पंजाबकी हुकूमत पर छोड़कर दखन को चला गया। औरअहमदशाहदुर्रानी ने यह ख़बर सुनकर फिर हिंदुस्तान पर चढ़ाव किया॥ १७५८ ई॰ मरहटे उस के सिंधुनदी पार उतरतेही पंजाब छोड़ भागे औरवह फ़रागतसे अपनी फ़ौज लिये सहारनपुर के साम्हने जमना आ उतरा। १७५९ ई॰ ग़ाज़िउद्दीन ने उसीदम बादशाहके मारडालनेका हुक्मदिया और आप जाटों की अमल्दारीमें चलागया॥ ग़ाज़िउद्दीनके आदमियोंने बादशाहको छुरियोंसे मारकर जमनाकी रेत में डालदिया। बदमआशोंने वहां उसकाकपड़ातक उतारलिया॥

पेशवाको जब यह हाल मालूमहुआ बड़ी धूमधामका लश्कर अहमदशाहदुर्रानीके मुक़ाबलेको रवाना किया उसका चचेरा भाई सदाशिवराव भाऊ इसलश्करका सर्दारथा। और उसकाबेटा विश्वासरावभी साथ था॥ रास्ते में बहुतसी फ़ौजें राजपूतोंकी आ मिलीथीं और चूरामनकी औलाद में राजा सूरजमल के साथ तीस हज़ार जाट भी शामिल थे इस बुड्ढे ने भाऊ को सलाह दी किआपअसबाब औरतोपख़ाना पैदल सिपाहियों के साथ मेरेक़िले में रख दीजिये। और खाली लश्करोंसे अपनीक़ौमके दस्तूरबमूजिब दुश्मनको तंगकीजिये॥ भाऊ घमंडमें छाया इस नेक सलाह पर कुछ भी ख्याल न

किया। सूरजमल+थोड़ेही दिनोंबाद दिल्ली के डेरों से जुदा होकर अपने इलाक़ेको चल दिया॥

अहमदशाहदुर्रानी अनूपशहरमें छावनी डाले हुए था। दिल्लीमें कुछथोड़े से सिपाही छोड़ रक्खे थे उनसे मरहटोंका मुक़ाबला नहोसका॥ भाऊने वहां बहुत ज़ियादती की। दीवानखासमें जो चांदी की छतलगीथी बिल्कुल उखाड़ली॥ मस्जिद और मक़बरों को भी लूटपाट और तोड़ फोड़से बाक़ी नछोड़ा। वहतो बिस्वासरावको तख़्त पर बैठाना चाहता था लेकिन फिर सलाह यहीठहरी किअहमदशाहदुर्रानीका काम तमाम हो लेने दो भाऊ दिल्ली से कुंजपुरेकी तरफ़ गया॥ अमहदशाहदुर्रानीने भी अनूपशहरसे कूचकिया भाऊने अपने मोरचे पानीपतमें क़ायमकिये सत्तर हज़ार तो इसके साथ सवारथे और दोसौतोप बहीर समेत मोरचोंके अन्दरतीनलाख आदमीसे हरगिज़ कम न थे। इसमें नौहज़ार आदमी इबराहीमखां गारदीके तहतमें पल्टन के सिपाही॥ अंगरेज़ों की देखादेखी अब यहांवालेभी पल्टन रखनेलगेथे। अहमदशाह दुर्रानीकेसाथ तिरपनहज़ार सवार और अड़तीसहज़ार पैदल सिपाही थे॥ लेकिन तोपें तीसहीथीं इसने भी मोरचे क़ायम किये रसदकी दोनों तरफ़ तकलीफ़थी। छेड़छाड़ हमेशाआपसमें चली जातीथी॥ पर यह जिगरा किसीका न होताथा कि एक दूसरे के मोरचों पर हल्ला करदे हिंदुस्तानी रईसोंने जो अहमदशाहदुर्रानीकी तरफ़थे उससे बहुतकहा कि आप हल्ला करदीजिये॥ लेकिन उसनेयही जवाब दिया कियहमुआमला लड़ाईका है आपलोग इससे नामहरमहैं और बातमें जोचाहिये सोकीजिये। लेकिन इसको मेरेभरोसे पर छोड़ दीजिये॥ सचहै तबले सारंगीका मुआमला होता तो ये महरूहोते लड़ाईकाभेददिल्ली लखनऊवाले क्याजानें उसने एक छोटासा लाल खेमा अपने मोरचोंके आगे खड़ाकर रक्खाथा

+ भरतपुरके राजा इसी की औलादमें हैं॥

उसीमें सुबहको नमाज़ पढ़नेके लिये और शामको खानाखा-
नेके लिये आताथा बाक़ी दिनभर घोड़ेपर सवार फ़ौज में घूमा
करताथा॥ हिन्दुस्तानी रईसोंसे कहता कि आप मज़ेसे पैरफै-
लाकर सोइये अगर आपका बालभी बांकाहो तो मेरा ज़िम्मा
लेकिन तारीफ़ है इसबातकी कि उसका हुक्म उसके लश्कर
में विधाताके लेखकीतरह माना जाताथा मक़्दूर क्या कि वह
हुक्मदे। और फिर कोई बे उसेकिये सांसलेसके। शुजाउद्दौला
अह्मदशाहदुर्रानीकीतरफ़था। उसीकी मारिफ़त भाऊनेसुलह
का पयामभेजाथा॥ लेकिन अह्मदशाह दुर्रानीने यहीजवाब
दिया कि मैंतो मददको आयाहूं सिर्फ़ लड़नेका मालिकहूं सु-
लहकरनेके मालिक हिन्दुस्तानी रईसहैं हिन्दुस्तानी रईसों की
मर्ज़ीथी किसुलहहोजावेलेकिन नजीबुद्दौलाने नहींमानाउसने
यहीकहा कि अगर बे मरहटोंका ज़ोर तोड़े अह्मदशाहदुर्रानी
चलाजावेगा। तोफिर हमसबका कहींपताभी न लगेगा॥ उधर
मरहटोंने भाऊका देराघेरा। औरवावैला मचाया॥ किभूखेमरने
से तो लड़कर मरनाबिहतर है भाऊको वादा करना पड़ा कि
कल सुबहको ज़रूरलड़ूंगा सबने पीठन दिखानेकीक़समखायी
और बीड़ा लेलेकर रुख़सतहुए भाऊ ने फिरशुजाउद्दौला को
लिखा। कि अब पियालापुर होगया॥ बूंदभरभी समाने की
जगह नहीं जो करना है झटपटकरो। नहीं तो यही आखिरी
पयाम समझो॥ शुजाउद्दौला का मुंशी पहररातरहे इस ख़त
को पढ़कर सुनाही रहाथा कि मुख़बिरोंने मरहटों के तय्यार
होनेकी ख़बरदी शुजाउद्दौलाने उसीवक्त जाकर अह्मदशाह
दुर्रानीको जगाया॥ वह देरेमेंसे तय्यार निकला॥ उसी दम
घोड़ेपर सवारहोकर दुश्मनकी तरफ़ चला। और फ़ौज को
साथ आनेका हुक्म दिया। जब अँधेरादूरहुआ देखा कि मर-
हटोंकी सारीफ़ौज तोपख़ाना आगे कियेहुये झंडे उड़ाती डंके
बजाती हर हर पुकारती जैसे क़दमों समुद्र की तरह उमड़ी
चली आतीहै लेकिन तोपें जो उनकी छूटती थीं गोले सिर-

किया। सूरजमल+थोड़ेही दिनोंबाद दिल्ली के देरों से जुदा होकर अपने इलाक़ेको चल दिया॥

अहमदशाहदुर्रानी अनूपशहरमें छावनी डाले हुए था। दिल्लीमें कुछथोड़े से सिपाही छोड़ रक्खे थे उनसे मरहटोंका मुक़ाबला नहोसका॥ भाऊने वहां बहुत ज़ियादती की। दीवानखासमें जो चांदी की छतलगीथी बिल्कुल उखाड़ली॥ मस्जिद और मक़बरों को भी लूटपाट और तोड़ फोड़से बाक़ी नछोड़ा। वहतो बिश्वासरावको तख़्त पर बैठला चाहता था लेकिन फिर सलाह यहीठहरी किअहमदशाहदुर्रानीका काम तमाम हो लेने दो भाऊ दिल्ली से कुंजपुरेकी तरफ़ गया॥ अहमदशाहदुर्रानीने भी अनूपशहरसे कूचकिया भाऊने अपने मोरचे पानीपतमें क़ायमकिये सत्तर हज़ार तो इसके साथ सवारथे और दोसौतोप बहीर समेत मोरचोंके अन्दरतीनलाख आदमीसे हरगिज़ कम न थे। इसमें नौहज़ार आदमी इबराहीमखां गारदीके तहतमें पल्टन के सिपाही॥ अंगरेज़ों की देखादेखी अब यहांवालेभी पल्टन रखनेलगेथे। अहमदशाह दुर्रानीकेसाथ तिरपनहज़ार सवार और अड़तीसहज़ार पैदल सिपाही थे॥ लेकिन तोपें तीसहीथीं इसने भी मोरचे क़ायम किये रसदकी दोनों तरफ़ तकलीफ़थी। छेड़छाड़ हमेशाआपसमें चली जातीथी॥ पर यह जिगरा किसीका न होताथा कि एक दूसरे के मोरचों पर हल्ला करदे हिंदुस्तानी रईसोंने जो अहमदशाहदुर्रानीकी तरफ़थे उससे बहुतकहा कि आप हल्ला करदीजिये॥ लेकिन उसनेयही जवाब दिया कियहमुआमला लड़ाईका है आपलोग इससे नामहरमहैं और बात में जोचाहिये सोकीजिये। लेकिन इसको मेरेभरोसे पर छोड़ दीजिये॥ सचहै तबले सारंगीका मुआमला होता तो ये महरमहोते लड़ाईकाभेददिल्ली लखनऊवाले क्याजानें उसने एक छोटासा लाल खेमा अपने मोरचोंके आगे खड़ाकर रक्खाथा।

+ भरतपुरके राजा इसी की औलादमें हैं॥

किया। सूरजमल+थोड़ेही दिनोंबाद दिल्ली के डेरों से जुदा होकर अपने इलाक़ेको चल दिया॥

अहमदशाहदुर्रानी अनूपशहरमें छावनी डाले हुए था। दिल्लीमें कुछथोड़े से सिपाही छोड़ रक्खे थे उनसे मरहटोंका मुक़ाबला नहोसका॥ भाऊने वहां बहुत जियादती की। दीवानखासमें जो चांदी की छतलगीथी बिल्कुल उखाड़ली॥ मस्जिद और मक़बरों को भी लूटपाट और तोड़ फोड़से बाक़ी नछोड़ा। वहतो बिश्वासरावको तख्त पर बैठाला चाहता था लेकिन फिर सलाह यहीठहरी किअहमदशाहदुर्रानीका काम तमाम हो लेने दो भाऊ दिल्ली से कुंजपुरेकी तरफ़ गया॥ अहमदशाहदुर्रानीने भी अनूपशहरसे कूचकिया भाऊने अपने मोरचे पानीपतमें क़ायमकिये सत्तर हज़ार तो इसके साथ सवारथे और दोसौतोप बहीर समेत मोरचोंके अन्दरतीनलाख आदमीसे हरगिज़ कम न थे। इसमें नौहज़ार आदमी इबराहीमखां गारदीके तहतमें पलटन के सिपाही॥ अंगरेज़ों की देखादेखी अब यहांवालेभी पलटन रखनेलगेथे। अहमदशाह दुर्रानीकेसाथ तिरपनहज़ार सवार और अड़तीसहज़ार पैदल सिपाही थे॥ लेकिन तोपें तीसहीथीं इसने भी मोरचे क़ायम किये रसदकी दोनों तरफ़ तकलीफ़थी। छेड़छाड़ हमेशाआपसमें चली जातीथी॥ पर यह जिगरा किसीका न होताथा कि एक दूसरे के मोरचों पर हल्ला करदे हिंदुस्तानी रईसोंने जो अहमदशाहदुर्रानीकी तरफ़थे उससे बहुतकहा कि आप हल्ला करदीजिये॥ लेकिन उसनेयही जवाब दिया कियहमुआमला लड़ाईका है आपलोग इससे नामहरमहैं और बात में जोचाहिये सोकीजिये। लेकिन इसको मेरेभरोसे [illegible] दीजिये॥ सचहै तबले सारंगीका सु[illegible] रखहोते लड़ाईकाभेदादिल्ली लखनऊ[illegible] छोटासा लाल खेमा अपने मोरचों[illegible]

+ भरतपुरके राजा इसी की [illegible]

उसीमें सुबहको नमाज़ पढ़नेके लिये और शामको खानाखा-
नेके लिये आताथा बाक़ी दिनभर घोड़ेपर सवार फ़ौज में घूमा
करताथा ॥ हिन्दुस्तानी रईसोंसे कहता कि आप मज़ेसे पैरफै-
लाकर सोइये अगर आपका बालभी बांकाहो तो मेरा ज़िम्मा
लेकिन तारीफ़ है इसबातकी कि उसका हुक्म उसके लश्कर
में विधाताके लेखकीतरह माना जाताथा मक्दूर क्या कि वह
हुक्मदे । और फिर कोई बे उसेकिये सांसलेसके । शुजाउद्दौला
अहमदशाहदुर्रानीकीतरफ़था । उसीकी मारिफ़त भाऊनेसुलह
का पयामभेजाथा ॥ लेकिन अहमदशाह दुर्रानीने यहीजवाब
दिया कि मैंतो मददको आयाहूं सिर्फ़ लड़नेका मालिकहूं सु-
लहकरनेके मालिक हिन्दुस्तानी रईसहैं हिन्दुस्तानी रईसों की
मर्ज़ीथी किसुलहहोजावेलेकिन नजीबुद्दौलाने नहींमानाउसने
यहीकहा कि अगर बे मरहटोंका ज़ोर तोड़े अहमदशाहदुर्रानी
चलाजावेगा । तोफिर हमसबका कहींपताभी न लगेगा ॥ उधर
मरहटोंने भाऊका डेराघेरा । औरवावैला मचाया ॥ किभूखेमरने
से तो लड़कर मरनाबिहतर है भाऊको वादा करना पड़ा कि
कल सुबहको ज़रूरलड़ूंगा सबने पीठन दिखानेकीक़समखायी
और बीड़ा लेलेकर रुख़सतहुए भाऊ ने फिरशुजाउद्दौला को
लिखा । कि अब पियालापुर होगया ॥ बूंदभरभी समाने की
जगह नहीं जो करना है झटपटकरो । नहीं तो यही आख़िरी
पयाम समझो ॥ शुजाउद्दौला का मुंशी पहररातरहे इस ख़त
को पढ़कर सुनाही रहाथा कि मुख़बिरोंने मरहटों के तय्यार
होनेकी ख़बरदी शुजाउद्दौलाने उसीवक़ जाकर अहमदशाह
दुर्रानीको जगाया ॥ वह डेरेमेंसे तय्यार निकला ॥ उसी दम
घोड़ेपर सवारहोकर दुश्मनकी तरफ़ चला । और फ़ौज को
साथ आनेका हुक्म दिया । जब अँधेरादूरहुआ देखा कि मर-
हटोंकी मारिफ़त तोपखाना आगे कियेहुये झंडे उड़ाती डंके
बजाती हर हर पुकारती लंबे क़दमों समुद्र की तरह उमड़ी
चली आती है लेकिन तोपें जो उनकी छुटती थीं गोले सिर-

कुल अफ़्गानों के सिरपर से पारचलेजाते थे। लगते किसी को भी नहीं थे॥ आख़िर इबराहीमख़ां गारदीने झुकके भाऊ को सलाम किया और कहा कि आप हमेशा जबमैं अपनेसिपाहियोंकी तनख़ाहका तक़ाज़ा करताथा बुरामानतेथे लेकिन अब आज इनका तमाशा देखिये और यह कहके झंडाहाथमें लेलिया। औरअपने सिपाहियोंको हुक्मदिया॥ कि बंदूकेंबंद करें। और संगीनोंसे दुश्मनपर हल्लाकरदें॥ रुहेलोंको इनसे बहुत नुक्सान पहुँचा। ठहर न सके उनके हटनेसेअह्मदशाह दुर्रानीका वज़ीर सामने पड़गया॥ और उधर से भाऊ और विश्वासराव ने भी चुनेहुए आदमीलेकर उसपर हल्लाकिया॥ वज़ीरका भतीजा अताईख़ां उसके बराबरही मारा गया॥ और साथी भी भागने लगे थे लेकिन वह घोड़े से नीचे उतर पड़ा। और इसबातपर जीसे मुस्तइद होगया॥ कि मरजाना। लेकिन मैदान नहीं छोड़ना॥ निदान वज़ीर के मारे जाने में कुछ बाक़ी न रहाथा कि इसीअर्सेमें अह्मदशाहदुर्रानीकुछ ताज़ी फ़ौजलेकर उसतरफ़आगया इससबबसेलड़ाई थमगयी पर तौभी ग़ल्बा मरहटोंकी जानिबथा॥ यहांतक कि उसने अपनी फ़ौजको आगेबढ़नेका हुक्मदिया। और साथहीयहभी कह दिया॥ कि जोजिसेभागतेदेखे। तुर्त उसकाशिरकाटडाले॥ और कुछ किसी क़दर सिपाह जो बायें बाज़ूपरथी उसे मोड़कर बग़लसे मरहटोंपरभेजी। इस हिक्मत ने काम कर दिया भाऊ और विश्वासराव लड़तेहीरहे फ़ौजसारी सपनाहोगयी॥मैदान में मुर्दोंके ढेरअलबत्तादिखाईदेतेथे। अफ़्ग़ानोंने दसकोसतक मरहटोंका पीछाकिया ज़मींदारभी मरहटों की जाननहींछोड़ते थे॥ और जो जीतेहाथ लगतेथे। ज़िबह कियेजातेथे॥ बाईस हज़ार लौंडी गुलामबनायेगये। अक्सर उनमें सर्दार और दर्जे वालेथे॥ इबराहीमख़ां गारदीक़ैदमें मरा। कहते हैं कि उसके ज़ख़्मोंमेंज़हर भरदियाथा॥ विश्वासरावकीतो लाशमिलगयी परभाऊकी लाशमें शुबहारहा इसमें शक नहीं कि सब मिल

कर दोलाख आदमी से ऊपर इस लड़ाई में मारेगये महाजी *
सेंधियाजिसने ग्वालियरकी रियासतक़ाइमकी जनमकोलँगड़ा
हुआ॥ मल्हारराव हुल्कर जिसके घरानेमें इंदौरकी रियासत
चलीआतीहै लड़ाईकेशुरूहीमें भागकेबचा। इससे बढ़करकभी
किसीफौजको शिकस्त नहीं मिली और इस से बढ़कर किसी
शिकस्तकेसबब मातमभी नहींफैला॥ सारेदखनमें गोयास्यापा
बैठगया। इसधक्केसे फिरमरहटों का ज़ोर कभी नहीं पूरा उभ-
रनेपाया। अह्मदशाहदुर्रानीने इसफ़तहसे कुछ फ़ाइदा नहीं
उठाया। अपने वतनकी तरफ़चलागया॥ और फिरकभीहिंदु-
स्तानका कुछखयालनहींकिया शुजाउद्दौलाने आलमगीरसा-
नीकेलड़के आलीगुहरको बंगालेसे बुलाकरतख्तपरबिठाया॥

शाहआलम

شاه عالم

इसनेअपनालक़ब शाहआलम रक्खा। दिल्लीकाआखिरी १७७१ई
मुसल्मान बादशाहहुआ॥ आठदस बरसइसने इलाहाबादकी
तरफ़ काटे। दिल्लीवाले नजीबुद्दौलाकी हुकूमतमें रहे॥ जब
नजीबुद्दौला मरगया। बादशाह मरहटोंकी मदद लेकर दिल्ली
में दाखिलहुआ॥ थोड़ेहीदिन नजफ़खांकी मुख्तारीमें चैनसे १०८८ई
कटेथे। किनजीबुद्दौलाकेपोते गुलामक़ादिरने जिसके बापको
नजफ़खांने बिगाड़ाथाअपनेरुहेलेक़िलेकेदर्वाज़ेपरलाजमाये॥
बादशाहको ज़मीनपर पटककर छातीपरचढ़बैठा। और उसकी
आंखें कटारसेनिकालकर बाहरफेंकदीं फिरक़िलेकोखूबलूटा॥
बाक़ी कुछनछोड़ा। बेगमोंकेबदनसे कपड़ातक उतरवालिया॥

निदान इसवारिदातकी खबर जबमहाजी सेंधियाकोपहुंची
फ़ौरन दिल्लीपर चढ़आया। और गुलामक़ादिरको पकड़कर

---

* बाज़े इसको महदाजीभी कहतेहैं॥

[illegible Urdu marginal notes with dates 1184 and 1202]

बड़ीबुरी हालतसेमारा ⊛ ॥ जैसाउसने कियाथा। वैसाहीफल पाया ॥ सेंधियाने बादशाहको हरदेगी चमचा समझकरक़िलेमेंबंदकिया। औरबाहरसबअपना क़ब्ज़ारक्खा ॥ बादशाहबेचाराभूखोंमरताथा। रअय्यतकाहालभी परेशांथा ॥ किइसीअर्सेमें लार्डलेक अंगरेज़ीफौजलेकर वहांपहुंचगया बादशाहकोपिंशनमुक़र्रर करदी वह चैनसे अपनेदिन काटने लगा। अंगरेज़ोंका मुफ़स्सलहाल दूसरे हिस्सेमें लिखाजायगा ॥

१८०३ ई०

॥ इति ॥

⊛ नाककान और हाथपैर काटकर औरआंखेंफोड़कर गुलामक़ादिरको एकलोहेकेपिंजरेमेंबंदकिया औरवहउसीमेंथोड़ीदेरबाद तड़पतड़पकरमरगया ॥

फ़ेहरिस्त दिल्ली के मुसल्मान बादशाहों की

नम्बर	पूरानाम	मशहूर नाम	जुलूससन् ईसवी	मौतसेमरा या मारा गया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
१	कुतुबुद्दीनऐबक....	कुतुबुद्दीन	१२०६	घोड़ेसे गिर कर मरा	१२१०	शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरीकागुलाम था इसीने मुसल्मानों की सल्तनत की जड़ जमायी ॥
२	आरामशाह	"	१२१०	....	....	नम्बर १ का बेटा था एक साल के अन्दर तख़्त से उतारा गया ॥
३	शम्सुद्दीन अल्तिमश	अल्तिमश	१२१०	मौतसे मरा	१२३६	नम्बर १ का गुलाम और दामाद था नामी बादशाह हुआ क़ुतबमीनार बनाया चंगेज़ख़ांकी चढ़ाईहुई॥
४	रुक्नुद्दीन फ़ीरोज़ शाह	रुक्नुद्दीन	१२३६	....	....	नम्बर ३ का बेटा था सातही महीने में तख़्त से उतारा गया बड़ा अय्याश और ग़ाफ़िल था ॥

नम्बर	पूरा नाम	मश्हूर नाम	जुलूससन् ईसवी	मौतसे मरा या मारागया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
५	रज़ीया सुल्तान बेगम	रज़ीया	१२३६	मारी गयी	१२३६	नम्बर ३ की बेटीथी औरत यही यहां तख़्त पर बैठी होशियारथी ॥
६	मुइज़्ज़ुद्दीन बह्राम	बह्रामशाह	१२३६	क़ैद में मरा	१२४१	नम्बर ३ का बेटा ॥
७	अलाउद्दीन मसूऊद	मसूऊदशाह	१२४१	मारा गया	१२४६	नम्बर ४ का बेटा था बुरा बादशाह था ॥
८	नासिरुद्दीन महमूद	„	१२४६	मौतसे मरा	१२६६	नम्बर ३ का बेटाथा निहायतनेक बादशाह था ॥
९	ग़यासुद्दीन बल्बन	बल्बन	१२६६	मौतसे मरा	१२८६	नम्बर ८ का बहनोई और वज़ीर था बड़ेदब्दबेवाला बादशाहहोगया नेकनामथा दिल्लीबड़ीरौनक़परथी ॥
[illegible]	[illegible]द्दीन कैकुबाद	कैकुबाद	१२८६	मारा गया	१२८८	नम्बर ९ का पोताथा गुलामों की सल्तनतका आख़िरी बादशाह हुआ निहायत अय्याश था ॥

११	जलालुद्दीन फ़ीरोज़ख़िलजी	जलालुद्दीन ख़िलजी	१२८८	मारागया	१२९५	सामने का नाइब नाज़िम पठान सादा और रहमदिल था दखन पर पहला हमला हुआ ॥
१२	अलाउद्दीनख़िलजी	अलाउद्दीन	१२९५	मौतसे मरा	१३१६	नम्बर ११ का भतीजाथा बहुतबड़ा बादशाहहुआ मिज़ाजका सख़्तथा॥
१३	कुतबुद्दीन मुबारक शाह	मुबारकशाह	१३१६	हिन्दू गुलाम के हाथसे मारागया	१३२१	नम्बर १२ का बेटा था निहायत अय्याश और बदनाम था दिल्ली में हिंदुओंका कुछदिनोंज़ोररहा आख़िरीख़िलजी बादशाह हुआ ॥
१४	ग़यासुद्दीन तुग़लक़	"	१३२१	काठके मकान तलेदबकर मरगया	१३२५	पहले पंजाब का सूबेदारथा अच्छा बादशाह था कैकुबाद का बाप क़राख़ां अब तक बंगाले में अपने काम परथा ॥
१५	मुहम्मद तुग़लक़	अलग़ख़ां	१३२५	मौत से मरा	१३५१	नम्बर १४ का बड़ा बेटा था बड़ा बादशाह बड़ा सख़ी बड़ा आलिम बड़ा बहादुर बड़ा इक़्बालमन्द बड़ा

नम्बर	पूरा नाम	मशहूरनाम	जुलूस सन् ईसवी	मौतसे मरा या मारागया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
						बेवकूफ़ बड़ा ज़ालिम बड़ा झक्की बड़ा पागल था॥
१६	फ़ीरोज़ तुग़लक़	फ़ीरोज़शाह	१३५१	मौतसे मरा	१३८८	नम्बर १५ का रिश्ते में भाई था बहुत अच्छा नेकनामबादशाह था बहुत सी इमारतें बनवाईं जमना से नहरें निकालीं॥
१७	गयासुद्दीन तुग़लक़	(दूसरा)	१३८८	मारा गया	१३८९	नम्बर १६ का पोताथा॥
१८	अबूबकर तुग़लक़	"	१३८९	क़ैदमें मरा	....	नम्बर १६ का पोताथा एक साल के अन्दर क़ैद हुआ॥
१९	नासिरुद्दीनमुहम्मद तुग़लक़	नासिरुद्दीन तुग़लक़	१३९०	मौतसे मरा	....	नम्बर १६ का बेटा था॥
२०	हुमायूं तुग़लक़ सिकन्दर शाह	सिकन्दर शाह	....	मौतसे मरा	१३९४	नम्बर १९ का बेटा था कुल ४५ दिन बादशाह रहा॥

२१	नासिरुद्दीन महमूद तुग़लक	महमूदतुग़लक	१३९४	मौतसे मरा	१४१२	नम्बर २० का बेटा था इसके ज़माने में यानी १३९८ ई० में तैमूर आया ॥
२२	दौलतख़ां लोदी	”	१४१२	....	....	१५ महीने बाद तख़्त से उतारा गया ॥
२३	ख़िज़रख़ां सय्यद	”	१४१३	मौतसे मरा	१४२१	पंजाब का हाकिम था ॥
२४	मुइज़्ज़ुद्दीन अबुल् फ़तह मुबारक शाह सय्यद	मुबारकशाह सय्यद	१४२१	मारा गया	१४३४	नम्बर २३ का बेटा था ॥
२५	मुहम्मदशाह सय्यद	”	१४३४	मौतसे मरा	१४४६	नम्बर २३ का पोता था ॥
२६	अलाउद्दीन सय्यद	”	१४४६	....	....	नम्बर २५ का बेटा था सन् १४५० ई० में दिल्ली की बादशाही बहलूल ख़ां लोदी के हवाले करके बदाऊं चला गया बादशाही निरी दिल्ली के गिर्दनवाह में रह गयी थी ॥
२७	बहलूलख़ां लोदी	बहलूललोदी	१४५०	मौतसे मरा	१४८८	पंजाब का हाकिम था अच्छा बाद-

नम्बर	पूरा नाम	मशहूरनाम	जुलूस सन् ईसवी	मौतसे मरा या मारागया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
						बेवकूफ़ बड़ा ज़ालिम बड़ा झक्की बड़ा पागल था ॥
१६	फ़ीरोज़ तुग़लक़	फ़ीरोज़शाह	१३५१	मौतसे मरा	१३८८	नम्बर १५ का रिश्ते में भाई था बहुत अच्छा नेकनामबादशाह था बहुत सी इमारतें बनवाईं जमना से नहरें निकालीं ॥
१७	गयासुद्दीन तुग़लक़	(दूसरा)	१३८८	मारा गया	१३८६	नम्बर १६ का पोताथा ॥
१८	अबूबकर तुग़लक़	"	१३८६	क़ैदमें मरा	....	नम्बर १६ का पोताथा एक साल के अन्दर क़ैद हुआ ॥
१६	नासिरुद्दीनमुहम्मद तुग़लक़	नासिरुद्दीन तुग़लक़	१३६०	मौतसे मरा	....	नम्बर १६ का बेटा था ॥
२०	हुमायूं तुग़लक़ सिकन्दर शाह	सिकन्दर शाह	....	मौतसे मरा	१३६४	नम्बर १६ का बेटा था कुल ४५ दिन बादशाह रहा ॥

२१	नासिरुद्दीनमहमूद तुग़लक	महमूदतुग़लक	१३९४	मौतसे मरा	१४१२	नम्बर २० का बेटा था इसके ज़माने में यानी १३९८ ई० में तैमूर आया ॥
२२	दौलतख़ां लोदी	„	१४१२	....	....	१५ महीने बाद तख़्त से उतारा गया ॥
२३	ख़िज़रख़ां सय्यद	„	१४१३	मौतसे मरा	१४२१	पंजाब का हाकिम था ॥
२४	मुइज़्ज़ुद्दीन अबुल् फ़तह मुबारक शाह सय्यद	मुबारकशाह सय्यद	१४२१	मारा गया	१४३४	नम्बर २३ का बेटा था ॥
२५	मुहम्मदशाह सय्यद	„	१४३४	मौतसे मरा	१४४६	नम्बर २३ का पोता था ॥
२६	अलाउद्दीन सय्यद	„	१४४६	....	....	नम्बर २५ का बेटा था सन् १४५० ई० में दिल्ली की बादशाही बहलूल ख़ां लोदी के हवाले करके बदाऊं चला गया बादशाही निरी दिल्ली के गिर्दनवाह में रह गयी थी ॥
२७	बहलूलख़ां लोदी	बहलूललोदी	१४५०	मौतसे मरा	१४८८	पंजाब का हाकिम था अच्छा बाद-

	पूरा नाम	मशहूरनाम	जुलूससन् ईसवी	मौतसे मरा यामारागया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
						शाहथा अमल्दारीबढ़ी पंजाबऔर जौनपुर शामिलहुआ॥
२८	सिकन्दर लोदी	„	१४८८	मौत से मरा	१५१६	नम्बर २७ काबेटाथाबड़ाबादशाह हुआ लेकिन हिंदुओं को बहुतदुख दिया फ़रंगियों का पहला जहाज़ यहां इसी के वक़् में आया॥
२९	इबराहीम लोदी	„	१५१६	मारागया	१५२६	नम्बर २८ का बेटाथा बाबर की लड़ाई में मारागया॥
३०	ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	बाबरशाह	१५२६	मौतसे मरा	१५३०	तैमूर के ख़ान्दान में था अँगरेज़ों की अमल्दारी तक इसी ख़ान्दान में सल्तनत रही बाबर बहुत अच्छा आदमी और बहुत अच्छा बादशाहथा॥

३१	हुमायूंशाह	,,	१५३०	गिर के मरा	१५५५	नम्बर ३० का बेटा था शेरशाह ने निकाल दियाथा ईरान के बादशाह की मददलेकरआया और फिर हिन्दुस्तान का बादशाह हुआ ॥
३२	शेरशाह सूर	शेरशाह	१५४०	कालिंजरके मुहासरे में मेगज़ीनउड़नेसेभुलस कर मरगया	१५४५	इसका बाप सहन पठान सहसराममें ५०० घोड़ों का जागीरदार था अच्छे औरअक़्लमन्द बादशाहों में गिना जाताहै ॥
३३	सलीमशाह सूर	सलीमशाह	१५४५	मौतसे मरा	१५५३	नम्बर ३२ काबेटा था नेकनामरहा ॥
३४	मुहम्मद शाह अदली	अदली	१५५३	....	....	नम्बर ३३ का चचेरा भाई था बड़ा नादान और बदकारथा लोग अंधली पुकारते थे ॥
३५	अबुलमुज़फ़्फ़र जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर	अकबरशाह	१५५६	मौतसे मरा	१६०५	नम्बर ३१ का बेटा था यहांके मुसल्मान बादशाहों में बेशक सब से अच्छा हुआ बल्कि दुन्याके अच्छे

	पूरा नाम	मशहूरनाम	जुलूससन् ईसवी	मौतसे मरा यामारागया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
						शाहथा अमल्दारीबढ़ी पंजाबऔर जौनपुर शामिलहुआ ॥
२८	सिकन्दर लोदी	”	१४८८	मौत से मरा	१५१६	नम्बर २७ काबेटाथाबड़ाबादशाह हुआ लेकिन हिंदुओं को बहुतदुख दिया फ़रंगियों का पहला जहाज़ यहां इसी के वक़ में आया ॥
२९	इबराहीम लोदी	”	१५१६	मारागया	१५२६	नम्बर २८ का बेटाथा बाबर की लड़ाई में मारागया ॥
३०	ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	बाबरशाह	१५२६	मौतसे मरा	१५३०	तैमूर के खानदान में था अँगरेज़ों की अमल्दारी तक इसी खानदान में सल्तनत रही बाबर बहुत अच्छा आदमी और बहुत अच्छा बादशाहथा ॥

३१	हुमायूंशाह	,,	१५३०	गिर के मरा	१५५५	नम्बर ३० का बेटा था शेरशाह ने निकाल दियाथा ईरान के बादशाह की मददलेकरआया और फिर हिन्दुस्तान का बादशाह हुआ ॥
३२	शेरशाह सूर	शेरशाह	१५४०	कालिंजरके मुहासरे में मेगज़ीनउड़नेसेभुलस कर मरगया	१५४५	इसका बाप सहन पठान सहसराममें ५०० घोड़ों का जागीरदार था अच्छे औरअक़्लमन्द बादशाहों में गिना जाताहै ॥
३३	सलीमशाह सूर	सलीमशाह	१५४५	मौतसे मरा	१५५३	नम्बर ३२ काबेटा था नेकनामरहा ॥
३४	मुहम्मद शाह अदली	अदली	१५५३	....	....	नम्बर ३३ का चचेरा भाई था बड़ा नादान और बदकारथा लोग अंधली पुकारते थे ॥
३५	अबुल्मुज़फ़्फ़र जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर	अक्बरशाह	१५५६	मौतसे मरा	१६०५	नम्बर ३१ का बेटा था यहांके मुसल्मान बादशाहों में बेशक सब से अच्छा हुआ बल्कि दुन्याके अच्छे

नम्बर	पूरा नाम	मशहूर नाम	जुलूससन् ईसवी	मौतसे मरा या मारागया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
४५	शाहआलम	"	१७७१	गुलाम क़ादिर ने अंधा किया	१८०३	कटक से अटक तक पहुँचे अहमदशाह दुर्रानी की चढ़ाई हुई ॥ नम्बर ४४ का बेटा था दिल्लीका आख़िरी मुसल्मान बादशाह हुआ अँगरेज़ों ने मरहटों की क़ैदसे छुड़ा कर पिंशन मुक़र्रर करदी ॥

(सिवाय इन ऊपर लिखेहुए बादशाहों के बीस और भी दिल्ली के तख़्त पर बैठेक्योंकि क़ुतुबुद्दीन ऐबक से लेकर शाहआलमतक ६५ गिने जाते हैं पर उन बीसोंने रफ़ीउद्दर्जात और रफ़ीउद्दौलाकी तरह ऐसे थोड़े २ दिनों सल्तनत की कि उनके नामों से इस फ़िहरिस्त का बढ़ाना मुनासिब न जाना) ॥

तफ़्सील बड़े वाक़िओंकी

	सन् ई० से पहले
सिकन्दरने हिन्दुस्तान पर चढ़ाईकी	३३१ बरस
बिक्रमादित्य गद्दी पर बैठा ॥	५७ बरस
	सन् ईसवी
नौशेरवां का लश्कर हिंन्दुस्तान में आया	५३० (कुछ दिन पीछे)
वलीदके जमाने में मुसल्मानों ने यहां बड़ी धूम मचायी	७११
सुबुक्तगीनने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की	९७०
मह्मूद ग़ज़नवी की पहली चढ़ाई	१००१
सोमनाथ टूटा	१०२४
शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी की पहली चढ़ाई	११९१
पृथीराजको पकड़ लिया और मारडाला	११९३
कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्लीका बादशाहहुआ	१२०६
चंगेज़ख़ां की फ़ौज हिन्दुस्तानकी तरफ़आयी	१२१२
औरत (रज़ीया बेग़म) बादशाहहुई	१२३६

तफ़सील बड़े वाक़िओंकी

सल्तनत गुलामोंके खान्दानसे निकलकर खिल्जियोंके हाथमें आई	१२२८
दखन पर मुसल्मानों की पहली चढ़ाई हुई	१२९४
सल्तनत खिल्जियोंका खान्दान तमामहोनेपर तुगलकों को मिली	१३२१
तैमूर दिल्ली में आया	१३९८
सल्तनत सय्यदों से लोदियों ने ली	१४५०
पानीपतकी लड़ाईमें इब्राहीमलोदीको मारकर बाबर दिल्ली के तख्तपरबैठा	१५२६
सक्केने चमड़ेका सिक्का चलाया	१५३९
अक्बरने इसदुन्यासे कूचकिया	१६०५
मरहटों का राज क़ाइम करनेवाला सेवाजी पैदा हुआ	१६२७
दिल्लीमें नादिरशाहने क़तल आम किया	१७३९
पानीपतमें अहमदशाहदुर्रानी ने भाऊ को शिकस्तदी	१७५९
दिल्ली के आखिरीबादशाह शाहआलमको गुलामक़ादिरनेअन्धाकिया	१७८८
लार्डलेक अंगरेज़ी फ़ौजलेकर दिल्ली पहुंचा शाह आलमको मरहटोंकी क़ैद से छुड़ाकर पिन्शन मुक़र्रर करदी	१८०३

फ़िहरिस्त राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द फ़ेलो यूनीवर्सिटी कलकत्ता व इलाहाबाद की बनाई किताबों की जो मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में और उनके अजण्टों से सब जगह मिलसक्ती हैं ॥

हिन्दी	उर्दू
१ विद्यांकुर	१ सच्ची बहादुरी
२ गीतगोविन्दादर्श	२ उर्दू सर्फ़ व नह्व
३ भूगोलहस्तामलक	३ जामजहाँनुमा
पहला हिस्सा	पहला हिस्सा
दूसरा ,,	दूसरा ,,
तीसरा ,,	तीसरा ,,
४ इतिहास तिमिरनाशक	चौथा ,,
पहला हिस्सा	४ आइनै तारीख़नुमा
दूसरा ,,	पहला हिस्सा
तीसरा ,,	दूसरा ,,
५ गुटका	५ दिलबहलाव
पहला हिस्सा	पहला हिस्सा
दूसरा ,,	दूसरा ,,
तीसरा ,,	तीसरा ,,
६ मोहमुद्गर	६ हालातहिनरी कार्टकर
७ सिक्खों का उदय अस्त	(कमिश्नर बनारस)
८ जैन और बौद्धका भेद	७ मज़ामीन राजा शिवप्रसाद
९ प्रेमरत्न	८ छोटा जामजहाँनुमा
१० प्रश्नोत्तरमाला	९ फ़ारसी सर्फ़ व नह्व
११ मानवधर्मसार	१० कुछ बयान अपनी
१२ आलसियों का कोड़ा	ज़ुबान का
१३ कल्पभाष्य वा कल्पसूत्र	११ सिक्खोंका तुलू और ग़ुरूब
१४ राजाभोज का सपना	१२ हक़ाइक़ुल्मौजूदात
१५ छोटा भूगोल हस्तामलक	१३ क़िस्सैसैंडफ़ोर्डवमर्टन
१६ वर्णमाला	पहला हिस्सा

हिन्दी		उर्दू	
१७	बामामनरंजन		दूसरा ,,
१८	मानवधर्मसार अंगरेजी के साथ		तीसरा ,,
१९	उपनिषद्सार	१४	मिफ़्र्अतुल काहिलीन
२०	निवेदन	१५	हरूफ़तहज्जी
२१	लीलावती भाषा	१६	क़िस्सा गुलाब चमेली
२२	योगवाशिष्ठ के कुछ चुने श्लोक		
२३	मानवधर्मसारकासार		
२४	स्वयम्बोध मय उर्दू		

बाल्यविवाह

नाटक

पण्डित देवदत्त शर्म्मा फ़र्रुखाबाद
निवासी रचित

दोहा

बल विद्या वय बिभव क्षति दिन२ होत दिखात।
बाल बिवाह कुरीति सों देश रसातल जात॥

जिसको

सर्व साधारण के लाभार्थ चौथी बार अपने परम
मित्र कबि बचनेश मिश्र जी की प्रसन्नतानुसार

[illegible] यंत्रालय फ़र्रुखाबाद
में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया

चौथी बार ४०० जिल्द | सन १८९७ ई० | मौल्य प्रति पु० ≈)॥ डेढ़ आना

समर्पण

भइया रघुबर !

तुम हमसे सदैव विवाह के लिये ठुनकते हो अभी तुम बालक हो भला विवाह करके करोगे ! जो कहो कि अपनी दुल्हिन के साथ खेल खिलौना खेलेंगे तो अब तुम्हें खेलने के स्थान में पढ़ना चाहिये - समझो ! नहीं समझे तो लो चाहे लो इस किताब बाल्य विवाह नाटक को पढ़ डालो फिर कहोगे तो तुम्हारा विवाह ही करवादेंगे

तुम्हारा भ्राता

देवदत्त शास्त्री

फ़र्रुखाबाद

अथ

नाटक रम्भ

मंगल चरण

छन्द हरिगीतिका

पूरण प्रताप प्रमोद कर त्रय ताप हर वरचरण जे
जप जोग तंत अनन्त महिमा सति शिर आभरण जे
बच्चनेश गिरिजा प्रिये सुवेश हमेश तारण तरण जे
दुःख हरण अशरण शरण आनंद करण शंकर चरण जे

प्रस्तावना

(नट का प्रवेश)

नट — हे प्राण प्रिये कहाँ हो यह देखो आज की सभा कैसी शोभायमान लगती है, सब लोग पोशाकें बदले बैठे हैं भला सोचो तो आज कौनसा अभिनय होना योग्य है

(नटी का प्रवेश)

नटी — हे आर्य्य पुत्र ! मैं आई आज कोई ऐसा नाटक खेलना चाहिये जो सब को रुचे और देशोपकारी हो

नट — मेरी समझ में बाल्य विवाह नाटक पण्डित देवदत्त शर्मा रचित खेलना चाहिये वह समय का उपकारी है क्योंकि आज कल जितनी देश की दुर्दशा है उसका अधिक भाग बाल्य विवाह ही के कारण है -

नटी — हां ! हां !! हमने भी पढ़ा है वह नाटक अत्यन्त उपयोगी है क्यों कि उसमें पंडित जी ने बाल्य बिवाह के दोष भले प्रकार दर्शाये हैं

नेपथ्य में — ऐं यह कौन न कर्ता है बाल्य विवाह में दोष क्या - बरंच इससे तो सन्तान की वृद्धि शीघ्र होती है।

नट — (नेपथ्य की ओर देखकर) लो प्यारी चचा साहब तो अज्ञान सेन बनकर आगये चलो हम तुम भी अपना अपना रूप बना कर सभा में आवं (दोनों जाते हैं)

प्रथमांक

स्थान — उपवन

(अज्ञानसेन का प्रवेश)

अज्ञानसेन — ऐं यह कौन बकती थी बाल्य विवाह में दोष क्या ? बरंच इससे तो सन्तान की वृद्धि शीघ्र होती है (अज्ञान सेन का प्रवेश) अहा ! आज ईश्वर ने बड़ी कृपा की जो

	आपसे भेंट ऊई कहो घर में आनन्द कुशल है॥
ज्ञानसेन	नारायण और आप की कृपा से क्षेम कुशल है आप अपने मंगल समाचार कहिये कहो पुत्र का बिवाह तो करि आये॥
अज्ञानसेन	आपकी अनुग्रह से आनन्द मंगल है बाल चन्द का विवाह बक्त अच्छी तरह से करि आया हूं दुलहिन भी आ गई है
ज्ञानसेन	कहो बहू तो होशियार है न
अज्ञान सेन	अभी बहू की क्या पूंछते हो अभी तो वह बालक है भला यह तो कहो आप अपने लड़के की शादी क्यों नहीं करते हैं यही उमर लड़के की खेलने खाने की है फिर क्या बूढ़ा होगा तब करोगे देखो मेरे लड़के की तो १२ ही बर्ष की उमर है आप के लड़के की तो २२ बर्ष की उमर हो चुकी है अब तो देर करना मुनासिब नहीं मेरी समझ में॥
ज्ञानसेन	हां! अब मेरे मन में भी है करूंहीगा परन्तु आपने तो बड़ी जल्दी की अभी तो उसकी उमर पढ़ने लिखने की थी॥
अज्ञान सेन	अजी भला ज़ियादा पढ़ने से होता ही क्या है अपने काम लायक़ पढ़ लिया जब ज़ियादा काम पड़ेगा तब देखा जायगा काम पड़ने से आप सीख जावेगा
ज्ञानसेन	यह तो है भला बिना पढ़े कोई कुछ धर्म्म कर्म्म भी सीख सक्ता है आपने धर्म्म शास्त्र पढ़ाया है या नहीं॥

अज्ञानसेन- अरे यार तुम क्या बात कहते हो धर्म्म शास्त्र पढ़ना ब्राह्मणों का काम है न कि हम लोगों का अपने लोगों को तो कुछ हिसाब किताब सिखा देना और क्या करना है पंडिताई थोड़े ही करना है

ज्ञानसेन- हाँ आप कोसी बुद्धि सभी की हो तो काहे को कोई पढ़ावें लिखावें विद्या लोप हो न हो जाय तभी तो सारा हिन्दुस्तान ईसाई, मुसलमान हुआ जाता है भला यह किसने कहा कि ब्राह्मण ही विद्या पढ़ें, और न पढ़े ॥

अज्ञानसेन अरे यार विद्या में रक्खा ही क्या है ! सैकड़ों मारे २ फिरते हैं कोई टके को नहीं पूछता है और वे पढ़े सैकड़ों बतला देवें, हज़ार पती, लखपती हैं, देखिये जब तक आप का लड़का विद्या पढ़ने में लगा रहेगा तब तक मेरे लड़के के लड़के खेलने लगें गे, पोतों का सुख देखने में आवेगा-

ज्ञानसेन यार पोतों का सुख क्या देखो गे, अपने कुल का सत्यानाश देखो गे, विद्या के बराबर धन ही दूसरा क्या है, माता पिता का यही धर्म्म है कि लड़के को जहाँ तक हो विद्या पढ़ावे देखिये, रूप योवन सम्पन्ना: बिशाल कुल सम्भवा: विद्या हीना न शोभन्ते निर्गंधाइव किंशुका:

अज्ञानसेन (सक्रोध) ये कहा सो सुना, पर आप ने ये क्या कहा कि मैं कुल का सत्यानाश देखूँ गा सबो लोग ऐसा करते हैं - आठ, दस वर्ष की लड़की, आठ नौ वर्ष का

लड़का। छोटी छोटी उमर में ब्याह हो जाना सभी को अच्छा लगता है और फिर सन्तान का सुख जल्दी देखने में आता है इसमें बुराई ही क्या है ॥

ज्ञानसेन - अजी बड़ी बुराई है प्रथम तो बाल्य विवाह में संतान होना ही कठिन है फिर हुई भी तो अल्पायु और रोग ग्रसित होगी। भला विचारिये तो कि पृथ्वी में कच्चा वीर्य्य बोया जावे तो क्या उगेगा -

अज्ञानसेन - आप तो बड़े विद्वान हैं सब संसार का हाल ही तो आप जानते हैं संसार के विपरीत न करना चाहिये मसल भी मशहूर है "बड़ी बहू बड़े भाग। छोटा दूल्हा सदा सुहाग"

ज्ञानसेन - धन्य है आपको और आप के दृष्टान्त को जब बहू १५ वर्ष की होगी और लड़का ८ ही वर्ष का तब व्यभिचार ही फलेगा या और कुछ ॥

अज्ञानसेन - येह आपतो ऐसी ही कहा करते हैं जो ईश्वर करता है सो होता है मनुष्य का बश ही क्या है आप अपने लड़के को किसके यहाँ ब्याहेंगे क्या विचार है

ज्ञानसेन मेरा विचार जिसकी कन्या विद्वान् होगी उसके यहाँ करने का है ॥

अज्ञानसेन खुशी आप की (दोनों जाते हैं)

(इति प्रथमाङ्क।)

...दासेप॥

...सरा ...

स्थान-कमरा

(सेठ सुमतिचन्द्र और पुरोहितजी से बातालाप)

...रोहित	सेठ जी मैं आप से कई बार कह चुका कि कन्या का ब्याह कर डालिये आप ध्यान ही नहीं देते पढ़ाते ही चले जाते हैं देखो तो भला उसकी उमर १५ बर्ष की हो गई सब लोग आप को लाग देते हैं और शास्त्र में भी लिखा है अष्ट बर्षा भवेद् गौरी नौ बर्षा च रोहिणी । दश बर्षा भवेद् कन्या ततः उर्द्ध रजस्वला ॥ माता चैव पिता तस्या जयष्टो भ्राता तथैवचाः । त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वलाम ॥२॥ क्या आपने यह नहीं सुना है
सुमतिचन्द्र-	पुरोहित जी आपने पढ़ा सो सुना परन्तु यह श्लोक किसी प्रमाणिक ग्रन्थ का नहीं है देखो वेदानुकूल मनुस्मृति में लिखा है कि १६ बर्ष की कन्या का और २५ बर्ष के पुरुष का बिवाह होना चाहिये अब कहिये आप की माने या वेद की ॥
...रोहित	माननीय तो वेद ही है पर कलियुग में तो यही श्लोकों को सब लोग मानते हैं ॥

[illegible] पुरोहित — मानों हमतो वेदोक्त बातों का प्रमाण मानते हैं खुशी आपकी लोग तो निन्दा ही करेंगे (पुरोहित जी का प्रस्थान)

सुमतिचन्द — आप ही आप) देवदत्त शर्म्मा को बुलाना चाहिये वह पंडित योग्य हैं और मुझे उनका विश्वास है वह मेरी पुत्री के गुण भी जानते हैं आशा है वह उत्तम वर मेरी पुत्री के योग्य खोज लायंगे (प्रगट) नौकर देवदत्त शर्मा को खोज ला (नौकर जाता है देवदत्त शर्म्मा आते हैं॥

देवदत्त — कहिये सेठ जी आज क्या कार्य्य है किसलिये मुझे आपने बुलाया है॥

सुमति चन्द — प्रणाम महाराज मैं ने इसलिये बुलाया कि मेरी कन्या अब वर योग्य हुई किसी उत्तम गुण स्वरूप विद्या सम्पन्न वर की खोज कीजिये कन्या के गुणों से तो आप अभिज्ञ ही हैं॥

देवदत्त — अच्छा सेठ जी सुखदा के योग्य तो वर मैंने पहिले ही विचार रक्खा है॥

सुमतिचन्द — कहिये कौन?

देवदत्त — ज्ञानसेन के पुत्र बिद्याधर सुखदा के योग्य है उसी के साथ आप बिवाह करिये॥

सुमतिचन्द — तो क्या आप विद्याधर के गुण स्वभाव को आप जानते ही हैं॥

देवदत्त — जी हां सेठ जी वह मेरा ही शिष्य है आप किसी तरह की शंका न कीजिये निस्संदेह स्वीकार कीजिये

पण्डित जी बहुत अच्छा आपका कहना मैं सत्य-

	माना करता हूँ (लड़की की मा से) सुखदा की मा! तू भी स मभी ठीक है ना ॥
स्त्री –	जी हाँ पंडित जी का कहना मुझे भी प्रतीति है मेरी स स्मति है उस घर के चाल चलन से मैं भी परचित हूँ वह सब योग्य है मेरी यही सम्मति है ॥
देवदत्त –	अच्छा मैं जाता हूँ पक्का किये आता हूँ ॥
सुमतिचन्द –	पण्डित जी ब्याह मैं सत्य शास्त्रानुकूल करूंगा यह भी कह दीजियेगा ॥
देवदत्त	बहुत अच्छा (गया)

[illegible]

[illegible]

(ज्ञानसेन निज स्त्री सहित अपने स्थान में बैठे परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं)

स्त्री -	हे! पीतम अब तो विद्याधर ब्याहने के योग्य है अब वि वाह की फ़िक्र करना चाहिये।
ज्ञानसेन -	हाँ! मुझे भी यही फ़िक्र पड़ रही है कोई इसके गुण- स्वभाव वाली कन्या मिले तो ब्याह किया जाय।
स्त्री -	यह बिचार तो आप का ठीक है परन्तु आज कल कोई विद्या तो पढ़ाता ही नहीं विद्वान् लड़की मिलना ज़रा कठिन है ॥

ज्ञानसेन	प्रिये! यह तो सही परन्तु ईश्वर बड़ा न्यायकारी और दयालु है जो उसी पर पूर्ण विश्वास करता है उसकी आशा अवश्य पूरी होती है, धैर्य्य अवलम्ब न करो देखो ईश्वर की कृपा से अवश्य विद्वान् मिल जायगा (देवदत्त शास्त्री का प्रवेश)
ज्ञानसेन	पालागन महाराज! आज बड़ी कृपा की कहिये क्या आज्ञा है॥
देवदत्त	जै होय! सेठ जी आपके लड़के के बिवाह की बात चीत लाया हूं - न्यायचन्द की पुत्री सुखदा के साथ आपके लड़के का योग मिला है आपके लड़के के और कन्या के गुण, स्वभाव भी सदृश हैं आप इसको स्वीकार कीजिये॥
ज्ञानसेन	आपकी इच्छा ऐसी है तो मुझे भी स्वीकृत है लड़के का तो बिवाह करना ही है - मैं चाहता हूं कन्या भी मेरे लड़के के समान हो आप परीक्षा कर लीजिये॥
देवदत्त	मैं लड़की के गुण, स्वभाव से अच्छी तरह परिचित हूं, देखिये नोद्वहेत् कपिलां कन्यां नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम्। नालोमिकां नातिलोमां न वाचाटान्न पिंगलाम्॥२॥ अर्थात् न पीला वर्ण, न अधिकांगी, न रोग युक्ता, न लोम रहिता, न बहुत लोम वाली, न बकबाद करने हारी न भूरे नेत्र वाली है ये अवगुण कोई नहीं हैं और ये गुण विद्यमान हैं - अव्यङ्गाङ्गीं सौम्य नाम्नी हंस वारण गामिनीम्॥

तनु लोम केश दशनां मृदङ्गी मुदहंसित्वयस् ॥२॥

अर्थात् सूधे अंग हैं, सुखदा नाम है, हंस वा हथिनी के तुल्य चाल है, सूक्ष्म लोम, केश और दंत युक्त जिसकेस ब अंग कोमल हैं जितनी बातें चाहिये सब हैं ॥

ज्ञानसेन पण्डित जी मुझे आपका विश्वास है आपने देख ही लीहै फिर क्या सन्देह है आप मालिक हैं (स्त्री से) विद्याधर की मा। पण्डित जी का कहना तुमने सुना ??

स्त्री हाँ! मुझे भी पण्डित जी का कहना मंजूर है।

ज्ञानसेन अच्छा पंडित जी मुझे हर तरह से आपका कहना स्वीकार है पर बिवाह वेदोक्त रीति से करूंगा॥

देवदत्त सेठ जी बहुत अच्छा आपभी वेदोक्त चाहते हैं और वेभी वेदोक्त ही करने कहते हैं अच्छा दोनों जनों की एक सम्मति है पर बिवाह फाल्गुण कृष्ण पंचमी का ठीक लग्न है अच्छा तो अब मैं जाता हूं (गया)

[illegible]टांक

[illegible]थांक

स्थान—सुमति चंद का भौन

(सुमति चंद अपनी स्त्री सहित बैठे हैं)

(देवदत्त का प्रवेश)

सुमतिचन्द	आइये ! आइये महाराज ! कहिये क्या कर आये ॥
देवदत्त	बिवाह फाल्गुण कृष्ण पंचमी का ठीक कर आया हूं ॥ आप और उनकी सम्मति भी हो गई, वह भी वेदोक्त बिवाह करना चाहते और आप भी, अब मैं समझता हूं कि बड़ी उत्तम रीति से बिवाह होगा सज्जनों को ऐसा ही चाहिये ॥
सुमतिचन्द	बहुत अच्छा पण्डित जी, आपने बहुत अच्छा किया बिवाह फाल्गुण कृष्ण पंचमी को कर देंगे-
देवदत्त	अच्छा तो मैं जाता हूं ।
	(जाता है)
सुमतिचन्द	अरी सुखदा की मा ! सुखदा के ब्याह की बात चीत तो पण्डित जी ठीक कर आये हैं ॥
स्त्री	(उत्कण्ठा पूर्वक) हां ! अच्छा इसका ब्याह करना ही या
सुमतिचंद	अच्छा अब तो मैं कोठी जाता हूं क्योंकि बिवाह के लिये मुझे सामान तैयार करना है ॥
	(जाता है)

[illegible]दाक्षेप

पांचवां अं[illegible]

स्[illegible]न-कोठी

(ज्ञानसेन और उनका गड़बड़ चंद गुमाश्ता स्थित)

ज्ञानसेन	मुनीम जी विद्याधर के बिवाह की बातचीत सुमति चन्द की कन्या से हुई है सम्बंध तो अच्छा हुआ है बिवाह फागुन कृष्ण पंचमी को ठहरा है
मुनीम	सेठ जी सम्बंध तो बहुत अच्छा हुआ ब्याह के दिन नज़दीक हैं तय्यारी करना चाहिये
ज्ञानसेन	दिन नज़दीक हैं तो अपने क्या तैयारी ही क्या है केवल हवन करना है सो जब बधू घर में आवेगी कर वा दिया जायगा ॥
मुनीम	सेठ जी आप यह क्या कहते हैं शहर में आपका इतना नाम है आपको धूम धाम से ब्याह करना चाहिये तायफ़े मँगवाने का बन्दोबस्त करना चाहिये न करोगे तो आप की बड़ी निन्दा होगी ॥
ज्ञानसेन	मुनीम जी आप खातिर जमा रखना जैसा मेरा नाम है वैसा ही मैं कर दिखाऊँगा मैं वृथा धन कुरीतियों में ख़र्च कर पाप भागी न होऊँगा ॥
मुनीम	सेठ जी रंडियों के नाच में क्या बुराई है बतलाइये तो सही ॥
ज्ञानसेन	मुनीम जी बड़ा पाप महा पाप सुनिये यह आप जानते ही हैं इनके कर्म्म व्यभिचार, मद्यपान, मांस भक्षण यही हैं ना ! फिर भला जो द्रव्य तुम्हारे इनको प्राप्ति होगी उससे इन कर्म्मों के सिवाय यह थोड़े ही करने बैठेंगी, तो बस मैं जो कुछ इनको देऊँगा उसका पापभागी मैं ही होऊँगा - द्वितीय यह भी प्रत्यक्ष है कि जब यह नृत्य गान करती हैं तो हाव भाव और अपनी ला-

वरायता दर्शाकर मनुष्यों की वृत्ती को आकर्षण कर ती हैं फिर भला मैं जब द्रव्य देकर नाच कराऊंगा और उनका नाच देखकर लोग कामी होकर व्यभिचा र में प्रवृत्त होंगे तो क्या मैं पाप भागी न होऊंगा क्यों कि मूल कारण तो मैं ही ठहराऊंगा ॥

मुनीमजी अच्छा नाच न सही आतिशबाज़ी मैं तो कुछ बुराई न हीं है ॥

ज्ञानसेन अजी मुनीम जी आतिशबाज़ी में तो आप क्या कम अ धर्म्म समझते हैं आप नहीं जानते कि राजा महाराजा य ज्ञ इसलिये करते हैं कि पुष्टि कारक वस्तुएं परमाणु रूप होकर आकाश मंडल में वायु द्वारा जाकर जल की वृष्टि कारक होती हैं वेद शास्त्र में लिखा है कि हवन से जो वायु शुद्ध होती है वह जल को बर्षा ती है जिससे मनुष्यों को अन्नादि पदार्थ भलीभांति पृथ्वी से प्राप्त होते हैं सो जब आतिश बाज़ी में इ सके अतिरिक्त दुर्गंधित पदार्थ जलकर वायु द्वारा आ काश में जावेंगे और वायु को खराब कर रोग उपजने का हेतु होंगे तथा जल वृष्टि भी यथोचित न होगी तो क्या ऐसे कर्म्म का करने वाला परोपकार का हेतु जो हवन है उसको न कर उसके अतिरिक्त कर्म को कर पा प भागी न होगा ॥

मुनीम जी वेद शास्त्र की बातें तो आप जानें मैं तो जो देखता हूं सो कहता हूं अच्छा ! तो खुशी आप की पर बरात तो खूब धूम धाम से सजाइये फूल खटोला बागबाड़ी

	आदि में तो कोई पाप नहीं ॥
ज्ञानसेन	अजी यह बात तो बड़ी मोटी है मुनीम जी सैकड़ों रुपये लगाकर बनवाते हैं और एक क्षण मात्र में फाड़ फुड़कर फेंक देते हैं कहो भला यह खेल मूर्खों का है या नहीं प्रथम तो मार पीट हो जाती है, दूसरे जितना धन लग जाता है उसमें से एक पैसा भी किसी काम में नहीं आता यह खेल तो महा मूर्खता का है ॥
मुनीम जी	सेठ जी अच्छा तो आप क्या करेंगे ॥
ज्ञानसेन	जैसा करूं वैसा देख लेना ॥

बाटाक्षेप

छटवां अंक

(यज्ञस्थान विवाहमंडप)

(ज्ञानसेन अपने पुत्र विद्याधर सहित और सुमति चन्द अपनी कन्या सुखदा सहित संपूर्ण कुटुंबियों के मध्य में बैठे हैं पण्डित देवदत्त जी वेदोच्चार कर रहे हैं स्वाहा शब्द से यज्ञ मंडप पूरित होर रहा है)

ज्ञानसेन	हे ! प्रिये भ्रात गणों ! मैं ने जो प्रचलित कुरीत्यनुसार कोई कार्य्य नहीं किया सो आप बंधु गणों से प्रार्थना है उचित जान क्षमा कीजिये और जो धन इनसे बचाया है सो यह १००७ मुद्रा में बधू वर की न्योछावर करता हूँ कि जो गो रक्षा, पाठशाला आदि उत्तम कार्य्यों में लगाये जायँगे और यह भी सब भाइयों से निवेदन है कि इसी प्रकार आप सब भ्रात गण करें कि जिससे महा उपकार संसार का होवे ॥
पण्डित	धन्य है ज्ञानसेन वा सुमतिचन्द्र को कि जिन्हों ने संसार की कुचालियों को झूँठी जानकर उत्तम दर्शाई और वेद शास्त्र की मर्य्यादा रक्खी सत्य है, सत् पुरुषों का धन उत्तम ही कार्य्यों में व्याप्त होता है सब सज्जनों को उचित है कि आज से वेदोक्त बिवाह की परिपाटी डालें और कुरीतियों को शीघ्र उठावें ॥

अज्ञान चंद का स्थान

(बालचन्द की स्त्री गंगा अपनी सहेली ललिता के सहित बातें करती)

गंगा —	अरी! आज तो बहुत दिनों बाद आई बैठो॥
ललिता —	अरी बैनों क्या आप उदास क्यों बैठी हो॥
गंगा —	क्या कहूँ उदासी का हाल मत
ललिता —	भला कहो तो सही॥
गंगा —	अजी कहें क्या! (रोती हुई) हमारे मा बाप ने तो हमारा जन्म अकारथ कर दिया अपने जन्म को रोती हूँ और क्या कहूँ रोने का हाल॥
ललिता —	क्या कहूं बहन यही तो मेरा भी हाल है इसी दुःख से मैं भी राति दिन सूखी जाती हूं मेरे तो रात को न जाने कहाँ रहते हैं कभी आधी रात भुरहरी रात आये भी तो में नहीं जानती कहाँ आये और कहाँ गये मुझ से कभी बात भी नहीं करते!
गंगा	बहन तुझ से बोलें चाहें न बोलें तेरा ब्याह तो योगी जोगा हुआ है तुझ से उमर में तो बड़ा है कहीं जाना आना होगा तुझे नहीं चाहता होगा मेरे तो अभी १२ बर्ष के हुए हैं मेरी उमर १८ बर्ष की हो चुकी है मेरे तो मेरे पास तक नहीं आते सास मेरी बहुत समझाती है तब रोने लग जावे हैं क्या करूं बहन कुछ कहते बनता नहीं।
ललिता —	उनका क्या दोष वे तो अभी समझते ही नहीं जब जाने बूझेंगे तब बोलेंहींगे दोष तो माता पिता का सब का है जिन्होंने नहीं बिचारा॥
गंगा —	अरी बहन अब क्या होना है मेरी तो जिन्दगी अकारथ जाती है रात को आसमान ताका करती हूं पड़े २

नींद पड़ती ही नहीं है तदपि बहन किसी से कहूं तो दोष होवे और कहीं जाऊं तो घर वाले मारा मारेंगे। हाय! मेरी तो हर तरह से मृत्यु है। हाय! कुछ पढ़ी लिखी होती तो पुस्तकें पढ़कर जी समझा लेती सो भी नहीं। रात दिन पशु की तरह यहां पड़ी रहती हूं। देखो कल पारबती बहन ने कथा सुनाई कि सीता जी ने कितना क्लेश सहा परन्तु पतिव्रता धर्म्म न छोड़ा। तब मेरा कलेजा ठंडा हुआ नहीं तो जब मुझे दुनियाँ दारी का सुख याद आता है तब छाती फटने लगती है। पर रोज़ रोज़ कोई थोड़े ही कथा सुनाने आता है! हाय! देखो ललिता बहन। गिरधर मल की बहू भी इसी दुःख में झुरा करती है पर वह रात दिन पोथी लिये पढ़ा करती है। मुझे पढ़ना भी नहीं आवे जो मैं कभी कभी कथा सुनूं। तो बहन मेरा धर्म्म कैसे न रहे। पर मरदों से कथा सुनना भी बहन अच्छा नहीं है। देखिये कल्लूमल की बेटी हररोज़ कथा सुनने जाती है। गंगा नहाने के बहाने सोलहदास के शिवालय में भगवानदास पण्डित की कथा सुनने को जाती रही सो सुना गया कि पण्डित भगवान दास जी ने मनुस्मृती में पढ़कर सुनाया कि जिसका पति छोटा हो या अधिक आयु का हो तो वह स्त्री संतान उत्पत्ति के लिये किसी अन्य पुरुष से संयोग करे तो कुछ दोष नहीं सो महादेई पण्डित जी को गोरा गोरा। मोटा सब्ज़ डुपट्टा डाले हुए हे बिन्दी लगाये। पान खाये देखा सो बहन सुना जाता है कि पण्डित जी को देख कर रीझ गई सो आज दो बजे

रात को कातिक नहाने के बहाने उठकर पण्डित जी से गंगा के किनारे वाले मन्दिर में मिली सो कहीं पुलिस के सिपाहियों ने देख लिया और पुजारी महाराज सहित दोनों को कोतवाली पकड़ लाये देखो बहन बिना पढ़े लिखे यही खराबी होती है -

ललिता अरी हां बहन विद्या न पढ़ाया या गुण बिना देखे जैसे के साथ मन माना ब्याह कर दिया उसीसे तो यह दुःख सहने पड़ते हैं, अगले ज़माने में स्वयम्वर होते थे जो अब भी पोथी पुराणों में देखे सुने जाते हैं सो अब कोई वेद पुराण वाली बात पर चले तो लोग नाम धरते हैं देखो उसका फल भी आखों देखते हैं जभी उनकी जान को रात दिन बैठी २ बिचारी रोया करती है ईश्वर इस अन्याय को जल्दी हटा ले, बहन अबतो मैं जाती हूं -

गंगा कैसे कहूं बहन जाने को ॥

(ललिता गाई)

बारे बलम को मैं ब्याही, रोबत बीते रात ।
मैं तो इते को बुलाऊं, वे तो उते भागे जात ॥
सो सों तो मुखहू न बोलें, भइया गरे लपिटात ।
जियरा मैं कैसे समझाऊं, काम आगी लागी गात ॥
सूनी सिजरिया डर लागै, राव धाय धाय खात ।
जरिओ बबुल जिन ब्याहो, जरिओ एसो अहिवात ॥
नीका न ब्याह बारे पन का, वचनेश तोरी बात ॥

कटाक्षेप
आठवाँ अंक
स्थान घर

(सुखदा अपने लड़कों को उत्तम शिक्षा देरहीहै)

पुत्र! तुम्हारे पिता का घर में आने का समय हुआ है ज-
ब घर में आवें तो विनय पूर्वक निवेदन करना और पढ़
ने लिखने में खूब चित्त लगाना कहीं इधर उधर न जाना
मनुष्य का रूप विद्या है ॥

विद्याधर का प्रवेश

सुखदा (नम्रता पूर्व्वक) हे! सौ भाग्य वर आज आप अति काल कर के क्यों आये किस कार्य्य में लगे रहे ॥

विद्याधर प्राण प्रिये! आज मेरा एक मित्र आ गया था इस्से देरहोगई

सुखदा हे प्राणनाथ! जब आपके आने का समय निकल जाताहै तब मुझे चैन नहीं पड़ता, जब तक आपका मुख पंकज न देखूँ व्याकुलता रहती है ॥

विद्याधर मेरा भी मन तो तेरे ही में बसा रहता है मैं तुझसे एक क्षण मात्र बिलग रहने में अप्रसन्न रहता हूँ पर अनेक कार्य्य का करने वाला कहाँ से लाऊँ और दूकान का कार्य्य बिना अपने किये नहीं होता ॥

मुझे दृढ़ विश्वास है कि आपका चित्त मेरे बिना नहीं लग-
ता होगा आपका प्रेम जिस प्रकार मेरे ऊपर है मुझे भली-

भाँति प्रगट है मैंतो ईश्वर से यही प्रार्थना सदैव करती हूँकि हे परमात्मा! सबको ऐसेही पति मिलें जिससे सब मेरी भाँत सनाथ होकर सुख को प्राप्त होवें॥

विद्याधर प्रिये! क्यों इतनी मिथ्या बड़ाई करती हो कहो आज कल लड़के को क्या पढ़ाती हो॥

सुखदा अभी तो वर्णोच्चार शिक्षा पढ़ाती हूँ, तद् पश्चात् व्यवहार भानु पढ़ाऊँगी॥

विद्याधर हे प्रिये मैं तृषित हूँ, दासी को जल लाने की आज्ञा कर

सुखदा अच्छा मैं लाती हूँ, (पानी लेने जाती है)

विद्याधर (सुखदा का हाथ पकड़ कर) हे! प्रिये तुम क्यों कष्ट करती हो, दास दासी किसलिये हैं॥

सुखदा हे प्राणनाथ! क्या चाकरों को और काम नहीं है, मुझ दासी से तो आपकी कुछ सेवा ही नहीं बनती है भला यह मेरा शरीर किस काम आवेगा, आपकी सेवा जहाँ तक कर पाऊँ वहाँ तक मेरा जन्म कृतार्थ होगा मेरे पिता, माता ने यही उपदेश दिया है कि जहाँ तक हो सके पति की सेवा करना स्त्री का मुख्य धर्म्म है॥

विद्याधर (सुखदा के गले में हाथ डालकर) धन्य है प्रिये तुझे और तेरे माता पिता तथा कुल को विशेषतः धन्य है मेरे भाग्य को जिसके वश तुझसी बाला गुण रत्नमाला पाई, ईश्वर तुझ सा सुखी समस्त भारतवर्ष को करे और यह कवि वचन सफल हो :—:

बाल विवाह कुरीति, रहै न भारत महँ तनिकँ॥
सुत सम्पति सुख प्रीति, लहें नारि नित र नवल॥ (इति समाप्त)

इश्तहार

नोट—लिखी हुई पुस्तकें सब मुंशी चिंतामणि शिवचरण लाल बुकसेलर शहर फ़र्रुखाबाद के यहां मिलेंगी

न०	नाम	की०	नं०	नाम	की०
१	सच्चा मित्र	≡)	१२	प्र० भू० एशिया	~)
२	अंजाम बदी नाटक	≡)	१३	प्र० यूरुप	~)
३	फाल्गुण बिनोद	~)	१४	प्र० विद्याङ्कुर	~)
४	आर्य्य मन रंजन	≡)	१५	परिभाषा बोधनी	~)
५	आर्य्य भजन संग्रह	~)	१६	हिं० प० पु० कुंजी	।||
६	सुरभी संताप नाटक	~)	१७	तथा दूसरी पु० की कुंजी	।|||
७	विद्या अविद्या	।||	१८	तथा तीसरी कुंजी	~)||
८	विद्या बिरोधी बातें	~)	१९	तथा चौथी	≡)
९	सेत्र प्रभाकर प० भा०	~)||	२०	हवन के लाभ	~)
१०	तथा दूसरा भाग	≡)	२१	पोप पुष्पांजली	।||
११	प्र० भूगोल हिन्दुस्तान	~)	२२	पावस पचीसी	~)

चिंतामणि शिवचरण लाल बुकसेलर

[illegible] फ़र्रुखाबाद

हयशालहोत्र

जिसमें

घोड़ों के सम्पूर्ण शुभाशुभलक्षण व रोगादि
उत्पत्ति व औषधें वर्णित हैं

जिसको

लाला ज्वालाप्रसाद मौज़ा चँदुर्रा परगना कोंच
ज़िला जालौनवाले ने प्रकाशित किया

तीसरीबार

लखनऊ
ो नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
जून सन् १९०८ ई०

१ जुज़ १ वर्क़

स्याह कर्णा घोड़ा की तसवीर
यह घोड़ा बहुत शुभहै और यह अश्वमेध
यज्ञ में काम आताहै
अरबी घोड़ा की तसवीर
माथे के ये नीचे ऊपर
भँवरी होवे तो यह अशुभ कहलाताहै
देव मणि शुभहै नंगाके
नीचे भँवरी
हो वह गोम है
अशुभहै
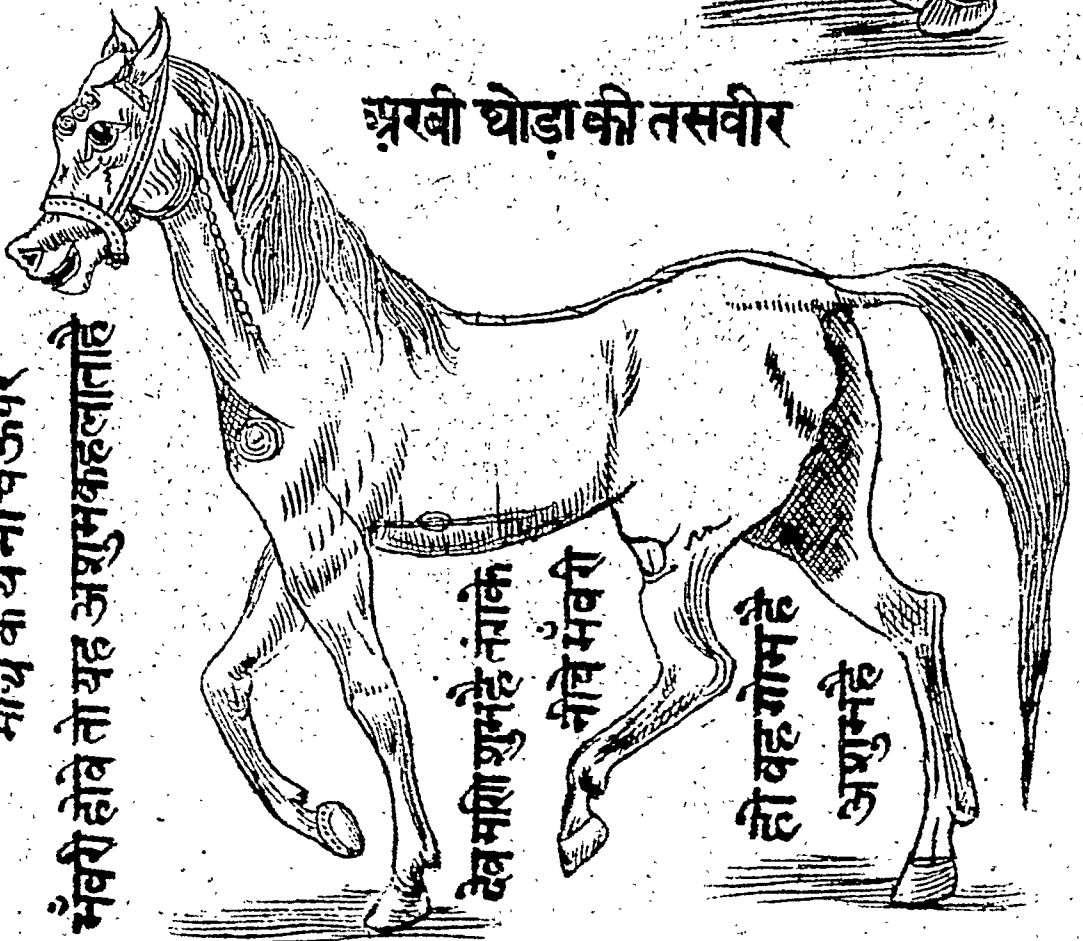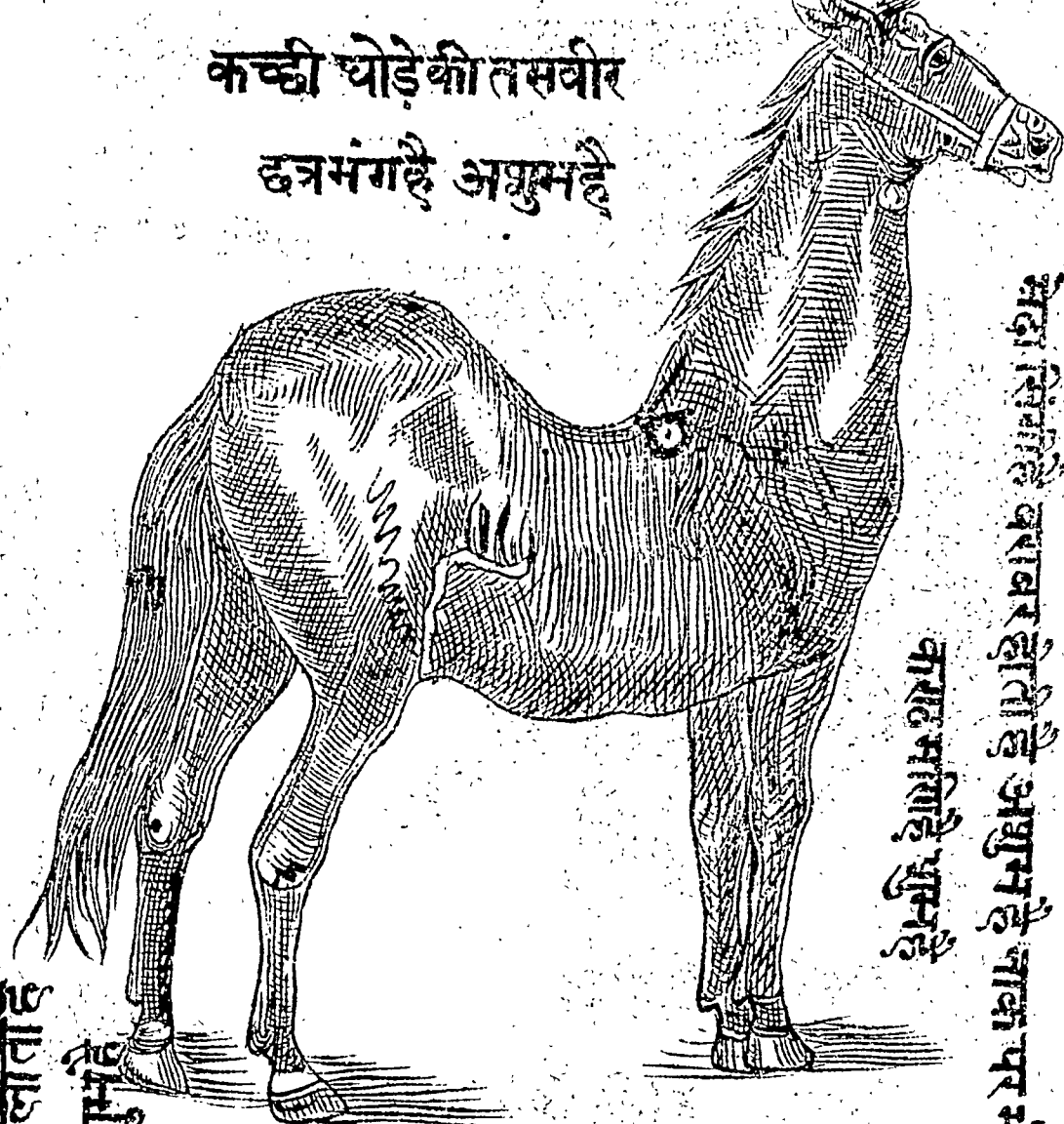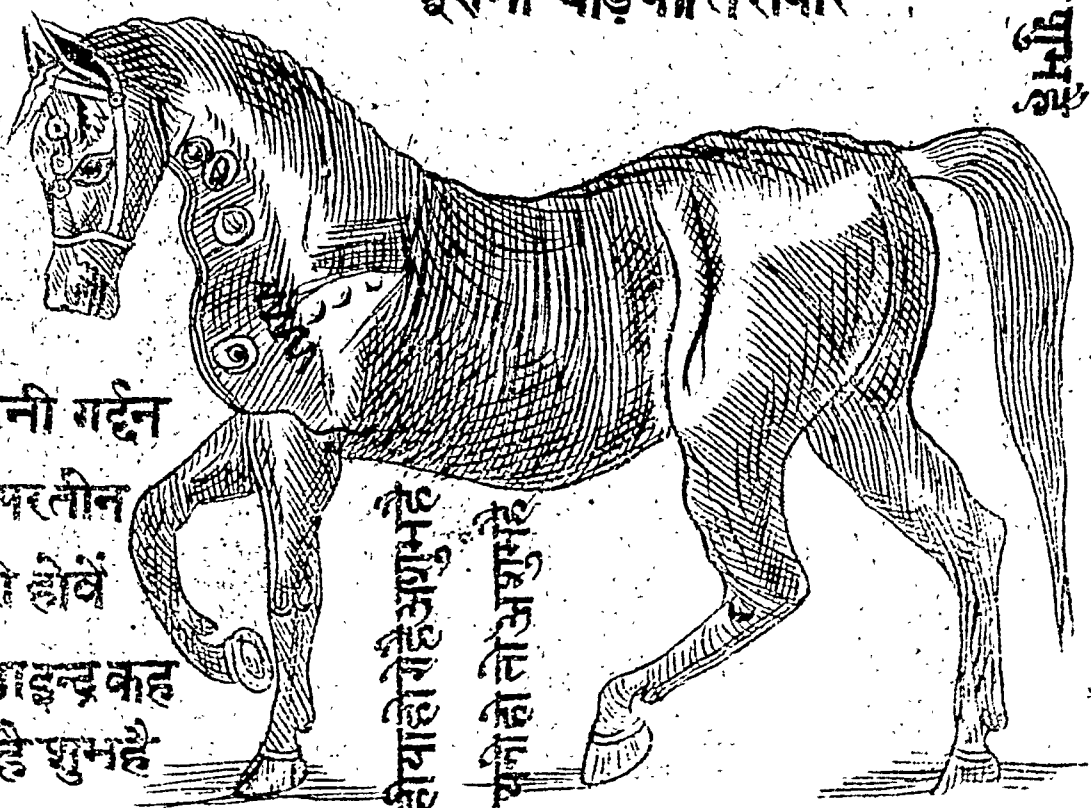
कच्छी घोड़े की तसवीर
छत्रभंग है अशुभ है
ईरानी घोड़े की तसवीर
दाहिनी गर्दन
के ऊपर तीन
भँवरी होवें
तो बडाइन्द्र कह
लाता है शुभ है

खुरासानी घोड़े की तसवीर

पीठ पर भँवरी दो होयें तो शुभ है

पांच भँवरी माथे की शुभ हैं

नाभि की भँवरी अशुभ है

डंगा उजार अशुभ है

तुरकी घोड़े की तसवीर
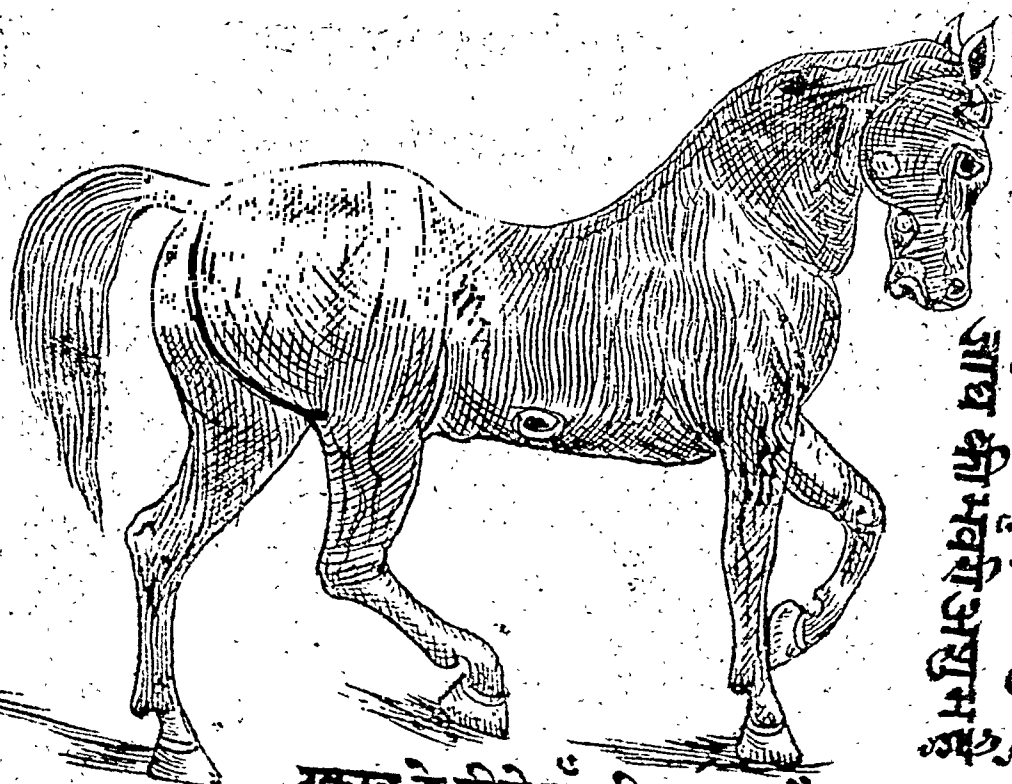
दोनों गालों के ऊपर भँवरी हों तो शुभ है

जांघ की भँवरी अशुभ है

रकाब के नीचे भँवरी अशुभ है

खन्धारी घोड़े की तसवीर
मनक़ई घोड़े की तस्वीर
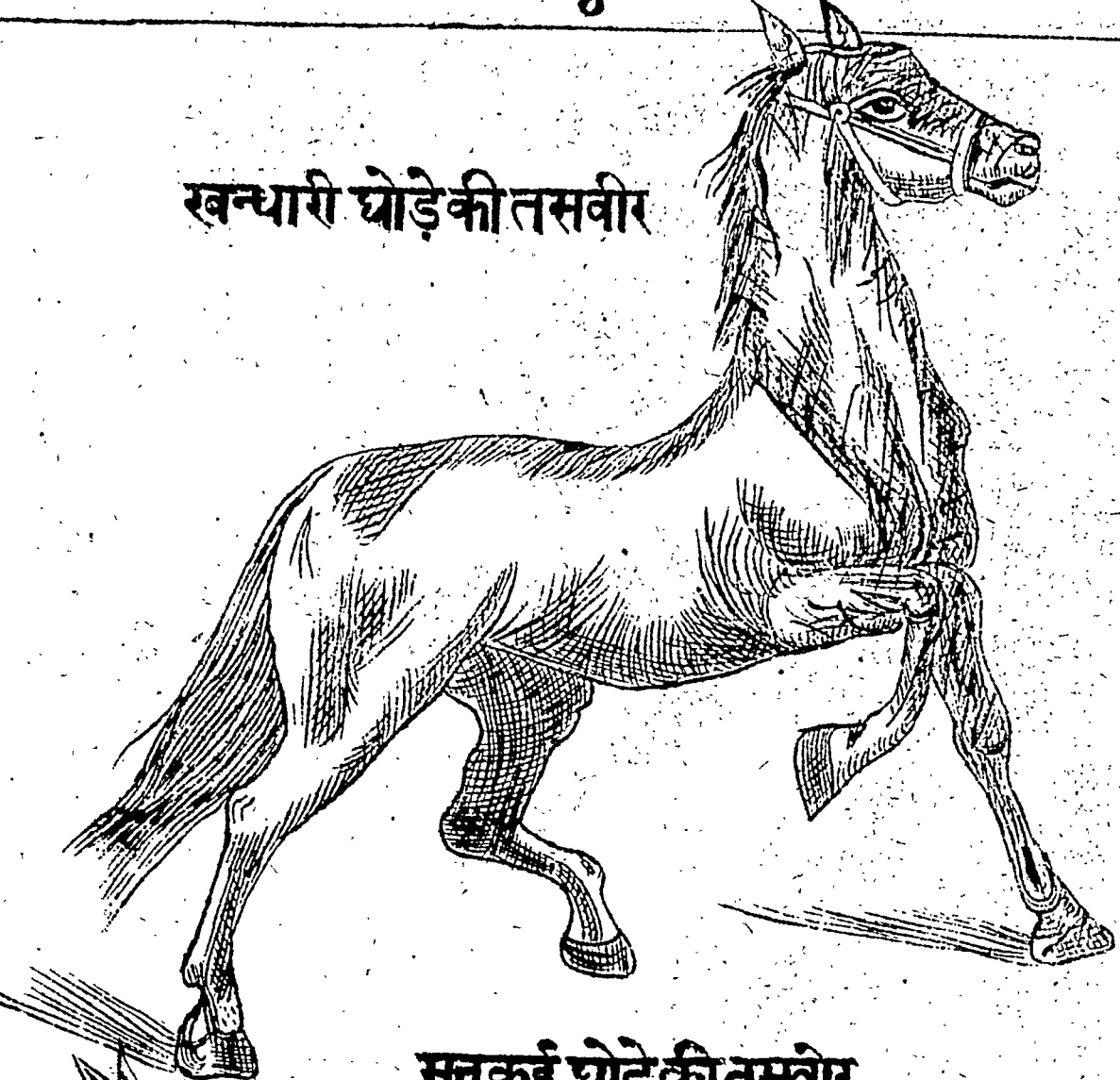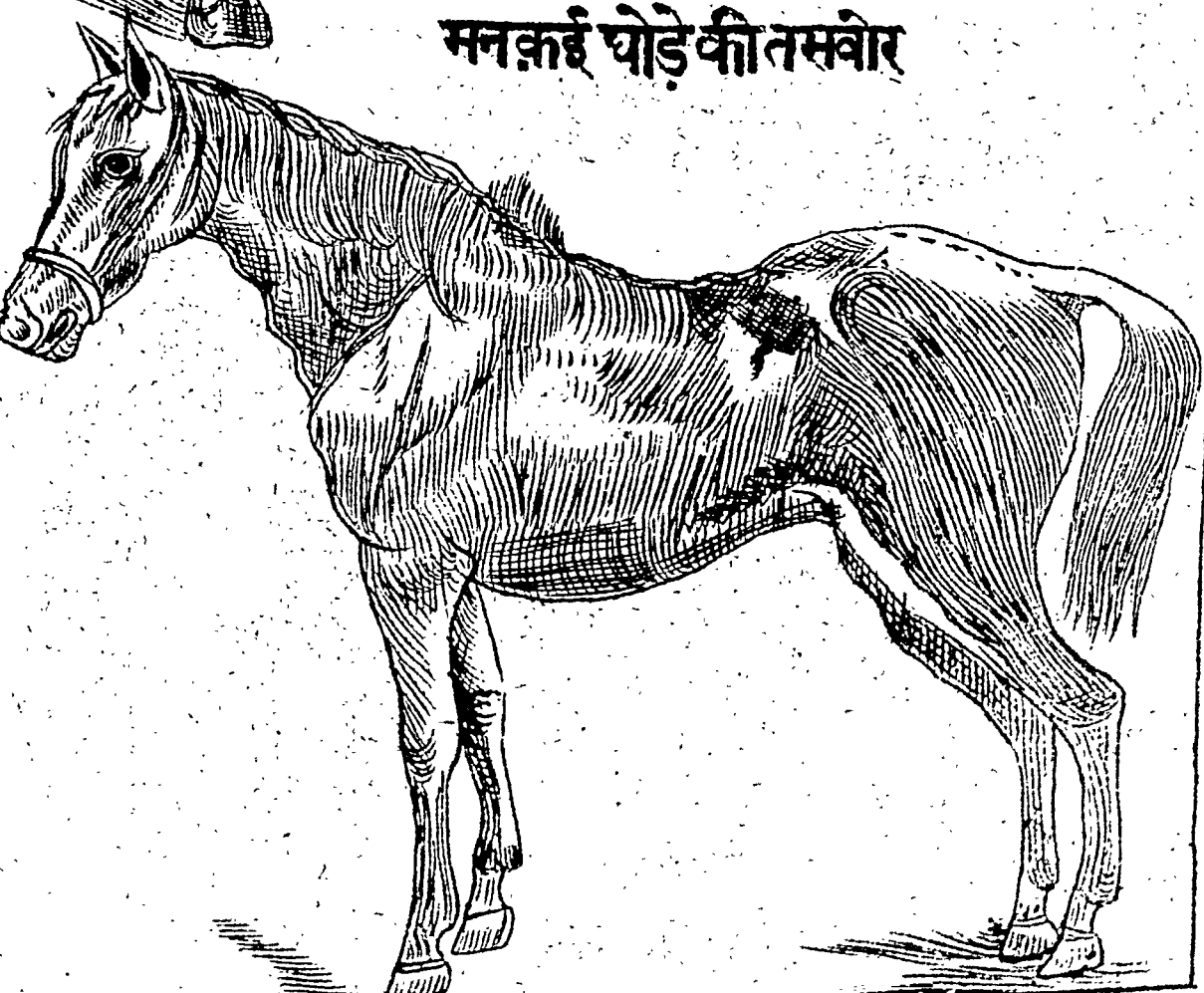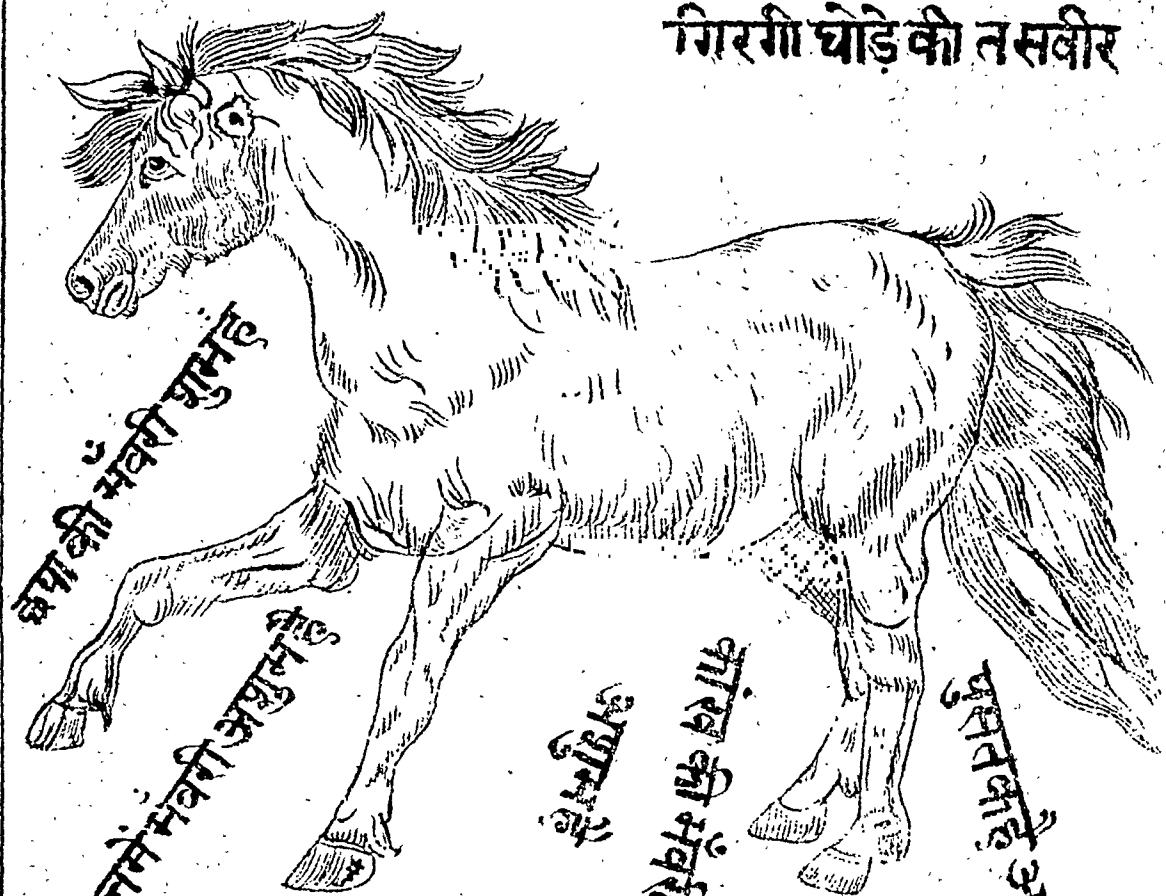
काठियावार घोड़ा की तसवीर
दरियाई घोड़ाकी तसवीर
अंगूठा के नीचे दबे तो शुभ है और ऊपरी होवे तो अशुभ है
तालू स्याह हो तो अशुभ है इसकी टाप पानी
में चलने से नहीं
डूबती है
दोनों पुट्ठे के ऊपर भंवरी
अशुभ है
या सफेद या काली चिट हो तो अशुभ है

ताजी घोड़े की तसवीर
काबुली घोड़े की तसवीर
दाहिने नकुवा पर दो भंवरी होवें तो शुभ है
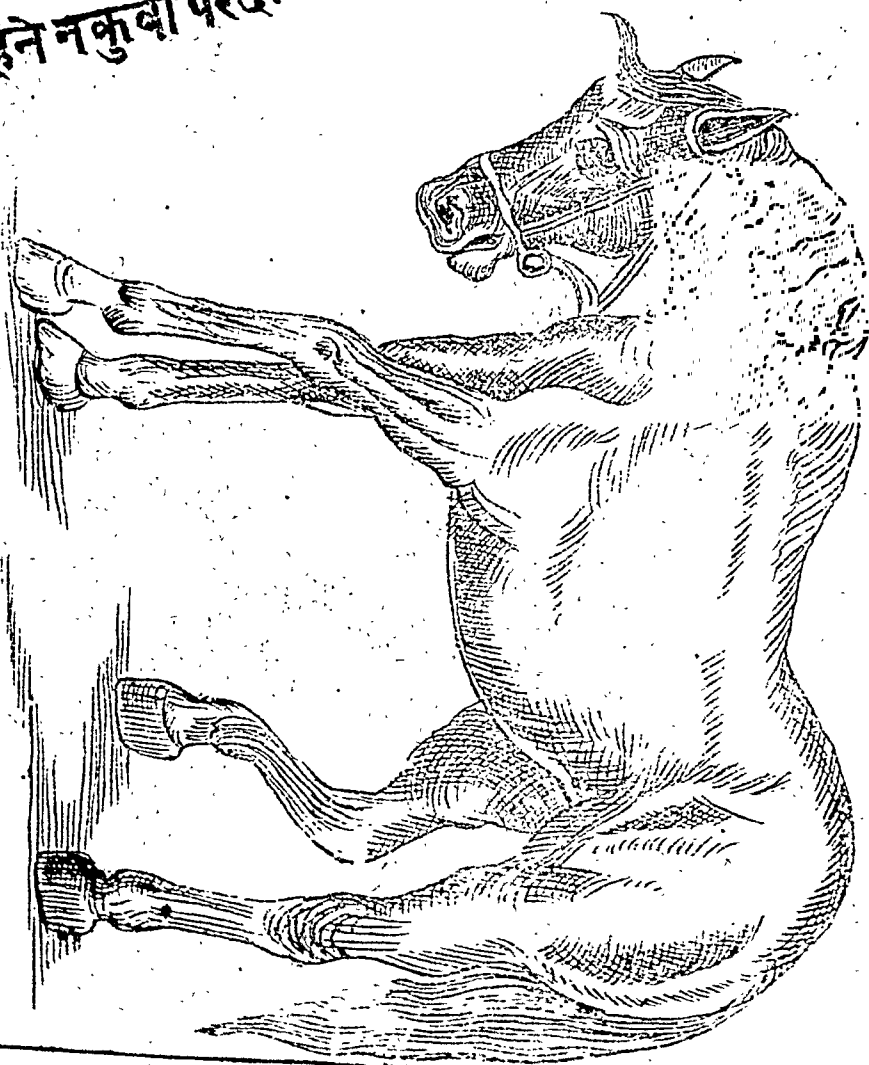
बलख़बुख़ारी घोड़े की तसवीर
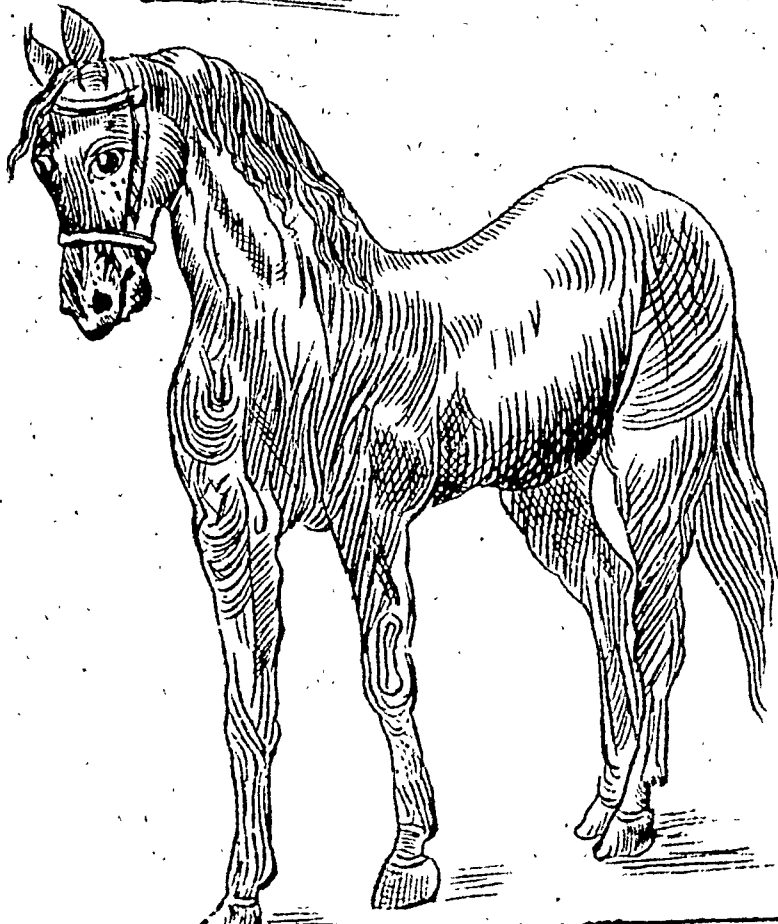
शालहोत्र ॥

श्रीगुरुगणनायकसुमिरि शारदशीशनवाय ॥
उमाशम्भुसियरामपद उरधरिध्यानलगाय १
बुधिबिवेक बाणीसुमम होय सदा उर सिद्ध ॥
करहुरूपाभाषाभणित मतशालहोत्र प्रसिद्ध २
कहत कछु हय दोषगुण शालहोत्र परमान ॥
पुनिरुजउतपतियतनयुतलोजोसमभुसुजान ३
उनइससै चालीसपुनि ऊपर अष्ट बखान ॥
पौषमास सुदि सप्तमी बार बृहस्पति जान ४
तादिन ग्रंथ अरम्भ कर शिर सुरपद धरिधूर ॥
कवितामत शुभ अशुभको ज्ञानउदै उरपूर ५
बुंदेलखण्ड मंडल बिषे ज़िलाजालवन जान ॥
कौंचपरगने मध्य में ग्राम जखौली आन ६
कूर्मवंशातेहि पुर प्रकट उसरैटिन को बास ॥
कुलखेरे बहु विमल अति कहौं कहांलौ जास ७
तिन में कुलकृत बंश के दुरखैया अवतंस ॥
शोवनसिंह सुजानकी जगजन करत प्रसंस ८
बुधिविवेकअतिनीतिलखि दियोशाहपुरभार ॥

नखशिख सुन्दरसाजके कीन्हों लम्बरदार ९
तासुतनयविख्यातजग भय गिरिधारीलाल॥
तिनकेसुतमतिविमलअतिसोहतरामदयाल १०
सुयश शील साहससुकृत बुधिविवेकगुणधाम॥
हरिपदरतअतिनीतिहित देतप्रजहिआराम ११
हितकारी भारी अधिक दया धर्म शुचिरूप॥
बहुबिधिपालत प्रजाको सदा सराहत भूप १२
अबकबिजननिजनामकुलकरतबंशबिख्यात॥
श्रीगणपतिउरध्यानधरिसुमिरिसरस्वतीमात १३
कायस्थकुल श्रीबास में खरे हरदुवावाल॥
वाहीपुर बहुशास्त्र तें बसत जुड़ावनलाल १४
भये तासु भ्राता सुमति बाजूराय प्रवीन॥
चतुरसिंह तिनके तनय रहत रामआधीन १५
तिनके सुत कृतकार जग देवीसिंह सुजान॥
तासुतनयअतिमन्दमति रामदत्तपहिचान १६
द्वितियनाम उच्चारजग जानत हैं वृध बाल॥
विप्रकृपा तें कहत हैं मोंसे मूंगालाल १७
चलिआयो दरपुश्त ते पटवारे को काम॥
उनइस सै बाईस लौं करो काम अभिराम १८
भई आय वाही समय हलकाबन्दी ग्राम॥
गयोकाम करते जु वह रहो कामको नाम १९
चहिये श्री हरकृपा ते अंश वंश में कोय॥
तौ फिर कबहूं आयहै वही कामकर सोय २०
वैद्य प्रती तबते लई जग जीवन के हेत॥

दूजे निज निरवाह को उत्तम धनके हेत २१
पूछत याही सूत्रसों पुर पुरजन सब कोय ॥
हयगुणदोषादोष पुनि रोगयतन युतसोय २२
चौ० एकदिवसबैठेनिजद्वारे। राम दयालु सुजनरखवारे॥
पहुँचे रामदत्त तहँ जाई। करिप्रणाम पूछीकुशलाई॥
सोहत पुरजनसचिव समेता। मनआनंदकहिसकौंनजेता॥
करि सनमान कही यहबाता। वैद्य कवी पण्डित तुम ताता॥
इकइच्छाउपजीमनमाहीं। अश्वशुभाशुभकहुसमभाहीं२३
दो० ऐब दोष रुज औषधी और शुभाशुभ रंग ॥
जातिभेद आयुरतुरी कहिये तात प्रसंग २४
तबते मैं बरणनकरौं शुभ अरु अशुभ तुरंग ॥
भाषी नकुल विराटसों सो सब कहतप्रसंग २५
पहिलहते हय पक्षयुत बहुते करें अकाज ॥
बनका पुरहुतको सदा चरैं आय बहुबाज २६
इन्द्र कोपकरि बज्र से परकाटे तिनकेर ॥
तबते बिनपर बाजिभे चरन जाहिं नहिंफेर २७
देवन में संज्ञासमक्ष प्रेत न आवे पास ॥
आकरचारितुरीनकीकविजनकरतप्रकास २८
चारि खानिते हैं बिलग स्याहकर्ण की जात ॥
ताके लक्षण कहतहौं देखि लीजिये गात २९
स्याह कर्ण तन श्वेत है पीत पुंछ अभिराम ॥
सुनो न देखो आज लौं बँधो काहुके धाम ३०
जन्म लेत संसार में अश्वमेध के काज
मनवाञ्छित फलदेत है ऐसो सुन्दर बाज

चौ० ऐराकेईरानहिंजानो। कच्छीकाठियावाड़बखानो॥
और भीमरा थलै बिचार। उपजत चारों तरल तुखार॥
आकरचारिमध्यकेमाहीं। उपजतअश्वभांतिबहुआहीं ३२

दो० ताजी तुरकी परबती टांगन लेव बिचार॥
निदरि पवन चाहत उड़न ऐसे तेजतुखार ३३

अथ घोड़नकी जातें॥

दो० अरबी ईरानी तुरक खुरासान खन्धार॥
मनकई गिरगी परबती और काठियावार ३४
दरियाई अरु कौबिली ताजी बलखबुखार॥
अब इनको कछुभेद मैं बरणत हौं निरधार ३५

चौ० काबिलकिलकीकुहीबिचारी। बदकसानकेबलखबुखारी॥
ताजी सुन्दर सुघर बताओ। तेज बेगसे पवन लजावो॥
अरबी उच्च ऐराकी कच्छी। जिनकीबागनलागतपच्छी॥
गिरगीवानीगिरिगिरिजानी। तुरकतेजनहिंसकोंबखानी॥
मनकई रसमन सुजंनस जोई। परवतराजी टांगन सोई॥
खुशरंग खूब खरे खन्धारी। सुमाइत सासे में डारी॥
निकसे कँधा कंसरा भारी। कोताआसन पीठिपनारी॥
कान कतरनी कैसे दाव। पाछे है गाड़ी को भाव॥
लम्बी नरी सुम चकराही। आल सुराल रहे सुनताही॥
अंग उतंग डील अतिभारे। जिनपरकासियेतोपनगारे॥
स्याहकर्ण दरियाई होय। जाकीटाप न बूड़ै तोय ३६

अथ अश्व अंग॥

दो० अश्व अंग बारह कहे ते सब करत बखान॥
छै छोटे अरु छै बड़े तिनको कहत प्रमान ३७

कान कमर थुथरी पुठी घूटे जांघैं जान ॥
ये छै अंग तुरीन के हैं लघु भले बखान ३८
गरदन पुनि छाती नरी पीठि सुम्म अरुआंख॥
ये छै दीरघ हैं भले अंग अश्व के भाख ३९
पीन पछारी जाहिकी हीन अगारी होय ॥
ऊंचो नीचो अश्व जो ताहि न लीजे कोय ४०

अथ अश्व वर्णन ॥

विप्रवर्ण छप्पय ॥

हगन मूंदघस दूरि पिये हय वारि सरितसर।
सूंघचरै तृण अधिक खाय दाना जु उदरभर॥
निज सवार मन लहै घुराई करै चतुर अत।
कलह करै दिनरैनि ताहि दूसर हय डरपत ॥
आवै सुबास प्रस्वेद तन भगै रूम दैके झपट।
रासैजुअंगउज्ज्वलतुरीविप्रवर्णलक्षणप्रगट ४१

अथ क्षत्री वर्ण ॥

दो० टापत घस पानी पिये तेजवन्त रणधीर ॥
घाव लगे पिछलै नहीं करै रोष बहुबीर ४२
स्वामीको असमर्थ लखि रणते घर पहुँचाय॥
क्रोधकरै अभिकौतुरी क्षत्री वर्ण बताय ४३

अथ वैश्यवर्ण ॥

दो० चुरकत पानी पिये हय दबकत चलै सुगैल॥
तुपक नगारे के बजे डर पकरै बहु फैल ४४
स्वामी को संग्राम सें पटकि भगै हय जौन॥
सुघर सुन्दरो होय जो वैश्य वर्ण है तौन ४५

अथ शूद्रवर्ण ॥

दो० झमकत पानी धस पियै रुचिसों दाना खाय ॥
चढ़े घुराई ना करै बँधे घुराइ बताय ४६
डारि भगै रणमैं धनी सूधी चलै जुराय ॥
मध्यम गंध प्रस्वेद तन आवै लखिये ताय ४७
चढ़ै अड़ै आवै खड़ो लड़ै क्रोधको देखि ॥
मनराखै घोड़ीन पै शूद्रवर्ण सो लेखि ४८
अश्व अंग अरु जाति पुनि चारों वर्ण निषेद ॥
सुनिमनहर्षितभयउ अब कहियेआयुरभेद ४९

अथ घोड़न की आयुर जानिवो ॥

तुरीदंत बारहकहे तिनको कहत प्रमान ॥
षट नीचे यहि जानिये षट ऊपर के जान ५०
अश्व जन्मते श्वेत रद उभय वर्ष लों देख ॥
तबलागि बच्चाताहिसों कहियेनृपतिविशेख ५१

छंद भुजंगप्रयात ।

जबैदंतहयकेगिरैमध्यदेखै । तबैतीनिसालैतुरीकोविशेखै ॥
दुबाजू तुरीदंत टोरे जुहोई । भयोचारसालैकहै बुद्धसोई ॥
तुरीकेजुकोनिनगिरैदंतदेखै । कवीपंचसालैसुताहीयलेखै ॥
कछूकालबीतेकढ़ैदंतपाछे । गुलाईलियेचारदेखौसुआछे ॥
हरीस्याहिदंतैंकछूना दिखावैं । तबैअष्टसालैंतुरीकोबतावैं ॥
कढ़ैरेखदंतनसुनौवर्षजानो । रदंपीतकोवर्ष ग्यारहवखानो ५२
दो० बारह से सत्राहलों श्वेत दशन को देख ॥
अष्टादशते बीसलों कांचसदृश विशेख ५३
दांत दुबीचें देखिये बड़ो बीच परिजाय ॥

इकइसते पचीसलों बूढ़ो कहिये ताय ५४
पचिसते उनतीसलों हलैं दन्त बलक्षीन॥
चनाचबाये जायँ नहिं यह जानो परवीन५५
तनकांपै हांपै तुरी गिरैं दन्त सब सोय॥
आयुरवर्ष बतीसकी सुनिसम भौसबकोय५६
हयआयुरलक्षणनकुल कहे विराटबखान॥
रामदत्त सोइ रीतिलै भाषा कहौं प्रमान५७

अरिल्लछन्द॥

अरबी ताजी तुर्कि कच्छ एराकिये।
इनके दीरघ अंग नृपति अभिलाषिये॥
जैसी दीरघ देह बैस तैसी लहै।
कोऊ तीस बतीस कोऊ चालिसरहै ५८
दो॰ जे छोटेकदके तुरी तिनको कहत प्रमान॥
ऊपर द्वादश बर्ष ते बूढ़ो ताहि बखान ५९
सो॰ बोले रामदयाल अब सब आयुर सुनी॥
रंगतुरंगविशालअबकहियेकविजनगुनी६०

अथ घोड़े के रंग॥

क॰ श्यामकर्णसबजसुरासिन्दलीसिंदूरसेतचीनियांच गरगराचालियाचिरंगहै। केहरीकरारीकृष्णकुल्लाकुम्मे तहंसगुल्दरीगुलाबीगीधचम्पाचमलखिंगहै। सुरखासिरा जीअरुचौधरसमदवोरसागराबिलारवोरपँचरँगापिलंगहै। सुरमईसञ्जावधूमधूरिया सिमरदूधरामदत्तभणित रंगछ त्तिसतुरंगहै ६१ अवलखमहरोरमोतीमटिहाविदारीवोर तुसंअष्टमंगलदर्याईसुरंगहै। लचीलाखैरीनीलमुश्कीकु

तनोस्तकल्यानीकागज़ीकपूरीकुरंगहै । हिरामिजीसुनेर मोरमहुयरालिह्नौरखजी किसमिसखसखसी जरदपिसीफू लरंगहै । करखाग्रगरयमिनीलुक़राचिरंगतिलंगरामदत्त भाषितरंगछत्तिसतुरंगहै ६२ ॥

अथ घोड़े के रंग की पहिचान ॥

छंद पद्धरी ॥

लखिशुभ्रसंयुत अरुणअंस । कहियेसुताहिसुरखाप्रशंस ॥
सबजाजुश्वेतमें स्याह देख । लखआलदुम्बलौंस्याहरेख ॥
कहताहि सूरजो धूम्र रंग । महुवासोजानियेमधुपअंग ॥
सुनेर अरुणता चमक देत । केहरी आलदुमचरणश्वेत ॥
स्वचनीलरोम जहँतहँ जुसेत । तिहिरंगचीनियांकहिजुदेत ॥
कहरंग चोधरा गज समान । सज्जावफूलआचरणजान ॥
लखिनील रंग जो तुरी बेष । कहितुरंगनीलताकोविशेष ॥
तनश्याम तामें कुटकसेत । मगसी तुरंगतासोंकहेत ६३

दो० जासु तुरीतन ताम्र सम चमक तामरा सोय ।
असित सेत मिश्रित जहां रंगहरीला जोय ६४

छंद भुजंगप्रयात ॥

अरुणश्वेतदोऊमिलेरोमदेखै । सुहैरंगगर्रातुरीकोविशेखै ॥
लखैमोमरंगैसुमोमंनजानो । उभैरंगअंगेसुअबलखप्रमानो ॥
मटिहातनपीठचोवादिखावै । चलेपीठसेलीसुजरदाकहावै ॥
कुम्मैतसोई कहै आलरंगै । पगैपूंछओआलश्यामातुरंगै ॥
तेलियासुताकोकहैंबुद्धसोई । कपोलंजुकन्धश्याममुश्कीहिजोई ॥
जाके सिरेटोप सेती निहारै । कवीतातुरीरंगटोपराविचारै ॥
श्वेतअधिकौअतिमुखलौंप्रचारै । वहीजोतुरीरंगलुकराउचारै ॥

जिहीरंगपांडुरसमानेजुहोई।कहैंताहिसिरगासयानेजेकोई ॥
सबजलीकपीठेअरुणतादिखावैभयो श्वेतआननसुसाकैहावे ॥
कहूँकहुँगुलंदस्तश्यामापरेखै।सबजासुताहीयगुलदारपेखै ६५

दो० कहत सिन्दली रंगसे बादामी बुध सोय ॥
बादामीसो सिन्दली यह जाने सबकोय ६६

चौ० त्रिविधमिश्रकोसमदकहावे।देखिलेवशालहोत्रबतावे॥
मुखउदरजानअधिकौहैसेत । तजमुरखा केहर कहि देत ॥
इस्फाटिक सम रंग दिखाय । देय श्वेतरँग तुरँग बताय ॥
तिहिमें फुटकबदाम समान । ताहि रंग बादामी जान ॥
मैलो सुपेत तनतुरी दिखावे । ताहि धूरिया रंग बतावे ॥
कुछा तनक परै पियराई । सेली श्यामपीठिपर जाई ॥
ग्रीवा मुखपट श्वेत जुहोय । नाम अष्ट मङ्गल कहसोय ॥
दादुरके रँग तुरिय जु होई । ताहि कबूतरकहियसबकोय ॥
इमनीजिमिमंजार बतायउ । बहुरँगरोमधारजहँ पायउ ॥
लोमकरी सम हयतन देखो । सोकल्यानीरंग विशेखो ६७

दो० चम्पासितकहुँअरुणमें तनकहुँसितकहुँश्याम ॥
अतिगहिरोकुम्मैतजहँ लक्खी कहतललाम ६८
और रंग रंगन मिलै सुनिये पुरपति भेद ॥
जो कछुपायो नकुलसत सोसब कहो निषेद ६९
समझे रंग तुरंग के सकल भेद निरधार ॥
अब कछु कहिये और तुम भौंरी भेद विचार ७०

उत्तर ॥

अथ सुमभौंरी ॥

दो० सत भ्रमर तन सर्व के जेते कहे तुरंग ॥

इनतें भौंरी औरते सुख दुख दाता अंग ७१

उत्तम भौंरी॥

सो॰ अलिन कुमेंड़े होय मस्तक और मुतानपर॥
कहतताहिशुभसोय सुखसम्पतिसों गेहभर ७२

दो॰ दहिनावर्त अलि अश्वके माथेपर जो होय॥
कहतताहि चिन्ताहरण सब सुखदाता सोय ७३

त्रोटकछन्द॥

अय भ्रमर माथे पर गनौ। लखि ऊर्ध्व तरऊपर भनौ॥
तिहिनाम जैमङ्गल कहै। दाहिनसुवर्त सबसुखलहै ७४

दो॰ जुवांजोत युग भाल अलि अँगुठातरे दबाय॥
चंद्र सूर्य तासोंकहत अतिशुभभलोबताय ७५
अश्वनासिकापरअलिन कहतताहिशुभदान॥
ऐसो हय जाकेरहै ताको सुख सब जान ७६
दाहिन नकुवा अश्वके युगल भ्रमरको देख॥
राजचंद्रतासोंकहत अतिशुभभलोविशेख ७७

सो॰ अलिन कुमेंड़े जोय सोशुभ सुन्दर देवमन॥
कंठकंठमनहोय सदासुक्खसिधितासदन ७८

दो॰ शाल्होत्री देखै दृगन भ्रमरी दुहूं कपोल॥
लेवै ऐसे अश्व को देवै दुगनो मोल ७९
भौंरी पंच लिलाट में होवैं कलशाकार॥
सो सुखदाता है सदा लीजै तुरत तुखार ८०

चौ॰अश्वआगिलेछपाविशेखौ। अलिनयुगलतिनहूंपरपेखौ॥
अरबलभुजबल ताको जानौ। उनहींसे नवनिद्धिबखानौ॥
कन्धा ऊपर भौंरी जोई। पद्मनाम ताही को होई॥

नितप्रतिसम्पतिकरेप्रकास। राखैअवशिअश्वकोपास ८१

सो॰ ग्रीवा भ्रमर जु तीन होयँ दाहिनी देखअति॥
शालहोत्रकहिदीन बाजि इन्द्रतासों कहत ८२

दो॰ होय कुमेंड़े पै युगल अलि दहिनावर्त सोय॥
ताको दोष न मानिये भलोकहत सब कोय ८३

चौ॰भौंरीयुगलपीठिपरदेखौ। दवतजीनतरयहीविशेखौ॥
मनकई तुरंग कहत हैं तासे। स्वामीसदा सुक्खकरवासे॥
कूषदाहिनी अलिन जोहोय। राखै सदन लक्ष्मी सोय॥
अश्व कण्ठमें भ्रमरजु चार। सोजानोंसबसुखकोसार ८४

अथ भौंरिनके देवता॥

छन्द पद्धरी॥

सअग्निदेव भौंरीलिलार। अरुसूर्यअलिनमाथे बिचार॥
हँएकभ्रमरतहँचन्द्रबास।अश्विनीकुमारअलिपूंछजास॥
हइन्द्र शम्भुभौंरी मुतान। अलिकूषदाहिनीकृष्णजान॥
कूष भ्रमर वाही कुमेर। यह देव कहैं भौंरीन केर॥
भकहततासिलीजैसुजान। बिनदेव अश्वतजियेप्रमान॥
हिरामदत्तशाल्होत्रमन्त्र। बढ़ैनृपतिआनँद अनन्त ८५

अथ मध्यम भौंरी॥

॰ उभय ऊर्ध्व अलि तुरँगके माथेलखिये सोय॥
महाअशुभ जेहरकहत ताहि न लीजै कोय ८६
भ्रमरभाल तिरछी उभय पटअंगुलके बीच॥
मेढ़ासिंगी अश्व यह हरैप्राण धन नीच ८७
भौंरी होय जु भौंहपर अन्धचक्र कहि सोय॥
जहाँ अश्व ऐसो रहै स्वामी अन्धा होय ८८

अलिनआंखकेमध्यलखि कहेउ अश्वमाताय ॥
ऐसो अश्व न लीजिये स्वामी अग्नि जराय ८९
अलिन अश्वकी आंखतर आंसूढार बखान ॥
रहै दुखी स्वामी सदा शालहोत्र परमान ९०
युग नकुवन पै उभय अलि भिन्नभिन्न जोहोय ॥
कहत निसुन ता अश्वसों ताहि न लीजै कोय९१
सो० तारूपर अलि जोय मित्र दोष तासों कहत ॥
जहां अश्व असहोय तहां द्वितियहय नारहत९२
दो० जो घोड़े की जावमें भौंरी परैजु आन ॥
सुखबाजी तजु दोष कह करै राजकी हान ९३

तोमर छन्द ॥

हयहृदयभौंरी जान । हिरदावलि ताहिबखान ॥
करिपीरस्वामियसोय । पुनिपुत्रहानिजु होय ९४
दो० होय कुमंड़ेतर अलिन हियाहोर कह तास ॥
लङ्कायुत रावण कुटुंब करी ताहिने नास ९५
अलिन कुमेंड़े तें चलै रहै कराठलों जाहि ॥
ऐसो तुरी न राखिये धन दै त्यागै ताहि ९६
तंगतरे भौंरी द्वै कै षट अंगुल बीच ॥
नाम कहत हैं ताहि सों करस्वामीकी मीच ९७
पग पीछे टिहुनातरे भौंरी परै जु आन ॥
तासों पुस्तक कहतहैं सो तज अशुभ बखान ९८
थोरी आयुर अश्वकी भौंरी परै सुतान ॥
कैनाभी अलिहोय तो मुखहन दोष बखान ९९
पूंछतरे अलि जंघमें लंगउजार कहितास ॥

हरिणाकुश युत राजको करी बेगही नास १००
उभय अलिन पुट्ठेपरैं दुग्या दोष कहाय ॥
ऐसो अश्व न लीजिये दीजै संत बहाय १०१
मद ऊपर अलि देखिये चत्र भंग कहताहि ॥
तथाकांखकीअलिसहित करैहानिजहँजाहि १०२
भौंरी होय रकाबतर सो रकाब पहिंचान ॥
जोमुखहोयसवारतर तो वह अशुभबखान १०३
भौंरी होय जो कंधमें श्रवण समीपबखान ॥
एकओरकीनागिनी तजैअशुभजियजान १०४
होयभ्रमर दोनोंतरफ कन्धाश्रवण समीप ॥
सोबाघिनि जानोंअशुभ त्यागैताहिमहीप १०५
अलिनकर्ण के मूलमें जो कहुं परै तुरंग ॥
अशुभ अश्व ऐसोतजै करै न कबहुँ प्रसंग १०६
अश्व कन्धमें देखिये रेखा खड्ग समान ॥
ताहिन लीजै संतऊ करै प्राणकी हान १०७
चौ० अलिदाहिनघूंटेपरपेषौ । ताहिमंत्रहनदोषविशेषौ ॥
पुनिबायें घूंटे पर जानों । दोष गहासा ताको मानों ॥
ऐसो अश्व जासु के होई । ताकी साईं मरिहै सोई ॥
जोविधि अलिनसुम्मपै पारै । मतहनदोषधनीकोमारै १०८
दो० घूंटे पर होवैं भ्रमर दोनों पगन तुखार ॥
मेखठोंक नीची चलै ऊंची मेष उषार १०९
मेष ठोंक लीजै तुरी गड़ै मेष वहु संग ॥
त्यागै अतिलोनोबनो मेषउखार तुरंग ११०
छांड़ै निज अस्थान अलि चलिहैकहुँअंत ॥

दुरीदीनताकोघनी यहजानोबुधिवंत १११
अश्व अंग में देखिये भौंरी सर्पाकार ॥
करैप्राणकीहानिवहतजियेबिनाबिचार ११२
इति श्रीशालहोत्ररामदत्तकृतेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

प्रश्न ॥

दो० यह सुनि पुनि बोले बचन पुरपति रामदयाल ॥
तातहुरी इतिहास पुनि कहु कछु और रसाल १

अथ शुभ चिह्न ॥

उत्तर ॥

दो० बाँसपत्रसमतिलकलखि कल्याणीकहताहि ॥
जाके घर ऐसोतुरी ताको दुख सब जाहि २
सुम्मनपरकच देखिये चिन्तामनकहसोय ॥
जहां अश्व ऐसो रहै ताहि न चिन्ता होय ३
चारौं चरण जुश्यामहैं श्वेतबरण तन होय ॥
अरिहूकी तौकाचली यम डरपत हैं सोय ४
अश्वचरण मुख श्वेतहै होयसबतनश्याम ॥
सदासुक्खदातातुरी सकल सिद्धिको धाम ५
मुख माथो रखहूचरण श्वेत जानिये सोय ॥
मंगलकारी अश्व यह नितउठिमंगलहोय ६
पीरो तन पग श्वेत लखि श्वेत दृगनपै रंग ॥
चक्रवाक कहि ताहिसों राजन योग्यतुरंग ७
रातो पांव जु दाहिनो होय अश्वको सोय ॥
शुभमंगल वह नामहै लीजो हय शुभहोय ८
अश्वकर्ण दोनों दुविच दीसैं कर्क सिवाय ॥

बिन बिचार लीजै तुरी दीजै दाम दिखाय ९

अथ अशुभचिह्न॥

सो० माथे भौंरी श्वेत दबै अँगूठा के तरे॥
कै कृष्णा चिट देख सो अकरब सुत हानिकर १०
दो० श्वेत तिलकमें अरुणअलि रक्तबिन्दु सोजान॥
कहत दोष याको अधिक त्यागौ नृपति सुजान ११
मुख नकुवा तरुवा असित अशुभजानियेसोय॥
तिलककटो दंतनघटो ताहि न लीजोकोय १२
श्रवण श्वेत जाअश्व के स्वामी बहिराहोय॥
कै सितडांड़ी पूंछकी अन्न दुखीकर सोय १३
चौ०तीनकर्णहयअशुभबताय। कैगजससाश्रवणकोभाय॥
अँसुवा बहै अश्व के जाहि। अश्वपतीको नामबताहि॥
स्वामी ताको रोवत रहै। रामदत्त हय लक्षण कहै॥
जाकी गड़ी रहै किसवार। बिकलकदोषी ताहिबिचार॥
दंत अधिकता सुतहन दोष। स्वामी मरै पुत्र के शोष॥
हींसै हय निशि बारम्बार। ताहि न लीजे नृपति बिचार॥
जीभ सर्प सम काढ़ै जोय। दोष अर्द्धमुख कहियेसोय॥
अश्व आंखि मृग कैसोतारो। ताहिसत्तहनदोषबिचारो १४
दो० एकआंखि कहिरातुरी अशुभ जानिये ताहि॥
युगुलनैन कहिरालखै नाम चगरहै वाहि १५
सो० तीन वर्ण हय होय कहत अशुभ लीजै नहीं॥
इक पग श्वेत जुहोय सो अरजल पंगोकरै १६
दो० जाके घर ऐसो तुरी नाभी पर चिट
ताकोफल यह जानिये चोर मूसि घरलेत

जो कहुंबाजि सुतानपर बिन्दु देखिये श्याम ॥
दोष कलीजन जानिये करे नृपति बेकाम १८
बाजिबंकरख अशुभ लखि नृपति न लीजै ताहि ॥
होय अश्व दुइखुरीको तौ स्त्री मरजाहि १९
एक अंडके सूनलखि कै त्रय अंड जु होय ॥
थनी मनी कबरानरा फनी सहित तजसोय २०
धूम्र बर्ण खरके सदृश रंग तुरंग दिखाय ॥
लेबे की तौ का चली बायों देकर जाय २१
जा घरमें जा फौजमें ऐसो घोड़ो होय ॥
जैहै थोरे दिनन में सत्यानाशौ सोय २२
तीन भाग जाको तिलक टूटो तीनहुं ठौर ॥
जो दलाल सबकुछ कहै तौ न बांधिये पौर २३
तिलक भाल चौड़ो तरे ऊपर पैनों होय ॥
दुखदाता ऐसो तुरी बुरी करै वह सोय २४
नासा भीतर अश्वके सेती लखिये सोय ॥
दुखीदीन ताको धनी दिनप्रति दूनो होय २५

छन्द भुजंगप्रयात ॥

अश्वआलठाढ़ीरहेअर्धभागं। नमिलैदामताकेतुकरैसंतत्यागं॥
लखैपंचपैदंतघटबढ़जोहोई। तुरीतुर्तदेवैजोमिलैदामसोई॥
बड़ेदंतजाकेरछोड़ै प्रमाने। कहैशुतरदंता तजैंतसयाने॥
बँधेअबजूमेंजुदोऊदिशाको। कहैकोउनीकोअनीकोसुवाको २६

दो० महीपाल राजा लयो देशकोश गयो सोय ॥
चली बात आईअबै सुनत तजतसबकोय २७
होय श्वेत जाअश्वको बायों करपद सोय ॥

करै हानि ऐसोतुरी भलोकहत नहिंकोय २८
घोड़ी के लैसंकहैं अशुभ जानिये ताहि ॥
जो घोड़े के लसतौ सो शुभ है नरनाहि २९

अथ घोड़ेके ऐब इतने अतिअशुभ हैं ॥

क० छत्रभंग ढंग गोम अकरब खूंटाउपाट अण्ड दोप कर्णदोष अरजल बखानिये । अन्धचक्र आंसूढार धूम्ररंग ठाढी आल श्यामतारू अधरभान हियाहोर मानिये ॥ खड्गरेख कन्धव्याल बाघिनि बड़ हीनदन्त थनी मनी फनी अली सुम्मन पहिचानिये । चर्मखी तिलक खण्ड मेढ़ासिंगी मसाअंग रामदत्त अश्व ऐब इते अधिक जानिये ३० ॥

अथ ऐब दबैबे के चिह्न ॥

चौ० भौंरीपरै देवमन जोई । पंचदोष दाबत है सोई ॥
अलिन कण्ठमन जाके जानै । सप्तदोष तासे भयमानै ॥
अश्व अंग ये भौंरी दोऊ । औगुणअश्वदबतसबसोऊ ॥
जो जैसंगल अश्व लिलार । लेहितािहिनृपबिनाबिचार ॥
होय अष्ट मंगल जो अर्ब । दाबै ऐब देह के सर्ब ॥
सुरखा श्वेत टोपरा रंगहि । दबैकञ्ज हगदोष तुरंगहि ॥
अकरब रक्तबिंदु पुनि जान । होयखण्डटीका पहिचान ॥
दाबत येते अबलख रंग । रामदत्त यहकहो प्रसंग ३१

अथ निकाम लक्षण ॥

क० कट्टर कुचाल अड़ै आवै खड़ो हाल लैवै झपटौ वटसारै भटभारो है । चाबुक सहे अङ्ग बदलमाल जो तुरङ्ग तानत है नारजठर जुड़ो हिये होरो है ॥ कुवन्द क०

मखोरा जाय पहुँचै दुमचोरा मुखदाबै लगाम गांठरहत न जेरो है। पिछले पगछेरै छांड़ मारै पुसतंग तौन सैंतहूं न लीजे ताहिदीजै सबेरो है ३२ ॥

अथ शुभलक्षण ॥

क० कोताहैंकानकमरकेहरिअनुमानजाकी चंचलहैदृष्टिपुष्टचौंकेचपलानो । दानाअतिखायरायचाबतलगाम जायबागकोइशारोलखिकरतकामजानो ॥ चौपगचतुराई चढ़ैबतावैघुराईतौन कदमकोंड़कावाकरकलासीबखानो। रामदत्तकहतलीजेनृपऐसोअश्व दीजेबहुदामताकेखोलिकेखज़ानो ३३ ॥ अथ घोड़ी सवर जानिबो ॥

दो० अगल बगल अलि पेटके नापै डोराडारि ॥
गांठिलगाय धराइये ताकोकहत बिचारि ३४
फिर महिना पीछेधरै डोराअलिनमझार ॥
जो डोराघटदेखिये घोड़ी जानहुसार ३५

अथ गर्भ प्रश्न ॥

दो० घोड़ी घोड़ा एकरँग बच्चा है इकरंग ॥
घोड़ा घोड़ी दुरंग तौ बच्चा कहै दुरंग ३६

अथ घोड़ी ब्याबेको बिचार ॥

दो० दिवसअशुभघोड़ीबियै कहोसुनोनरनाहि ॥
नीकोनिशाबियाइबो घोड़ीकोसुखदाहि ३७
रविउत्रायणमें बियै जाघर घोड़ी शुम्भ ॥
दक्षिणायनेसूर्यमें ब्यावै जानि अशुम्भ ३८

घोड़ी ब्यानीको बिस्तार ॥

चौ० आधसेर शुण्ठी परमान। तेतो ग्रंथकलेव सुजान ॥

आधपाव लै पीपरि पीस। जीरो पाव करै तेहि खीस॥
अजवायन लै पावक डारै। गुड़ छः सेर तहां निरधारै॥
डेढ़ सेर तिलतेलमँगावै। बांटि सकल तेहिमांझमिलावै३९
दो० प्रात खवावै दिवस षट ईंट बुझा जल देय॥
यहिविधिकरि विस्वारदै उदरदोषहरिलेय ४०

अथ घोड़ालेबेको मुहूर्त॥

दो० अश्वचक्र लिखिकै धरै रविनक्षत्रते जोरि॥
बाजिमुहूरतशुभाशुभ सोसबकहत बहोरि ४१
पंच कंध सुख देत है पीठि अर्थ दश पाय॥
दूय पूंछ पद्मीनशै पांव चारि भगिजाय ४२
उदरपंच बाजी मरै सुर विव धन को देय॥
प्रथमचढ़ैजबदेखिकै तब बाजी को लेय ४३

अथ घोड़ापैचढ़िबेको क़ायदा॥

छं० दांत लात बरकाय चढ़ै दृढ़ आसन राखै।
दूरि रकावैं करै तराजू सम बुध भाखै॥
छाती करै उतंग और कटि निश्चल जानै।
साधै बाग सम्हारि चित्त श्रवणनलों आनै॥
उरमें उछायदैजंघबल चित्रलिखोसोरहै तन।
यहिविधितुरंगफेरैचतुरराखैचंचलचित्तमन ४४
छं० नाहकनताड़ै तुरीनहिंकरिखुरी जाय कुरायलै।
जो बनै ताड़ै ताड़िये कोड़ाकुठौर बचायलै॥
लगिजायतनकोड़ाकठिनरनखटककरपटकायलै।
ग्रीषम सुवर्षामें तुरीकोखुरीकरनहि जाहिलै ४५
सो० घोड़ेको श्रमसाथ मन त्रिगरन पावै नहीं॥

है सवार के हाथ घोड़ेको मन राखिबो ४६

दो० उतरितुरत करिकायजा टहलावे हयसोय ॥
फिरिथानेलावेतुरी मलिकर श्रमसबखोय ४७

करलनपुतिसहीसको उरमें कछु बिश्वास ॥
राखिबचन्दी वक्त पर देखिदीजिये तास ४८

राजी दोऊ दुहुँनसों करें परस्पर प्यार ॥
घोड़ा लगो सवारसे घोड़ा से असवार ४९

अथ घोड़ेकीसर्दगर्मप्रकृति ॥

दो० मुश्कीसमंद कुम्मैतकी गर्मप्रकृति पहिचान ॥
सबजा नीला चीनियाँ इनकी सर्द बखान ५०

अरुण पीत रँग जेतुरी तिनमें पित्त प्रधान ॥
बात पित्त मिश्रित तुरी ते बहुतेरे जान ५१

सर्द प्रकृतिके रंगजे ते जानो सब और ॥
अब आगे तिनके कहत रोग चिह्नसबठौर ५२

प्रश्न ॥

दो० कह्योतात इतिहासहय सुनिमनभयउहुलास ॥
अबकहिये रुजऔषधी जाने जगतप्रकास ५३

उत्तर ॥

दो० बात पित्त कफ दोषतें उपजैं अश्व बिकार ॥
ताहिसमनऔषधिकरे होवैसुखीतुखार ५४

सो० मर्कट एक मँगाय हयशाला में बाँधिये ॥
अवसबै दुखजाय रहिनिरोमतनजानिये ५५

अथ बातज्वरलक्षण ॥

दो० परै हरारा देह में क्षोथ होय तन पीर ॥

तनकाँपे घाँसैतुरी बातज्वरहहशरीर ५६

अथ घोड़के बातज्वरकी औषधि ॥

दो० सोंठि पीपरामूरलै संमल युत गुड़ मेल ॥
वजन वराबर दीजिये बातज्वर को ठेल ५७

अथ पित्तज्वरलक्षण ॥

दो० श्वास नेत्र लाली लिये तृषा अधिक बेहाल ॥
सोजानोयहपित्तज्वरकहतयतनकरिख्याल५८

अथ पित्तज्वर को यत्न ॥

चौ० गुर्चमिर्चमोथालैश्रावे । पीपरि और जायफर नावे ॥
शुंठी पान लौंग लै धरै । सप्तदिवसलों औषधिकरै ॥
औषधि करै टकाभरि सर्व । रातिब साथ दीजिये अर्व ॥
करै देखि शालहोत्र बिचार । तौ नीको करिलेइ तुखार ५९

अथ घोड़के कफज्वर के लक्षण ॥

दो० मस्तक भारी होय अति बहैबारि वहु नैन ॥
पीरो कफज्वर वोकरै कफज्वरजानोऐन ६०

अथ कफज्वरके यत्न ॥

चौ० सोंठिपीपरामूरकटाई । तिहिमें वायबिड़ंगवटाई ॥
हींग सुहागा सोंचर नोन । भूंजि अग्निसों दीजैतोन ॥
टंकतीन दीजे हय खान । तब कफज्वरकी ह्वैहै हान ॥
अथवा दंतीजर भारंगी । नागरमोथा कुटकी चंगी ॥
नींबछाल असगँधदेवदार । चीतामिर्च लेव पुनि ग्वार ॥
याको काढ़ो लेय बनाय । सहत टंकभर तामें नाय ॥
प्यावे काय प्रात जो कोय । कफज्वरते हयनीकोहोय ६१

अथ सन्निपातज्वरलक्षण ॥

दो० तप्तशरीर तुरंगको हींस श्वास अधिकाय ॥
यह लक्षणते जानिये सन्निपातज्वरताय ६२

अथ याको यत्न ॥

दो० पोस्त अण्डकी मूललै बायबिडंग मिलाय ॥
काढ़ोकरि प्यावैतुरी सन्निपातज्वर जाय ६३ ॥

अथ घोड़ेको क्षुधाकरन औषधि ॥

छं० दो मन मँगावे दही गायल्याय भाजनमें भरै।
लैसहँजनेकी छाल पांचोनोन अजवायन धरै॥
राई हरद लहसुन बिड़गें सुहागलै शुधअनुसरै।
कारीजिरी अरु मंगली युतकूट दधिमिश्रितकरै६४

दो० घाम लगै उफनै जबै तबै टकाभरि लेय ॥
होय पुष्ट बाढ़ै क्षुधा अबै गर्म ऋतु सेय ६५

तथा ॥

सो० सोंचर सैंधो संग साँभर साजी चौरई।
लहसुन बायबिड़ंग अजवायन कारीजिरी॥
राई ग्रंथक लाय अरु लघुक्षुद्रा आनिये।
लैसम तौलकराय औरकहत सोजानिये ६६

दो० मानुषकी पेशाबलै करिकेखरल मिलाय ॥
मोंठ महेलासंगकरि टकाएकभरि ताय ६७
यहिविधिकरिके अश्वको दीजेप्रातखवाय ॥
श्वासकासहयकीहरै बढ़ैक्षुधाअधिकाय ६८

तथा ॥

दो० कञ्जकसौंधी नींबलै और नकायन आन ॥

अरुलीजे विषखापरा सेर सेर परमान ६९
पानमिर्च आदौसहित दोदो टका बिचार ॥
करिगुटकादुइटकाभरिऔरकहतनिरधार ७०
भूंजे चननके चूनमें देय तुरी को खान ॥
करै पुष्ट बाढ़ै क्षुधा याको यही प्रमान ७१

अथ अतीसारको यत्न ॥

दो० अतीसार जाअश्वके ताको कहत उपाय ॥
गोहूंसत निशिमें भिजै प्रातपियावे ताय ७२

अथ घोड़ाको मोटे करिबे की औषधि ॥

दो० महुआ अरसी भूँजिले सेर सेर भर दोय ॥
मेथी भांगसुहागशुध अजवायनयुत जोय ७३
टका आठभरि लीजिये चारिसेर गुड़डारि ॥
सर्वसानि गोली करै पैसा चारि बिचारि ७४
जाय खवाय तुरंगको गोली एक प्रभात ॥
ताको गुणजानो सुजन पुष्ट होय हय गात ७५

तथा ॥

चौ० हरदी सेरआठमँगवावै। गऊदूध दिन सप्त भिजावै ॥
सुखै कूटिके धरिये ताहि। फिर तातेघृतसों मलवाहि ॥
मैदा सेर पांच ले डारै। तेती खांड़ तहां निरधारै ॥
दूध डारिके हलुवा करै। फिरि उतारि बासनमें धरै ॥
प्रात पावभर घोड़ाखाय। दिनदिन मोटी देह दिखाय ७६

अथ घोड़ेकी भूखकी औषधि ॥

दो० अजवायन कारीजिरी सैंधो सोञ्चर जान ॥
जवाखार साजी हरद सांभर तहां बखान ७७

पाव पाव भर ले सबै भांग सेर यक डारि ॥
आधपाव कुटकीलहै करिये खल्ल विचारि ७८
साधै सर्व शराबमें फिरि दै हयको नित्त ॥
टका दोय परमानसों बाढ़ै क्षुधा अमित्त ७९
ग्रीषमऋतु जाने जबै तबै शराब बचाय ॥
चून साथ दीजै तुरी तीगुण अधिक बताय ८०

अथ घोड़के कुधाशूलको लक्षण ॥

दो० उठिबैठै गिरिगिरि परै लोटै बनौतुखार ॥
मुखबोलै खावै न कुछ कुधाशूलनिरधार ८१

तथा याको यत्न ॥

दो० छाली मकरादांकके बीज कुलिञ्जन और ॥
सेंधो और जवासलै सबको कर यकठौर ८२
गोघृत संग पियाइये दिना दोय परमान ॥
वायशूल मेटैसकल करै क्षुधा बहुजान ८३

अथ बातशूल को लक्षण ॥

दो० बातशूल लच्छण कहौं सुनि समझो सबकोय ॥
गिरै धरणि हांफैतुरी आंखि मूंदिरहसोय ८४

अथ याको यत्न ॥

दो० खुरासान बच हींगलै कूट सुहागा संग ॥
पाषाणभेद सेंधो लवँग दंतीछाल प्रसंग ८५
लै सम भाग पिसायलै नैनू संग खवाय ॥
बातशूल हयकोहरै जो नर करै उपाय ८६
कूट कायफर हींगलै मदिरा संग पिवाय ॥
तोय तप्तकरदीजिये दाना पवनबचाय ८७

अथ प्रवृत्त शूलको लक्षण ॥

दो० हाँसे चित चौंकत रहै बोलै बारम्बार ॥
सोई शूल प्रवृत्त है यहकीनों निरधार ८८

अथ याकी औषध ॥

दो० सोंठि सुहागा हींगबच बायबिड़ंग समान ॥
नबदा रास करायकै लेव नीरसों सान ८९
प्रात खवावै अश्वको हर प्रवृत्तका शूल ॥
याको गुन ऐसो कहो सबै औषधी मूल ९०

अथ सिलहावृत्त शूलको लक्षण ॥

दो० सूंघे निजछाती तुरी गिरै धरणि बहु बार ॥
सिल्हवृत्तता शूलको कीन्हों नामउचार ९१

अथ याको यत्न ॥

दो० हींगसोंठि सैंधोलवण सिरकादधिमैं प्याय ॥
तातो पानी दीजिये दाना मने कराय ९२

अथ भ्रमशूलको लक्षण ॥

दो० चितवै चारौं ओरको लोटै अशन न लेय ॥
यहलक्षणभ्रमशूलके पढ़निदानकहिदेय ९३

अथ यत्न ॥

दो० शुंठी हरद सुहागलै हींग सहितदे खान ॥
हरै वेग भ्रमशूलको बढ़ै भूंख यहजान ९४

अथ ऊर्द्धशूलको लक्षण ॥

दो० बहै लार मुखते अधिक चलै पसीना अङ्ग ॥
यहिलक्षणते जानिये ऊर्द्धशूलको सङ्ग ९५

अथ याको यत्न ॥

दो० पीपरि शुंठी मिर्च लै और कसौंधी बीज ॥

मूल बेतरा ग्रंथका गऊदूध कह दीज ९६
प्रात पिवावे अस्वको ऊर्द्धशूल करभङ्ग ॥
ताती पानी शीतकर दीजे बहुरि तुरङ्ग ९७

अथ राक्षसशूल को लक्षण ॥

दो० उदरपीर अधिकीकरै उठै गिरै हय जौन ॥
हींसै टापै दृगअरुण शूल राक्षस तौन ९८

अथ याको यत्न ॥

दो० इमलीफलरस तेलतिल मोथामेल मँगाय ॥
सिरकासंयुत तीनदिन दीजे तुरीपिवाय ९९

अथ मृत्युशूल लक्षण ॥

दो० तजै अन्न पानी तुरी दिनदिन सूख शरीर ॥
हांफै झूमै गिरपड़ै मृत्युशूलकी पीर १००

अथ याको यत्न ॥

चौ० प्रथमएकबादामखवावै । क्रमसेदशलौंताहिबढ़ावै ॥
फिर यहि विधिसों कमकरलेय । औरकहतसोचितमेंदेय ॥
हरदी राई समकर तोल । सिरका लेय बराबर मोल ॥
सर्व मिलै दे हयको खान । ताती जल प्यावै परमान ॥
सप्त रोजमें नीको होय । पढ़ शालहोत्र करै जो कोय ॥
छूटैमलअरुशीत शरीर । सो असाध्यतजियेबुधबीर १०१

अथ सन्निपातशूल लक्षण ॥

दो० कम्पै उछरै गिरिपरै सुधिबुधि संज्ञा जाय ॥
सन्निपातको शूल यह लक्षण दयो बताय १०२

अथ याको यत्न ॥

चौ० हींगसुहागाराईलाय । अजवायन फटकरी मिलाय ॥

अरु बच सौंफ लेय निर्धार। पीस सर्व सिरका में डार॥
घीव मिलाय पिवावे अर्व। सन्निसूल मेटै दुख सर्व॥
यहिविधिकरै यतनजोकोई। तौनीकोहयनिश्चयहोई १०३

अथ असाध्यशूल को लक्षण॥

दो० कान गरो कम्पै अधिक थंभै मूत्र हय केर॥
सूजै जीभ तुरंगकी सो असाध्य हियहेर १०४

अथ कफके मस्तकशूल को लक्षण व यत्न॥

दो० भौंहनपर आमासरह मस्तकशूल बखान॥
सोंठिमिर्च अरुकायफर नासदेय यहजान १०५

अथ बात मस्तकशूल को लक्षण॥

दो० शिरभारी आमासरह मस्तकशूल बखान॥
सोंठिमिर्च अरुकायफर नासदेययहजान १०६
चौ० कुटकी बायबिडंग कपूर। सोंठि सुहागा पीपरमूर॥
तौल बराबर खल्ल करावे। भुंजे चूनमें ताहि खवावै॥
सांझ सबेरे हयको देय। तुरततुरीनीकोकरिलेय १०७

इति श्रीशालहोत्रेरामदत्तकृतेद्वितीयोऽध्यायः २॥

सम्मलगुटिका॥

चौ० ईंगुरसम्मलखारलयावै। टकाटकाभरतोलमँगावै॥
आदौ लौंग सुहागा लेय। गूगल पीपर मिर्च सुदेय॥
पैसा पैसा भर लै धरै। आदे के रस खरलै करै॥
घोटै दिवस तीन परमान। गोली एक रती समजान॥
भुंजे चून में देय तुषार। हरै अश्वके सर्व विकार १

अथ घोड़े के सर्व रोग ऊपर॥

दो० तीन सेर कारे तिलस जीरो लै दुइसेर॥
लहसुन लीजै पावभर और कहत सुनफेर २

मूल बेतरा ग्रंथका गऊदूध कह दीज ९६
प्रात पिवावे अश्वको ऊर्द्धशूल करभङ्ग॥
तातो पानी शीतकर दीजे बहुरि तुरङ्ग ९७

अथ राक्षसशूल को लक्षण॥

दो० उदरपीर अधिकीकरै उठै गिरै हय जौन॥
हींसै टापै हगअरुण शूल राक्षस तौन ९८

अथ याको यत्न॥

दो० इमलीफलरस तेलतिल मोथामेल मँगाय॥
सिरकासंयुत तीनदिन दीजे तुरीपिवाय ९९

अथ मृत्युशूल लक्षण॥

दो० तजै अन्न पानी तुरी दिनदिन सूख शरीर॥
हांफै झूमै गिरपड़ै मृत्युशूलकी पीर १००

अथ याको यत्न॥

चौ० प्रथमएकबादामखवावै। क्रमसेदशलौंताहिबढ़ावै
फिर यहि बिधिसों कमकरलेय। औरकहतसोचितमेंदेय।
हरदी राई समकर तोल। सिरका लेय बराबर मोल।
सर्व मिलै दे हयको खान। तातो जल प्यावै परमान॥
सप्त रोजमें नीको होय। पढ़ शालहोत्र करै जो कोय॥
छुटैमलअरुशीत शरीर। सो असाध्यताजियेबुधबीर १०१

अथ सन्निपातशूल लक्षण॥

दो० कम्पै उछरै गिरिपरै सुधिबुधि संज्ञा जाय॥
सन्निपातको शूल यह लक्षण दयो बताय १०२

अथ याको यत्न॥

चौ० हींगसुहागाराईलाय। अजवायन फटकरी मिलाय॥

सामर साजी लीजिये शालिम साबुन जान ॥
पुनि पुस्ताबोंड़ी लहै टकाटकाभर आन ६
पावसेर गुड़ डारिके आटा भूंज मिलाय ॥
सांझसबेरे दीजिये अश्वअङ्ग खुलिजाय १०
गूगल पैसा दोय भर गऊमूत्र युत जोय ॥
कै लहसुन बिजया लवण खायखुलै हय सोय ११
फेर तप्त पानी करै दाना दीजै नाहि ॥
रामदत्त यहियत्नसों बेगअश्व खुलिजाहि १२

अथ घोड़ो भरगयो होय ताको यत्न ॥

चौ० गूगलसाजी साबुनसङ्ग। खीलु फटकरी करै प्रसङ्ग ॥
पैसा पैसा भर लै धरै। हरद सरस लै मिश्रितकरै ॥
सामर हालों लीजै मोल। टकाटका भर करिये तोल ॥
पीस सर्व लै चूरण करै। पुनि गुड़सेर एक अनुसरै ॥
भुंजे चननको चून पिसाय। दोऊ दै औषध में नाय ॥
करिमिश्रित घोड़िनकोदीजै। यहसब एकरोजको कीजै ॥
ईंट बुझाके पानी प्याय। एकसांसजितनोपियोजाय॥
जो कोउ घोड़ो ठाढ़ो रहै। भूंजो चून सेर भर दहै ॥
दिवसतीनलौं यहिविधिकरै। सकलव्याधिघोड़ेकीहरै १३

अथ घोड़े के मांसवृद्धिकी औषध ॥

दो० मांसवृद्धि जाअश्वको ताको कहत उपाय ॥
ताहिसमझजो कर यतन तुरीसुखी होजाय १४
[illegible]जी मोथा हरियाथूथौ। अजैपाल संभलकरिगूंथौ ॥
[illegible]की टिकिया करै। लै कटु तेल ताहि में धरै ॥
[illegible]वै डारै। खड्डकरै लेपन अनुसारै ॥

चौ० पीपर पिपरामूर मँगावै। मिर्च मँजीठ हींग तहँनावै॥
छै छै टका लेय परमान। पीस कपड़छन करै सुजान॥
सहत पाव तीनक लै धरै। घीव सेर दुइ तहँ अनुसरै॥
चिकने बासन में धरि सबै। फेर धान की कोठी धबै॥
सप्त दिवस लौं राखै ताहि। फिर निकार दे हयको वाहि॥
टकादोयभर कहो प्रमान। इकइसदिन दे हयको खान॥
बायगांठकी चिलक मिटावै। कौंची रँगको दर्द घटावै॥
उखरै गांठ करै रस भङ्ग। कास श्वास कफछांड़ै संग॥
ज्वर खाजन अरु रक्तविकार। ते सब मानें यासों हार॥
बात शीत संग्रहणी हरै। दिन २ भूख सवाई करै॥
बांधे नृपति अश्व असथान। परसकन्ध तुपरै करहान ३

अथ घोड़ा जकड़गयाहो ताकी औषध॥

दो० प्रथम छुहारे लायके गुठली काढ़ डराय॥
तिहके मध्य अफीमभर कपरौटी करवाय ४
करि पुटपाक निकारिके अर्ध छुहारो देय॥
खुलजावै जकड़ो तुरी तोयतप्तकरि सेय ५

तथा दूसरी॥

दो० सामर लहसुन लीजिये टंकपचीस प्रमान॥
गोली करके अश्व को बीस रोज दे खान ६
ताती पानी प्याइये आधी प्यास बुझाय॥
फेर मसालो देय यह सोऊ देत बताय ७
हरदी शालिस गुड़ मिलै खावै दिन दैवेर॥
घड़ी कर कायजा लुलै अंग हय केर ८

सामर साजी लीजिये शालिम साबुन जान ॥
पुनि पुस्ताबोंड़ी लहै टकाटकाभर आन ९
पावसेर गुड़ डारिके आटा भूंज मिलाय ॥
सांझसबेरे दीजिये अश्वअङ्ग खुलिजाय १०
गूगल पैसा दोय भर गऊमूत्र युत जोय ॥
कै लहसुन बिजया लवण खायखुलै हय सोय ११
फेर तप्त पानी करै दाना दीजे नाहि ॥
रामदत्त यहियत्नसों बेगअश्व खुलिजाहि १२

अथ घोड़ो भरगयो होय ताको यत्न ॥

चौ० गूगलसाजी साबुनसङ्ग। खील फटकरी करै प्रसङ्ग ॥
पैसा पैसा भर लै धरै। हरद सरस लै मिश्रितकरै ॥
सामर हालौं लीजे मोल। टकाटका भर करिये तोल ॥
पीस सर्व लै चूरण करै। पुनि गुड़सेर एक अनुसरै ॥
भुंजे चननको चून पिसाय। दोऊ दै औषध में नाय ॥
करिमिश्रित घोड़िनकोदीजै। यहसब एकरोजको कीजै ॥
ईंट बुझाके पानी प्याय। एकसांसजितनोपियोजाय॥
जो कोउ घोड़ो ठाढ़ो रहै। भूंजो चून सेर भर दहै ॥
दिवसतीनलौं यहिविधिकरै। सकलव्याधिघोड़ेकीहरै १३

अथ घोड़े के मांसवृद्धिकी औषध ॥

दो० मांसवृद्धि जाअश्वको ताको कहत उपाय ॥
ताहिसमझजो करै यतन तुरीसुखी होजाय १४
चौ० साजी मोथा हरियाथूथौ। अजैपाल संमलकरिगूंथौ ॥
नीमपात की टिकिया करै। लै कटु तेल ताहि में धरै ॥
टिकिया काढ़ि औषधै डारै। लहुकरै लेपन अनुसारै ॥

मांसवृद्धिको खोज मिटावै। फेर तुरीकी फस्त खुलावै

अथ घोड़ेके पांवके मांसवृद्धिकी दवा ॥

दो० अभया लीजै पावभर नरके मूत्र मिलाय ॥
सातरोज लेपनकरै पग पलवृद्धि मिटाय १६

अथ घोड़ेके पोतनकीबादी ताकी औषध ॥

दो० गेरूसोंठि कपूरलै कालीजिरी मिलाय ॥
गोबरके रसमें खरल तिहिमें दूध रलाय १७
अग्नि गर्मकरि लेपिये पोतनपर हयकेर ॥
हरैरोग निश्चयतबै बहुरि न होवै फेर १८

अथ घोड़ाके अंग आमास को लक्षण ॥

दो० अँग आमासजु अश्वके उचकचौंक चितहोय ॥
चरै न तृण गिरिगिरि परै यहजानो सबकोय १९

अथ याको यत्न ॥

दो० अजवायन शुंठीलहै बायबिड़ंग समान ॥
दिवससप्त प्यावैतुरी काढ़ोकरके छान २०

अथ अधूरो ॥

दो० हींगसहिंजनो सोंठिलै सरसों बायबिड़ंग ॥
अजवायनी सुहागयुत मलै अश्वके अंग २१

अथ कृमिरोग को यत्न ॥

दो० राई हरदी कायफर दीजै प्रात तुखार ॥
केंचुवा कृमि हय उदरकी यासों दीजैडार २२

अथ घोड़ाके उदर शोधनकी दवा ॥

दो० असगंध करुवानोनलै सोंठिसहित करिक्काथ॥
सांझ सवेरे दै तुरी उदररोग करिहाथ २३

अथ घोड़े को जुलाब ॥

दो० राई खारी अरु दही अर्द्धसेर लै प्याय ॥
उदरव्याधि नीकीकरै सकलरोग हय जाय २४

अथ घोड़े के वायुबन्धकी औषध ॥

चौ० अजवायनअरुसोंठिसुहागा । सोंचरसहितलेयसबभागा॥
मूल सहिंजनो रस निकसाय । तिहिमें गुटिका करैबनाय ॥
गुटिका चून साथ दै कोय । अश्ववायु चौरासी खोय २५

अथ घोड़ाकी लीदबंदकी दवा ॥

दो० हींग टकाभर घीवलै सेर दोय परमान ॥
प्यावै हयको वैद्यवर करै लीद यह जान २६

अथ घोड़ाके बंधकोष्ठ की दवा ॥

चौ० सोंठिमठाराईमिलप्यावे । खुलै अश्व यहयत्न उपावे ॥
लैकै सोंठि मिर्च पिसवाय । बांधै गोली गोल बनाय ॥
अश्वमूल द्वारे में धरे । फिर टहलावै यह विधि करे ॥
करैलीद सुख होय शरीर । नाशै अश्व उदरकी पीर २७

अथ घोड़ा की लीद व पेशाब दोनों बन्द होयँ ताकी दवा ॥

दो० बंद होय मलमूत्रहय तब यह यत्न कराय ॥
कुटकी अजवायन मिरचसाजीहींग मिलाय २८
सुहागशोधि कालीजिरी अदरखरसखरलाय ॥
गोलीएकछटांकभर तुरीखाय खुलजाय २९

सो० शुंठी घृतसों सान अश्वगुदा में लेपिये ॥
करै लीद यह जान यह उपाय करि देखिये ३०

अथ घोड़ा की पेशाब बन्दको यत्न ॥

दो० इमली जलमें घोरके दीजै तुरी पियाय ॥

मूत्रबन्द यासे खुले जो नर करै उपाय ३१
पिये प्रात जल मेलके खीरा बीज पिसाय ॥
कैगाड़र मूहमें तुरत तुरी मूत्र खुलजाय ३२
बाती करि धर नरासें शुंठी पीपर पीस ॥
कै घृत सैंधो मिर्च दे कर्नमूत्र करि खीस ३३
साबुन मिर्च कपूर लै बाती करै बनाय ॥
धरै नरामें अश्वके रुको मूत्र खुलजाय ३४

अथ घोड़ाकी धातु गिरै ताकी दवा ॥

दो० तबाखीर खुरयाचिनी मूगी बनौरा लाय ॥
नागबेलजरलीजिये कदलीमूलमिलाय ३५
सेर दोय पय मेलके प्यावे प्रात तुरंग ॥
शुक्रदोष यासों हरै करै पुष्ट अतिअंग ३६

अथ घोड़ा के प्रमेहको यत्न ॥

दो० त्रिफला चूरण खांड़युत मूत्र रोग हरलेत ॥
गिरै धातु जो अश्वके खांड़रार कह देत ३७

अथ घोड़ा की फस्त खोलिबे की विधि ॥

दो० दुर्बल तन बूढ़ो क्षुधित अरु प्रमेहको संग ॥
इतने में काढ़ै नहीं रुधिर अश्वके अंग ३८
जाके तन विषबेल है कै अति मांस दिखाय ॥
फस्तखुलातातुरीकी बढ़ै तेज अधिकाय ३९
नरनारी नितभोगसे बढ़तनाहिं तन रोग ॥
चरै अश्व अस्थानरहि तातेरोग सँयोग ४०
हरसालै तनतुरीते रुधिर सेरभर लेह ॥
उत्पति होय न रोगकी पुष्ट तेज रह देह ४१

अथ रुधिर विधि ॥

चौ० शीतधूपकोनहिंअधिकार।तबतनहयकोरुधिरनिकार॥
रहैसदा हय ज्वान समान। यहजानो शालहोत्र प्रमान॥
खुसरग सहरग बड़रगकही। हस्तमदाम सिरासों सही॥
जो जाने सारीरग भेव। तौ नसछेद अश्व सुखदेव ४२

अथ घोड़ेकी देहमें शोथहोय ताकी दवा ॥

दो० गुवारपठा सेंधोलवण सेंकसुहातो कोय॥
तापीछे यह यत्नकरि हरै शोथ हयसोय ४३
अजवायन कारीजिरी कुचिलाशुण्ठी आन॥
अरुअजमोदा सोंठिलैलेपकरै जलसान ४४

अथ घोड़ेकी खाजकी दवा ॥

चौ० बकुचीगन्धकबायबिड़ंग।चोखकूटमनशिलकरसंग॥
पीसै सबै निशा धर नीर। प्रात तैल कटुमें मथधीर॥
मलिये ताहि अश्वके अंग। सूखजाय करमृतिकासंग॥
जब मृतिकासूखै तबधोय। अश्वखाजतेअतिसुखहोय ४५

खाज वा अग्निबायको यत्न ॥

चौ० गन्धक औंरासारमँगावै। पैसा द्वै भर तुरत तुलावै॥
अजया घृत्त चौगुनो ल्याय। तेहिमेंगन्धकलै पिघिलाय॥
दूध सेर भर में दै डार। यहिविधिगन्धकशुद्धविचार॥
घृत पय हयके अंग लगावै। गन्धकक्रमसोंनित्तखवावै॥
अग्निवाय यासों मिटजाय। खाज खजूरी देयभगाय॥
यहि विधि यत्नकरै जो कोई। तौदिनदिनहयनीकोहोई ४६

अथ घोड़े के सांप काटेको यत्न ॥

दो० अजैपालकी बिजी लै कूट खरल करवाय॥

नीबूरस पुटदीजिये एक बीस सुनताय ४७
करिगुटिकाछायासुखै मनुजथूंक घिसलेय॥
अञ्जनकरियेहयदृगन तत्तकविषहरिलेय ४८
कानाटेरी अर्कजर मिर्च बराबर पीस॥
पानी में प्यावै तबै तक्षक विष नहिंदीस ४९

अथ घोड़ाकी पीठलगेकी दवा॥

दो० भैंसा गोबर लीजिये तेंदूछाल मिलाय॥
सरसोंगुड़अरुलीदरँग मिश्रितसबंकराय ५०
अश्वपीठ पर लायकै ऊपर पट्टी देय॥
यहिउपायसे वेगहीं हयनीको करिलेय ५१
बंग कटाई कूटिकै करै पीठ परसंग॥
ऊपर पट्टी दीजिये अश्वपीठ दुखभंग ५२
सो० सूखो जुनरी चून भरै अश्वकी पीठ में॥
हरै राध अरु खून ऊपर पट्टी दीजिये ५३

तथा॥

दो० भिजवै मानुष थूंकमें मसुरी चून पिसाय॥
पीठलगावै अश्वकी तौ नीको ह्वै जाय ५४
चौ० अर्सीतेल पावभरलाय। लोहपात्र धर गर्म कराय॥
मोम चार तोला भर आनै। तेतो पीस कबीला जानै॥
मोम कबीला तेल मिलाय। यहिविधिमरहमकरैबनाय॥
पीठलगाय अश्वकी धोय। पुरैघाव जानोसबकोय ५५

अथ घोड़ेके जहरबात को लक्षण॥

सो० झलके शोथ सिवाय हय छाती में देखिये॥
जहरबात सो आय पुनि कछुपाछेको चलै ५६

अथ यत्न ॥

दो० मिर्च पान अदरख लहै घोड़ेको दे प्रात ॥
सप्तदिना दीजै तुरी जहरबात मिटिजात ५७

तथा ॥

दो० काढ़ोकरि प्यावे तुरी कशीबीजा लाय ॥
जहरबातके हरणको औषध दई बताय ५८

सो० गुवारपठा मँगवाय भूंजि समुन्दरमें तनक ॥
दीजै अश्वखवाय जाय जहरदिनबीसमें ५९

अथ हड्डाको लक्षण ॥

दो० अश्वपाछिले पांवपै अस्थिजबर परिजाय ॥
हड्डा कहिये ताहिसे ताको कहत उपाय ६०

अथ याको यत्न ॥

दो० दागदेय जो अश्वको जाने चारउ बन्द ॥
फिर ना रहै तुरंगके हड़ाजानवा छन्द ६१

चौ० मानुषकी खुपरी लैआवै। अग्निजरायभस्मकरवावै॥
सींग मेष महिषी को ल्यावै। ताहिजारिकै भस्म करावै॥
त्रिफला त्रिकुटी साजी राई। खील सुहागा हरदबताई॥
कारीजिरी जवायन जानो। कालसुर युत गुड़में सानो॥
टंक टंक भर गोली करै। सांझ सबेरे हयमुख धरै॥
हड्डाजान हरै सब पीर। सुखीहोय अति अश्वशरीर ६२

दो० प्रथम लेप अहिफेनको हड्डा पै करवाइ ॥
फेर कुक्कुटी तप्तपल दिवस तीन बँधवाइ ६३

अथ घोड़ेके बैजाभौंतरा व पोटरीको लक्षण ॥

दो० घूंटेकी मोटी सिरा परै भौंतरा जान ॥

कहत पोटरी सो जबर घूंटे ऊपर मान ६४

तथा मूतराकी दवा ॥

दो० भिलवा भूंजे टकाभर मोठ चूनमें सान ॥
अश्व मूतरा रोगको यहदीजे नितखान ६५

पहिले दोहाके रोगको यत्न ॥

चौ० बैजाभौंतरा जाके होय । ताको यतन कहौसुनसोय॥
तारामाखी ल्यावै मोल । सोना माखी समकर तोल॥
नींबूके रस खरलै करै । यहिविधिमल्हमबनाकेधरै ॥
पछना प्रथम लगावै तहां । बहुरिमल्हमलेपनकरिवहां ॥
फेर चना कपड़ा लै बांधे । अजामूत्र भिजवो अवराधे ॥
सात दिवस लौं भिजवतरहै । फिर खोलै यह औषधकहै ॥
गौ घृत सोनामाखी लाय । चुपर तहांनीको करिताय ॥
कै इमली कचनार मँगावै । पात नीमयुत समकरि पावै ॥
सिरकामें सब औंट चढ़ाय । उलहतही यह यतनकराय॥
दिवससातलौं करै जो कोय । तबै भौंतरा नीको होय ॥
दीजे रोटी घास छुड़ाय । तौ तुरंग नीको होजाय ६६

तथा ॥

दो० चुरवै टेसूफूल लै होत चढ़ावै ताहि ॥
दिवससप्त कीजे यतन तबै भौंतराजाहि ६७

अथ हड्डाजानवाकी और दवा ॥

दो० भरै भटा में लाय कै चूना कली मँगाय ॥
करिकपरौटीतासुकी फिरधरिअग्निजराय ६८
भटा सहित पिसवायकै भरै घावमें कोय ॥
तब यह निश्चय जानिये हड्डाजानवा खोय ६९

हरदी सोंठि सुहागलै करुवातेल मिलाय ॥
लेपकरै याको तबै हड़ाजानवा जाय ७०

तथा दागबे पै ॥

दो० दागै हड़ामूतरा हींग मूत्र में सान ॥
लेपकरै नित तौपकै नीकोहोय सुजान ७१

अथ घोड़ेकी बरसायती को वा जख लक्षण ॥

दो० अश्व आंखितर होयव्रण केपरपुच्छ बखान ॥
रादरुधिरकृमिहोयनहिंसोबरसायतजान ७२

अथ बरसायती यानी जखकी दवा ॥

दो० जो बरसायति अश्वके मलैमोमसों ताहि ॥
जबलोहूनिकसनलगेतबलौं मलियेवाहि ७३
और मोम कटुतेल लै अरु डारै बारूद ॥
ये सबको एकत्र करि मिलै सेंहुड़ा दूध ७४
यहिविधि मल्हमबनायकै लेपकरै जोकोय ॥
सप्तरोजमें अश्वकी बरसायतको खोय ७५

तथा जखकी दवा ॥

दो० बांधे जखको तूतिया निंबुवाके रसपीस ॥
ऊपरनिंबुवापानधरजानों जखनहिंदीस ७६
क़लई चूनालीजिये अरु बारूद मिलाय ॥
करै भुरकिनी पीसकै जखबांधे भुरकाय ७७
पनकपड़ा बँधवायकै भिजवतरहै हमेश ॥
दिवससप्तदशयतनकरिजखकोरहैनलेश ७८

अथ घोड़े के वमिनी रोगको लक्षण ॥

दो० गिरैंचार हय पूँछके मोटी गिली बखान ॥

निकरैचेप जुपूंछमें सो बमिनी पहिचान ७९

याको यत्न ये है॥

दो० पटसनबकला बारके सांभरनोन मिलाय॥
सीरामें मथ लेपिये और कहत सुनताय ८०
पहर पछारी धोयकै सनके भुवा लयाइ॥
अरुलै मुर्दाशंखको सहतसंग लगवाइ ८१
सप्तदिवस यहिबिधिकरै अश्वउपायसुजान॥
उपजैकचनिहचैंनिरख शालहोत्रपरमान ८२

अथ बिरहड़ी को॥

दो० पवनकोपते बेरसम गुमरी नरी मँझार॥
सो बिरहड़ीबखानिये ताको यत्न बिचार ८३
बारबनायलगाइये भिलवां रस कढ़वाय॥
घिसखपरीरसलेपकरि बांधबिरहड़ीजाय ८४

अथ सुम्मसूजेकी दवा॥

दो० चुरै भेंड़के दूधमें पलभर खाय सुहाग॥
नित्यलेप हयपांव सों सूजनपीरजुभाग ८५

अथ सुम्मफटेकी दवा॥

दो० हर्रा रूमी मस्तगी छेरी मूत्र बँटाय॥
भरै सुम्मनीकोकरै कैपुनि दागेताय ८६

अथ घोड़ेकेनखरोगकीदवा॥

दो० भांग सुहागा मिर्चलै सेंधोनोन मिलाय॥
गूगर शोधीफिटकरी सेंधोनोनपिसाय ८७
अश्वनखनपरलेपिये सप्तदिवसकरकोय॥
यहउपायतेजानियेहयनखरोगजोखोय ८८

अथ परसकन्धकी दवा ॥

चौ०प्रथमअश्वकोसुम्मछुलाय। गायमठासौंताहिधुवाय॥
हरियाथूथो मुर्दाशङ्ख। खैरपापरी लेय निसङ्ख॥
तोला तोला भर परमान। करै खल्ल कपड़ामें छान॥
यहिविधिकरके सुम्मधराय। करियासे जो पत्र बँधाय॥
बाँधे मठा सहित जो कोय। दिवसपञ्चमें नीकोहोय ८९

दो० मनशिल भिलवांतूतिया खैर कबीला रार॥
लहसुन कारीमिर्चलै सेंदुर तहां विचार ९०
पुनि तबकी हरताललै मुर्दाशङ्ख समेत॥
तोला तोलाभरलहै डार खरल करि हेत९१
घीव सेरभरि मोमलै तोला चारि प्रमान॥
सर्वमेलधर पाकमें मरहम करै सुजान ९२
सुम्म छोलके बाँधिये दिवससप्त बुधबीर॥
यह उपायते बेगहर परसकन्धकी पीर ९३॥

अथ चांदनीवायको लक्षण॥

दो० झझकत चितचौंकतरहै देहदण्डसम होय॥
श्रवणखड़ेरहैं अश्वके रोगचांदनी सोय ९४

अथ याको यत्न ॥

दो० राई पीपरि मिर्चलै लहसुन शुण्ठी पान॥
छालसहिंजनो मैनफर कंजामिंगीखान९५
पैसाभर गोली करै प्रात खवावै अर्द॥
अजाचर्म मुख बाँधिये हरै चांदनी दर्द ९६

घोड़ाकेरसपांवकोउतरोहोय ताको दवा ॥

दो० सुहागतूतियालीजिये पलपलके अनुमान॥

निकरेचेप जुपूत्रमें सो बमिनी पहिचान ७९

याको यत्न ये है॥

दो॰ पटसनबकला बारके सांभरनोन मिलाय॥
सीरामें मथ लेपिये और कहत सुनताय ८०
पहर पछारी धोयकै सनके भुवा लयाइ॥
अरुलै मुर्दाशंखको सहतसंग लगवाइ ८१
सप्तदिवस यहिबिधिकरै अश्वउपायसुजान॥
उपजैकचानिहचैनिरख शालहोत्रपरमान ८२

अथ बिरहड़ी को॥

दो॰ पवनकोपते बेरसम गुमरी नरी मँझार॥
सो बिरहड़ीबखानिये ताको यत्न बिचार ८३
बारबनायलगाइये भिलवां रस कढ़वाय॥
घिसखपरीरसलेपकरि बांधबिरहड़ीजाय ८४

अथ सुम्मसूजेकी दवा॥

दो॰ चुरै भेड़के दूधमें पलभर लाय सुहाग॥
नित्यलेप हयपांव सों सूजनपीरजुभाग ८५

अथ सुम्मफटेकी दवा॥

दो॰ हरा रूमी मस्तगी छेरी मूत्र बँटाय॥
भरै सुम्मनीकोकरै कैपुनि दागेताय ८६

अथ घोड़ेकेनखरोगकीदवा॥

दो॰ भांग सुहागा मिर्चलै सेंधोनोन मिलाय॥
गूगर शोधीफिटकरी सेंधोनोनपिसाय ८७
अश्वनखनपरलेपिये सप्तदिवसकरकोय॥
यहउपायतेजानियेहयनखरोगजोखोय ८८

अथ परसकन्धकी दवा ॥

चौ०प्रथमअश्वकोसुम्मछुलाय। गायमठासोंताहिधुवाय॥
हरियाथूथो मुर्दाशङ्ख। खैरपापरी लेय निसङ्ख॥
तोला तोला भर परमान। करै खल्ल कपड़ामें छान॥
यहिविधिकरके सुम्मधराय। करियासे जो पत्र बँधाय॥
बाँधे मठा सहित जो कोय। दिवसपञ्चमें नीकोहोय ८९

दो० मनशिल भिलवांतूतिया खैर कबीला रार॥
लहसुन कारीमिर्चले सेंदुर तहां विचार ९०
पुनि तबकी हरताललै मुर्दाशङ्ख समेत॥
तोला तोलाभरलहै डार खरल करि हेत ९१
घीव सेरभरि मोमलै तोला चारि प्रमान॥
सर्वमेलधर पाकमें मरहम करै सुजान ९२
सुम्म छोलके बाँधिये दिवससप्त बुधबीर॥
यह उपायते बेगहर परसकन्धकी पीर ९३॥

अथ चांदनीवायको लक्षण॥

दो० झझकत चितचौंकतरहै देहदण्डसम होय॥
श्रवणखड़ेरहैं अश्वके रोगचांदनी सोय ९४

अथ याको यत्न॥

दो० राई पीपरि मिर्चलै लहसुन शुण्ठी पान॥
छालसहिंजनो मैनफर कंजामिंगीबखान ९५
पैसाभर गोली करै प्रात खवावे अर्द॥
अजाचर्म मुख बाँधिये हरै चांदनी दर्द ९६

घोड़ाकेरसपांवकोउतरोहोय ताकी दवा॥

दो० सुहागतूतियालीजिये पलपलके अनुमान॥

नींबूके रस लेपिये करै तुरी रसहान ९७

चांदनीको ॥

चौ० लहसुनहींगसुहागालेय। कारी जीरी सेंधो देय ॥
अजवायन त्रिकुटी भारङ्गी। सोंचरसाजी करिये सङ्गी ॥
हिरनसींगकी राख करावे। अतीस कटाई पातधरावे ॥
बांसा और जवासा जान। विषखपराअदरखअरुपान॥
ये सब पीस खल्ल में डारै। औंरासम गोली निरधारै॥
चून भूंज तामें दै भोर। राखै बन्द एकही जोर ॥
तातो पानी फिर करवाय। ठण्ढो भये तुरीको प्याय॥
यहिविधिअश्वयतनकरकोय। रोगचांदनीसे सुखहोय९८

अथ अधूरो ॥

दो० सेंहुड़ धूत मदारकी जार भस्म करकोय ॥
अजवायन हरदीमिलै बस्त्रछानिये सोय ९९
अश्व अङ्ग मर्दन करै राखै बन्द स्थान ॥
रोगचांदनीहरणको यहउपायमनमान१००

अथ घोड़ेकी खांसीकी दवा ॥

दो० सहदेई बचकूटलै दशदश टङ्क मिलाय ॥
मधिसों पिण्डीदीजिये हयको खांसी जाय१
लोध प्रियंगु बिभीतगुड़ कास दूर करदेय ॥
गुर्चकचूर बिजौर सँग कास श्वास हरलेय २

अथ घोड़ेकी आलसकी दवा ॥

दो० इरनी पाढ़ बिरंग बेल मूल चित्रक धरै ॥
मोथा गुड़करि संग हय सुस्ती आलसहरै३

घोड़ेके चोटलगेकी दवा ॥

गूगर पैसा तीन प्रमान। नोन पांच पल लेय सुजान ॥
लेय चार पल इमली कोय। पाव सेर जल तामें होय ॥
करै एकत्र अग्नि चुरवाय। लेपत चोट दर्द मिटिजाय ॥
यह विधि करै यत्न बुधबीर। मेटै अश्व चोट की पीर ४ ॥

दो० घृत गुड़ आदो हरदलै पानी संग चुराय ॥
गाढ़ो करके लेपिये पीर चोट की जाय ५

घोड़ेको धमकामोर की दवा ॥

दो० आधपाव लघु मिर्चलै खांड़ सेरभर लेय ॥
मुखसों रोज खवाइये पानी बेगि न देय ६
त्रैपल त्रिफला पीसिके खांड़ पावजलसान॥
सातरोज नितदीजिये धमका मिटै सुजान ७

घोड़ेको धमकामारे को यत्न ॥

छं० मिहँदीधना हरीत बिभीतक शुंठी आनै।
जाठोकासनि मिर्च सोय प्रतिपावबखानै ॥
चंदन जीरो जोरि जटामासी पत्रजलै।
गजकेसर खराज कमलकेसर प्रतिपललै ॥
करिखरलखांड़समडारिकेपावसेरपिंडीधरै।
हरअर्बतनकोसर्बधमकाप्रातयकभक्षणकरै ८

घोड़ेको ठंढमारे की दवा ॥

कुं० हिम हयको मारै जबै ताको कहत उपाय।
लहसुन हरदी सोंठि बच कुटकी ग्रंथकलाय ॥
कुटकी ग्रंथकलाय कुलींजन अकरकरापुन।
मिर्चजवायनजोरिजिरी कारीकुचिलासुन ॥

प्रतिआधपावबँटवायसकलगुड़डारिदेहइमि ।
ऊपरफूलपिवाय हरै जानहुँ हयको हिमि ९

दो० साबुन मिरचैं पीपरैं और पीपरामूर ॥
लहसुनलीजेपावप्रति अदरखसेरकपूर १०

लौंगैं पैसा भर कहीं गूगल टका मँगाय ॥
गुड़सँगदीजे बाँटिके ऊपरफूलपिवाय ११

घोड़ेके रक्तरोगको लक्षण ॥

दो० परैं ददोरा देहमें पीत नयन द्युतिहोय ॥
चाहैपानीछाहँपुनि रक्तरोग कहि सोय १२

यत्न ॥

कुटकीलीजे चारपल गुड़ दोसेर प्रमान ॥
लाइडूकरिकेदीजिये रक्तरोग की हान १३

खुलैनयहिउपचारते तौ न जियै यह जान ॥
ताकोऔरउपायनाहिं भाखोग्रंथप्रमान १४

घोड़ेकी ददरीकी दवा ॥

चौ० शुण्ठीनमकदोउमँगवावे । पावपाव भर तौलधरावे ॥
माजूफल लै आंबाहर्दै । यक पल तौलि करै सबमर्दै ॥
थूथो मुर्दाशंख बतायो । रस कपूर नौसादर भायो ॥
चारहु प्रति पैसाभर देवो । पुनि हरमावकला लैलेवो ॥
आधपाव के तौल प्रमान । बच अरु लोध टकादोजान ॥
पैसाभर रसौत मँगवावे । बाँटि दही में सब मथवावे ॥
दिवसचारि लेपनकरिकोय । ददरी अश्व देहकी खोय १५

दो० चार सेर पानी परै डारि तमाखू पाव ॥
आधोजुरि बाकी रहै लेपत रोग बहाव १६

तथा ॥

असगंधगेरूफटकरी जीरो सप्तसमआन ॥
अरदायमैंतीनदिन ददरीछिलकपरान १७

घोड़ेकी देहमें कीरापरेको यत्न ॥

दो० हरियाथूथो हींग पुनि बच फटकरी लगाय ॥
अश्व देहकी कृमिसबै यहउपायसे जाय १८

घोड़े के मुखरोग ॥

दो० जो घोड़े को मुखपकै तौ यह करै उपाय ॥
कुकरौंधा सैंधो मिरचपीसमलै मुखताय १९

घोड़ेकी तालूमें दांत जमैं ताको यत्न ॥

दो० जमैं दंत तालू तुरी मिर्च हरिद्रा नोन ॥
जौ घृतयुत मर्दन करै कासदंत है कोन २०

घोड़ेको मुख सूजेको यत्न ॥

चौ० जवाखारअजवाइनराई। सरसोंसौंफ हरदतहँनाई ॥
लहसुनसहित पीसकर गर्म। मुखसूजनकोहरियेधर्म २१

घोड़ेकी जीभमें फलकपरेको विचार ॥

दो० अश्व जीभमें जानिये फोड़ा सप्त प्रकार ॥
सोअसाध्यजानोतुरी तजैप्राण निरधार २२

कर्ण रोग ॥

सो० चलै निरन्तर श्रोन जा घोड़े के कर्ण ते ॥
पित्तदोष है तौन आमाशय ज्वरजायके २३
डारै हय शिर सोय अंगकम्प है पवन से ॥
यहजानोसबकोय पढ़िनिदानकरियेयतन २४

कर्णरोग यत्न ॥

दो० लहसुन हरदी हींग लै आकपात लै मेल ॥

प्रतिआधपावबँटवायसकलगुड़डारिदेइझमि।
ऊपरफूलपिवाय हरै जानहुँ हयको हिमि ९
दो० साबुन मिरचैं पीपरैं और पीपरामूर॥
लहसुनलीजेपावप्रतिअदरखसेरकपूर १०
लौंगैं पैसा भर कहीं गूगल टका मँगाय॥
गुड़सँगदीजे बाँटिके ऊपरफूलपिवाय ११

घोड़ेके रक्तरोगको लक्षण॥

दो० परैं ददोरा देहमें पीत नयन द्युतिहोय॥
चाहैपानीछाँहपुनि रक्तरोग कहि सोय १२

यत्न॥

कुटकीलीजे चारपल गुड़ दोसेर प्रमान॥
लडुककरिकेदीजिये रक्तरोग की हान १३
खुलैनयहिउपचारते तौ न जियै यहजान॥
ताकोऔरउपायनहिं भाखोग्रंथप्रमान १४

घोड़ेकी ददरीकी दवा॥

चौ० सुण्ठीनमकदोउमँगवावे। पावपाव भर तौलधरावे॥
माजूफल लै आंबाहर्दे। यक पल तौलि करै सबमर्दे॥
थूथो मुर्दासंख बतायो। रस कपूर नौसादर भायो॥
चारहु प्रति पैसाभर देवो। पुनि दस्माखकला लैलेवो॥
आधपाव के तौल प्रमान। बच अरु लोध टकादोजान॥
पैसाभर रसौत मँगवावे। बाँटि दही में सब मथवावे॥
द्विवसचारि लेपनकरिकोय। ददरी अश्व देहकी खोय १५
दो० चार सेर पानी परै डारि तमाखू पाव॥
आधोजरि बाकी रहै लेपत रोग बहाव १६

फूली को यत्न ॥

चौ० अश्वफुलीकोयत्नकराय। आकक्षीरफटकरीपिसाय॥
फेर आकको दूध मँगावै। तिहिमें लैकर कनक पिसावै॥
ताके मध्य फटकरी धरै। कपरौटी लै ताकी करै॥
धरै अग्निमें ताहि जराय। डारि खल्ल रजसम करवाय॥
अश्व आंखमें आंजै कोय। फूली मिटैदृष्टिअति होय ३५

दो० मानुषकी खुपरीतनक अग्नि जरावैकोय॥
खील फटकरी समलहै रजसम करियेसोय ३६
घोरिदूधमें दृगनभर फुली मिटै हयकेर॥
यहविधि याकी जानिये आंजै सांझसबेर ३७
कांचचुरी सैंधोहरद गेरू सम करिजानि॥
पीसिअंज दृग घृतमिलै अश्वफुलीकरहानि ३८

घोड़ेकी आंखसे लोहू जाय ताको यत्न॥

सो० गेरू शङ्खजराद लोध बहेरो खांड़ लै॥
जाठोसमकरयाद मधुयुत दृगअंजनकरै ३९

घोड़ेकी आंखमें परवार को यत्न॥

दो० प्रथम उखारै बार तब लै चमगादर श्रोन॥
सप्तदिवस दृगअश्वकेलगादीजिये तौन ४०

घोड़ेकी असाध्य नेत्रपरीक्षा॥

चौ० अश्वआंखदेखैजोकोय। लाल तिलूलसेतहँजोय॥
बीतै महिना तन परिहरै। त्यागताहि औषधनहिंकरै॥
श्वेतबिंदु दृग मैं कै कारो। खञ्जरीकृश्यअसाध्यविचारो॥
नीलबिंदु जो नेत्र दिखावै। मास पांचमें मृत्यु बतावै॥
पीरोबिंदु जासु के नैन। तजै सात महिना में ऐन ४१

करिकपरौटीअग्निधर अर्कनिकारेतैल २५
घृत मिश्रित करि अश्वके डारैकानमँझार ॥
कर्ण रोग हयको हरै यह नीको निरधार २६
जो आमाशय अश्वके फारैकान जुकोय ॥
फिर साबुन कांजीलवणपीसैजलयुतसोय २७
डारि अश्वके कानमें अर्कनिकारिसुजान ॥
करै यत्न जो वैद्यवर कर्णरोगकर हान २८

नेत्ररोग ॥

घोड़े की आंखमें ढरकाको यत्न ॥

दो० सरसों मूल अरण्डकी फूल कनेर गुवार ॥
अर्क अश्व दृगमें भरै ढरका बंद बिचार २९
तगर सौंफ चन्दन लहै बकरा मूत्र मिलाय ॥
घृतमदामिश्रितकाढ़िरस आंसू आंजिभराय ३०
अश्व आंख आंसूचलैं चावर बांध चुराय ॥
दिवसतीन यहिबिधिकरै नेत्र नीर रुकजाय ३१

घोड़ाकी फूलीको यत्न ॥

दो० सोनामाखी फटकरी माटीचिनी कचूर ॥
सिरसबीज कारीमिरच अञ्ज फुली करदूर ३२

घोड़ाके नेत्रमें सफ़ेदी को यत्न ॥

दो० पीपरि सेंधो सहतलै विषखपरा रसडार ॥
अञ्जनकरि हय नेत्रमें तुरत सफ़ेदीटार ३३

घोड़ाकी रतौंधको यत्न ॥

दो० साबुन कारी मिर्च लै लीद रङ्ग कर सङ्ग ॥
अश्व नेत्र अञ्जन करै मिटै रतौंध प्रसङ्ग ३४

फूली को यत्न ॥

चौ० अश्वफुलीकोयत्नकराय । आकक्षीरफटकरीपिसाय ॥
फेर आकको दूध मँगावै । तिहिमें लैकर कनक पिसावै ॥
ताके मध्य फटकरी धरै । कपरौटी लै ताकी करै ॥
धरै अग्निमें ताहि जराय । डारि स्वच्छ रजसम करवाय ॥
अश्व आंखमें आंजै कोय । फूली मिटैदृष्टिअति होय ३५

दो० मानुषकी खुपरीतनक अग्नि जरावैकोय ॥
खील फटकरी समलहै रजसम करियेसोय ३६
घोरिदूधमें दृगनभर फुली मिटै हयकेर ॥
यहविधि याकी जानिये आंजै सांझसबेर ३७
कांचचुरी सेंधोहरद गेरू सम करिजानि ॥
पीसिअंज दृग घृतमिलै अश्वफुलीकरहानि ३८

घोड़ेकी आंखसे लोहू जाय ताको यत्न ॥

सो० गेरू शङ्खजराद लोध बहेरा खांड़ लै ॥
जाठोसमकरयाद मधुयुत दृगअंजनकरै ३९

घोड़ेकी आंखमें परवार को यत्न ॥

दो० प्रथम उखारै बार तब लै चमगोदर श्रोन ॥
सप्तदिवस दृगअश्वकेलगादीजिये तौन ४०

घोड़ेकी असाध्य नेत्रपरीक्षा ॥

चौ० अश्वआंखदेखैजोकोय । लाल तिलूलासेतहँजोय ॥
बीतै महिना तन परिहरै । त्यागताहि औष ... है
श्वेतबिंदु दृग में कै कारो । खजुरीकुश्यअसाध्यविचारो
नीलबिंदु जो नेत्र दिखावै । मास पांचमें मृत्यु ...
पीरोबिंदु जासु के नैन । तजै सात महिना में

घोड़ा के नकुवासे लोहूगिरै ताको यत्न ॥

दो० सौंफ धनाशुण्ठीलहै जीरो पीस मिलाय ॥
जलयुत माथेलेपकरिनासारुधिरभगाय ४२

घोड़ा के रङ्ग पलटबे की दवा ॥

दो० बारदूरिकरि घिसलगा साबुन चतुरसुजान ॥
कूष्मांडरसधोयाफिरयहशालहोत्रप्रमान४३
फिर साबुन रस फटकरी कूष्मांडरस डार ॥
पीससर्व मरहमकरै धरिये ठांह बिचार ४४
मास एकभर लेपिये बदलै रंग तुरंग ॥
होवें बारसफेदसब करिदेखो हयअंग ४५
गुड़ कुम्हड़ारस संखियाखरलकरैंचितलाय ॥
अश्वअंगपै लेपकरि रंग पलट है जाय ४६

प्रश्न ॥

तातजातहय दोष गुण रंग रूप निरधारि ॥
यत्न योग रोगावली समझो सकल बिचारि ४७
अब कछुइच्छा औरमन सोसब कहतसुनाय ॥
तातेरहै निरोग हय सो कहिये समझाय ४८

घोड़े के छः ऋतुके आहार ॥

दो० कहतऔर हय हेतुकछु यत्न उपाय बिचार ॥
षटऋतु बारहमासके बरणतबाजिअहार ४९
सो० हिमअगहन अरुपूस तेलउर्दको ग्रासधर ॥
पुनिपाछेजोखूद अश्वअंग अतिपुष्टकर ५०
दो० माहफाल्गुन ऋतुशिशिर दीजै दूधतुरंग ॥
निर्विकार कायारहे बाढ़ै बल बहुअंग ५१

मासचैत्र वैशाख ऋतु कहियत ताहिबसंत ॥
है उसैयके अश्वको शृंगकसार बुधवंत ५२
ग्रीषम ज्येष्ठ असाढ़में छाँह दूर्वा घीव ॥
खाय अश्वतनपुष्टकर अरुसुखपावैजीव ५३
वर्षा सावन भाद्रपद दीजै हय गुड़ खान ॥
पुनि दानादीजैचना होयनिरोग निदान ५४
आश्विनकातिकशरदऋतुखांड़बरादधिमेल ॥
खाय अश्व तन पुष्टकरि रोग देय सब ठेल ५५

घोड़ेके महीना २ की पिंडी ॥

दो० दीजै मासअसाढ़में गुड़ हर्दी सुथ लौन ॥
लगै न पानी अश्वको टंक पंचदै तौन ५६
श्रावण अजवायनहरद हींगहर्र समलेय ॥
पांचटंक परमानसे बातशूल कहँदेय ५७
दीजै भादों में तुरी त्रिफला पीपरि सोंठि ॥
दूनी खांड़मिलायके पंचटङ्कनितघोंटि ५८
आश्विन कातिक हर्र बच रूसो घृत दै अर्ब ॥
यक पैसाभरसों हरै अग्नि पित्तज्वरसर्ब ५९
अगहनकुटकी ग्रंथिका हर्र चिरायतलेय ॥
रक्तपित्त हर बलकरै पंचटङ्क नित सेय ६०
पूस हर्र सोंचर त्रिकटु चित्रक कीलाखार ॥
पांचटङ्कनित देय हय अश्लेषमज्वरजार ६१
चौ० फाल्गुनऔरचैतबैशाख । इनमें हयकोदै सुन भाख ॥
पीपरि मिर्च बहेरो जान । कूट आंवले ग्रंथिक आन ॥
हींग बिड़ंग पांचऊ लौन । जोख सँभाल्ह बीजा तौन ॥

अजवायन अरु पुहकरमूर। दाख मुरार करै सब चूर॥
कैथ अतीस हुधी देवदार। सोंठि मँजीठ जवासोडार॥
करै खल्ल फिर देइ तुखार। टंकपंच नित नेम निहार॥
यकइस दिनलौं सेवन करै। बात पित्त संग्रहणी हरै॥
रक्तबिकार त्तयी अरु श्वास। इतने हयके करै बिनास ६२
दो० सेतुवा घृत अरु खांड़ लै बाँधै पिण्डी कोय॥
ज्येष्ठमासमें दीजिये निरुज पुष्ट हय होय ६३
छं० हयजाति बरण बिचारि आयुष रंग रूपबखानिये।
शुभअशुभअखिलनजुचिह्न दोषादोषलत्तणजानिये॥
अरुअर्बलेबेको सुदिन पुनि रुजयतनयुतआनिये।
कहुकायदाअबसारको सुबिचारउरपहिचानिये ६४
दो० तातअर्ब इतिहास मैं सब कह्यो समुझाय॥
जोकछुपायोनकुलमत सोसबदियोसुनाय ६५
यहसुनिपुनिमृदुबचनकहि पुरपतिरामदयाल॥
सुनिमनहर्षितभयोअब हयइतिहाससरसाल ६६
रामदत्त शालहोत्रमत कहुकछुबुद्धि बिचारि॥
भूलचूक सज्जन समुझि लीजो ताहि सुधारि ६७
पढ़ै गुणै समुझै सुनै जो नर प्रीति लगाय॥
सनमानै भूपतिसदा शोभा अति सरसाय ६८
दो० जोपुस्तक बाँचै सुनै धरै प्रीति कर धाम॥
कबियुत रामदयालकी तिनको सीताराम ६९
दो० शशिग्रह शर नभ मार्गसित रबिसुत तार पुरान॥
तादिन प्रति,पूरण,भई लीजै समझ सुजान ७०
इति श्रीशालहोत्रेरामदत्तकृतेतृतीयोऽध्यायःसम्पूर्णः ३॥